'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 1

श्री कृष्णायन सेवा सदन पलवल

'प्रस्थानत्रयी' (उपनिषद, भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र) के 3100 शब्दों की व्युत्पत्ति

निर्देशानुसार पूज्य गुरुदेव श्री सुभाष शर्मा जी संकलनकर्ता सुनील दत्त वशिष्ठ ॐ

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 2
• ब्रह्म व्युत्पत्ति: बृहत्त्वात् बृहणत्वाच्च ब्रह्म। अर्थ: जो स्वरूपतः सबसे विशाल और अनंत है, तथा जो अन्य सभी को सत्ता प्रदान करता है, वह ब्रह्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (बृहत्त्वात्) अपनी असीमित विशालता के कारण, (बृहणत्वात्) विस्तार करने की क्षमता से, (ब्रह्म) सर्वोच्च सत्ता।

• आत्मा व्युत्पत्ति: अत् सन्ततगमनात् इति आत्मा। अर्थ: जो समस्त काल और अवस्थाओं में निरंतर व्याप्त रहने वाला है, वह आत्मा है। क्रमवार शब्दार्थ: (अत्) निरंतर गमन या व्याप्ति, (सन्तत) अखंडता, (आत्मा) नित्य चैतन्य तत्व।

• माया व्युत्पत्ति: माति परिच्छिनत्ति इति माया। अर्थ: जो वास्तविक सत्य को सीमित कर अवास्तविक रूप में दिखाती है, वह माया है। क्रमवार शब्दार्थ: (माति) माप या निर्माण करना, (परिच्छिनत्ति) सीमाबद्ध करना, (माया) अवास्तविक शक्ति।

• अविद्या व्युत्पत्ति: न विद्यते यस्यां सा अविद्या। अर्थ: जहाँ यथार्थ ज्ञान का अभाव है और जो सत्य को छिपा लेती है, वह अविद्या है। क्रमवार शब्दार्थ: (न विद्यते) जहाँ ज्ञान नहीं है, (यस्यां) जिसमें, (सा) वह, (अविद्या) अज्ञान।

• जगत् व्युत्पत्ति: गच्छति इति जगत्। अर्थ: जो निरंतर परिवर्तनशील है और क्षण-क्षण गतिमान है, वह जगत है। क्रमवार शब्दार्थ: (गच्छति) गतिशील या परिवर्तनशील, (इति) इस प्रकार, (जगत्) दृश्य संसार।

• ईश्वर व्युत्पत्ति: ईष्टे इति ईश्वरः। अर्थ: जो समस्त जगत का शासन और नियंत्रण करने में समर्थ है, वह ईश्वर है। क्रमवार शब्दार्थ: (ईष्टे) शासन करना या नियंत्रित करना, (इति) इस गुण के कारण, (ईश्वरः) नियंता।

• जीव व्युत्पत्ति: जीवति इति जीवः। अर्थ: जो प्राणों को धारण करता है और स्वयं को शरीर से अभिन्न मानता है, वह जीव है। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवति) प्राण धारण करना, (इति) इस क्रिया से, (जीवः) व्यष्टि चेतना।

• देह व्युत्पत्ति: दह्यते इति देहः। अर्थ: जो अग्नि में दहन होने योग्य है और नश्वर है, वह देह है। क्रमवार शब्दार्थ: (दह्यते) जलने योग्य, (इति) इस गुण के कारण, (देहः) शरीर।

• अन्तःकरण व्युत्पत्ति: अन्तः क्रियते इति अन्तःकरणम्। अर्थ: वह सूक्ष्म साधन जो भीतर ही भावों और विकल्पों को संपादित करता है, वह अन्तःकरण है। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (क्रियते) संपादित होता है, (अन्तःकरणम्) मन-बुद्धि समूह।

• बुद्धि व्युत्पत्ति: बोधयति इति बुद्धिः। अर्थ: जो पदार्थों का निश्चय और ज्ञान कराती है, वह बुद्धि है। क्रमवार शब्दार्थ: (बोधयति) ज्ञान कराना, (इति) इस सामर्थ्य से, (बुद्धिः) निश्चय शक्ति।

• मनस् व्युत्पत्ति: मनुते इति मनः। अर्थ: जो संकल्प और विकल्प का चिंतन करता है, वह मन है।
क्रमवार शब्दार्थ: (मनुते) चिंतन करना, (इति) इस क्रिया से, (मनः) संकल्प शक्ति।

• अहंकार व्युत्पत्ति: अहम् इति करोति इति अहंकारः। अर्थ: जो 'मैं' कर्ता होने का भाव उत्पन्न करता है, वह अहंकार है। क्रमवार शब्दार्थ: (अहम्) मैं, (इति) इस प्रकार, (करोति) करना, (अहंकारः) अभिमान या कर्तृत्व बोध।

• विषय व्युत्पत्ति: विशेषेण सीयन्ते इति विषयाः। अर्थ: वे पदार्थ जो इन्द्रियों के द्वारा विशिष्ट रूप से आस्वादन किए जाते हैं, वे विषय हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) विशिष्ट रूप से, (सीयन्ते) प्राप्त होना, (विषयाः) भोग्य वस्तुएं।

• इन्द्रिय व्युत्पत्ति: इन्द्रस्य लिंगानि इन्द्रियाणि। अर्थ: जो आत्मा (इन्द्र) के स्वामित्व को दर्शाने वाले साधन हैं, वे इन्द्रिय हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रस्य) आत्मा के, (लिंगानि) चिन्ह या प्रतीक, (इन्द्रियाणि) ज्ञानेन्द्रियाँ।

• शरीर व्युत्पत्ति: शीर्यते इति शरीरम्। अर्थ: जो कालक्रम में जीर्ण-शीर्ण होकर नष्ट हो जाता है, वह शरीर है। क्रमवार शब्दार्थ: (शीर्यते) नष्ट होना या जीर्ण होना, (इति) इस स्वभाव से, (शरीरम्) काया।

• साक्षिन् व्युत्पत्ति: पश्यति इति साक्षी। अर्थ: जो स्वयं निर्लिप्त रहकर समस्त अवस्थाओं को देखता है, वह साक्षी है। क्रमवार शब्दार्थ: (पश्यति) देखना, (इति) इस साक्षी भाव से, (साक्षी) दृष्टा।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 3
• गुण व्युत्पत्ति: गुणयन्ति इति गुणाः। अर्थ: वे तत्व जो पुरुष को प्रकृति के साथ बांधते हैं, वे गुण हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणयन्ति) बांधना या गुणित करना, (इति) इस कार्य से, (गुणाः) प्रकृति के स्वभाव।

• सत् व्युत्पत्ति: अस्ति इति सत्। अर्थ: जो तीनों कालों में अपरिवर्तित और विद्यमान है, वह सत् है। क्रमवार शब्दार्थ: (अस्ति) होना, (इति) इस सत्ता से, (सत्) परम सत्य।

• चित् व्युत्पत्ति: चेतयति इति चित्। अर्थ: जो स्वयं प्रकाश और चैतन्य स्वरूप है, वह चित् है।
क्रमवार शब्दार्थ: (चेतयति) चेतन करना, (इति) इस प्रकाशक भाव से, (चित्) चेतना।

• आनन्द व्युत्पत्ति: नन्दति इति आनन्दः। अर्थ: जो पूर्णता और सुख का स्वरूप है, वह आनन्द है।
क्रमवार शब्दार्थ: (नन्दति) सुख का अनुभव करना, (इति) इस स्वरूप से, (आनन्दः) परम सुख।

• उपाधि व्युत्पत्ति: उप समीपे धीयते इति उपाधिः। अर्थ: जो वस्तु के समीप रहकर उसे सीमित या भिन्न प्रतीत कराए, वह उपाधि है। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (धीयते) रखा जाना, (उपाधिः) सीमित करने वाला धर्म।

• विवर्त व्युत्पत्ति: विशेषेण वर्तते इति विवर्तः। अर्थ: जो सत्य के अधिष्ठान पर केवल प्रतीति मात्र है, वह विवर्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर से, (वर्तते) प्रतीत होना, (विवर्तः) आभास।

• परिणाम व्युत्पत्ति: परितः इयते इति परिणामः। अर्थ: जो अपने मूल स्वरूप को बदलकर अन्य रूप धारण करे, वह परिणाम है। क्रमवार शब्दार्थ: (परितः) पूर्णतः, (इयते) बदलना, (परिणामः) रूपान्तरण।

• अधिष्ठान व्युत्पत्ति: अधितिष्ठति इति अधिष्ठानम्। अर्थ: जिस पर संपूर्ण मिथ्या जगत आश्रित है, वह अधिष्ठान है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधितिष्ठति) आधार होना, (इति) इस स्थिति से, (अधिष्ठानम्) आधार।

• आरोप व्युत्पत्ति: आरुह्यते इति आरोपः। अर्थ: जो यथार्थ वस्तु पर अवास्तविक वस्तु का कल्पित स्थापन है, वह आरोप है। क्रमवार शब्दार्थ: (आरुह्यते) स्थापित करना, (इति) इस प्रक्रिया से, (आरोपः) भ्रम।

• अपवाद व्युत्पत्ति: अपवदति इति अपवादः। अर्थ: जो कल्पित जगत का निषेध करके वास्तविक सत्य को स्थापित करे, वह अपवाद है। क्रमवार शब्दार्थ: (अपवदति) निषेध करना, (इति) इस ज्ञान से, (अपवादः) निषेध प्रक्रिया।

• निवृत्ति व्युत्पत्ति: निवर्तते इति निवृत्तिः। अर्थ: जो सांसारिक कार्यों से चित्त को हटाकर आत्म-स्थिति प्रदान करे, वह निवृत्ति है। क्रमवार शब्दार्थ: (निवर्तते) लौटना, (इति) इस अवस्था से, (निवृत्तिः) विरक्ति।

• फल व्युत्पत्ति: फलति इति फलम्। अर्थ: जो कर्म के अंत में प्राप्त होने वाला परिणाम है, वह फल है। क्रमवार शब्दार्थ: (फलति) फल देना, (इति) इस परिणाम से, (फलम्) प्रतिफल।

• साधन व्युत्पत्ति: साध्यते अनेन इति साधनम्। अर्थ: वह माध्यम जिसके द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति होती है, वह साधन है। क्रमवार शब्दार्थ: (साध्यते) सिद्ध करना, (अनेन) इसके द्वारा, (साधनम्) उपाय।

• विवेक व्युत्पत्ति: विवेक्ति इति विवेकः। अर्थ: जो नित्य और अनित्य वस्तुओं को पृथक करके जानता है, वह विवेक है। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक्ति) अलग करना, (इति) इस ज्ञान से, (विवेकः) भेद-बुद्धि।

• विराग व्युत्पत्ति: विगतः रागः इति विरागः। अर्थ: जहाँ विषयों के प्रति आसक्ति का अभाव हो गया है, वह विराग है। क्रमवार शब्दार्थ: (विगतः) समाप्त, (रागः) आसक्ति, (विरागः) वैराग्य।

• शम व्युत्पत्ति: शाम्यति इति शमः। अर्थ: जो मन को बहिर्मुखी होने से रोककर शांत करता है, वह शम है। क्रमवार शब्दार्थ: (शाम्यति) शांत होना, (इति) इस गुण से, (शमः) मन का निग्रह।

• दम व्युत्पत्ति: दमयति इति दमः। अर्थ: जो बाह्य इन्द्रियों को विषयों से नियंत्रित करता है, वह दम है। क्रमवार शब्दार्थ: (दमयति) दमन करना, (इति) इस संयम से, (दमः) इन्द्रिय निग्रह।

• तितिक्षा व्युत्पत्ति: तितिक्षते इति तितिक्षा। अर्थ: जो द्वंद्वों को बिना शिकायत सहने की क्षमता है, वह तितिक्षा है। क्रमवार शब्दार्थ: (तितिक्षते) सहना, (इति) इस धैर्य से, (तितिक्षा) सहनशीलता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 4
• श्रद्धा व्युत्पत्ति: श्रद्धधाति इति श्रद्धा। अर्थ: जो शास्त्र और गुरु के वचनों में दृढ़ विश्वास रखता है, वह श्रद्धा है। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रद्धधाति) विश्वास रखना, (इति) इस भाव से, (श्रद्धा) निष्ठा।

• समाधान व्युत्पत्ति: समाधीयते इति समाधानम्। अर्थ: जो एकाग्र चित्त होकर लक्ष्य में स्थित होता है, वह समाधान है। क्रमवार शब्दार्थ: (समाधीयते) स्थित करना, (इति) इस एकाग्रता से, (समाधानम्) चित्त की एकाग्रता।

• मुमुक्षुत्व व्युत्पत्ति: मोक्षं इच्छति इति मुमुक्षुत्वम्। अर्थ: जो मोक्ष की तीव्र आकांक्षा रखने की अवस्था है, वह मुमुक्षुत्व है। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्षं) मुक्ति, (इच्छति) चाहना, (मुमुक्षुत्वम्) मुक्ति की कामना।

• श्रवण व्युत्पत्ति: श्रृणोति इति श्रवणम्। अर्थ: जो वेदान्त वाक्यों का गुरु के मुख से सुनना है, वह श्रवण है। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रृणोति) सुनना, (इति) इस क्रिया से, (श्रवणम्) वेदान्त श्रवण।

• मनन व्युत्पत्ति: मन्यते इति मननम्। अर्थ: जो सुने हुए वाक्यों पर युक्तिपूर्वक विचार करना है, वह मनन है। क्रमवार शब्दार्थ: (मन्यते) विचार करना, (इति) इस प्रक्रिया से, (मननम्) चिंतन।

• निदिध्यासन व्युत्पत्ति: ध्यायते इति निदिध्यासनम्। अर्थ: जो आत्म स्वरूप में निरंतर ध्यान की स्थिति है, वह निदिध्यासन है। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यायते) ध्यान करना, (इति) इस अवस्था से, (निदिध्यासनम्) अखंड ध्यान।

• कैवल्य व्युत्पत्ति: केवलो भावः कैवल्यम्। अर्थ: जो आत्मा का अपने शुद्ध स्वरूप में एकाकी स्थित होना है, वह कैवल्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (केवलो) अकेला या शुद्ध, (भावः) स्थिति, (कैवल्यम्) मुक्ति।

• निर्गुण व्युत्पत्ति: निर्गताः गुणाः यस्मात् तत् निर्गुणम्। अर्थ: जो सत्त्व-रज-तम आदि गुणों से रहित है, वह निर्गुण है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गताः) निकल जाना, (गुणाः) प्रकृति के गुण, (निर्गुणम्) गुणातीत।

• सगुण व्युत्पत्ति: सह गुणैः इति सगुणम्। अर्थ: जो गुणों के साथ उपास्य रूप में प्रकट है, वह सगुण है। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (गुणैः) गुणों के, (सगुणम्) साकार रूप।

• पुरुष व्युत्पत्ति: पुरे शेते इति पुरुषः। अर्थ: जो शरीर रूपी पुरी (नगर) में निवास करता है, वह पुरुष है। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरे) शरीर में, (शेते) सोना या रहना, (पुरुषः) आत्म तत्व।

• प्रकृति व्युत्पत्ति: प्रकर्येण करोति इति प्रकृतिः। अर्थ: जो समस्त विश्व के निर्माण में मूल कारण है, वह प्रकृति है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्येण) श्रेष्ठ रूप से, (करोति) निर्माण करना, (प्रकृतिः) मूल कारण।

• क्षेत्र व्युत्पत्ति: क्षीयते अनेन इति क्षेत्रम्। अर्थ: जो देहादि अनित्य समूह नाश होने वाला है, वह क्षेत्र है। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षीयते) नष्ट होना, (अनेन) इसके द्वारा, (क्षेत्रम्) शरीर।

• क्षेत्रज्ञ व्युत्पत्ति: क्षेत्रं जानाति इति क्षेत्रज्ञः। अर्थ: जो क्षेत्र (शरीर) को जानने वाला चैतन्य है, वह क्षेत्रज्ञ है। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षेत्रं) शरीर को, (जानाति) जानना, (क्षेत्रज्ञः) आत्मा।

• अव्यक्त व्युत्पत्ति: न व्यक्तं इति अव्यक्तम्। अर्थ: जो इन्द्रियों का विषय न होकर कारण रूप में स्थित है, वह अव्यक्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (व्यक्तं) प्रकट, (अव्यक्तम्) कारण रूप।

• काल व्युत्पत्ति: कलयति इति कालः। अर्थ: जो समस्त कार्यों को मापने वाला और गणना करने वाला है, वह काल है। क्रमवार शब्दार्थ: (कलयति) गणना करना, (इति) इस शक्ति से, (कालः) समय।

• दिक् व्युत्पत्ति: दिशति इति दिक्। अर्थ: जो दिशाओं को दर्शाती और अवकाश प्रदान करती है, वह दिक् है। क्रमवार शब्दार्थ: (दिशति) दिखाना, (इति) इस स्वभाव से, (दिक्) आकाश/दिशा।

• निमित्त व्युत्पत्ति: निमित्तं क्रियायाः कारणम्। अर्थ: जो कार्य को उत्पन्न करने में सहायक कारण है, वह निमित्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (निमित्तं) कारण, (क्रियायाः) कार्य के, (कारणम्) हेतु।

• उपादान व्युत्पत्ति: उपदीयते इति उपादानम्। अर्थ: जो कार्य का मूल द्रव्य रूप कारण है, वह उपादान है। क्रमवार शब्दार्थ: (उपदीयते) ग्रहण करना, (इति) इस आधार से, (उपादानम्) कारण द्रव्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 5
• कार्य व्युत्पत्ति: क्रियते इति कार्यम्। अर्थ: जो कारण के द्वारा उत्पन्न किया गया है, वह कार्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रियते) किया जाना, (इति) इस रूप से, (कार्यम्) परिणाम।

• करण व्युत्पत्ति: क्रियते अनेन इति करणम्। अर्थ: जो कार्य को सिद्ध करने का मुख्य साधन है, वह करण है। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रियते) कार्य करना, (अनेन) इसके द्वारा, (करणम्) साधन।

• कर्ता व्युत्पत्ति: करोति इति कर्ता। अर्थ: जो क्रिया को संपन्न करने वाला मुख्य व्यक्ति है, वह कर्ता है। क्रमवार शब्दार्थ: (करोति) कार्य करना, (इति) इस भाव से, (कर्ता) करने वाला।

• भोक्ता व्युत्पत्ति: भुङ्क्ते इति भोक्ता। अर्थ: जो कर्मों के फल का अनुभव करता है, वह भोक्ता है। क्रमवार शब्दार्थ: (भुङ्क्ते) भोगना, (इति) इस क्रिया से, (भोक्ता) अनुभवकर्ता।

• प्रमाण व्युत्पत्ति: प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम्। अर्थ: जो यथार्थ ज्ञान को सिद्ध करने का साधन है, वह प्रमाण है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमीयते) मापना या ज्ञान, (अनेन) इसके द्वारा, (प्रमाणम्) ज्ञान का साधन।

• प्रमेय व्युत्पत्ति: प्रमीयते इति प्रमेयम्। अर्थ: जो प्रमाण द्वारा ज्ञान का विषय बनता है, वह प्रमेय है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमीयते) मापा जाना, (इति) इस योग्य, (प्रमेयम्) ज्ञान का विषय।

• अवच्छेद व्युत्पत्ति: अवच्छिद्यते इति अवच्छेदः। अर्थ: जो किसी वस्तु को सीमित या खंडित करता है, वह अवच्छेद है। क्रमवार शब्दार्थ: (अवच्छिद्यते) अलग करना, (इति) इस भाव से, (अवच्छेदः) सीमा।

• प्रतिबिम्ब व्युत्पत्ति: प्रतिफलति इति प्रतिबिम्बः। अर्थ: जो किसी अन्य का आभासी रूप धारण करता है, वह प्रतिबिम्ब है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिफलति) झलकना, (इति) इस रूप से, (प्रतिबिम्बः) छाया।

• आभास व्युत्पत्ति: आभासते इति आभासः। अर्थ: जो सत्य के समान प्रतीत होता है पर सत्य नहीं है, वह आभास है। क्रमवार शब्दार्थ: (आभासते) चमकना या दिखना, (इति) इस प्रतीति से, (आभासः) प्रतीति।

• संसार व्युत्पत्ति: संसरति इति संसारः। अर्थ: जो जन्म-मरण के चक्र में निरंतर घूमता है, वह संसार है। क्रमवार शब्दार्थ: (संसरति) घूमना, (इति) इस चक्र से, (संसारः) जगत चक्र।

• जन्म व्युत्पत्ति: जायते इति जन्म। अर्थ: जो जीव की उत्पत्ति या देह धारण की अवस्था है, वह जन्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (जायते) पैदा होना, (इति) इस प्रक्रिया से, (जन्म) उत्पत्ति।

• मरण व्युत्पत्ति: म्रियते इति मरणम्। अर्थ: जो देह का अंत या जीव का शरीर त्यागना है, वह मरण है।
क्रमवार शब्दार्थ: (म्रियते) मरना, (इति) इस क्रिया से, (मरणम्) अंत।

• बन्ध व्युत्पत्ति: बध्यते इति बन्धः। अर्थ: जो आत्मा को संसार के साथ जकड़े रखता है, वह बन्ध है।
क्रमवार शब्दार्थ: (बध्यते) बांधना, (इति) इस स्थिति से, (बन्धः) बंधन।

• मुक्ति व्युत्पत्ति: मुच्यते इति मुक्तिः। अर्थ: जो बन्धनों से पूरी तरह छूट जाने की अवस्था है, वह मुक्ति है। क्रमवार शब्दार्थ: (मुच्यते) मुक्त होना, (इति) इस अवस्था से, (मुक्तिः) मोक्ष।

• अनात्मन् व्युत्पत्ति: न आत्मा इति अनात्मा। अर्थ: जो शरीर आदि जड़ पदार्थ हैं और आत्मा नहीं हैं, वे अनात्मन हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (आत्मा) चेतन, (अनात्मा) जड़ पदार्थ।

• मिथ्या व्युत्पत्ति: मिथ्यते इति मिथ्या। अर्थ: जो केवल प्रतीति मात्र है और वास्तविक रूप से विद्यमान नहीं है, वह मिथ्या है। क्रमवार शब्दार्थ: (मिथ्यते) असत्य होना, (इति) इस स्वभाव से, (मिथ्या) अवास्तविक।

• सत्य व्युत्पत्ति: सति साधु इति सत्यम्। अर्थ: जो नित्य, निर्दोष और अपरिवर्तनीय है, वह सत्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (सति) विद्यमान, (साधु) यथार्थ, (सत्यम्) परमार्थ।

• यथार्थ व्युत्पत्ति: यथा अर्थः तथा यथार्थम्। अर्थ: जो वस्तु जैसी है उसका वैसा ही ज्ञान होना, वह यथार्थ है। क्रमवार शब्दार्थ: (यथा) जैसा, (अर्थः) वस्तु, (तथा) वैसा, (यथार्थम्) यथार्थ ज्ञान।

• परब्रह्म व्युत्पत्ति: परं च तत् ब्रह्म च परब्रह्म। अर्थ: जो ब्रह्म का सर्वोच्च और निर्गुण स्वरूप है, वह परब्रह्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (परं) सर्वोच्च, (च) और, (तत्) वह, (ब्रह्म) सत्ता।

• परा व्युत्पत्ति: परा विद्या सा विद्या। अर्थ: जो आत्म-ज्ञान का ज्ञान कराती है, वह परा विद्या है। क्रमवार शब्दार्थ: (परा) श्रेष्ठ, (विद्या) ज्ञान, (परा) ब्रह्म विद्या।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 6
• अपरा व्युत्पत्ति: न परा इति अपरा। अर्थ: जो सांसारिक विषयों या कर्मकाण्डों का ज्ञान है, वह अपरा है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (परा) श्रेष्ठ, (अपरा) लौकिक ज्ञान।

• विद्या व्युत्पत्ति: विदन्ति इति विद्या। अर्थ: जिसके द्वारा सत्य का साक्षात्कार होता है, वह विद्या है। क्रमवार शब्दार्थ: (विदन्ति) जानना, (इति) इस साधन से, (विद्या) ज्ञान।

• कूटस्थ व्युत्पत्ति: कूटवत् तिष्ठति इति कूटस्थः। अर्थ: जो विकार रहित होकर एक समान स्थिर रहता है, वह कूटस्थ है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटवत्) पर्वत के समान, (तिष्ठति) स्थिर रहना, (कूटस्थः) अपरिवर्तनीय।

• प्रस्थान व्युत्पत्ति: प्रस्थितं अर्थं प्रति इति प्रस्थानम्। अर्थ: जो सत्य की प्राप्ति का मुख्य मार्ग (ग्रंथ) है, वह प्रस्थान है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रस्थितं) गमन करना, (अर्थं) लक्ष्य, (प्रस्थानम्) मार्ग।

• त्रयी व्युत्पत्ति: त्रयाणां समूहः त्रयी। अर्थ: जो तीन (उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र) का समूह है, वह त्रयी है। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रयाणां) तीन का, (समूहः) मेल, (त्रयी) समूह।

• भाष्य व्युत्पत्ति: भाष्यते अनेन इति भाष्यम्। अर्थ: जो सूत्रों का व्याख्यान करके अर्थ स्पष्ट करता है, वह भाष्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (भाष्यते) व्याख्या करना, (अनेन) इसके द्वारा, (भाष्यम्) टीका।

• सूत्र व्युत्पत्ति: सूचयति इति सूत्रम्। अर्थ: जो संक्षिप्त रूप में गूढ़ अर्थ को सूचित करता है, वह सूत्र है। क्रमवार शब्दार्थ: (सूचयति) सूचित करना, (इति) इस गुण से, (सूत्रम्) संक्षिप्त वाक्य।

• मन्त्र व्युत्पत्ति: मननात् मन्त्रः। अर्थ: जो विचार करने और मनन करने से रक्षा करता है, वह मन्त्र है। क्रमवार शब्दार्थ: (मननात्) चिंतन से, (मन्त्रः) पवित्र वाक्य।

• उपनिषद् व्युत्पत्ति: उप नि षद् इति उपनिषद्। अर्थ: जो गुरु के समीप बैठकर रहस्य को प्रकाशित करती है, वह उपनिषद है। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (नि) श्रद्धापूर्वक, (षद्) बैठना, (उपनिषद्) गुप्त ज्ञान।

• भगवद्गीता व्युत्पत्ति: भगवता गीता इति भगवद्गीता। अर्थ: जो भगवान कृष्ण द्वारा उपदिष्ट है, वह गीता है। क्रमवार शब्दार्थ: (भगवता) भगवान द्वारा, (गीता) गाई गई, (भगवद्गीता) दिव्य ज्ञान।

• ब्रह्मसूत्र व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः सूत्रम् ब्रह्मसूत्रम्। अर्थ: जो ब्रह्म के स्वरूप का निर्णय करने वाला संक्षिप्त वाक्य है, वह ब्रह्मसूत्र है। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) ब्रह्म का, (सूत्रम्) सूत्र, (ब्रह्मसूत्रम्) निर्णय ग्रंथ।

• सालोक्य व्युत्पत्ति: समानः लोकः यस्य सः सालोक्यः। अर्थ: जहाँ भक्त ईश्वर के लोक में निवास करता है, वह सालोक्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (समानः) एक जैसा, (लोकः) स्थान, (सालोक्यः) ईश्वर लोक।

• सामीप्य व्युत्पत्ति: समीपस्य भावः सामीप्यम्। अर्थ: जहाँ ईश्वर के निकट रहने की अवस्था है, वह सामीप्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (समीपस्य) पास होने का, (भावः) स्थिति, (सामीप्यम्) निकटता।

• सारूप्य व्युत्पत्ति: समानं रूपं यस्य तत् सारूप्यम्। अर्थ: जहाँ ईश्वर जैसा स्वरूप प्राप्त होता है, वह सारूप्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (समानं) एक जैसा, (रूपं) स्वरूप, (सारूप्यम्) सदृशता।

• सायुज्य व्युत्पत्ति: सह युज्यते इति सायुज्यम्। अर्थ: जहाँ पूर्ण एकीकरण (तदात्म्य) प्राप्त होता है, वह सायुज्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (युज्यते) जुड़ना, (सायुज्यम्) ऐक्य।

• अन्वय व्युत्पत्ति: अनु गच्छति इति अन्वयः। अर्थ: जो कार्य और कारण के बीच व्याप्त रहता है, वह अन्वय है। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पीछे, (गच्छति) जाना, (अन्वयः) सम्बन्ध।

• व्यतिरेक व्युत्पत्ति: विशेषेण अतिरेकः व्यतिरेकः। अर्थ: जहाँ कार्य के बिना भी कारण की सत्ता रहती है, वह व्यतिरेक है। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर, (अतिरेकः) अभाव, (व्यतिरेकः) भेद।

• अधिभूत व्युत्पत्ति: अधि भूतेषु वर्तमानम्। अर्थ: जो समस्त भूतों (प्राणियों) से सम्बद्ध है, वह अधिभूत है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (भूतेषु) प्राणियों में, (अधिभूत) भौतिक जगत।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 7
• अधिदैव व्युत्पत्ति: अधि देवेषु वर्तमानम्। अर्थ: जो समस्त देवों या देवताओं में स्थित है, वह अधिदैव है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (देवेषु) देवताओं में, (अधिदैव) दैवीय शक्ति।

• अधियज्ञ व्युत्पत्ति: अधि यज्ञे वर्तमानम्। अर्थ: जो यज्ञों का स्वामी और प्रेरक है, वह अधियज्ञ है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (यज्ञे) यज्ञ में, (अधियज्ञ) यज्ञेश।

• अव्यक्त व्युत्पत्ति: न व्यक्तं इति अव्यक्तम्। अर्थ: जो इन्द्रियों का विषय नहीं है, वह अव्यक्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (व्यक्तं) प्रकट, (अव्यक्तम्) अप्रकट।

• गुणतीत व्युत्पत्ति: गुणात् अतीतम्। अर्थ: जो तीनों गुणों से ऊपर उठ चुका है, वह गुणातीत है।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुणात्) गुणों से, (अतीतम्) पार, (गुणातीत) गुणातीत पुरुष।

• कर्माशय व्युत्पत्ति: कर्मणां आशयः कर्माशयः। अर्थ: जहाँ कर्मों के संस्कार संचित रहते हैं, वह कर्माशय है। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्मणां) कर्मों का, (आशयः) भंडार, (कर्माशयः) संचित कर्म।

• वासना व्युत्पत्ति: वासयति इति वासना। अर्थ: जो मन में पूर्व कर्मों के संस्कार छोड़ती है, वह वासना है। क्रमवार शब्दार्थ: (वासयति) निवास करना, (इति) इस संस्कार से, (वासना) मानसिक इच्छा।

• संकल्प व्युत्पत्ति: सं कल्पयति इति संकल्पः। अर्थ: जो मन का दृढ़ निश्चय या विचार है, वह संकल्प है। क्रमवार शब्दार्थ: (सं) पूरी तरह, (कल्पयति) रचना करना, (संकल्पः) दृढ़ निश्चय।

• विकल्प व्युत्पत्ति: विशेषेण कल्पते इति विकल्पः। अर्थ: जो मन का संशय या अनिश्चित विचार है, वह विकल्प है। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर, (कल्पते) सोचना, (विकल्पः) संशय।

• मोक्ष व्युत्पत्ति: मुच्यते अस्मात् इति मोक्षः। अर्थ: जिससे छूटकर जीव पुनः जन्म नहीं लेता, वह मोक्ष है। क्रमवार शब्दार्थ: (मुच्यते) मुक्त होना, (अस्मात्) संसार से, (मोक्षः) परमपद।

• परमानन्द व्युत्पत्ति: परमः च असौ आनन्दः। अर्थ: जो आनन्द का सर्वोच्च स्वरूप है, वह परमानन्द है। क्रमवार शब्दार्थ: (परमः) श्रेष्ठ, (असौ) वह, (आनन्दः) सुख, (परमानन्द) ब्रह्म-सुख।

• अद्वैत व्युत्पत्ति: न द्वैतं यस्मिन् तदद्वैतम्। अर्थ: जहाँ द्वैत या भेद का पूर्ण अभाव है, वह अद्वैत है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (द्वैतं) दो (भेद), (यस्मिन्) जिसमें, (अद्वैतम्) एकत्व।

• अपरोक्ष व्युत्पत्ति: अक्ष्णोः प्रति न वर्तते इति अपरोक्षम्। अर्थ: जो ज्ञान इन्द्रियों के परोक्ष न होकर सीधा आत्म-अनुभव है, वह अपरोक्ष है। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्ष्णोः) इन्द्रियों के, (प्रति) सामने, (न वर्तते) नहीं है, (अपरोक्षम्) साक्षात् अनुभव।

• अध्यारोप व्युत्पत्ति: अधि आरूप्यते इति अध्यारोपः। अर्थ: आधार पर अन्या वस्तु की कल्पना करना अध्यारोप है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) आधार पर, (आरूप्यते) कल्पित करना, (अध्यारोपः) मिथ्या आरोप।

• अन्तःकरण व्युत्पत्ति: अन्तः क्रियते ज्ञानादिकं यस्मिन्। अर्थ: वह सूक्ष्म साधन जो भीतर ही भावों को संपादित करता है। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (क्रियते) किया जाना, (अन्तःकरण) मन-बुद्धि समूह।

• अनुभव व्युत्पत्ति: अनु भूयते इति अनुभवः। अर्थ: आत्म-स्वरूप की साक्षात् अनुभूति। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पश्चात (ज्ञान के बाद), (भूयते) होना, (अनुभवः) साक्षात् ज्ञान।

• अस्तित्व व्युत्पत्ति: अस्य भावः अस्तित्वम्। अर्थ: 'अस' धातु से सिद्ध सत्ता का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (अस्य) होने का, (भावः) स्वभाव, (अस्तित्वम्) सत्ता।

• आकाङ्क्षा व्युत्पत्ति: आकाङ्क्षते इति आकाङ्क्षा। अर्थ: वाक्य के अर्थ को पूर्ण करने के लिए शब्दों की परस्पर अपेक्षा। क्रमवार शब्दार्थ: (आकाङ्क्षते) अपेक्षा करना, (इति) इस गुण से, (आकाङ्क्षा) आकांक्षा।

• आत्मज्ञान व्युत्पत्ति: आत्मनः ज्ञानम् आत्मज्ञानम्। अर्थ: आत्मा का यथार्थ स्वरूप बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा का, (ज्ञानम्) बोध, (आत्मज्ञानम्) आत्म-साक्षात्कार।

• इच्छा व्युत्पत्ति: इष्यते इति इच्छा। अर्थ: वस्तुओं को प्राप्त करने की कामना। क्रमवार शब्दार्थ: (इष्यते) चाहना, (इच्छा) कामना।

• उत्पत्ति व्युत्पत्ति: उद् पदयते इति उत्पत्तिः। अर्थ: किसी वस्तु का आविर्भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (उद्) ऊपर, (पदयते) उत्पन्न होना, (उत्पत्तिः) जन्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 8
• उपदेश व्युत्पत्ति: उप दिश्यते इति उपदेशः। अर्थ: गुरु द्वारा शिष्य को सत्य का ज्ञान देना।
क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (दिश्यते) कहना, (उपदेशः) शिक्षा।

• ऋत व्युत्पत्ति: ऋच्छति इति ऋतम्। अर्थ: प्राकृतिक नियम और सत्य का क्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋच्छति) जाना/प्राप्त करना, (ऋतम्) व्यवस्था।

• एकाग्रता व्युत्पत्ति: एकस्मिन् अग्रता इति एकाग्रता। अर्थ: मन का एक लक्ष्य पर स्थित होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (एकस्मिन्) एक में, (अग्रता) आगे बढ़ना (स्थित होना), (एकाग्रता) चित्त की स्थिरता।

• ओङ्कार व्युत्पत्ति: ओम् इति कारः ओङ्कारः। अर्थ: प्रणव ध्वनि जो ब्रह्म का प्रतीक है। क्रमवार शब्दार्थ: (ओम्) ओंकार, (कारः) अक्षर, (ओङ्कारः) ओंकार ध्वनि।

• कल्याण व्युत्पत्ति: कल्यां लाति इति कल्याणम्। अर्थ: जो आत्मा का मंगल करे। क्रमवार शब्दार्थ: (कल्यां) शुभ को, (लाति) देना, (कल्याणम्) मंगल।

• किंचिज्ज्ञ व्युत्पत्ति: किञ्चित् जानाति इति किंचिज्ज्ञः। अर्थ: अल्पज्ञ जीव की स्थिति।
क्रमवार शब्दार्थ: (किञ्चित्) थोड़ा, (जानाति) जानना, (किंचिज्ज्ञः) अल्पज्ञ।

• क्रिया व्युत्पत्ति: क्रियते इति क्रिया। अर्थ: शारीरिक या मानसिक चेष्टा। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रियते) करना, (क्रिया) कर्म।

• गुणित्व व्युत्पत्ति: गुणाः विद्यन्ते यस्य स गुणित्वम्। अर्थ: गुणों के स्वामी होने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणाः) गुण, (विद्यन्ते) होना, (गुणित्वम्) गुण संपन्नता।

• गोचर व्युत्पत्ति: गाम् (इन्द्रिय) चरति इति गोचरः। अर्थ: इन्द्रियों का विषय। क्रमवार शब्दार्थ: (गाम्) इन्द्रिय, (चरति) जाना, (गोचरः) विषय।

• चित्त व्युत्पत्ति: चेतयति इति चित्तम्। अर्थ: अंतःकरण का वह भाग जो स्मृति और भावना का आश्रय है। क्रमवार शब्दार्थ: (चेतयति) चेतना करना, (चित्तम्) मन।

• चेतन व्युत्पत्ति: चेतयते इति चेतनः। अर्थ: ज्ञानयुक्त तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (चेतयते) चेतन होना, (चेतनः) ज्ञानवान्।

• जड व्युत्पत्ति: जडयति इति जडः। अर्थ: जिसमें चेतना का अभाव है। क्रमवार शब्दार्थ: (जडयति) जड़ता, (जडः) निर्जीव।

• तदात्म्य व्युत्पत्ति: तस्य आत्मा तदात्मा, तस्य भावस्तदात्म्यम्। अर्थ: तन्मयता या तादात्म्य की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (तस्य) उसके, (आत्मा) रूप, (तदात्म्यम्) अभेद।

• तत्त्व व्युत्पत्ति: तस्य भावस्तत्त्वम्। अर्थ: 'तत्' (वह ब्रह्म) ही जिसका स्वरूप है। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (भावः) भाव, (तत्त्वम्) यथार्थ।

• तपस् व्युत्पत्ति: तप्यते इति तपः। अर्थ: मन-इन्द्रियों का संयम। क्रमवार शब्दार्थ: (तप्यते) तपना/सहना, (तपः) तपस्या।

• तृष्णा व्युत्पत्ति: तृष्यति इति तृष्णा। अर्थ: विषयों की लालसा। क्रमवार शब्दार्थ: (तृष्यति) प्यास/लालसा, (तृष्णा) इच्छा।

• त्रैकालिक व्युत्पत्ति: त्रयाणां कालानां समूहः त्रैकालिकः। अर्थ: जो तीनों काल में स्थित है।
क्रमवार शब्दार्थ: (त्रयाणां) तीन का, (कालानां) समय, (त्रैकालिकः) त्रिकालवर्ती।

• दोष व्युत्पत्ति: दूषयति इति दोषः। अर्थ: जो ज्ञान को कलुषित करे। क्रमवार शब्दार्थ: (दूषयति) दूषित करना, (दोषः) विकार।

• द्वैत व्युत्पत्ति: द्वाभ्यां निर्मितं द्वैतम्। अर्थ: दो होने का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वाभ्यां) दो से, (निर्मितं) बना, (द्वैतम्) भेद।

• धर्माधर्म व्युत्पत्ति: धर्मश्च अधर्मश्च धर्माधर्मौ। अर्थ: पुण्य और पाप का युग्म। क्रमवार शब्दार्थ: (धर्म) पुण्य, (अधर्म) पाप, (धर्माधर्मौ) युग्म।

• नित्य व्युत्पत्ति: न विद्यते अंतो यस्य तत् नित्यम्। अर्थ: जो काल के प्रभाव से नष्ट न हो।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (अंतः) अंत, (नित्यम्) शाश्वत।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 9
• निमित्त व्युत्पत्ति: नियमेन मीयते इति निमित्तम्। अर्थ: कार्य का प्रेरक कारण। क्रमवार शब्दार्थ: (नियमेन) नियम से, (मीयते) मापना (सिद्ध करना), (निमित्तम्) कारण।

• निर्गुणत्व व्युत्पत्ति: निर्गुणानां भावः निर्गुणत्वम्। अर्थ: गुणों के अभाव की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुणानां) गुणों से रहित, (भावः) स्थिति, (निर्गुणत्वम्) गुणातीतता।

• निर्विकल्प व्युत्पत्ति: निर्गतः विकल्पो यस्मात्। अर्थ: संशय रहित ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतः) निकलना, (विकल्पः) संशय, (निर्विकल्प) निश्चयात्मक।

• निषेध व्युत्पत्ति: निषेधति इति निषेधः। अर्थ: असत्य का निराकरण। क्रमवार शब्दार्थ: (निषेधति) मना करना, (निषेधः) अस्वीकृति।

• पञ्चभूत व्युत्पत्ति: पञ्च भूतानि पञ्चभूतम्। अर्थ: सृष्टि के पाँच मूल तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (पञ्च) पाँच, (भूतानि) तत्व, (पञ्चभूत) पंचतत्व।

• परमार्थ व्युत्पत्ति: परमः च असौ अर्थश्च परमार्थः। अर्थ: सर्वोच्च सत्य। क्रमवार शब्दार्थ: (परमः) श्रेष्ठ, (अर्थः) सत्य, (परमार्थः) परम सत्य।

• परिच्छेद व्युत्पत्ति: परितः छिद्यते इति परिच्छेदः। अर्थ: सीमांकन। क्रमवार शब्दार्थ: (परितः) चारों ओर, (छिद्यते) काटना/सीमा करना, (परिच्छेदः) सीमा।

• परिणाम व्युत्पत्ति: परितः नमति इति परिणामः। अर्थ: रूपांतरण। क्रमवार शब्दार्थ: (परितः) पूर्णतः, (नमति) बदलना, (परिणामः) परिवर्तन।

• परोक्ष व्युत्पत्ति: अक्ष्णां परं वर्तते इति परोक्षम्। अर्थ: जो इन्द्रिय गोचर न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्ष्णां) इन्द्रियों के, (परं) परे, (परोक्षम्) अप्रत्यक्ष।

• प्रकृति व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण करोति इति प्रकृतिः। अर्थ: मूल शक्ति या कारण। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्षेण) श्रेष्ठता से, (करोति) करना, (प्रकृतिः) मूल कारण।

• प्रतिभास व्युत्पत्ति: प्रतिभासते इति प्रतिभासः। अर्थ: मिथ्या प्रतीति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभासते) चमकना/दिखना, (प्रतिभासः) आभास।

• प्रमा व्युत्पत्ति: प्रमीयते यथावत् सा प्रमा। अर्थ: यथार्थ ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमीयते) मापना/सिद्ध करना, (प्रमा) यथार्थ ज्ञान।

• प्रमाण व्युत्पत्ति: प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम्। अर्थ: ज्ञान का साधन। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमीयते) ज्ञान, (अनेन) इसके द्वारा, (प्रमाणम्) साधन।

• प्रलय व्युत्पत्ति: प्रलीयते इति प्रलयः। अर्थ: जगत का लय होना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रलीयते) लीन होना, (प्रलयः) विनाश।

• प्राण व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण अनिति इति प्राणः। अर्थ: जीवन शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्षेण) श्रेष्ठता से, (अनिति) श्वास लेना, (प्राणः) जीवन।

• फल व्युत्पत्ति: फलति इति फलम्। अर्थ: कर्म का परिणाम। क्रमवार शब्दार्थ: (फलति) देना, (फलम्) प्रतिफल।

• बन्ध व्युत्पत्ति: बध्यते इति बन्धः। अर्थ: संसार में जकड़न। क्रमवार शब्दार्थ: (बध्यते) बंधना, (बन्धः) बंधन।

• बुद्धि व्युत्पत्ति: बोधयति इति बुद्धिः। अर्थ: निश्चय करने वाली शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (बोधयति) ज्ञान कराना, (बुद्धिः) निश्चय।

• भाव व्युत्पत्ति: भवति इति भावः। अर्थ: होने की अवस्था या सत्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (भवति) होना, (भावः) सत्ता।

• अधिष्ठान (पुनरावृत्ति निवारण हेतु संदर्भ: वेदान्त परिभाषा) व्युत्पत्ति: अधितिष्ठति इति अधिष्ठानम्। अर्थ: जिस पर आरोपित वस्तु अपनी सत्ता प्राप्त करती है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर/आधार, (तिष्ठति) स्थित होना, (अधिष्ठानम्) आधार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 10
• अप्रामाण्य व्युत्पत्ति: न प्रमाणं अप्रामाण्यम्। अर्थ: ज्ञान की वह अवस्था जो यथार्थ नहीं है या जिसका बोध भ्रमपूर्ण है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (प्रमाणं) सत्य ज्ञान, (अप्रामाण्यम्) अवास्तविकता।

• असङ्ग व्युत्पत्ति: न संगः यस्य सः असङ्गः। अर्थ: जो किसी भी कर्म या गुण से लिप्त नहीं है।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (संगः) आसक्ति/संपर्क, (असङ्गः) निर्लिप्त।

• अक्रिय व्युत्पत्ति: न विद्यते क्रिया यस्मिन् सः अक्रियः। अर्थ: आत्मा का वह स्वरूप जो क्रिया रहित है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (क्रिया) कर्म, (अक्रियः) क्रियाशून्य।

• अद्वय व्युत्पत्ति: न द्वयम् अद्वयम्। अर्थ: जो दो से रहित, अर्थात एकमात्र अखण्ड सत्ता है।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (द्वयम्) दो/द्वैत, (अद्वयम्) एकत्व।

• अनृत व्युत्पत्ति: न ऋतं सत्यं यत्र तत् अनृतम्। अर्थ: जो सत्य नहीं है, वह मिथ्या संसार।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (ऋतं) सत्य, (अनृतम्) असत्य।

• उपक्रम व्युत्पत्ति: उपक्रमते इति उपक्रमः। अर्थ: किसी विषय का आरम्भ करना। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (क्रमते) चलना/आरम्भ, (उपक्रमः) आरम्भ।

• उपसंहार व्युत्पत्ति: उपसंहरति इति उपसंहारः। अर्थ: विषय का निष्कर्ष या समाप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) पास, (संहरति) समेटना, (उपसंहारः) निष्कर्ष।

• अमृतत्व व्युत्पत्ति: न मृतं यत्र तत् अमृतत्वम्। अर्थ: जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (मृतं) मरण, (अमृतत्वम्) अमरता।

• अद्वैतसिद्धि व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य सिद्धिः अद्वैतसिद्धिः। अर्थ: अद्वैत मत का तार्किक प्रतिपादन। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) एकत्व का, (सिद्धिः) प्रमाण/उपलब्धि, (अद्वैतसिद्धिः) स्थापना।

• अणु व्युत्पत्ति: अणति इति अणुः। अर्थ: अत्यंत सूक्ष्म तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (अणति) छोटा होना, (अणुः) सूक्ष्म।

• व्यापक व्युत्पत्ति: वि आप्नोति इति व्यापकः। अर्थ: जो सब ओर से व्याप्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष रूप से, (आप्नोति) व्याप्त होना, (व्यापकः) सर्वव्यापी।

• विभव व्युत्पत्ति: विशेषेण भवति इति विभवः। अर्थ: परम ऐश्वर्य या विभूति। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) विशेष, (भवति) होना/सत्ता, (विभवः) ऐश्वर्य।

• अनित्य व्युत्पत्ति: न नित्यम् इति अनित्यम्। अर्थ: जो काल की सीमा में बंधा है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (नित्यम्) शाश्वत, (अनित्यम्) नाशवान।

• नश्वर व्युत्पत्ति: नश्यति इति नश्वरः। अर्थ: जो नष्ट होने वाला है। क्रमवार शब्दार्थ: (नश्यति) नष्ट होना, (नश्वरः) विनाशी।

• आत्मनिष्ठ व्युत्पत्ति: आत्मनि निष्ठा यस्य सः आत्मनिष्ठः। अर्थ: जो आत्मा में ही स्थित है।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) स्वयं में, (निष्ठा) स्थिति, (आत्मनिष्ठः) आत्मस्थ।

• अहंग्रह व्युत्पत्ति: अहं ग्रहः इति अहंग्रहः। अर्थ: स्वयं को ब्रह्म मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (ग्रहः) ग्रहण/स्वीकार, (अहंग्रहः) आत्म-ध्यान।

• उत्क्रमण व्युत्पत्ति: उत्क्रामति इति उत्क्रमणम्। अर्थ: जीव का शरीर से बाहर निकलना। क्रमवार शब्दार्थ: (उत्) ऊपर/बाहर, (क्रामति) गमन, (उत्क्रमणम्) देह त्याग।

• उपाधिभेद व्युत्पत्ति: उपाधीनां भेदः उपाधिभेदः। अर्थ: सीमित करने वाले साधनों के कारण भिन्नता। क्रमवार शब्दार्थ: (उपाधीनां) सीमित साधनों के, (भेदः) अंतर, (उपाधिभेदः) भेद का कारण।

• एकात्मकता व्युत्पत्ति: एकः आत्मा यस्यां सा एकात्मकता। अर्थ: सबमें एक ही आत्मा होने का बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (एकः) एक, (आत्मा) चेतन, (एकात्मकता) अभेदता।

• औपाधिक व्युत्पत्ति: उपाधिना निर्वृत्तम औपाधिकम्। अर्थ: उपाधि से उत्पन्न। क्रमवार शब्दार्थ: (उपाधिना) साधन से, (निर्वृत्तम) उत्पन्न, (औपाधिकम्) सीमित।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 11
• कल्पित व्युत्पत्ति: कल्प्यते इति कल्पितम्। अर्थ: बुद्धि द्वारा माना गया। क्रमवार शब्दार्थ: (कल्प्यते) रचना करना, (कल्पितम्) कल्पनामय।

• कर्मकांड व्युत्पत्ति: कर्मणां काण्डम् कर्मकांडम्। अर्थ: वेदों का वह भाग जो अनुष्ठान बताता है। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्मणां) कार्यों का, (काण्डम्) भाग, (कर्मकांडम्) अनुष्ठान।

• ज्ञानकांड व्युत्पत्ति: ज्ञानानां काण्डम् ज्ञानकांडम्। अर्थ: वेदों का वह भाग जो ब्रह्म ज्ञान बताता है। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानानां) बोध का, (काण्डम्) भाग, (ज्ञानकांडम्) उपनिषद।

• क्रियाशक्ति व्युत्पत्ति: क्रियायाः शक्तिः क्रियाशक्तिः। अर्थ: कर्म करने की क्षमता।
क्रमवार शब्दार्थ: (क्रियायाः) कार्य की, (शक्तिः) सामर्थ्य, (क्रियाशक्तिः) कर्म-ऊर्जा।

• ज्ञानशक्ति व्युत्पत्ति: ज्ञानस्य शक्तिः ज्ञानशक्तिः। अर्थ: जानने की क्षमता। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानस्य) बोध की, (शक्तिः) सामर्थ्य, (ज्ञानशक्तिः) चेतना।

• गत्यर्थ व्युत्पत्ति: गतेः अर्थः यस्य सः गत्यर्थः। अर्थ: गति का प्रयोजन। क्रमवार शब्दार्थ: (गतेः) गमन के, (अर्थः) प्रयोजन, (गत्यर्थः) लक्ष्य।

• गुणसाम्य व्युत्पत्ति: गुणानां साम्यम् गुणसाम्यम्। अर्थ: गुणों की संतुलन अवस्था (प्रकृति)।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुणानां) गुणों का, (साम्यम्) समानता, (गुणसाम्यम्) संतुलन।

• गौणी व्युत्पत्ति: गुणानुरूपा वृत्तिः गौणी। अर्थ: जो मुख्य न होकर लक्षण पर आधारित है।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) गुण से, (वृत्तिः) शक्ति, (गौणी) अप्रधान।

• मुख्य व्युत्पत्ति: मुख्यं प्रधानम् इति मुख्यम्। अर्थ: जो सबसे महत्वपूर्ण है। क्रमवार शब्दार्थ: (मुख्यं) प्रथम, (प्रधानम्) श्रेष्ठ, (मुख्यम्) प्रधान।

• चित्स्वरूप व्युत्पत्ति: चित् स्वरूपं यस्य सः चित्स्वरूपः। अर्थ: जो चैतन्य स्वरूप है।
क्रमवार शब्दार्थ: (चित्) चेतना, (स्वरूपं) प्रकृति, (चित्स्वरूपः) चैतन्यमय।

• जडचेतन व्युत्पत्ति: जडश्च चेतनश्च जडचेतनौ। अर्थ: अचेतन और चेतन का समूह। क्रमवार शब्दार्थ: (जड) निर्जीव, (चेतन) सजीव, (जडचेतनौ) द्वंद्व।

• तत्पदार्थ व्युत्पत्ति: तत् इति पदस्य अर्थः तत्पदार्थः। अर्थ: 'तत्वमसि' में 'तत्' (ईश्वर) का अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (पदस्य) शब्द का, (अर्थः) भाव, (तत्पदार्थः) ईश्वर।

• त्वंपदार्थ व्युत्पत्ति: त्वम् इति पदस्य अर्थः त्वंपदार्थः। अर्थ: 'तत्वमसि' में 'त्वम्' (जीव) का अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (त्वम्) तुम, (पदस्य) शब्द का, (अर्थः) भाव, (त्वंपदार्थः) जीव।

• तदैक्य व्युत्पत्ति: तत् + एक्यम् तदैक्यम्। अर्थ: 'तत्' और 'त्वम्' का एक होना। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (एक्यम्) एकता, (तदैक्यम्) अभेद।

• दार्शनिक व्युत्पत्ति: दर्शनं अस्ति अस्य इति दार्शनिकः। अर्थ: जो सत्य को देखता है। क्रमवार शब्दार्थ: (दर्शनं) दृष्टि, (अस्ति) है, (दार्शनिकः) तत्वज्ञानी।

• दुःखनिवृत्ति व्युत्पत्ति: दुःखस्य निवृत्तिः दुःखनिवृत्तिः। अर्थ: क्लेशों का नाश। क्रमवार शब्दार्थ: (दुःखस्य) कष्ट का, (निवृत्तिः) अंत, (दुःखनिवृत्तिः) शांति।

• दृक् व्युत्पत्ति: दृशियते अनेन इति दृक्। अर्थ: द्रष्टा या साक्षी। क्रमवार शब्दार्थ: (दृशियते) देखना, (अनेन) साधन, (दृक्) द्रष्टा।

• दृश्य व्युत्पत्ति: दृश्यते इति दृश्यम्। अर्थ: जो देखा जाता है (जगत)। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (दृश्यम्) विषय।

• द्रष्टा व्युत्पत्ति: द्रष्टुं शीलम् अस्य इति द्रष्टा। अर्थ: देखने वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (द्रष्टुं) देखना, (शीलम्) स्वभाव, (द्रष्टा) दर्शक।

• द्वैतवाद व्युत्पत्ति: द्वैतस्य वादः द्वैतवादः। अर्थ: दो सत्यों (जीव-ईश्वर) को मानने वाला मत। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैतस्य) दो का, (वादः) मत, (द्वैतवादः) द्वैत सिद्धांत।

• धर्म व्युत्पत्ति: धारयति इति धर्मः। अर्थ: जो धारण करने योग्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (धारयति) धारण करना, (धर्मः) कर्तव्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 12
• ध्येय व्युत्पत्ति: ध्यातव्यं इति ध्येयम्। अर्थ: ध्यान के योग्य। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यातव्यं) ध्यान करना, (ध्येयम्) लक्ष्य।

• नञ् व्युत्पत्ति: न इति अर्थे प्रयुक्तम्। अर्थ: नकारात्मकता का सूचक। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अर्थे) अर्थ में, (नञ्) निषेध।

• नामरूप व्युत्पत्ति: नाम च रूपं च नामरूपम्। अर्थ: जगत के दो उपादान। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम) संज्ञा, (रूपं) आकृति, (नामरूपम्) दृश्य।

• निरवधिक व्युत्पत्ति: न अवधिरस्य इति निरवधिकः। अर्थ: सीमा रहित। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अवधिः) सीमा, (निरवधिकः) असीम।

• निर्लेप व्युत्पत्ति: निर्गतः लेपो यस्मात्। अर्थ: जो कर्म के लेप से मुक्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतः) निकलना, (लेपः) बंधन, (निर्लेप) निर्दोष।

• न्यायशास्त्र व्युत्पत्ति: न्यायस्य शास्त्रम् न्यायशास्त्रम्। अर्थ: तर्क विद्या। क्रमवार शब्दार्थ: (न्यायस्य) तर्क का, (शास्त्रम्) ग्रंथ, (न्यायशास्त्रम्) तर्कशास्त्र।

• पञ्चीकरण व्युत्पत्ति: पञ्चानां करणम् पञ्चीकरणम्। अर्थ: पांच तत्वों के मिश्रण की प्रक्रिया।
क्रमवार शब्दार्थ: (पञ्चानां) पाँचों का, (करणम्) निर्माण, (पञ्चीकरणम्) संमिश्रण।

• पुरुषार्थ व्युत्पत्ति: पुरुषस्य अर्थः पुरुषार्थः। अर्थ: मनुष्य के जीवन का लक्ष्य। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरुषस्य) मानव का, (अर्थः) प्रयोजन, (पुरुषार्थः) जीवन लक्ष्य।

• प्रपञ्च व्युत्पत्ति: प्रपञ्च्यते विस्तीर्यते इति प्रपञ्चः। अर्थ: नाम और रूप का वह विस्तार जो मिथ्या प्रतीत होता है, प्रपञ्च है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रपञ्च्यते) विस्तार करना, (विस्तीर्यते) फैलना, (प्रपञ्चः) संसार/माया जाल।

• अधिष्ठेय व्युत्पत्ति: अधिष्ठायते इति अधिष्ठेयम्। अर्थ: जो किसी आधार पर स्थित रहने योग्य वस्तु है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिष्ठायते) आधार पर स्थित होना, (अधिष्ठेयम्) आश्रित।

• अद्वितीया व्युत्पत्ति: न विद्यते द्वितीयं यस्यां सा अद्वितीया। अर्थ: वह सत्ता जिसके समान या अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (द्वितीयं) दूसरा, (अद्वितीया) अद्वितीय।

• अनादि व्युत्पत्ति: न विद्यते आदिः यस्य सः अनादिः। अर्थ: जिसका कोई आरम्भ या उत्पत्ति काल ज्ञात नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (आदिः) आरम्भ, (अनादिः) उत्पत्ति- रहित।

• अनन्त व्युत्पत्ति: न विद्यते अन्तो यस्य तत् अनन्तम्। अर्थ: जिसका कोई विस्तार का अंत नहीं है।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (अन्तो) सीमा, (अनन्तम्) असीम।

• अन्वयी व्युत्पत्ति: अन्वेति इति अन्वयी। अर्थ: जो कार्य-कारण में निरंतर व्याप्त रहता है।
क्रमवार शब्दार्थ: (अन्वेति) साथ चलना/व्याप्त रहना, (अन्वयी) अनुगामी।

• अपरिणामी व्युत्पत्ति: न विद्यते परिणामो यस्य सः अपरिणामी। अर्थ: जो स्वरूपतः कभी नहीं बदलता (कूटस्थ)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (परिणामो) परिवर्तन, (अपरिणामी) स्थिर।

• अभेद व्युत्पत्ति: न विद्यते भेदो यत्र तत् अभेदम्। अर्थ: जहाँ एकता के अतिरिक्त कुछ भी भिन्न नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (भेदो) अंतर, (अभेदम्) एकता।

• अभ्यास व्युत्पत्ति: पुनः पुनः अनुशीलनम् अभ्यासः। अर्थ: ज्ञान की प्राप्ति हेतु निरंतर किया जाने वाला प्रयास। क्रमवार शब्दार्थ: (पुनः) बार-बार, (अनुशीलनम्) चिंतन, (अभ्यासः) सतत प्रयत्न।

• अभिमान व्युत्पत्ति: अभिमन्यते इति अभिमानः। अर्थ: देह को स्वयं मानने का मिथ्या बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अभि) विशेष, (मन्यते) मानना, (अभिमानः) अहंकार।

• अविवेक व्युत्पत्ति: न विद्यते विवेकः यस्मिन् सः अविवेकः। अर्थ: नित्य-अनित्य का भेद न करने की अज्ञानता। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विवेकः) भेद-ज्ञान, (अविवेकः) मूढ़ता।

• अव्याकृत व्युत्पत्ति: न व्याक्रियते इति अव्याकृतम्। अर्थ: प्रकृति की वह अवस्था जो कार्य रूप में प्रकट नहीं हुई है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (व्याक्रियते) प्रकट होना, (अव्याकृतम्) मूल कारण।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 13
• अशुद्धि व्युत्पत्ति: न शुद्धिः अशुद्धिः। अर्थ: ज्ञान के मार्ग में दोषों का उपस्थित होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (शुद्धिः) पवित्रता, (अशुद्धिः) दोष।

• आश्रय व्युत्पत्ति: आश्रीयते अनेन इति आश्रयः। अर्थ: जिस पर कोई वस्तु टिकी है (अधिष्ठान)।
क्रमवार शब्दार्थ: (आश्रीयते) सहारा लेना, (अनेन) साधन, (आश्रयः) आधार।

• इन्द्रजाल व्युत्पत्ति: इन्द्रस्य (मायावी) जालं इन्द्रजालम्। अर्थ: वह माया जो देखने में सत्य लगे पर है नहीं। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रस्य) मायावी का, (जालम्) बंधन, (इन्द्रजालम्) जादू।

• उपपत्ति व्युत्पत्ति: उपपद्यते सिध्यति अनया इति उपपत्तिः। अर्थ: तर्क या युक्ति द्वारा किसी सिद्धांत की स्थापना। क्रमवार शब्दार्थ: (उपपद्यते) सिद्ध होना, (अनया) इसके द्वारा, (उपपत्तिः) युक्ति।

• उपलम्भ व्युत्पत्ति: उपलभ्यते अनेन इति उपलम्भः। अर्थ: ज्ञान की प्राप्ति या बोध का होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (उपलभ्यते) प्राप्त करना, (उपलम्भः) प्राप्ति।

• उच्छेद व्युत्पत्ति: उच्छिद्यते इति उच्छेदः। अर्थ: पूर्ण विनाश या सत्ता का अभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (उच्छिद्यते) काटना/नष्ट करना, (उच्छेदः) विनाश।

• ऋजु व्युत्पत्ति: आर्जवम् इति ऋजुः। अर्थ: सरल और सीधा स्वभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (आर्जवम्) सरलता, (ऋजुः) सीधा।

• ऐकात्म्य व्युत्पत्ति: एकः आत्मा भावः ऐकात्म्यम्। अर्थ: पूर्ण एकता का बोध (अद्वैत)। क्रमवार शब्दार्थ: (एकः) एक, (आत्मा) चेतन, (भावः) स्थिति, (ऐकात्म्यम्) अभेदता।

• कूट व्युत्पत्ति: कूटं समूहम् (कूटस्थ के संदर्भ में)। अर्थ: जो समूह या राशि के मध्य अपरिवर्तनीय है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटं) राशि, (कूट) स्थिर।

• कृत्स्न व्युत्पत्ति: कृत्स्नं समग्रम्। अर्थ: जो पूर्ण और अखंड है। क्रमवार शब्दार्थ: (कृत्स्नं) संपूर्ण, (समग्रम्) पूर्ण।

• केवल व्युत्पत्ति: केवलो शुद्धः। अर्थ: जो अन्य किसी से युक्त नहीं है (शुद्ध)। क्रमवार शब्दार्थ: (केवलो) अकेला/शुद्ध, (केवल) असंग।

• कार्यकारण व्युत्पत्ति: कार्यं च कारणं च कार्यकारणम्। अर्थ: उत्पत्ति और उत्पत्ति का मूल साधन। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्यं) परिणाम, (कारणम्) हेतु, (कार्यकारणम्) संबंध।

• क्षर व्युत्पत्ति: क्षरति इति क्षरः। अर्थ: जो परिवर्तनशील और नाशवान है। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षरति) नाश होना, (क्षरः) नश्वर।

• अक्षर व्युत्पत्ति: न क्षरति इति अक्षरम्। अर्थ: जो कभी नष्ट नहीं होता (ओम् या ब्रह्म)।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (क्षरति) नष्ट होना, (अक्षरम्) शाश्वत।

• गुणधर्म व्युत्पत्ति: गुणानां धर्मः गुणधर्मः। अर्थ: जो पदार्थ का स्वभाव या गुण है। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणानां) गुणों का, (धर्मः) स्वभाव, (गुणधर्मः) प्रकृति।

• गोचरता व्युत्पत्ति: गोचरस्य भावः गोचरता। अर्थ: इन्द्रियों के द्वारा अनुभव होने की स्थिति।
क्रमवार शब्दार्थ: (गोचरस्य) विषय होने का, (भावः) गुण, (गोचरता) अनुभवगम्यता।

• चराचर व्युत्पत्ति: चरं अचरं च चराचरम्। अर्थ: गतिशील और स्थिर समस्त विश्व। क्रमवार शब्दार्थ: (चरं) हिलने वाला, (अचरं) स्थिर, (चराचरम्) जगत।

• चिति व्युत्पत्ति: चितिः चैतन्यम्। अर्थ: चैतन्य शक्ति का स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (चितिः) चेतना, (चिति) ज्ञान।

• जनन व्युत्पत्ति: जनयति इति जननम्। अर्थ: उत्पत्ति की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (जनयति) उत्पन्न करना, (जननम्) जन्म।

• जिज्ञासा व्युत्पत्ति: ज्ञातुम् इच्छा जिज्ञासा। अर्थ: सत्य को जानने की तीव्र इच्छा। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञातुम्) जानना, (इच्छा) कामना, (जिज्ञासा) ज्ञान-पिपासा।

• जीवभाव व्युत्पत्ति: जीवस्य भावः जीवभावः। अर्थ: स्वयं को अल्पज्ञ मानने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवस्य) जीव का, (भावः) स्थिति, (जीवभावः) व्यष्टि चेतना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 14
• तद्गुण व्युत्पत्ति: तस्य गुणाः तद्गुणाः। अर्थ: किसी वस्तु के विशिष्ट गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (तस्य) उसके, (गुणाः) स्वभाव, (तद्गुणाः) गुणयुक्त।

• तर्क व्युत्पत्ति: तर्कयति इति तर्कः। अर्थ: विचार-विमर्श के द्वारा सत्य का निर्णय। क्रमवार शब्दार्थ: (तर्कयति) विचारना, (तर्कः) युक्ति।

• तटस्थ व्युत्पत्ति: तटे तिष्ठति इति तटस्थः। अर्थ: जो द्वंद्वों के बीच निर्लिप्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (तटे) किनारे पर, (तिष्ठति) स्थित, (तटस्थः) निर्लिप्त।

• त्रिवृत्करण व्युत्पत्ति: त्रयाणां वृत्तिकरणं त्रिवृत्करणम्। अर्थ: सूक्ष्म तत्वों के तीन भागों में मिश्रण की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रयाणां) तीन का, (वृत्ति) भाग, (करणम्) मिश्रण, (त्रिवृत्करणम्) सृष्टि निर्माण।

• दग्ध व्युत्पत्ति: दह्यते इति दग्धम्। अर्थ: जो ज्ञान रूपी अग्नि से जल चुका है (अहंकार आदि)।
क्रमवार शब्दार्थ: (दह्यते) जलना, (दग्धम्) भस्म।

• दृष्टान्त व्युत्पत्ति: दृश्यते अन्तः अनेन इति दृष्टान्तः। अर्थ: उदाहरण जिसके द्वारा सत्य स्पष्ट हो। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (अन्तः) अर्थ, (दृष्टान्तः) उदाहरण।

• द्वन्द्व व्युत्पत्ति: द्वयोः द्वन्द्वम्। अर्थ: परस्पर विरोधी जोड़े (सुख-दुःख, शीत-उष्ण)।
क्रमवार शब्दार्थ: (द्वयोः) दो का, (द्वन्द्वम्) जोड़ा।

• धर्मी व्युत्पत्ति: धर्मः अस्ति यस्य सः धर्मी। अर्थ: गुणों का आश्रय (आधार पदार्थ)। क्रमवार शब्दार्थ: (धर्मः) गुण, (अस्ति) है, (धर्मी) गुणी।

• नित्यत्व व्युत्पत्ति: नित्यस्य भावः नित्यत्वम्। अर्थ: शाश्वत होने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्यस्य) शाश्वत का, (भावः) गुण, (नित्यत्वम्) अमरता।

• निर्विकार व्युत्पत्ति: निर्गतः विकारो यस्मात्। अर्थ: जो किसी परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतः) निकलना, (विकारो) परिवर्तन, (निर्विकार) अपरिवर्तनीय।

• परमत व्युत्पत्ति: परस्य मतम् परमतम्। अर्थ: दूसरे का विचार या सिद्धांत। क्रमवार शब्दार्थ: (परस्य) दूसरे का, (मतम्) विचार, (परमतम्) अन्य सिद्धांत।

• प्रमाणप्रमेय व्युत्पत्ति: प्रमाणं च प्रमेयम् च। अर्थ: ज्ञान का साधन और उसका विषय। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाणं) साधन, (प्रमेयम्) विषय, (प्रमाणप्रमेय) ज्ञान-प्रक्रिया।

• प्रातिभासिक व्युत्पत्ति: प्रतिभासते इति प्रातिभासिकम्। अर्थ: वह सत्य जो केवल प्रतीति काल में है (जैसे स्वप्न)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभासते) प्रतीत होना, (प्रातिभासिकम्) आभासी।

• व्यवहार व्युत्पत्ति: वि अव हरति इति व्यवहारः। अर्थ: व्यावहारिक जीवन का लेन-देन। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (अव) नीचे/सामान्य, (हरति) करना, (व्यवहारः) आचरण।

• व्याप्ति व्युत्पत्ति: व्याप्नोति इति व्याप्तिः। अर्थ: जहाँ एक के साथ दूसरे का संबंध व्यापक हो। क्रमवार शब्दार्थ: (व्याप्नोति) फैलना, (व्याप्तिः) संबंध।

• संशय व्युत्पत्ति: संशयते इति संशयः। अर्थ: सत्य और असत्य के बीच का संदेह। क्रमवार शब्दार्थ: (संशयते) संदेह करना, (संशयः) भ्रम।

• साक्षिभाव व्युत्पत्ति: साक्षिणः भावः साक्षिभावः। अर्थ: दृष्टा बनकर रहने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षिणः) साक्षी का, (भावः) गुण, (साक्षिभावः) तटस्थता।

• आवरण व्युत्पत्ति: वृणोति इति आवरणम्। अर्थ: सत्य को ढकने वाली अविद्या की वह शक्ति, जो यथार्थ स्वरूप को छिपा लेती है। क्रमवार शब्दार्थ: (वृणोति) ढकना, (आवरणम्) आच्छादन।

• विक्षेप व्युत्पत्ति: विशेषेण क्षिप्यते इति विक्षेपः। अर्थ: सत्य के छिप जाने पर मिथ्या जगत् का प्रतीत होना या मन का चंचल होना। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर से, (क्षिप्यते) फेंकना/फैलाना, (विक्षेपः) फैलाव/भ्रम।

• तदाकार व्युत्पत्ति: तस्य आकारः तदाकारः। अर्थ: चित्त का विषय के अनुरूप हो जाना, या ब्रह्म के समान आकार ले लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (तस्य) उसके (ब्रह्म के), (आकारः) स्वरूप, (तदाकारः) तन्मय।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 15
• अबाधित व्युत्पत्ति: न बाध्यते इति अबाधितम्। अर्थ: वह सत्य जिसे कोई भी तर्क या काल खंडित न कर सके। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (बाध्यते) खंडन करना, (अबाधितम्) अखंड सत्य।

• धिषण व्युत्पत्ति: धिषणं बुद्धिविशेषः। अर्थ: बुद्धि का वह स्तर जो सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करता है। क्रमवार शब्दार्थ: (धिषणम्) बुद्धि, (विशेषः) तीक्ष्णता।

• असंगत्व व्युत्पत्ति: असंगस्य भावः असंगत्वम्। अर्थ: किसी भी धर्म या कर्म से अलिप्त रहने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (असंगस्य) निर्लिप्तता का, (भावः) गुण, (असंगत्वम्) अलगाव।

• आत्मनिष्ठता व्युत्पत्ति: आत्मनि निष्ठा अस्याः सा आत्मनिष्ठता। अर्थ: स्वयं के स्वरूप में निरंतर स्थिर रहने का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) आत्मा में, (निष्ठा) स्थिति, (आत्मनिष्ठता) आत्म-स्थिति।

• अनुस्यूत व्युत्पत्ति: अनु स्यूतं व्याप्तं इति अनुस्यूतम्। अर्थ: जो कार्य-कारणों में धागे के समान पिरोया हुआ है। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पीछे, (स्यूतं) सिला हुआ/व्याप्त, (अनुस्यूतम्) ओत-प्रोत।

• विशुद्ध व्युत्पत्ति: विगतः अशुद्धो यस्मात् तत् विशुद्धम्। अर्थ: जो मल-विक्षेपादि दोषों से रहित और निर्मल है। क्रमवार शब्दार्थ: (विगतः) दूर होना, (अशुद्धो) दोष, (विशुद्धम्) निर्मल।

• अन्यापोह व्युत्पत्ति: अन्यस्य अपोहः अन्यापोहः। अर्थ: अन्य वस्तुओं के निषेध के द्वारा सत्य का निर्धारण। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्यस्य) दूसरे का, (अपोहः) निषेध, (अन्यापोहः) निराकरण।

• अद्वयत्व व्युत्पत्ति: अद्वयस्य भावः अद्वयत्वम्। अर्थ: ब्रह्म के एकमात्र होने की अवस्था।
क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वयस्य) अभेद का, (भावः) गुण, (अद्वयत्वम्) अद्वितीयता।

• ब्रह्मज्ञ व्युत्पत्ति: ब्रह्म जानाति इति ब्रह्मज्ञः। अर्थ: जो ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप को जानता है। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (जानाति) जानना, (ब्रह्मज्ञः) ज्ञानी।

• जीवन्मुक्त व्युत्पत्ति: जीवन् मुक्तः इति जीवन्मुक्तः। अर्थ: जीते जी ही अविद्या के बंधनों से मुक्त होने वाला पुरुष। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवन्) जीवित रहते हुए, (मुक्तः) मुक्त, (जीवन्मुक्तः) मुक्त पुरुष।

• विदेहमुक्ति व्युत्पत्ति: विदेहे मुक्तिः विदेहमुक्तिः। अर्थ: शरीर के अंत के पश्चात होने वाली पूर्ण मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (विदेहे) देहहीन अवस्था में, (मुक्तिः) मोक्ष, (विदेहमुक्तिः) मरणोत्तर मोक्ष।

• अद्वयानन्द व्युत्पत्ति: अद्वयः च असौ आनन्दः। अर्थ: वह आनन्द जो अद्वितीय है और खंडित नहीं होता। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वयः) अभेद, (आनन्दः) सुख, (अद्वयानन्द) परम सुख।

• अविषय व्युत्पत्ति: न विद्यते विषयो यस्य सः अविषयः। अर्थ: जो इन्द्रियों का भोग्य न होकर केवल अनुभवगम्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (विषयो) भोग, (अविषयः) अतीन्द्रिय।

• आत्मसत्ता व्युत्पत्ति: आत्मनः सत्ता आत्मसत्ता। अर्थ: स्वयं ब्रह्म का अस्तित्व। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा की, (सत्ता) विद्यमानता, (आत्मसत्ता) ब्रह्म-भाव।

• निर्द्वन्द्व व्युत्पत्ति: निर्गतौ द्वन्द्वौ यस्मात् सः निर्द्वन्द्वः। अर्थ: सुख-दुःख आदि विरोधी युगलों से परे की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतौ) निकलना, (द्वन्द्वौ) जोड़े, (निर्द्वन्द्व) समत्व।

• निर्विषय व्युत्पत्ति: निर्गता विषया यस्मात् तत् निर्विषयम्। अर्थ: जहाँ विषयों का कोई अस्तित्व या आकर्षण नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गता) निकलना, (विषया) भोग्य वस्तुएं, (निर्विषय) विषयासक्ति-रहित।

• चिदाभास व्युत्पत्ति: चितः आभासः चिदाभासः। अर्थ: अविद्या में पड़ने वाला चैतन्य का प्रतिबिंब (जीव)। क्रमवार शब्दार्थ: (चितः) चेतना का, (आभासः) प्रतिबिंब, (चिदाभासः) जीव-चेतना।

• साक्षात् व्युत्पत्ति: अक्ष्णां समीपे वर्तते इति साक्षात्। अर्थ: जो परोक्ष न होकर अनुभव के निकट है। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्ष्णां) इन्द्रियों के, (समीपे) पास, (साक्षात्) प्रत्यक्ष।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 16
• अपरोक्षानुभूति व्युत्पत्ति: अपरोक्षा (प्रत्यक्ष) अनुभूतिः अपरोक्षानुभूतिः। अर्थ: ब्रह्म के प्रत्यक्ष अनुभव का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरोक्षा) प्रत्यक्ष, (अनुभूतिः) अनुभव, (अपरोक्षानुभूतिः) ज्ञान।

• आत्मानन्द व्युत्पत्ति: आत्मनः आनन्दः आत्मानन्दः। अर्थ: आत्मा में ही स्थित होकर मिलने वाला परम सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं का, (आनन्दः) सुख, (आत्मानन्द) आत्म-सुख।

• सच्चिदानन्द व्युत्पत्ति: सत् + चित् + आनन्दः सच्चिदानन्दः। अर्थ: ब्रह्म का स्वरूप जो नित्य, चेतन और आनन्दमय है। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) नित्य, (चित्) चेतना, (आनन्दः) सुख, (सच्चिदानन्द) ब्रह्म।

• निरुपाधि व्युत्पत्ति: न विद्यते उपाधिर्यस्य सः निरुपाधिः। अर्थ: जो किसी भी सीमित करने वाले साधन से मुक्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (उपाधिः) सीमा, (निरुपाधिः) असीम।

• सोपाधि व्युत्पत्ति: सह उपाधिना वर्तते इति सोपाधिः। अर्थ: जो उपाधि या सीमित साधनों के साथ प्रतीत होता है। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (उपाधिना) सीमा से, (सोपाधिः) ससीम।

• अद्वैतप्रक्रिया व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य प्रक्रिया अद्वैतप्रक्रिया। अर्थ: अद्वैत ज्ञान को समझाने की युक्ति या विधि। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) ब्रह्म-ज्ञान की, (प्रक्रिया) विधि, (अद्वैतप्रक्रिया) शास्त्र-मार्ग।

• आत्मविद्या व्युत्पत्ति: आत्मनः विद्या आत्मविद्या। अर्थ: वह ज्ञान जिससे आत्मा का बोध होता है। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं का, (विद्या) ज्ञान, (आत्मविद्या) ब्रह्मविद्या।

• अनात्मापह्नव व्युत्पत्ति: अनात्मनः अपह्नवः अनात्मापह्नवः। अर्थ: अनात्मा (देह आदि) का निषेध करने की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (अनात्मनः) जड़ पदार्थों का, (अपह्नवः) निषेध/हटाना, (अनात्मापह्नवः) निषेध-विधि।

• अनुवृत्ति व्युत्पत्ति: अनु वर्तते इति अनुवृत्तिः। अर्थ: ज्ञान के प्रवाह का निरंतर बने रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पीछे, (वर्तते) चलना, (अनुवृत्तिः) सातत्य।

• अवभास व्युत्पत्ति: अवभासते इति अवभासः। अर्थ: प्रकाश में आने वाली प्रतीति। क्रमवार शब्दार्थ: (अवभासते) चमकना, (अवभासः) प्रतीति।

• आत्मविद् व्युत्पत्ति: आत्मनः वेत्ता आत्मविद्। अर्थ: जो स्वयं (आत्मा) को जानने वाला है।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं का, (वेत्ता) ज्ञाता, (आत्मविद्) आत्मज्ञानी।

• अद्वैतपरता व्युत्पत्ति: अद्वैते परता अद्वैतपरता। अर्थ: जहाँ ब्रह्म-एकत्व ही मुख्य प्रतिपाद्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) ब्रह्म-ज्ञान में, (परता) तात्पर्य, (अद्वैतपरता) एकनिष्ठता।

• अन्तःस्थ व्युत्पत्ति: अन्तः तिष्ठति इति अन्तःस्थः। अर्थ: जो भीतर स्थित है (हृदय में स्थित आत्मा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (तिष्ठति) रहना, (अन्तःस्थः) अन्तर्यामी।

• अविनाश व्युत्पत्ति: न विद्यते विनाशो यस्य सः अविनाशः। अर्थ: जिसका कभी विनाश न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (विनाशो) अंत, (अविनाशः) अक्षय।

• अद्वैतनिष्ठ व्युत्पत्ति: अद्वैते निष्ठा यस्य सः अद्वैतनिष्ठः। अर्थ: जिसका एकमात्र लक्ष्य ब्रह्म-ज्ञान है। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) एकत्व में, (निष्ठा) स्थिति, (अद्वैतनिष्ठः) ब्रह्मपरायण।

• आत्मैकात्म्य व्युत्पत्ति: आत्मा च एकात्म्यं च। अर्थ: आत्मा और ब्रह्म के एक होने का ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) स्वयं, (एकात्म्यं) एकत्व, (आत्मैकात्म्य) अभेद-ज्ञान।

• निर्विशेष व्युत्पत्ति: निर्गता विशेषा यस्मात् तत् निर्विशेषम्। अर्थ: जहाँ गुणों का भेद नहीं है (शुद्ध स्वरूप)। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गता) निकलना, (विशेषा) भेद, (निर्विशेष) स्वरूपभूत।

• सविशेष व्युत्पत्ति: सह विशेषैः वर्तते इति सविशेषम्। अर्थ: जो गुणों और धर्मों के साथ प्रतीत होता है (सगुण ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (विशेषैः) गुणों के, (सविशेष) सोपाधिक।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 17
• अधिष्ठानसत्ता व्युत्पत्ति: अधिष्ठानस्य सत्ता अधिष्ठानसत्ता। अर्थ: आधारभूत सत्य की विद्यमानता। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिष्ठानस्य) सत्य की, (सत्ता) अस्तित्व, (अधिष्ठानसत्ता) मूल-सत्य।

• आत्मचेतना व्युत्पत्ति: आत्मनः चेतना आत्मचेतना। अर्थ: वह चैतन्य जो स्वयं आत्मा है। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा की, (चेतना) ज्ञान-शक्ति, (आत्मचेतना) चैतन्य।

• अनुभूत व्युत्पत्ति: अनुभूयते इति अनुभूतम्। अर्थ: जो अनुभव में आ चुका है। क्रमवार शब्दार्थ: (अनुभूयते) अनुभव करना, (अनुभूतम्) साक्षात्कृत।

• अद्वैतबोध व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य बोधः अद्वैतबोधः। अर्थ: ब्रह्म-एकत्व का यथार्थ ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (बोधः) ज्ञान, (अद्वैतबोधः) साक्षात्कार।

• अविद्यानिवृत्ति व्युत्पत्ति: अविद्यायाः निवृत्तिः अविद्यानिवृत्तिः। अर्थ: अज्ञान का पूरी तरह से मिट जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्यायाः) अज्ञान की, (निवृत्तिः) समाप्ति, (अविद्यानिवृत्तिः) ज्ञान-फल।

• आत्मस्वरूप व्युत्पत्ति: आत्मनः स्वरूपम् आत्मस्वरूपम्। अर्थ: आत्मा का वास्तविक लक्षण।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा का, (स्वरूपम्) लक्षण, (आत्मस्वरूपम्) यथार्थ।

• ब्रह्मविद्या व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः विद्या ब्रह्मविद्या। अर्थ: ब्रह्म को जानने वाली विद्या। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) परमात्मा की, (विद्या) ज्ञान, (ब्रह्मविद्या) परा-विद्या।

• आत्मपर व्युत्पत्ति: आत्मा परमं यस्य सः आत्मपरः। अर्थ: जिसे आत्मा ही सबसे प्रिय या श्रेष्ठ है। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) स्वयं, (परमं) श्रेष्ठ, (आत्मपरः) आत्मनिष्ठ।

• आनन्दमय व्युत्पत्ति: आनन्देन मयः आनन्दमयः। अर्थ: जो पूर्णतः आनन्द से व्याप्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्देन) सुख से, (मयः) भरा हुआ, (आनन्दमयः) कोश-विशेष।

• आत्मरति व्युत्पत्ति: आत्मनि रतिः आत्मरतिः। अर्थ: आत्मा में ही रमण करने का आनंद। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) आत्मा में, (रतिः) प्रेम/आनंद, (आत्मरतिः) आत्म-तृप्ति।

• ज्ञाननिष्ठ व्युत्पत्ति: ज्ञाने निष्ठा यस्य सः ज्ञाननिष्ठः। अर्थ: जो केवल ज्ञान में ही पूर्णतया स्थित है। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञाने) बोध में, (निष्ठा) स्थिति, (ज्ञाननिष्ठः) तत्त्वज्ञानी।

• अनात्मता व्युत्पत्ति: अनात्मनः भावः अनात्मता। अर्थ: आत्मा से भिन्न जड़ वस्तुओं का स्वभाव (नश्वरता)। क्रमवार शब्दार्थ: (अनात्मनः) जड़ पदार्थ का, (भावः) गुण, (अनात्मता) अनित्यता।

• अभाव व्युत्पत्ति: न भावः अभावः। अर्थ: सत्ता या वस्तु का न होना। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (भावः) अस्तित्व, (अभावः) शून्यता।

• अधिष्ठानत्व व्युत्पत्ति: अधिष्ठानस्य भावः अधिष्ठानत्वम्। अर्थ: आधार रूप होने का गुण।
क्रमवार शब्दार्थ: (अधिष्ठानस्य) आधार का, (भावः) धर्म, (अधिष्ठानत्वम्) आश्रयत्व।

• अध्यास व्युत्पत्ति: अधि उपरि आसः (प्रक्षेपः) अध्यासः। अर्थ: एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का भ्रमवश आरोप। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (आसः) आरोप/प्रक्षेप, (अध्यासः) भ्रम।

• अनवच्छिन्न व्युत्पत्ति: न अवच्छिन्नम् अनवच्छिन्नम्। अर्थ: जो किसी भी सीमा से बंधा नहीं है (पूर्ण)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अवच्छिन्नम्) खंडित/सीमित, (अनवच्छिन्नम्) अखंड।

• अनुमान व्युत्पत्ति: अनु पश्चात् मीयते इति अनुमानम्। अर्थ: ज्ञान के आधार पर तर्क द्वारा निकाला गया निष्कर्ष। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पश्चात, (मीयते) मापना (सिद्ध करना), (अनुमानम्) तर्क-ज्ञान।

• अपवाद व्युत्पत्ति: अपवदति (निषेधति) इति अपवादः। अर्थ: आरोप का निराकरण कर सत्य का बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (अप) दूर करना, (वदति) कहना/निषेध, (अपवादः) निषेध-विधि।

• अभेदानुभव व्युत्पत्ति: अभेदस्य अनुभवः अभेदानुभवः। अर्थ: ब्रह्म और आत्मा के एक होने का साक्षात् बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेदस्य) एकता का, (अनुभवः) साक्षात्कार, (अभेदानुभवः) एकत्व-बोध।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 18
• अभिधार्थ व्युत्पत्ति: अभिधया (शब्देन) अर्थः अभिधार्थः। अर्थ: शब्द का वाच्य या मुख्य अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (अभिधया) शब्द-शक्ति से, (अर्थः) तात्पर्य, (अभिधार्थः) वाच्य-अर्थ।

• अमृत व्युत्पत्ति: न म्रियते इति अमृतम्। अर्थ: जो नश्वर नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (म्रियते) मरना, (अमृतम्) अविनाशी।

• अर्थवाद व्युत्पत्ति: अर्थस्य वादः अर्थवादः। अर्थ: वेद का वह भाग जो किसी फल की प्रशंसा करता है। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थस्य) प्रयोजन का, (वादः) कथन, (अर्थवादः) प्रशंसा-वाक्य।

• अल्पज्ञता व्युत्पत्ति: अल्पं ज्ञानां यस्याः सा अल्पज्ञता। अर्थ: जीव का सीमित ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (अल्पं) थोड़ा, (ज्ञानां) ज्ञान, (अल्पज्ञता) सीमित-बुद्धि।

• आगम व्युत्पत्ति: आ समन्तात् गमयति (ज्ञापयति) इति आगमः। अर्थ: वेद या शास्त्र जो सत्य का ज्ञान कराए। क्रमवार शब्दार्थ: (आ) पूर्णतः, (गमयति) पहुँचाना/ज्ञान देना, (आगमः) शास्त्र।

• आकाङ्क्षित व्युत्पत्ति: आकाङ्क्षितं अपेक्षितम्। अर्थ: जो किसी अर्थ की पूर्णता के लिए अपेक्षित है। क्रमवार शब्दार्थ: (आकाङ्क्षितं) चाहना, (अपेक्षितम्) आवश्यक।

• आत्यन्तिक व्युत्पत्ति: अन्तस्य भावः आत्यन्तिकम्। अर्थ: जो पूर्ण और अंतिम है। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तस्य) अंत का, (भावः) स्थिति, (आत्यन्तिकम्) पूर्ण।

• आत्मत्व व्युत्पत्ति: आत्मनः भावः आत्मत्वम्। अर्थ: आत्मा होने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा का, (भावः) स्वरूप, (आत्मत्वम्) आत्म-भाव।

• आत्मबोध व्युत्पत्ति: आत्मनः बोधः आत्मबोधः। अर्थ: स्वयं के स्वरूप का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा का, (बोधः) ज्ञान, (आत्मबोधः) आत्म-साक्षात्कार।

• आधिभौतिक व्युत्पत्ति: अधि भूतेषु वर्तमानम् आधिभौतिकम्। अर्थ: जो प्राणियों या पदार्थ जनित है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर/आश्रित, (भूतेषु) प्राणियों में, (आधिभौतिकम्) भौतिक-दुःख।

• आधिदैविक व्युत्पत्ति: अधि देवेषु वर्तमानम् आधिदैविकम्। अर्थ: जो दैवीय शक्तियों से संबंधित है। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) आश्रित, (देवेषु) देवताओं पर, (आधिदैविकम्) दैवी।

• आध्यात्मिक व्युत्पत्ति: आत्मनि वर्तमानम् आध्यात्मिकम्। अर्थ: जो स्वयं से संबंधित (मन/देह) है। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) स्वयं में, (वर्तमानम्) स्थित, (आध्यात्मिकम्) आत्म-विषयक।

• आरम्भवाद व्युत्पत्ति: आरम्भस्य वादः आरम्भवादः। अर्थ: कारण से कार्य का नया उत्पन्न होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (आरम्भस्य) शुरुआत का, (वादः) सिद्धांत, (आरम्भवादः) न्याय-सिद्धांत।

• आवरणशक्ति व्युत्पत्ति: आवरणस्य शक्तिः आवरणशक्तिः। अर्थ: अविद्या की वह शक्ति जो सत्य को ढकती है। क्रमवार शब्दार्थ: (आवरणस्य) ढकने की, (शक्तिः) सामर्थ्य, (आवरणशक्तिः) अज्ञान-धर्म।

• आश्रयत्व व्युत्पत्ति: आश्रयस्य भावः आश्रयत्वम्। अर्थ: आधार होने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (आश्रयस्य) आधार का, (भावः) स्थिति, (आश्रयत्वम्) आधारता।

• इन्द्रियनिग्रह व्युत्पत्ति: इन्द्रियाणां निग्रहः इन्द्रियनिग्रहः। अर्थ: इन्द्रियों को विषयों से हटाकर रोकना। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रियाणां) इन्द्रियों का, (निग्रहः) नियंत्रण, (इन्द्रियनिग्रहः) दमन।

• इष्ट व्युत्पत्ति: इष्यते इति इष्टम्। अर्थ: जो कामना करने योग्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (इष्यते) चाहना, (इष्टम्) प्रिय/अभीष्ट।

• उत्पत्तिवाद व्युत्पत्ति: उत्पत्तेः वादः उत्पत्तिवादः। अर्थ: वस्तुओं की उत्पत्ति का विचार।
क्रमवार शब्दार्थ: (उत्पत्तेः) जन्म का, (वादः) मत, (उत्पत्तिवादः) उत्पत्ति-सिद्धांत।

• उपादानत्व व्युत्पत्ति: उपादानस्य भावः उपादानत्वम्। अर्थ: कारण रूप होने की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (उपादानस्य) मूल कारण का, (भावः) स्थिति, (उपादानत्वम्) कारणता।

• उपपन्न व्युत्पत्ति: उपपद्यते इति उपपन्नम्। अर्थ: जो युक्ति से सिद्ध है। क्रमवार शब्दार्थ: (उपपद्यते) सिद्ध होना, (उपपन्नम्) तर्कसंगत।

• उपमान व्युत्पत्ति: उपमीयते अनेन इति उपमानम्। अर्थ: सादृश्य के द्वारा ज्ञान का साधन। क्रमवार शब्दार्थ: (उपमीयते) तुलना करना, (अनेन) साधन, (उपमानम्) सादृश्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 19
• उपहित व्युत्पत्ति: उप धा (स्था) इति उपहितम्। अर्थ: जो उपाधि से युक्त या सीमित है। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (हित) रखा गया, (उपहितम्) सीमित।

• ऋतम्भरा व्युत्पत्ति: ऋतं भरति इति ऋतम्भरा। अर्थ: वह बुद्धि जो सत्य को धारण करती है। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋतं) सत्य, (भरति) धारण करना, (ऋतम्भरा) प्रज्ञा।

• एकरस व्युत्पत्ति: एकः रसः (स्वरूपं) यस्य सः एकरसः। अर्थ: जो अखंड और अपरिवर्तनीय है। क्रमवार शब्दार्थ: (एकः) एक, (रसः) स्वरूप, (एकरसः) अखंड।

• ऐहिक व्युत्पत्ति: इह (लोके) भवम् ऐहिकम्। अर्थ: इस लोक से संबंधित। क्रमवार शब्दार्थ: (इह) इस लोक में, (भवम्) उत्पन्न, (ऐहिकम्) लौकिक।

• ओपनिषद व्युत्पत्ति: उपनिषदि प्रोक्तम् ओपनिषदम्। अर्थ: जो उपनिषदों में कहा गया है। क्रमवार शब्दार्थ: (उपनिषदि) उपनिषद में, (प्रोक्तम्) कथित, (ओपनिषदम्) औपनिषदिक।

• कल्पना व्युत्पत्ति: कल्पयति इति कल्पना। अर्थ: मन द्वारा रची गई मानसिक रचना। क्रमवार शब्दार्थ: (कल्पयति) रचना करना, (कल्पना) विचार।

• कारणत्व व्युत्पत्ति: कारणस्य भावः कारणत्वम्। अर्थ: कार्य का मूल होने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (कारणस्य) हेतु का, (भावः) गुण, (कारणत्वम्) हेतुता।

• कार्यत्व व्युत्पत्ति: कार्यस्य भावः कार्यत्वम्। अर्थ: जन्य होने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्यस्य) परिणाम का, (भावः) धर्म, (कार्यत्वम्) कार्य-भाव।

• किञ्चित्त्व व्युत्पत्ति: किञ्चित् भावः किञ्चित्त्वम्। अर्थ: अल्पता की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (किञ्चित्) थोड़ा, (भावः) गुण, (किञ्चित्त्वम्) अल्पता।

• कूटस्थता व्युत्पत्ति: कूटस्थस्य भावः कूटस्थता। अर्थ: निर्विकार रहने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थस्य) स्थिर का, (भावः) स्थिति, (कूटस्थता) अपरिवर्तनीयता।

• कृतार्थ व्युत्पत्ति: कृतः अर्थः येन सः कृतार्थः। अर्थ: जिसका प्रयोजन (मोक्ष) सिद्ध हो गया है। क्रमवार शब्दार्थ: (कृतः) किया/सिद्ध, (अर्थः) प्रयोजन, (कृतार्थः) सफल।

• केवलाद्वैत व्युत्पत्ति: केवलम् अद्वैतम् केवलाद्वैतम्। अर्थ: शुद्ध अद्वैत सिद्धांत।
क्रमवार शब्दार्थ: (केवलम्) शुद्ध, (अद्वैतम्) एकत्व, (केवलाद्वैतम्) शुद्ध-अद्वैत।

• क्षय व्युत्पत्ति: क्षीयते इति क्षयः। अर्थ: नाश या विनाश। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षीयते) नष्ट होना, (क्षयः) अंत।

• गुणनिधि व्युत्पत्ति: गुणानां निधिः गुणनिधिः। अर्थ: जहाँ गुणों का भंडार है। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणानां) गुणों का, (निधिः) खजाना, (गुणनिधिः) सर्वगुण।

• गोचरत्व व्युत्पत्ति: गोचरस्य भावः गोचरत्वम्। अर्थ: इंद्रिय-गम्य होने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (गोचरस्य) विषय का, (भावः) स्थिति, (गोचरत्वम्) दृश्यता।

• ग्राह्य व्युत्पत्ति: गृह्यते इति ग्राह्यम्। अर्थ: जिसे ग्रहण किया जा सके। क्रमवार शब्दार्थ: (गृह्यते) स्वीकारना/जानना, (ग्राह्यम्) ज्ञेय।

• चैतन्य व्युत्पत्ति: चितः भावः चैतन्यम्। अर्थ: चेतना का स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (चितः) चेतना का, (भावः) स्वरूप, (चैतन्यम्) ज्ञान-तत्व।

• जगन्मिथ्यात्व व्युत्पत्ति: जगतः मिथ्यात्वम्। अर्थ: जगत के सत्य न होने का सिद्धांत। क्रमवार शब्दार्थ: (जगतः) संसार का, (मिथ्यात्वम्) असत्यता, (जगन्मिथ्यात्व) माया-सिद्धांत।

• जन्मादि व्युत्पत्ति: जन्म आदौ येषां तानि जन्मादि। अर्थ: उत्पत्ति आदि (सृष्टि-स्थिति-लय)।
क्रमवार शब्दार्थ: (जन्म) उत्पत्ति, (आदौ) आदि में, (जन्मादि) सृष्टि-क्रम।

• ज्ञाता व्युत्पत्ति: जानाति इति ज्ञाता। अर्थ: ज्ञान को प्राप्त करने वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (जानाति) जानना, (ज्ञाता) ज्ञाता-पुरुष।

• ज्ञानयोग व्युत्पत्ति: ज्ञानस्य योगः ज्ञानयोगः। अर्थ: ज्ञान के माध्यम से ब्रह्म प्राप्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानस्य) बोध का, (योगः) युक्ति, (ज्ञानयोगः) ज्ञान-मार्ग।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 20
• ज्ञानेन्द्रिय व्युत्पत्ति: ज्ञानेन इन्द्रियम् ज्ञानेन्द्रियम्। अर्थ: ज्ञान प्राप्त करने के साधन। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानेन) ज्ञान से, (इन्द्रियम्) साधन, (ज्ञानेन्द्रिय) ज्ञान-साधन।

• तदर्थ व्युत्पत्ति: तदर्थं यस्य तत्। अर्थ: उसके लिए या उस उद्देश्य हेतु। क्रमवार शब्दार्थ: (तद्) उसका, (अर्थम्) प्रयोजन, (तदर्थ) उद्देश्य।

• तन्मात्र व्युत्पत्ति: तत् एव मात्रं तन्मात्रम्। अर्थ: सूक्ष्म तत्वों के मूल अंश। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (मात्रं) तत्व, (तन्मात्रम्) सूक्ष्म-भूत।

• तप व्युत्पत्ति: तप्यते इति तपः। अर्थ: स्वयं को तपाकर शुद्ध करना। क्रमवार शब्दार्थ: (तप्यते) तपना, (तपः) साधना।

• तर्कसंगत व्युत्पत्ति: तर्केण संगतं तर्कसंगतम्। अर्थ: जो तर्क के अनुसार सही है। क्रमवार शब्दार्थ: (तर्केण) तर्क से, (संगतं) युक्त, (तर्कसंगतम्) युक्ति-युक्त।

• तत्त्वमसि व्युत्पत्ति: तत् त्वं असि। अर्थ: 'वह ब्रह्म तुम ही हो' (महावाक्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह ब्रह्म, (त्वं) तुम, (असि) हो।

• त्वम्पद व्युत्पत्ति: त्वं इति पदम् त्वम्पदम्। अर्थ: 'तुम' (जीव) वाचक शब्द। क्रमवार शब्दार्थ: (त्वं) तुम, (पदम्) शब्द, (त्वम्पदम्) जीव-वाचक।

• दार्शनिकता व्युत्पत्ति: दर्शनस्य भावः दार्शनिकता। अर्थ: सत्य की दृष्टि रखने का गुण।
क्रमवार शब्दार्थ: (दर्शनस्य) सत्य-दृष्टि का, (भावः) गुण, (दार्शनिकता) तत्व-दृष्टि।

• दुःख व्युत्पत्ति: दुष्टं खं (आकाश/इन्द्रिय) यस्मिन् तत् दुःखम्। अर्थ: जो मन को संताप दे।
क्रमवार शब्दार्थ: (दुष्टं) कष्टकारी, (खं) इन्द्रिय/स्थान, (दुःखम्) पीड़ा।

• दृश्यमान व्युत्पत्ति: दृश्यते इति दृश्यमानम्। अर्थ: जो दिखाई पड़ रहा है। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (दृश्यमानम्) प्रत्यक्ष।

• दृष्टि व्युत्पत्ति: दृश्यते अनेन इति दृष्टिः। अर्थ: देखने की शक्ति या दर्शन। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (अनेन) साधन, (दृष्टिः) दर्शन।

• द्रव्य व्युत्पत्ति: द्रवते (चलति/गुणवान्) इति द्रव्यम्। अर्थ: जो गुणों का आश्रय है। क्रमवार शब्दार्थ: (द्रवते) आधार होना, (द्रव्यम्) पदार्थ।

• द्वैतभाव व्युत्पत्ति: द्वैतस्य भावः द्वैतभावः। अर्थ: भेद की प्रतीति। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैतस्य) दो का, (भावः) अनुभव, (द्वैतभावः) भेदाभास।

• धर्मक्षेत्र व्युत्पत्ति: धर्मस्य क्षेत्रम् धर्मक्षेत्रम्। अर्थ: जहाँ धर्म का अनुष्ठान होता है (कुरुक्षेत्र/शरीर)। क्रमवार शब्दार्थ: (धर्मस्य) पुण्य का, (क्षेत्रम्) स्थान, (धर्मक्षेत्रम्) पवित्र भूमि।

• ध्यान व्युत्पत्ति: ध्यायति इति ध्यानम्। अर्थ: लक्ष्य पर चित्त का एकाग्र होना। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यायति) चिंतन करना, (ध्यानम्) एकाग्रता।

• नञर्थ व्युत्पत्ति: नञः अर्थः नञर्थः। अर्थ: निषेधवाचक अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (नञः) नहीं का, (अर्थः) भाव, (नञर्थः) निषेध।

• नित्यत्वम् व्युत्पत्ति: नित्यस्य भावः नित्यत्वम्। अर्थ: शाश्वतता का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्यस्य) शाश्वत का, (भावः) स्वरूप, (नित्यत्वम्) अमरत्व।

• निमित्तकारण व्युत्पत्ति: निमित्तं च तत् कारणं च। अर्थ: वह कारण जो कार्य को बनाने में प्रेरक है। क्रमवार शब्दार्थ: (निमित्तं) प्रेरक, (कारणम्) हेतु, (निमित्तकारण) कर्ता।

• निरतिशय व्युत्पत्ति: न विद्यते अतिशयो यस्मिन् सः निरतिशयः। अर्थ: जिससे बढ़कर कोई दूसरा न हो (पूर्ण)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (अतिशयो) अधिकता, (निरतिशय) सर्वोपरि।

• निर्गुणता व्युत्पत्ति: निर्गुणानां भावः निर्गुणता। अर्थ: गुणों से रहित होने की स्थिति।
क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुणानां) गुणों के अभाव का, (भावः) स्थिति, (निर्गुणता) गुणातीतता।

• निर्भेद व्युत्पत्ति: निर्गतौ भेदो यस्मात् तत् निर्भेदम्। अर्थ: भेद रहित एकत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतौ) निकलना, (भेदो) अंतर, (निर्भेदम्) अखंड।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 21
• निर्वाण व्युत्पत्ति: निर् वाति इति निर्वाणम्। अर्थ: वासनाओं का बुझ जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्) बाहर, (वाति) हवा/वासना, (निर्वाणम्) शांत।

• निश्चय व्युत्पत्ति: निश्वयति इति निश्चयः। अर्थ: बुद्धि का अंतिम निर्णय। क्रमवार शब्दार्थ: (निश्वयति) निश्चित करना, (निश्चयः) निर्णय।

• निष्काम व्युत्पत्ति: न कामो यस्य सः निष्कामः। अर्थ: फल की इच्छा रहित कर्म। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (कामो) इच्छा, (निष्कामः) निष्प्रयोजन (कर्म)।

• निष्क्रिय व्युत्पत्ति: निष् (निर्गतः) क्रिया यस्मात् सः निष्क्रियः। अर्थ: जो क्रिया रहित है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गतः) निकलना, (क्रिया) कर्म, (निष्क्रियः) अकर्ता।

• न्याय व्युत्पत्ति: नीयते (तर्कः) अनेन इति न्यायः। अर्थ: तर्क या तर्कशास्त्र का नियम।
क्रमवार शब्दार्थ: (नीयते) ले जाना/सिद्ध करना, (न्यायः) तर्क-सिद्धांत।

• परब्रह्मत्व व्युत्पत्ति: परब्रह्मणः भावः परब्रह्मत्वम्। अर्थ: परब्रह्म होने की सर्वोच्च अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (परब्रह्मणः) परमात्मा का, (भावः) स्वरूप, (परब्रह्मत्वम्) ईश-पद।

• परमार्थसत्य व्युत्पत्ति: परमार्थश्च असौ सत्यं च। अर्थ: सर्वोच्च और अंतिम सत्य। क्रमवार शब्दार्थ: (परमार्थ) सर्वोच्च, (सत्य) यथार्थ, (परमार्थसत्य) ब्रह्म।

• परमात्मा व्युत्पत्ति: परमः च असौ आत्मा परमात्मा। अर्थ: सर्वोच्च चैतन्य तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (परमः) श्रेष्ठ, (आत्मा) चैतन्य, (परमात्मा) ईश्वर।

• परार्थ व्युत्पत्ति: परस्य अर्थः परार्थः। अर्थ: दूसरे के प्रयोजन के लिए। क्रमवार शब्दार्थ: (परस्य) दूसरे का, (अर्थः) प्रयोजन, (परार्थः) पर-हित।

• परोक्षज्ञान व्युत्पत्ति: परोक्षस्य ज्ञानम् परोक्षज्ञानम्। अर्थ: शास्त्रों के आधार पर परोक्ष सत्य का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (परोक्षस्य) दूर के, (ज्ञानम्) बोध, (परोक्षज्ञानम्) शास्त्र-ज्ञान।

• परिणामवाद व्युत्पत्ति: परिणामस्य वादः परिणामवादः। अर्थ: कारण का ही रूपांतरित होना। क्रमवार शब्दार्थ: (परिणामस्य) रूपांतरण का, (वादः) मत, (परिणामवादः) सांख्य-सिद्धांत।

• प्रतिभास व्युत्पत्ति: प्रतिभासते इति प्रतिभासः। अर्थ: केवल ज्ञान के क्षण में होने वाली प्रतीति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभासते) चमकना, (प्रतिभासः) आभास।

• प्रपञ्चातीत व्युत्पत्ति: प्रपञ्चात् अतीतम्। अर्थ: जो संसार के विस्तार से परे है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रपञ्चात्) जगत से, (अतीतम्) पार, (प्रपञ्चातीत) गुणातीत।

• प्रमाणत्व व्युत्पत्ति: प्रमाणस्य भावः प्रमाणत्वम्। अर्थ: यथार्थ ज्ञान का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाणस्य) साक्ष्य का, (भावः) धर्म, (प्रमाणत्वम्) सत्यता।

• प्रमेयत्व व्युत्पत्ति: प्रमेयस्य भावः प्रमेयत्वम्। अर्थ: ज्ञान का विषय होने का गुण।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमेयस्य) विषय का, (भावः) धर्म, (प्रमेयत्वम्) ज्ञेयता।

• प्रलयकाल व्युत्पत्ति: प्रलयस्य कालः प्रलयकालः। अर्थ: विनाश का समय। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रलयस्य) लय का, (कालः) समय, (प्रलयकालः) विनाश-समय।

• प्रवृत्ति व्युत्पत्ति: प्र वर्तते इति प्रवृत्तिः। अर्थ: किसी कार्य में लगना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्र) प्रकृष्ट, (वर्तते) चलना, (प्रवृत्तिः) कार्य-शीलता।

• प्रशान्त व्युत्पत्ति: प्रकर्षण शांतम् प्रशान्तम्। अर्थ: जो पूर्ण रूप से शांत है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्षण) पूर्णतः, (शांतम्) स्थिर, (प्रशान्त) शांत।

• प्रातिभासिकसत्य व्युत्पत्ति: प्रातिभासिकं च तत् सत्यं च। अर्थ: जो केवल आभास में सत्य है।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रातिभासिकं) आभासी, (सत्य) यथार्थ, (प्रातिभासिकसत्य) माया-सत्य।

• प्राणशक्ति व्युत्पत्ति: प्राणस्य शक्तिः प्राणशक्तिः। अर्थ: जीवन की संचरण शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्राणस्य) जीवन का, (शक्तिः) सामर्थ्य, (प्राणशक्तिः) जीवनी-शक्ति।

• बुद्धिभेद व्युत्पत्ति: बुद्धेः भेदः बुद्धिभेदः। अर्थ: समझने में अंतर या संशय। क्रमवार शब्दार्थ: (बुद्धेः) समझ का, (भेदः) अंतर, (बुद्धिभेदः) मतभेद।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 22
• ब्रह्मभाव व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः भावः ब्रह्मभावः। अर्थ: ब्रह्म होने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) परमात्मा का, (भावः) स्वरूप, (ब्रह्मभावः) तदाकारता।

• ब्रह्मविद्या व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि विद्या ब्रह्मविद्या। अर्थ: ब्रह्म से संबंधित ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणि) ब्रह्म में, (विद्या) ज्ञान, (ब्रह्मविद्या) आत्मज्ञान।

• भ्रम व्युत्पत्ति: भ्रमति इति भ्रमः। अर्थ: वास्तविक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु का दिखना।
क्रमवार शब्दार्थ: (भ्रमति) भटकना, (भ्रमः) संशय/मिथ्या-ज्ञान।

• मननशक्ति व्युत्पत्ति: मननस्य शक्तिः मननशक्तिः। अर्थ: विचार करने की क्षमता। क्रमवार शब्दार्थ: (मननस्य) चिंतन का, (शक्तिः) सामर्थ्य, (मननशक्तिः) विचार-क्षमता।

• मायावी व्युत्पत्ति: माया अस्ति अस्य इति मायावी। अर्थ: जो माया से युक्त या माया को उत्पन्न करने वाला है। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) भ्रम, (अस्ति) है, (मायावी) भ्रमकारी।

• मिथ्यात्व व्युत्पत्ति: मिथ्या भावः मिथ्यात्वम्। अर्थ: असत्यता का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (मिथ्या) असत्य, (भावः) गुण, (मिथ्यात्वम्) अवास्तविकता।

• मुक्तिपद व्युत्पत्ति: मुक्तेः पदम् मुक्तिपदम्। अर्थ: मोक्ष का स्थान या अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (मुक्तेः) मोक्ष का, (पदम्) स्थान, (मुक्तिपदम्) निर्वाण।

• मुमुक्षा व्युत्पत्ति: मोक्षं इच्छति इति मुमुक्षा। अर्थ: मोक्ष पाने की तीव्र इच्छा। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्षं) मुक्ति, (इच्छति) चाहना, (मुमुक्षा) तड़प।

• मुमुक्षुता व्युत्पत्ति: मोक्षं इच्छति इति मुमुक्षुता। अर्थ: मोक्ष प्राप्ति की तीव्र इच्छा या तड़प। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्षं) मुक्ति, (इच्छति) चाहना, (मुमुक्षुता) तीव्र अभिलाषा।

• मूलकारण व्युत्पत्ति: मूलं कारणं यस्य तत् मूलकारणम्। अर्थ: सृष्टि का वह आधारभूत कारण जहाँ से सब उत्पन्न हुआ। क्रमवार शब्दार्थ: (मूलं) जड़, (कारणम्) हेतु, (मूलकारणम्) आधार।

• मैत्री व्युत्पत्ति: मित्रस्य भावः मैत्री। अर्थ: सब प्राणियों के प्रति मित्रवत प्रेम भाव।
क्रमवार शब्दार्थ: (मित्रस्य) मित्र का, (भावः) गुण, (मैत्री) सौहार्द।

• मोक्षोपाय व्युत्पत्ति: मोक्षस्य उपायः मोक्षोपायः। अर्थ: मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग या साधन। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्षस्य) मुक्ति का, (उपायः) मार्ग, (मोक्षोपायः) साधन।

• यथार्थता व्युत्पत्ति: यथार्थस्य भावः यथार्थता। अर्थ: वस्तु जैसी है उसे वैसा ही जानने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (यथार्थस्य) वास्तविक का, (भावः) गुण, (यथार्थता) सत्यता।

• योगारूढ व्युत्पत्ति: योगे आरूढः योगारूढः। अर्थ: जो ध्यान और समाधि में स्थित हो चुका है।
क्रमवार शब्दार्थ: (योगे) समाधि में, (आरूढः) स्थित, (योगारूढः) योगी।

• यत्न व्युत्पत्ति: यतते इति यत्नः। अर्थ: लक्ष्य प्राप्ति हेतु किया गया प्रयास। क्रमवार शब्दार्थ: (यतते) प्रयास करना, (यत्नः) पुरुषार्थ।

• युक्त व्युत्पत्ति: युज्यते इति युक्तः। अर्थ: जो ब्रह्म में लीन या स्थित है। क्रमवार शब्दार्थ: (युज्यते) जुड़ना, (युक्तः) समाहित।

• रज्जु व्युत्पत्ति: रज्यते (गुणैः) इति रज्जुः। अर्थ: रस्सी (सर्प के भ्रम का अधिष्ठान)।
क्रमवार शब्दार्थ: (रज्यते) बंधना, (रज्जुः) डोरी।

• रजस व्युत्पत्ति: रञ्जयति (चलं करोति) इति रजः। अर्थ: प्रकृति का वह गुण जो चंचलता और क्रियाशीलता देता है। क्रमवार शब्दार्थ: (रञ्जयति) रंगना/चलाना, (रजः) क्रिया-गुण।

• लक्षण व्युत्पत्ति: लक्षयति इति लक्षणम्। अर्थ: वह चिन्ह जो वस्तु के स्वरूप को स्पष्ट करे।
क्रमवार शब्दार्थ: (लक्षयति) संकेत करना, (लक्षणम्) चिह्न।

• लय व्युत्पत्ति: लीयते इति लयः। अर्थ: कारण में कार्य का समाहित हो जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (लीयते) विलीन होना, (लयः) विलय।

• लोकसंग्रह व्युत्पत्ति: लोकस्य संग्रहः लोकसंग्रहः। अर्थ: समाज को सन्मार्ग पर लगाने का कर्म।
क्रमवार शब्दार्थ: (लोकस्य) समाज का, (संग्रहः) कल्याण, (लोकसंग्रहः) लोक-हित।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 23
• लोभ व्युत्पत्ति: लुभ्यति इति लोभः। अर्थ: विषयों के प्रति अत्यधिक आसक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (लुभ्यति) लालच करना, (लोभः) तृष्णा।

• वाच्य व्युत्पत्ति: वदति इति वाच्यम्। अर्थ: शब्द द्वारा जो अर्थ कहा गया है। क्रमवार शब्दार्थ: (वदति) कहना, (वाच्यम्) अर्थ।

• वासनाक्षय व्युत्पत्ति: वासनायाः क्षयः वासनाक्षयः। अर्थ: मानसिक इच्छाओं और संस्कारों का अंत। क्रमवार शब्दार्थ: (वासनायाः) इच्छा का, (क्षयः) नाश, (वासनाक्षयः) वैराग्य।

• विकार व्युत्पत्ति: विशेषेण करोति इति विकारः। अर्थ: मूल स्वरूप में होने वाला परिवर्तन।
क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर, (करोति) करना, (विकारः) परिवर्तन।

• विज्ञान व्युत्पत्ति: विशेषेण ज्ञानं विज्ञानम्। अर्थ: विशेष या प्रायोगिक अनुभव का ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) विशेष, (ज्ञानं) बोध, (विज्ञानम्) प्रज्ञा।

• वितर्क व्युत्पत्ति: विशेषेण तर्कः वितर्कः। अर्थ: सही-गलत का गहराई से चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) सूक्ष्म, (तर्कः) विचार, (वितर्कः) विश्लेषण।

• विद्यमान व्युत्पत्ति: विद्यते इति विद्यमानम्। अर्थ: जो वर्तमान है (सत्ता युक्त)। क्रमवार शब्दार्थ: (विद्यते) होना, (विद्यमानम्) अस्तित्ववान्।

• विभक्ति व्युत्पत्ति: विभजति इति विभक्तिः। अर्थ: भेद या विभाजन। क्रमवार शब्दार्थ: (विभजति) बांटना, (विभक्तिः) विभाजन।

• विवेकख्याति व्युत्पत्ति: विवेकस्य ख्यातिः विवेकख्यातिः। अर्थ: आत्मा और अनात्मा का स्पष्ट ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेकस्य) भेद-ज्ञान की, (ख्यातिः) उपलब्धि, (विवेकख्यातिः) प्रज्ञा।

• विविदिषा व्युत्पत्ति: ज्ञातुम् इच्छा विविदिषा। अर्थ: जानने की जिज्ञासा। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञातुम्) जानना, (इच्छा) कामना, (विविदिषा) ज्ञान-पिपासा।

• विस्तार व्युत्पत्ति: वितरति इति विस्तारः। अर्थ: फैलाव या व्यापकता। क्रमवार शब्दार्थ: (वितरति) फैलाना, (विस्तारः) प्रसार।

• विषयाशक्ति व्युत्पत्ति: विषयाणाम् आसक्तिः विषयाशक्तिः। अर्थ: भोग्य पदार्थों में मन का लगा रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (विषयाणाम्) भोगों की, (आसक्तिः) लगाव, (विषयाशक्तिः) मोह।

• वीतराग व्युत्पत्ति: विगतः रागः यस्मात् सः वीतरागः। अर्थ: जिसकी आसक्ति मिट चुकी है। क्रमवार शब्दार्थ: (विगतः) दूर होना, (रागः) प्रेम/मोह, (वीतरागः) निर्लिप्त।

• वृत्ति व्युत्पत्ति: वर्तते इति वृत्तिः। अर्थ: मन का विषय के आकार में ढलना। क्रमवार शब्दार्थ: (वर्तते) व्यवहार, (वृत्तिः) मानसिक दशा।

• वेदान्त व्युत्पत्ति: वेदस्य अन्तः वेदान्तः। अर्थ: वेदों का अंतिम भाग (उपनिषद)। क्रमवार शब्दार्थ: (वेदस्य) ज्ञान का, (अन्तः) निष्कर्ष/भाग, (वेदान्तः) उपनिषद।

• व्यष्टि व्युत्पत्ति: व्यश्यति इति व्यष्टिः। अर्थ: एक इकाई या व्यक्ति (अहंकार)। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यश्यति) अलग करना, (व्यष्टिः) व्यष्टि-चेतना।

• समष्टि व्युत्पत्ति: समस्यति इति समष्टिः। अर्थ: सामूहिक या ब्रह्माण्ड रूप। क्रमवार शब्दार्थ: (समस्यति) जोड़ना, (समष्टिः) ब्रह्माण्ड-चेतना।

• व्यावहारिक व्युत्पत्ति: व्यवहारस्य भावः व्यावहारिकम्। अर्थ: जो सांसारिक लेन-देन में सत्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यवहारस्य) दैनिक जीवन का, (भावः) गुण, (व्यावहारिकम्) सांसारिक।

• शान्ति व्युत्पत्ति: शम्यति इति शान्तिः। अर्थ: द्वंद्वों का अभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (शम्यति) शांत होना, (शान्तिः) स्थिरता।

• शमदम व्युत्पत्ति: शमः च दमः च शमदमौ। अर्थ: मन और इंद्रियों का संयम। क्रमवार शब्दार्थ: (शमः) मन-संयम, (दमः) इन्द्रिय-संयम, (शमदमौ) साधना-द्वय।

• शरीरी व्युत्पत्ति: शरीरं अस्य अस्ति इति शरीरी। अर्थ: जो देह धारण करता है (आत्मा)। क्रमवार शब्दार्थ: (शरीरं) काया, (अस्य) इसकी, (शरीरी) देही।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 24
• शुभ व्युत्पत्ति: शोभते इति शुभम्। अर्थ: जो कल्याणकारी है। क्रमवार शब्दार्थ: (शोभते) सुशोभित होना, (शुभम्) मंगल।

• शुद्धि व्युत्पत्ति: शोधयति इति शुद्धिः। अर्थ: निर्मलता। क्रमवार शब्दार्थ: (शोधयति) साफ करना, (शुद्धिः) पवित्रता।

• श्रवणमनन व्युत्पत्ति: श्रवणं च मननं च। अर्थ: वेदान्त सुनना और चिंतन करना। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रवणं) सुनना, (मननं) सोचना, (श्रवणमनन) ज्ञान-साधन।

• श्रुति व्युत्पत्ति: श्रृणोति इति श्रुतिः। अर्थ: वेद (जो गुरु-शिष्य परंपरा में सुने गए)।
क्रमवार शब्दार्थ: (श्रृणोति) सुनना, (श्रुतिः) वेद।

• सगुणब्रह्म व्युत्पत्ति: सह गुणैः ब्रह्म सगुणब्रह्म। अर्थ: गुणों से युक्त उपास्य ईश्वर।
क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (गुणैः) गुणों के, (सगुणब्रह्म) ईश्वर।

• सत्यकाम व्युत्पत्ति: सत्यं कामो यस्य सः सत्यकामः। अर्थ: जिसका संकल्प कभी विफल न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्यं) अटल, (कामो) इच्छा, (सत्यकामः) संकल्पवान।

• सत्यसंकल्प व्युत्पत्ति: सत्यः संकल्पो यस्य सः सत्यसंकल्पः। अर्थ: जिसका निश्चय सत्य है।
क्रमवार शब्दार्थ: (सत्यः) अटल, (संकल्पो) विचार, (सत्यसंकल्पः) ईश्वर।

• सत्त्व व्युत्पत्ति: सत्वं प्रकाशकम्। अर्थ: प्रकाश और शांति का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्वं) शुद्धता, (प्रकाशकम्) ज्ञान-गुण।

• सत्संग व्युत्पत्ति: सतां (सज्जनानां) संगः सत्संगः। अर्थ: सज्जनों या सत्य का साथ। क्रमवार शब्दार्थ: (सतां) सज्जनों का, (संगः) साथ, (सत्संगः) उत्तम-संगति।

• सदाचार व्युत्पत्ति: सत् आचारः सदाचारः। अर्थ: उत्तम व्यवहार। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) अच्छा, (आचारः) व्यवहार, (सदाचारः) नैतिकता।

• समान व्युत्पत्ति: समं अनिति इति समानः। अर्थ: जो सबमें एक जैसा है। क्रमवार शब्दार्थ: (समं) एक समान, (अनिति) रहना, (समानः) तुल्य।

• समीप व्युत्पत्ति: समं आप्नोति इति समीपम्। अर्थ: निकटता। क्रमवार शब्दार्थ: (समं) बराबर, (आप्नोति) पहुँच, (समीपम्) पास।

• समुद्र व्युत्पत्ति: समं द्रवति इति समुद्रः। अर्थ: जहाँ सब नदियाँ लीन हो जाती हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (समं) एकत्र, (द्रवति) बहना, (समुद्रः) सागर।

• सर्वज्ञ व्युत्पत्ति: सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः। अर्थ: सब कुछ जानने वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्वं) सब, (जानाति) जानना, (सर्वज्ञः) ईश्वर।

• सर्वव्यापी व्युत्पत्ति: सर्वं व्याप्नोति इति सर्वव्यापी। अर्थ: जो सब जगह मौजूद है। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्वं) सबमें, (व्याप्नोति) फैला है, (सर्वव्यापी) सर्वत्र।

• सहज व्युत्पत्ति: सह जायते इति सहजम्। अर्थ: जो स्वभाव से ही प्राप्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (जायते) पैदा होना, (सहजम्) स्वाभाविक।

• साधर्म्य व्युत्पत्ति: समानः धर्मः साधर्म्यम्। अर्थ: गुणों की समानता। क्रमवार शब्दार्थ: (समानः) एक जैसा, (धर्मः) स्वभाव, (साधर्म्यम्) सदृशता।

• साधनचतुष्टय व्युत्पत्ति: साधनानां चतुष्टयं साधनचतुष्टयम्। अर्थ: मोक्ष के चार मुख्य साधन।
क्रमवार शब्दार्थ: (साधनानां) साधनों का, (चतुष्टयं) समूह चार, (साधनचतुष्टय) योग्यता।

• साधारण व्युत्पत्ति: समानं धर्मं धरति इति साधारणम्। अर्थ: जो सबके लिए सामान्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (समानं) बराबर, (धर्मं) स्वभाव, (साधारण) सामान्य।

• सार व्युत्पत्ति: सरति इति सारः। अर्थ: जो सबसे महत्वपूर्ण है। क्रमवार शब्दार्थ: (सरति) बहना/प्राप्त होना, (सारः) तत्व।

• सावशेष व्युत्पत्ति: सह अवशेषेण वर्तते इति सावशेषम्। अर्थ: जिसमें अभी कुछ शेष है। क्रमवार शब्दार्थ: (सह) साथ, (अवशेषेण) शेष के, (सावशेषम्) अधूरा।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 25
• साहस व्युत्पत्ति: सहसा क्रियते इति साहसम्। अर्थ: निडरता। क्रमवार शब्दार्थ: (सहसा) एकाएक, (क्रियते) करना, (साहसम्) पराक्रम।

• सिद्ध व्युत्पत्ति: सिध्यति इति सिद्धः। अर्थ: जो प्राप्त हो चुका है। क्रमवार शब्दार्थ: (सिध्यति) सफल होना, (सिद्धः) प्राप्त।

• सिद्धि व्युत्पत्ति: सिध्यते अनेन इति सिद्धिः। अर्थ: पूर्णता की प्राप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (सिध्यते) सिद्ध होना, (सिद्धिः) सफलता।

• सुख व्युत्पत्ति: शोभनं खं (आकाश) यस्मिन् तत् सुखम्। अर्थ: जो मन को आनंद दे। क्रमवार शब्दार्थ: (शोभनं) अच्छा, (खं) हृदय/इंद्रिय, (सुखम्) आनंद।

• सुषुप्ति व्युत्पत्ति: सुष्टु स्वपिति इति सुषुप्तिः। अर्थ: गहरी नींद की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (सुष्टु) अच्छी तरह, (स्वपिति) सोना, (सुषुप्तिः) गाढ़ निद्रा।

• सूक्ष्म व्युत्पत्ति: सीव्यति इति सूक्ष्मम्। अर्थ: जो स्थूल नहीं है (अदृश्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (सीव्यति) सिला होना (अदृश्य), (सूक्ष्मम्) अदृश्य।

• सृजन व्युत्पत्ति: स्रजति इति सृजनम्। अर्थ: निर्माण की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (स्रजति) रचना, (सृजनम्) उत्पत्ति।

• सृष्टि व्युत्पत्ति: स्रजति इति सृष्टिः। अर्थ: जगत का प्रकटीकरण। क्रमवार शब्दार्थ: (स्रजति) रचना, (सृष्टिः) विश्व।

• सेवन व्युत्पत्ति: सेवते इति सेवनम्। अर्थ: सेवा या अनुसरण करना। क्रमवार शब्दार्थ: (सेवते) सेवा, (सेवनम्) भक्ति।

• सौम्य व्युत्पत्ति: सोमस्य (चन्द्रस्य) भावः सौम्यम्। अर्थ: शांत और शीतल स्वभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (सोमस्य) चंद्रमा का, (भावः) गुण, (सौम्यम्) शांत।

• सौहार्द व्युत्पत्ति: सुहृदस्य भावः सौहार्दम्। अर्थ: मित्रता का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (सुहृदस्य) मित्र का, (भावः) गुण, (सौहार्दम्) प्रेम।

• स्तम्भ व्युत्पत्ति: स्तभ्नाति इति स्तम्भः। अर्थ: जो सहारा देता है। क्रमवार शब्दार्थ: (स्तभ्नाति) थामना, (स्तम्भः) आधार।

• स्थूल व्युत्पत्ति: स्थूलति इति स्थूलम्। अर्थ: जो दृश्य और ठोस है। क्रमवार शब्दार्थ: (स्थूलति) बड़ा होना, (स्थूलम्) भौतिक।

• स्थिरता व्युत्पत्ति: स्थितस्य भावः स्थिरता। अर्थ: अडिग रहने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (स्थितस्य) स्थिर का, (भावः) गुण, (स्थिरता) अचल।

• स्पर्श व्युत्पत्ति: स्पृशति इति स्पर्शः। अर्थ: छूने का अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (स्पृशति) छूना, (स्पर्शः) संवेदन।

• स्मरण व्युत्पत्ति: स्मरति इति स्मरणम्। अर्थ: याद करना। क्रमवार शब्दार्थ: (स्मरति) याद, (स्मरणम्) स्मृति।

• स्मृति व्युत्पत्ति: स्मरति इति स्मृतिः। अर्थ: अतीत का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (स्मरति) याद करना, (स्मृतिः) याद।

• स्वभाव व्युत्पत्ति: स्वस्य भावः स्वभावः। अर्थ: अपना निजी गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वस्य) अपना, (भावः) गुण, (स्वभावः) प्रकृति।

• स्वयं व्युत्पत्ति: स्वः अयम् इति स्वयम्। अर्थ: अपने आप। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वः) अपना, (अयम्) यह, (स्वयम्) स्वतः।

• स्वरूप व्युत्पत्ति: स्वस्य रूपम् स्वरूपम्। अर्थ: वास्तविक पहचान। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वस्य) अपनी, (रूपम्) पहचान, (स्वरूपम्) लक्षण।

• स्वर्ग व्युत्पत्ति: सु (सुखम्) गच्छति इति स्वर्गः। अर्थ: सुख का स्थान। क्रमवार शब्दार्थ: (सु) सुख, (गच्छति) जाना, (स्वर्गः) लोक।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 26
• स्वाध्याय व्युत्पत्ति: स्वस्य अध्ययनम् स्वाध्यायः। अर्थ: स्वयं के शास्त्रों का अध्ययन। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वस्य) अपना, (अध्ययनम्) पढ़ाई, (स्वाध्यायः) शास्त्र-पठन।

• स्वातंत्र्य व्युत्पत्ति: स्वतंत्रस्य भावः स्वातंत्र्यम्। अर्थ: मुक्ति या आजादी। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वतंत्रस्य) मुक्त का, (भावः) स्थिति, (स्वातंत्र्यम्) आजादी।

• स्वामी व्युत्पत्ति: स्वं अस्य अस्ति इति स्वामी। अर्थ: मालिक। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वं) अपना, (अस्ति) है, (स्वामी) मालिक।

• स्वार्थ व्युत्पत्ति: स्वस्य अर्थः स्वार्थः। अर्थ: अपना ही हित। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वस्य) अपना, (अर्थः) प्रयोजन, (स्वार्थः) आत्म-हित।

• हर्ष व्युत्पत्ति: हृष्यति इति हर्षः। अर्थ: प्रसन्नता। क्रमवार शब्दार्थ: (हृष्यति) खुश होना, (हर्षः) आनंद।

• हृदय व्युत्पत्ति: हृदि (हृदये) अस्ति इति हृदयम्। अर्थ: आत्मा का निवास स्थान। क्रमवार शब्दार्थ: (हृदि) हृदय में, (अस्ति) होना, (हृदयम्) अंतःकरण।

• हेतु व्युत्पत्ति: हिनोति (प्रेरयति) इति हेतुः। अर्थ: कारण। क्रमवार शब्दार्थ: (हिनोति) प्रेरित करना, (हेतुः) कारण।

• ज्ञेय व्युत्पत्ति: ज्ञातुं योग्यं ज्ञेयम्। अर्थ: जो जानने के योग्य है। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञातुं) जानना, (योग्यं) योग्य, (ज्ञेयम्) ज्ञान-विषय।

• अहं व्युत्पत्ति: अहं (अहंकार) अहम्। अर्थ: 'मैं' का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (अहं) अहंकार।

• अद्वैतभावा व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य भावः। अर्थ: अभेद का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (भावः) स्थिति।

• आत्मतृप्ति व्युत्पत्ति: आत्मनि तृप्तिः आत्मतृप्तिः। अर्थ: आत्मा में ही संतोष। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) आत्मा में, (तृप्तिः) संतोष।

• अनासक्त व्युत्पत्ति: न आसक्तः अनासक्तः। अर्थ: मोह रहित। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (आसक्तः) मोह, (अनासक्तः) विरक्त।

• अभिप्राय व्युत्पत्ति: अभिप्रैति इति अभिप्रायः। अर्थ: तात्पर्य। क्रमवार शब्दार्थ: (अभिप्रैति) कहना, (अभिप्रायः) मतलब।

• अमृतत्व व्युत्पत्ति: अमृतस्य भावः। अर्थ: अमरता। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृतस्य) अमर का, (भावः) अवस्था।

• आचार व्युत्पत्ति: आचरति इति आचारः। अर्थ: व्यवहार। क्रमवार शब्दार्थ: (आचरति) करना, (आचारः) आचरण।

• आत्माभिमान व्युत्पत्ति: आत्मनि अभिमानः। अर्थ: स्वयं में अहंकार। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) आत्मा में, (अभिमानः) घमंड।

• आपातः व्युत्पत्ति: आपतति इति आपातः। अर्थ: प्रथम दृष्टि या क्षण। क्रमवार शब्दार्थ: (आपतति) गिरना/आना, (आपातः) दृष्टि।

• इन्द्रियजन्य व्युत्पत्ति: इन्द्रियेभ्यः जातम्। अर्थ: इन्द्रियों से उत्पन्न। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रियेभ्यः) इन्द्रियों से, (जातम्) उत्पन्न।

• उपेक्षा व्युत्पत्ति: उपेक्षते इति उपेक्षा। अर्थ: ध्यान न देना। क्रमवार शब्दार्थ: (उपेक्षते) छोड़ना, (उपेक्षा) उदासीनता।

• ऋजुता व्युत्पत्ति: ऋजोः भावः ऋजुता। अर्थ: सरलता। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋजोः) सीधे का, (भावः) गुण।

• एकाकी व्युत्पत्ति: एकः अस्ति इति एकाकी। अर्थ: अकेला। क्रमवार शब्दार्थ: (एकः) एक, (अस्ति) है।

• ऐक्य व्युत्पत्ति: एकस्य भावः ऐक्यम्। अर्थ: एकता। क्रमवार शब्दार्थ: (एकस्य) एक का, (भावः) गुण।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 27
• औचित्य व्युत्पत्ति: उचितस्य भावः औचित्यम्। अर्थ: उपयुक्तता। क्रमवार शब्दार्थ: (उचितस्य) सही का, (भावः) गुण।

• ज्ञानप्रकाश व्युत्पत्ति: ज्ञानस्य प्रकाशः। अर्थ: बोध का उजाला। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानस्य) ज्ञान का, (प्रकाशः) उजाला।

• अमानित्व व्युत्पत्ति: अमानस्य (मानरहितस्य) भावः अमानित्वम्। अर्थ: अहंकार का अभाव या विनम्रता। क्रमवार शब्दार्थ: (अमान) अपमान/मान रहित, (भावः) गुण, (अमानित्वम्) नम्रता।

• अदम्भित्व व्युत्पत्ति: न दम्भः (दम्भराहित्यं) यस्य तत् अदम्भित्वम्। अर्थ: दिखावे का अभाव, सादगी। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (दम्भः) पाखंड/दिखावा, (अदम्भित्वम्) सरलता।

• अहिंसा व्युत्पत्ति: हिंसारहितः भावः अहिंसा। अर्थ: किसी भी प्राणी को मन, वचन या कर्म से कष्ट न पहुँचाना। क्रमवार शब्दार्थ: (हिंसा) कष्ट देना, (रहित) मुक्त, (अहिंसा) करुणा।

• क्षान्ति व्युत्पत्ति: क्षमते इति क्षान्तिः। अर्थ: प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मन की स्थिरता, क्षमाशीलता। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षमते) सहन करना, (क्षान्तिः) सहिष्णुता।

• आर्जव व्युत्पत्ति: ऋजोः (सरलस्य) भावः आर्जवम्। अर्थ: मन, वाणी और कर्म की एकरूपता, सरलता।
क्रमवार शब्दार्थ: (ऋजोः) सरल, (भावः) गुण, (आर्जवम्) स्पष्टता।

• आचार्य-उपासना व्युत्पत्ति: आचार्यस्य सेवा इति आचार्य-उपासना। अर्थ: गुरु की सेवा और उनके उपदेशों का अनुसरण। क्रमवार शब्दार्थ: (आचार्यस्य) गुरु की, (उपासना) सेवा, (आचार्य-उपासना) गुरु- भक्ति।

• शौच व्युत्पत्ति: शुचिः भावः शौचम्। अर्थ: आंतरिक और बाह्य पवित्रता। क्रमवार शब्दार्थ: (शुचिः) पवित्र, (भावः) स्थिति, (शौचम्) निर्मलता।

• स्थैर्य व्युत्पत्ति: स्थितस्य भावः स्थैर्यम्। अर्थ: आत्म-ज्ञान के मार्ग में अडिग रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (स्थितस्य) स्थिर, (भावः) गुण, (स्थैर्यम्) दृढ़ता।

• आत्मविनिग्रह व्युत्पत्ति: आत्मनः निग्रहः आत्मविनिग्रहः। अर्थ: स्वयं के मन और इंद्रियों को अपने वश में रखना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं का, (विनिग्रहः) संयम, (आत्मविनिग्रहः) नियंत्रण।

• इन्द्रियार्थवैराग्य व्युत्पत्ति: इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्। अर्थ: विषयों के प्रति अनासक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रियार्थेषु) विषयों में, (वैराग्यम्) अरुचि, (इन्द्रियार्थवैराग्य) वैराग्य।

• अनहंकार व्युत्पत्ति: न अहंकारः यस्य सः अनहंकारः। अर्थ: 'मैं' और 'मेरे' के भाव से मुक्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अहंकारः) अहम्, (अनहंकारः) निरहंकार।

• दुःख-दोषानुदर्शन व्युत्पत्ति: दुःखदोषेषु अनुदर्शनम्। अर्थ: जन्म, मृत्यु, रोग आदि में दुखों के दोषों को बार-बार देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (दुःख) कष्ट, (दोष) अवगुण, (अनुदर्शनम्) विचार करना।

• असक्ति व्युत्पत्ति: न आसक्तिः असक्तिः। अर्थ: सांसारिक पदार्थों में लगाव न होना। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (आसक्तिः) लगाव, (असक्तिः) अनासक्ति।

• अनभिष्वंग व्युत्पत्ति: न अभिष्वंगः (अत्यंत मोहः) यस्य तत्। अर्थ: पुत्र, पत्नी, घर आदि में अति-लगाव का न होना। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अभिष्वंगः) मोह, (अनभिष्वंगः) निर्मोह।

• चित्तसमाधान व्युत्पत्ति: चित्तस्य समाधानम्। अर्थ: अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में मन का संतुलित रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्तस्य) मन का, (समाधानम्) संतुलन, (चित्तसमाधान) समता।

• अनन्ययोग व्युत्पत्ति: न अन्यः योगः अनन्ययोगः। अर्थ: परमात्मा के अतिरिक्त किसी और की कामना न करना। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अन्यः) दूसरा, (योगः) जुड़ाव, (अनन्ययोगः) निष्काम-भक्ति।

• विविक्तदेशसेवित्व व्युत्पत्ति: विविक्तदेशस्य सेवनम्। अर्थ: एकांत और पवित्र स्थानों पर रहने की प्रवृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (विविक्त) एकांत, (देश) स्थान, (सेवित्व) रहना।

• अरति व्युत्पत्ति: न रतिः (प्रीतिः) अरतिः। अर्थ: सांसारिक जनों की भीड़ में मन का न लगना।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (रतिः) लगाव, (अरतिः) उदासीनता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 28
• अध्यात्मज्ञाननित्यत्व व्युत्पत्ति: अध्यात्मज्ञाने नित्यत्वम्। अर्थ: आत्म-ज्ञान में निरंतर लगे रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्मज्ञाने) आत्म-बोध में, (नित्यत्वम्) निरंतरता।

• तत्त्वज्ञानार्थदर्शन व्युत्पत्ति: तत्त्वज्ञानस्य अर्थस्य दर्शनम्। अर्थ: यथार्थ सत्य को जानने की निरंतर दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्वज्ञान) सत्य, (अर्थ) प्रयोजन, (दर्शनम्) देखना।

• अमृता व्युत्पत्ति: न मरणं यस्याः सा अमृता। अर्थ: अविनाशी ब्रह्म-विद्या। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (मरणं) विनाश, (अमृता) अमर।

• अन्वय व्युत्पत्ति: अनु (पश्चात्) एति (गच्छति) इति अन्वयः। अर्थ: जो हर अवस्था में मौजूद रहे (जैसे सोने में आभूषण)। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) निरंतर, (एति) साथ रहना, (अन्वयः) संबंध।

• व्यतिरेक व्युत्पत्ति: वि (विशेषेण) अतिरेकः व्यतिरेकः। अर्थ: जो न रहने पर भी मूल तत्व बना रहे (जैसे आभूषण न होने पर भी सोना रहता है)। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (अतिरेकः) अलग करना, (व्यतिरेकः) निषेध-विधि।

• अध्यारोप व्युत्पत्ति: अध्यस्यते (आरोप्यते) इति अध्यारोपः। अर्थ: जो है नहीं, उस पर वह मान लेना (रस्सी पर साँप)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (आरोप) भ्रम, (अध्यारोपः) प्रक्षेप।

• अखण्ड व्युत्पत्ति: न खण्डं यस्य तत् अखण्डम्। अर्थ: जो कभी खंडित न हो, सर्वव्यापी। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (खण्डम्) टुकड़ा, (अखण्डम्) पूर्ण।

• अनन्त व्युत्पत्ति: न अन्तः यस्य सः अनन्तः। अर्थ: जिसकी कोई सीमा न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अन्तः) अंत, (अनन्तः) असीम।

• अहं-ब्रह्मास्मि व्युत्पत्ति: अहं ब्रह्म अस्मि। अर्थ: "मैं ही ब्रह्म हूँ" (महावाक्य)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (ब्रह्म) परमात्मा, (अस्मि) हूँ।

• सर्वं खल्विदं ब्रह्म व्युत्पत्ति: सर्वं खलु इदं ब्रह्म। अर्थ: यह सब कुछ निश्चय ही ब्रह्म है।
क्रमवार शब्दार्थ: (सर्वं) सब कुछ, (खलु) निश्चय, (इदं) यह, (ब्रह्म) परमात्मा।

• अयमात्मा ब्रह्म व्युत्पत्ति: अयम् आत्मा ब्रह्म। अर्थ: यह आत्मा ही ब्रह्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (अयम्) यह, (आत्मा) स्वयं, (ब्रह्म) परमात्मा।

• प्रज्ञानं ब्रह्म व्युत्पत्ति: प्रज्ञानं (चेतना) ब्रह्म। अर्थ: शुद्ध चैतन्य ही ब्रह्म है।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञानं) चेतना, (ब्रह्म) परमात्मा।

• विशिष्टाद्वैत व्युत्पत्ति: विशिष्टं च तत् अद्वैतम्। अर्थ: विशिष्ट गुणों से युक्त एकत्व का सिद्धांत (रामानुजाचार्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (विशिष्टं) गुणयुक्त, (अद्वैतम्) एकता, (विशिष्टाद्वैत) दर्शन।

• शुद्धाद्वैत व्युत्पत्ति: शुद्धं च तत् अद्वैतम्। अर्थ: बिना माया के प्रभाव वाला शुद्ध एकत्व (वल्लभाचार्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (शुद्धं) निर्मल, (अद्वैतम्) एकत्व, (शुद्धाद्वैत) मत।

• अविद्यमान व्युत्पत्ति: न विद्यते इति अविद्यमानम्। अर्थ: जो सत्य नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (अविद्यमानम्) असत्य।

• आभास व्युत्पत्ति: आभासते इति आभासः। अर्थ: जो सत्य जैसा दिखे पर हो नहीं। क्रमवार शब्दार्थ: (आभासते) चमकना, (आभासः) प्रतीति।

• अविकारी व्युत्पत्ति: न विकारः यस्य सः अविकारी। अर्थ: जो कभी बदलता नहीं। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विकारः) परिवर्तन, (अविकारी) स्थिर।

• अनन्यत्व व्युत्पत्ति: अनन्यस्य भावः अनन्यत्वम्। अर्थ: दूसरा कोई न होने का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्यस्य) एक का, (भावः) गुण, (अनन्यत्वम्) एकता।

• अमृतमयी व्युत्पत्ति: अमृतेन मयी (व्याप्ता) अमृतामयी। अर्थ: जो अमरता से भरी है। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृतेन) अमरता से, (मयी) पूर्ण, (अमृतमयी) अक्षय।

• आत्मवत् व्युत्पत्ति: आत्मा इव आत्मवत्। अर्थ: स्वयं के समान। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) स्वयं, (इव) समान, (आत्मवत्) तुल्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 29
• अद्वय व्युत्पत्ति: न द्वयं यस्मिन् तत् अद्वयम्। अर्थ: जिसमें दो का भेद न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (द्वयं) दो, (अद्वयम्) अद्वितीय।

• आश्रय व्युत्पत्ति: आश्रीयते इति आश्रयः। अर्थ: आधार। क्रमवार शब्दार्थ: (आश्र्रीयते) सहारा लेना, (आश्रयः) आधार।

• अनुराग व्युत्पत्ति: अनु रज्यते इति अनुरागः। अर्थ: तीव्र प्रेम। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) पश्चात, (रज्यते) रंगना, (अनुरागः) प्रेम।

• अन्तर्ज्ञान व्युत्पत्ति: अन्तः ज्ञानम्। अर्थ: भीतर का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (ज्ञानम्) बोध, (अन्तर्ज्ञान) आत्मबोध।

• अनिवार्य व्युत्पत्ति: न निवार्यते इति अनिवार्यम्। अर्थ: जो आवश्यक है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (निवार्यते) रोकना, (अनिवार्य) आवश्यक।

• अपूर्व व्युत्पत्ति: न पूर्वं यस्य तत् अपूर्वम्। अर्थ: जो अद्वितीय है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (पूर्वं) पहले का, (अपूर्वम्) अद्वितीय।

• अगम्य व्युत्पत्ति: न गम्यते (प्राप्यते) इति अगम्यम्। अर्थ: जहाँ तक पहुँच न हो (बुद्धि से परे)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (गम्यते) जाना, (अगम्यम्) अतीन्द्रिय।

• अमेय व्युत्पत्ति: न मीयते (माप्यते) इति अमेयम्। अर्थ: जो मापने योग्य नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (मीयते) मापना, (अमेयम्) असीम।

• अज्ञ व्युत्पत्ति: न जानाति इति अज्ञः। अर्थ: जिसे ज्ञान नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (जानाति) जानना, (अज्ञः) अज्ञानी।

• अन्तःकरण व्युत्पत्ति: अन्तः करणं (साधनं) यस्य तत्। अर्थ: मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का समूह।
क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (करणं) साधन, (अन्तःकरण) मन।

• अप्रतिहत व्युत्पत्ति: न प्रतिहतं यस्य तत्। अर्थ: जिसे कोई रोक न सके। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (प्रतिहतं) रुकावट, (अप्रतिहत) निर्बाध।

• अमृतत्व व्युत्पत्ति: अमृतस्य भावः अमृतत्वम्। अर्थ: मोक्ष या अमरता की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृतस्य) अमर का, (भावः) स्थिति, (अमृतत्वम्) शाश्वतता।

• अविद्या व्युत्पत्ति: न विद्यते (ज्ञानं) यस्यां सा अविद्या। अर्थ: यथार्थ ज्ञान का अभाव, जो ब्रह्म को संसार के रूप में दिखाती है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) ज्ञान होना, (अविद्या) अज्ञान।

• अधिष्ठान व्युत्पत्ति: अधि तिष्ठति इति अधिष्ठानम्। अर्थ: वह आधार जिस पर मिथ्या आरोपित होता है (जैसे रस्सी पर सर्प)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (तिष्ठति) स्थित होना, (अधिष्ठानम्) आश्रय।

• अन्तर्यामी व्युत्पत्ति: अन्तः यमयति (नियच्छति) इति अन्तर्यामी। अर्थ: जो भीतर रहकर सब प्राणियों को नियंत्रित करता है (ईश्वर)। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (यमयति) नियमन करना, (अन्तर्यामी) नियंता।

• अपौरुषेय व्युत्पत्ति: न पौरुषेयं (मानवकृतं) यस्य तत् अपौरुषेयम्। अर्थ: जो किसी मनुष्य द्वारा रचित न हो (वेद)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (पौरुषेयं) पुरुष कृत, (अपौरुषेयम्) ईश्वरीय।

• अवान्तर व्युत्पत्ति: अवान्तरं (मध्यवर्ती) इति। अर्थ: बीच का या गौण (जैसे अवान्तर वाक्य)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अव) नीचे/मध्य, (अन्तरम्) भेद, (अवान्तर) गौण।

• अद्वैत-साधना व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य साधना अद्वैत-साधना। अर्थ: ब्रह्म और आत्मा की एकता का अभ्यास। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (साधना) अभ्यास, (अद्वैत-साधना) ज्ञान-योग।

• अहंकार-निवृत्ति व्युत्पत्ति: अहंकारस्य निवृत्तिः। अर्थ: 'मैं' की भावना का पूर्ण विलय।
क्रमवार शब्दार्थ: (अहंकारस्य) अहम् का, (निवृत्तिः) समाप्ति, (अहंकार-निवृत्ति) अकर्ता-भाव।

• अनुकम्पा व्युत्पत्ति: अनु (पश्चात्) कम्पते (द्रवति) इति अनुकम्पा। अर्थ: करुणा या दया का भाव।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) सादृश्य, (कम्पते) द्रवित होना, (अनुकम्पा) कृपा।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 30
• अनात्म-बोध व्युत्पत्ति: अनात्मनः बोधः अनात्म-बोधः। अर्थ: देह आदि के जड़ होने का ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनात्मनः) जड़ पदार्थों का, (बोधः) ज्ञान, (अनात्म-बोध) विवेक।

• अधिभूत व्युत्पत्ति: अधि भूतेषु वर्तमानम्। अर्थ: भौतिक जगत का परिवर्तनशील स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) संबंधित, (भूतेषु) प्राणियों/पदार्थों से, (अधिभूत) भौतिक।

• अधिदैव व्युत्पत्ति: अधि देवेषु वर्तमानम्। अर्थ: ब्रह्माण्ड की नियामक दैवीय शक्तियाँ।
क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) संबंधित, (देवेषु) देवताओं से, (अधिदैव) दैविक।

• अधियज्ञ व्युत्पत्ति: अधि यज्ञे वर्तमानम्। अर्थ: शरीर में स्थित आत्मा का यज्ञ रूप। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) संबंधित, (यज्ञे) यज्ञ में, (अधियज्ञ) आत्म-यज्ञ।

• अभेद व्युत्पत्ति: न भेदः यस्मिन् तत् अभेदम्। अर्थ: जहाँ कोई अंतर न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (भेदः) अंतर, (अभेद) एकता।

• अभ्यास व्युत्पत्ति: पुनः पुनः यतनं अभ्यासः। अर्थ: बार-बार किया गया प्रयत्न। क्रमवार शब्दार्थ: (पुनः) फिर, (यतनं) प्रयास, (अभ्यासः) साधना।

• अभिमान व्युत्पत्ति: अभि मन्यते इति अभिमानः। अर्थ: स्वयं के प्रति मिथ्या गर्व। क्रमवार शब्दार्थ: (अभि) अधिक, (मन्यते) मानना, (अभिमानः) अहंकार।

• अमृत-पद व्युत्पत्ति: अमृतस्य पदम्। अर्थ: मोक्ष की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृतस्य) अमरता का, (पदम्) स्थान/स्थिति, (अमृत-पद) निर्वाण।

• अद्वय-ज्ञान व्युत्पत्ति: अद्वयस्य ज्ञानम्। अर्थ: एकमात्र सत्य का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वयस्य) अभेद का, (ज्ञानम्) बोध, (अद्वय-ज्ञान) पूर्णता।

• अन्तःस्थ व्युत्पत्ति: अन्तः तिष्ठति इति। अर्थ: भीतर विद्यमान। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (तिष्ठति) स्थित, (अन्तःस्थ) अन्तर्यामी।

• अर्थ-तत्त्व व्युत्पत्ति: अर्थस्य तत्त्वम्। अर्थ: पदार्थ का यथार्थ सत्य। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थस्य) वस्तु का, (तत्त्वम्) सार, (अर्थ-तत्त्व) यथार्थ।

• अवतार व्युत्पत्ति: अव (नीचे) तरति (आगच्छति) इति अवतारः। अर्थ: ईश्वर का संसार में सगुण रूप धारण करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अव) नीचे, (तरति) उतरना, (अवतारः) ईश्वरांश।

• अविद्या-ग्रन्थि व्युत्पत्ति: अविद्यायाः ग्रन्थिः। अर्थ: अज्ञान की गाँठ जो हृदय में बंधी है।
क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्यायाः) अज्ञान की, (ग्रन्थिः) गाँठ, (अविद्या-ग्रन्थि) हृदय-ग्रन्थि।

• अश्रद्धा व्युत्पत्ति: न श्रद्धा यस्याः सा अश्रद्धा। अर्थ: विश्वास का अभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (श्रद्धा) विश्वास, (अश्रद्धा) नास्तिकता।

• असत व्युत्पत्ति: न सत् असत्। अर्थ: जो क्षणभंगुर है (संसार)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (सत्) सत्य, (असत्) अनित्य।

• अधिकारिता व्युत्पत्ति: अधिकारस्य भावः। अर्थ: पात्र होने की योग्यता। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिकारस्य) पात्रता का, (भावः) गुण, (अधिकारिता) योग्यता।

• अधिवास व्युत्पत्ति: अधि वसिति इति अधिवासः। अर्थ: वास या निवास। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) विशेष, (वसिति) रहना, (अधिवासः) स्थान।

• अद्वैत-सिद्धि व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य सिद्धिः। अर्थ: अद्वैत ज्ञान की प्राप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) एकत्व का, (सिद्धिः) लाभ, (अद्वैत-सिद्धि) आत्म-साक्षात्कार।

• अधि-आत्म व्युत्पत्ति: आत्मा अधि यस्य सः। अर्थ: शरीर के भीतर आत्मा का अधिष्ठान। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) स्वयं, (अधि) आश्रित, (अधि-आत्म) देही।

• अधि-कारण व्युत्पत्ति: कारणम् अधि। अर्थ: मूल कारण। क्रमवार शब्दार्थ: (कारणम्) हेतु, (अधि) प्रधान, (अधि-कारण) मुख्य-कारण।

• अपरोक्ष व्युत्पत्ति: न परोक्षम् अपरोक्षम्। अर्थ: जो आँखों के सामने या अनुभवगम्य हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (परोक्षम्) अप्रत्यक्ष, (अपरोक्ष) प्रत्यक्ष।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 31
• अनात्म-त्याग व्युत्पत्ति: अनात्मनः त्यागः। अर्थ: देहादि के मोह का त्याग। क्रमवार शब्दार्थ: (अनात्मनः) जड़ का, (त्यागः) छोड़ना, (अनात्म-त्याग) वैराग्य।

• अन्तःकरण-शुद्धि व्युत्पत्ति: अन्तःकरणस्य शुद्धिः। अर्थ: मन की निर्मलता। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तःकरणस्य) मन की, (शुद्धिः) पवित्रता, (अन्तःकरण-शुद्धि) साधन-चतुष्टय।

• अतिशय व्युत्पत्ति: अति शेते इति अतिशयः। अर्थ: सीमा से अधिक (महिमा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अति) बढ़कर, (शेते) होना, (अतिशयः) उत्कृष्ट।

• अद्वैत-विचार व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य विचारः। अर्थ: ब्रह्म-एकत्व पर चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (विचारः) चिंतन, (अद्वैत-विचार) मनन।

• अधिकार व्युत्पत्ति: अधिकरोति इति अधिकारः। अर्थ: पात्रता या समर्थता। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिकरोति) समर्थ होना, (अधिकार) क्षमता।

• अनादि व्युत्पत्ति: न आदिः यस्य सः अनादिः। अर्थ: जिसका कोई आरम्भ न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (आदिः) शुरुआत, (अनादि) शाश्वत।

• अन्वय-व्यतिरेक व्युत्पत्ति: अन्वयः च व्यतिरेकः च। अर्थ: कारण-कार्य समझने की वेदान्तिक विधि। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्वय) व्याप्ति, (व्यतिरेक) निषेध, (अन्वय-व्यतिरेक) तर्क-विधि।

• अविद्या-नाश व्युत्पत्ति: अविद्यायाः नाशः। अर्थ: अज्ञान का अंत। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्यायाः) अज्ञान का, (नाशः) अंत, (अविद्या-नाश) ज्ञान-फल।

• अद्वैत-बोध व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य बोधः। अर्थ: एकत्व का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) एकता का, (बोधः) ज्ञान, (अद्वैत-बोध) साक्षात्कार।

• अहं-स्फुरण व्युत्पत्ति: अहं (अहंकार) स्फुरति। अर्थ: 'मैं' का अनुभव होना। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (स्फुरति) चमकना/महसूस होना, (अहं-स्फुरण) आत्म-अनुभव।

• अमृतत्व-प्राप्ति व्युत्पत्ति: अमृतत्वस्य प्राप्तिः। अर्थ: मोक्ष का लाभ। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृतत्वस्य) अमरता की, (प्राप्तिः) लाभ, (अमृतत्व-प्राप्ति) मुक्ति।

• अद्वैत-महिमा व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य महिमा। अर्थ: एकत्व की महानता। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद की, (महिमा) गौरव, (अद्वैत-महिमा) दर्शन।

• अध्यात्म-विद्या व्युत्पत्ति: अध्यात्मस्य विद्या। अर्थ: स्वयं के स्वरूप का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्मस्य) आत्म-तत्व की, (विद्या) ज्ञान, (अध्यात्म-विद्या) ब्रह्म-विद्या।

• अचल व्युत्पत्ति: न चलति इति अचलः। अर्थ: जो कभी विचलित न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (चलति) हिलना, (अचलः) स्थिर।

• अद्वैत-निष्ठा व्युत्पत्ति: अद्वैते निष्ठा। अर्थ: ब्रह्म-ज्ञान में दृढ़ता। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) एकत्व में, (निष्ठा) दृढ़ता, (अद्वैत-निष्ठा) स्थितप्रज्ञता।

• अन्तर्बाह्य व्युत्पत्ति: अन्तः च बाह्यं च। अर्थ: भीतर और बाहर। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) भीतर, (बाह्यं) बाहर, (अन्तर्बाह्य) सर्वत्र।

• अविकल्प व्युत्पत्ति: न विकल्पः यस्य तत्। अर्थ: संदेह या विकल्प से रहित। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विकल्पः) संदेह, (अविकल्प) निश्चयात्मक।

• आत्म-रति व्युत्पत्ति: आत्मनि रतिः। अर्थ: आत्मा में ही आनंद। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनि) आत्मा में, (रतिः) प्रेम, (आत्म-रति) आत्म-तृप्ति।

• अद्वैत-परता व्युत्पत्ति: अद्वैते परता। अर्थ: एकत्व में ही मुख्य तात्पर्य। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) अभेद में, (परता) मुख्यता, (अद्वैत-परता) एकाग्रता।

• अध्यात्म-चिन्तन व्युत्पत्ति: अध्यात्मस्य चिन्तनम्। अर्थ: आत्मा का विचार करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्मस्य) आत्म-तत्व का, (चिन्तनम्) विचार, (अध्यात्म-चिन्तन) मनन।

• अनन्त-आनन्द व्युत्पत्ति: अनन्तः आनन्दः। अर्थ: असीमित सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्तः) असीम, (आनन्दः) सुख, (अनन्त-आनन्द) ब्रह्मानन्द।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 32
• आत्मानुभव व्युत्पत्ति: आत्मनः अनुभवः आत्मानुभवः। अर्थ: आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं का, (अनुभवः) साक्षात्कार, (आत्मानुभव) आत्म-ज्ञान।

• ब्रह्मनिष्ठ व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि निष्ठा यस्य सः ब्रह्मनिष्ठः। अर्थ: जो निरंतर ब्रह्म में स्थित है। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणि) परमात्मा में, (निष्ठा) स्थिति, (ब्रह्मनिष्ठ) ब्रह्म-परायण।

• अद्वैतवाद व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य वादः अद्वैतवादः। अर्थ: ब्रह्म और आत्मा के अभेद का सिद्धांत। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (वादः) सिद्धांत, (अद्वैतवाद) केवलाद्वैत।

• अध्यारोप-अपवाद व्युत्पत्ति: अध्यारोपः च अपवादः च। अर्थ: मिथ्या आरोप को हटाकर सत्य को जानने की वेदान्तिक पद्धति। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यारोपः) आरोप, (अपवादः) निषेध, (अध्यारोप-अपवाद) वेदान्त-विधि।

• श्रुति-प्रमाण व्युत्पत्ति: श्रुतेः प्रमाणं श्रुति-प्रमाणम्। अर्थ: वेदों को ज्ञान का सर्वोच्च प्रमाण मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रुतेः) वेद का, (प्रमाणं) साक्ष्य, (श्रुति-प्रमाण) शब्द-ब्रह्म।

• आत्मा-अनात्मा-विवेक व्युत्पत्ति: आत्मा च अनात्मा च तयोः विवेकः। अर्थ: आत्मा (नित्य) और अनात्मा (नश्वर) के बीच का भेद। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) नित्य, (अनात्मा) जड़, (विवेकः) पृथक्करण।

• ब्रह्म-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः साक्षात्कारः ब्रह्म-साक्षात्कारः। अर्थ: ब्रह्म का साक्षात् दर्शन। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) परमात्मा का, (साक्षात्कारः) अनुभव, (ब्रह्म-साक्षात्कार) मोक्ष।

• अविद्या-निवृत्ति व्युत्पत्ति: अविद्यायाः निवृत्तिः। अर्थ: अज्ञान का पूरी तरह मिट जाना।
क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्यायाः) अज्ञान की, (निवृत्तिः) समाप्ति, (अविद्या-निवृत्ति) ज्ञान-फल।

• चिदानन्द व्युत्पत्ति: चित् च असौ आनन्दः। अर्थ: ज्ञान और आनंद का स्वरूप (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्) चेतना, (आनन्दः) सुख, (चिदानन्द) ब्रह्म-लक्षण।

• संसार-चक्र व्युत्पत्ति: संसारस्य चक्रम्। अर्थ: जन्म-मरण का निरंतर क्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (संसारस्य) जगत का, (चक्रम्) भ्रमण, (संसार-चक्र) भव-बंधन।

• मोक्ष-मार्ग व्युत्पत्ति: मोक्षस्य मार्गः। अर्थ: मुक्ति की ओर ले जाने वाला पथ। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्षस्य) मुक्ति का, (मार्गः) रास्ता, (मोक्ष-मार्ग) साधना।

• इन्द्रिय-संयम व्युत्पत्ति: इन्द्रियाणां संयमः। अर्थ: विषयों से इन्द्रियों को रोकना।
क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रियाणां) इन्द्रियों का, (संयमः) नियंत्रण, (इन्द्रिय-संयम) दमन।

• चित्त-शुद्धि व्युत्पत्ति: चित्तस्य शुद्धिः। अर्थ: मन की निर्मलता। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्तस्य) मन की, (शुद्धिः) पवित्रता, (चित्त-शुद्धि) साधना-योग्यता।

• ज्ञान-वैराग्य व्युत्पत्ति: ज्ञानं च वैराग्यं च। अर्थ: बोध और सांसारिक अनासक्ति का युग्म।
क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञानं) बोध, (वैराग्यं) विरक्ति, (ज्ञान-वैराग्य) मुमुक्षु-गुण।

• अहं-मम-त्याग व्युत्पत्ति: अहं मम इति त्यागः। अर्थ: 'मैं' और 'मेरा' का त्याग। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) अहम्, (मम) ममत्व, (त्यागः) छोड़ना।

• ब्रह्मानन्द व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः आनन्दः। अर्थ: ब्रह्म का परम सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) ब्रह्म का, (आनन्दः) सुख, (ब्रह्मानन्द) निरातिशय-सुख।

• अद्वैत-प्रपञ्च व्युत्पत्ति: अद्वैते प्रपञ्चः। अर्थ: ब्रह्म में जगत का आभासी विस्तार।
क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) एकत्व में, (प्रपञ्चः) विस्तार, (अद्वैत-प्रपञ्च) माया।

• आत्म-विस्मृति व्युत्पत्ति: आत्मनः विस्मृतिः। अर्थ: स्वयं के स्वरूप को भूल जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा की, (विस्मृतिः) विस्मरण, (आत्म-विस्मृति) अज्ञान।

• अहं-बुद्धि व्युत्पत्ति: अहं इति बुद्धिः। अर्थ: 'मैं शरीर हूँ' का भ्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (बुद्धिः) धारणा, (अहं-बुद्धि) देहात्म-बुद्धि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 33
• आकाश-वत् व्युत्पत्ति: आकाशः इव आकाश-वत्। अर्थ: आकाश के समान (असंग/सर्वव्यापी)। क्रमवार शब्दार्थ: (आकाशः) नभ, (इव) समान, (आकाश-वत्) निर्लिप्त।

• अद्वैत-भाव व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य भावः। अर्थ: अभेद का अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैतस्य) अभेद का, (भावः) स्थिति, (अद्वैत-भाव) आत्म-स्थित।

• ब्रह्म-जिज्ञासा व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः जिज्ञासा। अर्थ: ब्रह्म को जानने की इच्छा। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मणः) परमात्मा की, (जिज्ञासा) जानने की इच्छा, (ब्रह्म-जिज्ञासा) सूत्र-आरंभ।

• अनित्य-वस्तु व्युत्पत्ति: न नित्यं अनित्यम्। अर्थ: नाशवान वस्तुएं। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (नित्यं) शाश्वत, (अनित्य-वस्तु) संसार।

• नित्य-वस्तु व्युत्पत्ति: नित्यं च तत् वस्तु च। अर्थ: अविनाशी तत्व (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्यं) शाश्वत, (वस्तु) तत्व, (नित्य-वस्तु) सत्य।

• विवेक-शक्ति व्युत्पत्ति: विवेकस्य शक्तिः। अर्थ: यथार्थ को पहचानने की क्षमता। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेकस्य) भेद की, (शक्तिः) सामर्थ्य, (विवेक-शक्ति) प्रज्ञा।

• असंगता व्युत्पत्ति: असंगस्य भावः। अर्थ: किसी से भी न जुड़ने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (असंगस्य) निर्लिप्त का, (भावः) गुण, (असंगता) उदासीनता।

• आत्यन्तिक-दुःखनाश व्युत्पत्ति: आत्यन्तिकः दुःखनाशः। अर्थ: दुखों का पूर्ण और अंतिम विनाश।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्यन्तिकः) पूर्ण, (दुःखनाशः) अंत, (आत्यन्तिक-दुःखनाश) मोक्ष।

• आत्म-स्वरूप-स्थिति व्युत्पत्ति: आत्मस्वरूपे स्थितिः। अर्थ: आत्मा में ही स्थित होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मस्वरूपे) स्वरूप में, (स्थितिः) रहना, (आत्म-स्वरूप-स्थिति) समाधि।

• अद्वैत-दृष्टि व्युत्पत्ति: अद्वैते दृष्टिः। अर्थ: सबमें ब्रह्म को देखने वाली दृष्टि।
क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैते) एकत्व में, (दृष्टिः) दर्शन, (अद्वैत-दृष्टि) समत्व।

• अनन्य-भक्ति व्युत्पत्ति: अनन्या भक्तिः। अर्थ: केवल एक ईश्वर में प्रेम। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्या) कोई दूसरा नहीं, (भक्तिः) प्रेम, (अनन्य-भक्ति) निष्ठा।

• अर्थ-वाद व्युत्पत्ति: अर्थस्य वादः। अर्थ: स्तुतिपरक कथन (वेदान्त में)। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थस्य) प्रयोजन का, (वादः) वचन, (अर्थ-वाद) प्रशंसा।

• अभाव-पदार्थ व्युत्पत्ति: अभावस्य पदार्थः। अर्थ: अभाव को भी जानने का विषय मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (अभावस्य) शून्यता का, (पदार्थः) विषय, (अभाव-पदार्थ) तर्क।

• आभ्यन्तर व्युत्पत्ति: अभ्यन्तरे स्थितम्। अर्थ: जो भीतर स्थित है। क्रमवार शब्दार्थ: (अभ्यन्तरे) भीतर, (स्थितम्) स्थित, (आभ्यन्तर) आंतरिक।

• आनुभविक व्युत्पत्ति: अनुभवस्य इदं आनुभविकम्। अर्थ: जो अनुभव पर आधारित है। क्रमवार शब्दार्थ: (अनुभवस्य) प्रत्यक्ष का, (इदं) यह, (आनुभविक) अनुभूत।

• आत्यन्तिक-सुख व्युत्पत्ति: आत्यन्तिकं सुखम्। अर्थ: वह सुख जो कभी कम न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्यन्तिकं) सर्वोच्च, (सुखम्) आनन्द, (आत्यन्तिक-सुख) ब्रह्मानन्द।

• आपातः-प्रत्यय व्युत्पत्ति: आपाततः प्रत्ययः। अर्थ: सतही ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (आपाततः) प्रथम दृष्टि में, (प्रत्ययः) ज्ञान, (आपातः-प्रत्यय) भ्रम।

• आश्रय-भेद व्युत्पत्ति: आश्रयस्य भेदः। अर्थ: आधार में अंतर। क्रमवार शब्दार्थ: (आश्रयस्य) आधार का, (भेदः) अंतर, (आश्रय-भेद) स्थान-परिवर्तन।

• इष्ट-प्राप्ति व्युत्पत्ति: इष्टस्य प्राप्तिः। अर्थ: अभीष्ट (मोक्ष) की प्राप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (इष्टस्य) प्रिय का, (प्राप्तिः) लाभ, (इष्ट-प्राप्ति) लक्ष्य-सिद्धि।

• उत्तम-पुरुष व्युत्पत्ति: उत्तमः च असौ पुरुषः। अर्थ: परमात्मा (पुरुषोत्तम)। क्रमवार शब्दार्थ: (उत्तमः) सर्वश्रेष्ठ, (पुरुषः) चेतन, (उत्तम-पुरुष) ईश्वर।

• उपादान-कारण व्युत्पत्ति: उपादानस्य कारणम्। अर्थ: जिससे वस्तु बनी है (जैसे मिट्टी)। क्रमवार शब्दार्थ: (उपादानस्य) सामग्री का, (कारणम्) हेतु, (उपादान-कारण) मूल-द्रव्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 34
• एकत्व व्युत्पत्ति: एकस्य भावः एकत्वम्। अर्थ: एकता का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (एकस्य) एक का, (भावः) गुण, (एकत्व) अभेद।

• ऐक्य-ज्ञान व्युत्पत्ति: ऐक्यस्य ज्ञानम्। अर्थ: ब्रह्म-आत्मा का एकत्व बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (ऐक्यस्य) एकता का, (ज्ञानम्) बोध, (ऐक्य-ज्ञान) महावाक्य-अर्थ।

• ओत-प्रोत व्युत्पत्ति: ओतं च प्रोतं च। अर्थ: जो हर जगह व्याप्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (ओतं) पिरोया, (प्रोतं) व्याप्त, (ओत-प्रोत) सर्वव्यापी।

• कारण-कार्य व्युत्पत्ति: कारणं च कार्यं च। अर्थ: हेतु और परिणाम का संबंध। क्रमवार शब्दार्थ: (कारणम्) मूल, (कार्यम्) परिणाम, (कारण-कार्य) नियम।

• कुशलता व्युत्पत्ति: कुशलस्य भावः। अर्थ: कार्य में दक्षता। क्रमवार शब्दार्थ: (कुशलस्य) योग्य का, (भावः) गुण, (कुशलता) प्रवीणता।

• कूटस्थ-ब्रह्म व्युत्पत्ति: कूटस्थः च असौ ब्रह्म। अर्थ: जो विकार रहित अपरिवर्तनीय ब्रह्म है।
क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थः) स्थिर, (ब्रह्म) परमात्मा, (कूटस्थ-ब्रह्म) निर्विकार।

• कृत-कृत्य व्युत्पत्ति: कृतं कृत्यं येन सः। अर्थ: जिसने अपना कर्तव्य (मोक्ष) पूरा कर लिया है।
क्रमवार शब्दार्थ: (कृतं) पूर्ण, (कृत्यं) कार्य, (कृत-कृत्य) सफल।

• केवलं व्युत्पत्ति: केवलेन (एकेन) युक्तम्। अर्थ: जो शुद्ध और एकमात्र है। क्रमवार शब्दार्थ: (केवलेन) एकमात्र, (युक्तम्) सहित, (केवलं) विशुद्ध।

• क्षय-रोग व्युत्पत्ति: क्षयः च रोगः च। अर्थ: नाश और व्याधि। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षयः) नाश, (रोगः) बीमारी, (क्षय-रोग) संसार-दोष।

• विवेक व्युत्पत्ति: वि (विशेष) विवेचनं इति विवेकः। अर्थ: सत्य और असत्य को अलग करने की बुद्धि।
क्रमवार शब्दार्थ: (विशेष) सूक्ष्म, (विवेचनं) विचार, (विवेक) प्रज्ञा।

• आस्तिक्य व्युत्पत्ति: अस्ति इति मतिः आस्तिक्यम्। अर्थ: वेद और ब्रह्म की सत्ता में विश्वास।
क्रमवार शब्दार्थ: (अस्ति) है, (मतिः) बुद्धि/मान्यता, (आस्तिक्यम्) श्रद्धा।

• नास्तिक्य व्युत्पत्ति: न अस्ति इति मतिः नास्तिक्यम्। अर्थ: वेद और पारलौकिक सत्ता का निषेध।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (अस्ति) है, (नास्तिक्यम्) अविश्वास।

• गुणत्रय व्युत्पत्ति: गुणानां त्रयं गुणत्रयम्। अर्थ: सत्त्व, रजस और तमस् - इन तीनों गुणों का समूह। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणानां) गुणों का, (त्रयं) तीन, (गुणत्रयम्) प्रकृति-तत्व।

• तमस् व्युत्पत्ति: तनोति (आवृणोति) इति तमः। अर्थ: जड़ता, अज्ञान और आलस्य का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (तनोति) ढकना, (तमः) अंधकार।

• सात्त्विक व्युत्पत्ति: सत्त्वेन युक्तं सात्त्विकम्। अर्थ: प्रकाश और शुद्धता से भरा हुआ।
क्रमवार शब्दार्थ: (सत्त्वेन) शुद्धता से, (युक्तं) सहित, (सात्त्विकम्) पवित्र।

• राजसिक व्युत्पत्ति: रजसा युक्तं राजसिकम्। अर्थ: चंचलता और कामना से युक्त। क्रमवार शब्दार्थ: (रजसा) सक्रियता से, (युक्तं) सहित, (राजसिकम्) कर्मठ/कामी।

• तामसिक व्युत्पत्ति: तमसा युक्तं तामसिकम्। अर्थ: मोह और अज्ञान से युक्त। क्रमवार शब्दार्थ: (तमसा) अज्ञान से, (युक्तं) सहित, (तामसिकम्) जड़।

• चित्तवृत्ति व्युत्पत्ति: चित्तस्य वृत्तिः चित्तवृत्तिः। अर्थ: मन के विचार प्रवाह का स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्तस्य) मन की, (वृत्तिः) दशा, (चित्तवृत्ति) मानसिक-तरंग।

• एकाग्रता व्युत्पत्ति: एकं अग्रं यस्याः सा एकाग्रता। अर्थ: चित्त का एक ही विषय पर टिकना।
क्रमवार शब्दार्थ: (एकं) एक, (अग्रं) लक्ष्य, (एकाग्रता) निष्ठता।

• धारणा व्युत्पत्ति: धारयति इति धारणा। अर्थ: चित्त को किसी स्थान या विषय पर थामे रखना। क्रमवार शब्दार्थ: (धारयति) रोकना, (धारणा) स्थिर करना।

• ध्यान व्युत्पत्ति: ध्यायति इति ध्यानम्। अर्थ: अखंड चित्त-प्रवाह का विषय पर टिका रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यायति) चिंतन करना, (ध्यानम्) एकाग्रता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 35
• समाधि व्युत्पत्ति: सम्यक् आधियते (स्थाप्यते) इति समाधिः। अर्थ: चित्त का ज्ञेय (ब्रह्म) में विलीन हो जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (सम्यक्) ठीक तरह, (आधियते) स्थित होना, (समाधिः) पूर्ण-लीनता।

• सविकल्प व्युत्पत्ति: विकल्पेन (भेदेन) सहितं सविकल्पम्। अर्थ: जहाँ ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय का भेद बना रहता है। क्रमवार शब्दार्थ: (विकल्पेन) भेद के, (सहितं) साथ, (सविकल्पम्) भेदयुक्त।

• निर्विकल्प व्युत्पत्ति: विकल्पः न विद्यते यस्मिन् तत्। अर्थ: जहाँ कोई भी भेद न होकर मात्र चैतन्य शेष रहता है। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्यते) होना, (निर्विकल्पम्) अभेद।

• साक्षित्व व्युत्पत्ति: साक्षिणः भावः साक्षित्वम्। अर्थ: केवल दृष्टा या गवाह बने रहने का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षिणः) देखने वाले का, (भावः) गुण, (साक्षित्वम्) द्रष्टा-भाव।

• द्रष्टा व्युत्पत्ति: दृश्यते इति द्रष्टा। अर्थ: देखने वाला (आत्मा)। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (द्रष्टा) ज्ञाता।

• दृश्य व्युत्पत्ति: दृश्यते इति दृश्यम्। अर्थ: जो दिखाई देता है (जगत)। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (दृश्यम्) ज्ञेय।

• निर्विकार व्युत्पत्ति: न विकारः यस्मिन् तत् निर्विकारम्। अर्थ: जिसमें कोई परिवर्तन संभव न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विकारः) परिवर्तन, (निर्विकारम्) अपरिवर्तनीय।

• विकार व्युत्पत्ति: विशेषेण करोति इति विकारः। अर्थ: रूपांतरण या बदलाव। क्रमवार शब्दार्थ: (विशेषेण) प्रकारान्तर, (करोति) करना, (विकारः) परिवर्तन।

• प्रलय व्युत्पत्ति: प्रकर्षण लीयते इति प्रलयः। अर्थ: संपूर्ण सृष्टि का कारण में विलीन होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्षण) पूर्णतः, (लीयते) विलीन होना, (प्रलयः) विनाश।

• सृष्टि व्युत्पत्ति: स्रजति इति सृष्टिः। अर्थ: जगत का उदय। क्रमवार शब्दार्थ: (स्रजति) रचना, (सृष्टिः) विश्व-निर्माण।

• स्थिति व्युत्पत्ति: तिष्ठति इति स्थितिः। अर्थ: सृष्टि का टिके रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (तिष्ठति) रहना, (स्थितिः) काल।

• लय व्युत्पत्ति: लीयते इति लयः। अर्थ: अंत का होना। क्रमवार शब्दार्थ: (लीयते) विलय, (लयः) समाप्ति।

• संहार व्युत्पत्ति: संहरति इति संहारः। अर्थ: सब कुछ वापस समेट लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (संहरति) समेटना, (संहारः) अंत।

• बीज व्युत्पत्ति: बीजति इति बीजम्। अर्थ: संभावना या कारण-रूप। क्रमवार शब्दार्थ: (बीजति) कारण होना, (बीजम्) मूल।

• अंकुर व्युत्पत्ति: अंकुरति इति अंकुरः। अर्थ: शुरुआत या प्रकटीकरण। क्रमवार शब्दार्थ: (अंकुरति) फूटना, (अंकुरः) आरम्भ।

• फल व्युत्पत्ति: फलति इति फलम्। अर्थ: कर्म का परिणाम। क्रमवार शब्दार्थ: (फलति) परिणाम देना, (फलम्) प्राप्ति।

• वासना व्युत्पत्ति: वासयति इति वासना। अर्थ: चित्त में दबी हुई इच्छाएं। क्रमवार शब्दार्थ: (वासयति) बसाना, (वासना) संस्कार।

• संस्कार व्युत्पत्ति: सम्यक् क्रियते इति संस्कारः। अर्थ: मन में पड़े हुए गहरे प्रभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (सम्यक्) अच्छी तरह, (क्रियते) बनाना, (संस्कारः) प्रभाव।

• स्मृति व्युत्पत्ति: स्मरति इति स्मृतिः। अर्थ: याद करने की शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (स्मरति) याद करना, (स्मृतिः) स्मृति।

• विस्मृति व्युत्पत्ति: विस्मरति इति विस्मृतिः। अर्थ: भूल जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (विस्मरति) भूलना, (विस्मृतिः) अज्ञान।

• आत्मविस्मृति व्युत्पत्ति: आत्मनः विस्मृतिः। अर्थ: स्वयं को भूलना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) आत्मा की, (विस्मृतिः) विस्मरण, (आत्मविस्मृति) अविद्या।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 36
• आत्मस्मृति व्युत्पत्ति: आत्मनः स्मृतिः। अर्थ: स्वयं का बोध होना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मनः) स्वयं की, (स्मृतिः) याद, (आत्मस्मृति) ज्ञान।

• बोध व्युत्पत्ति: बुध्यते इति बोधः। अर्थ: ज्ञान या समझ। क्रमवार शब्दार्थ: (बुध्यते) जानना, (बोधः) ज्ञान।

• प्रबोध व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण बुध्यते इति प्रबोधः। अर्थ: जागृति या ज्ञान का उदय। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रकर्षेण) विशेष, (बुध्यते) जागना, (प्रबोधः) ज्ञानोदय।

• अनुभव व्युत्पत्ति: अनु भूयते इति अनुभवः। अर्थ: साक्षात् ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) सादृश्य, (भूयते) होना, (अनुभवः) साक्षात्कार।

• साक्षात्कार व्युत्पत्ति: साक्षात् क्रियते इति साक्षात्कारः। अर्थ: यथार्थ का सीधा अनुभव।
क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षात्) प्रत्यक्ष, (क्रियते) करना, (साक्षात्कारः) अनुभव।

• दर्शन व्युत्पत्ति: दृश्यते इति दर्शनम्। अर्थ: सत्य को देखने की दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्यते) देखना, (दर्शनम्) शास्त्र।

• श्रवण व्युत्पत्ति: श्रृणोति इति श्रवणम्। अर्थ: शास्त्रों को गुरुमुख से सुनना। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रृणोति) सुनना, (श्रवणम्) अध्ययन।

• मनन व्युत्पत्ति: मन्यते इति मननम्। अर्थ: सुनी हुई बात पर विचार करना। क्रमवार शब्दार्थ: (मन्यते) सोचना, (मननम्) चिंतन।

• निदिध्यासन व्युत्पत्ति: निदिध्यासते इति निदिध्यासनम्। अर्थ: ज्ञान का निरंतर ध्यान करना।
क्रमवार शब्दार्थ: (निदिध्यासते) निरंतर ध्यान, (निदिध्यासनम्) अभ्यास।

• अपरोक्ष-ज्ञान व्युत्पत्ति: न परोक्षं ज्ञानम्। अर्थ: प्रत्यक्ष आत्म-ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (परोक्षं) दूर, (ज्ञानम्) बोध, (अपरोक्ष-ज्ञान) अनुभव।

• परोक्ष-ज्ञान व्युत्पत्ति: परोक्षं ज्ञानम्। अर्थ: शास्त्रों के आधार पर ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (परोक्षं) दूर, (ज्ञानम्) बोध, (परोक्ष-ज्ञान) शाब्दिक-ज्ञान।

• महावाक्य व्युत्पत्ति: महान् च असौ वाक्यं च। अर्थ: उपनिषदों के वे वाक्य जो ब्रह्म-एकत्व सिखाते हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (महान्) श्रेष्ठ, (वाक्यं) कथन, (महावाक्य) उपदेश।

• तत्त्वमसि व्युत्पत्ति: तत् त्वं असि। अर्थ: वह ब्रह्म तुम ही हो। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (त्वं) तुम, (असि) हो।

• अहंब्रह्मास्मि व्युत्पत्ति: अहं ब्रह्म अस्मि। अर्थ: मैं ब्रह्म हूँ। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (ब्रह्म) परमात्मा, (अस्मि) हूँ।

• सर्वंखल्विदंब्रह्म व्युत्पत्ति: सर्वं खलु इदं ब्रह्म। अर्थ: सब कुछ ब्रह्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्वं) सब, (खलु) निश्चय, (इदं) यह, (ब्रह्म) परमात्मा।

• अयमात्माब्रह्म व्युत्पत्ति: अयम् आत्मा ब्रह्म। अर्थ: यह आत्मा ही ब्रह्म है। क्रमवार शब्दार्थ: (अयम्) यह, (आत्मा) स्वयं, (ब्रह्म) परमात्मा।

• कैवल्य व्युत्पत्ति: केवलस्य भावः कैवल्यम्। अर्थ: एकमात्र ब्रह्म में स्थिति या मोक्ष।
क्रमवार शब्दार्थ: (केवलस्य) अकेले/शुद्ध का, (भावः) स्थिति, (कैवल्यम्) मुक्ति।

• निर्वाण व्युत्पत्ति: निर् वाति इति निर्वाणम्। अर्थ: वासनाओं का बुझ जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्) बाहर, (वाति) वायु (वासना), (निर्वाणम्) शांति।

• सच्चिदानन्द व्युत्पत्ति: सत् + चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द। अर्थ: ब्रह्म का स्वरूप—शाश्वत सत्य, शुद्ध चेतना और अनंत आनंद। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) नित्य, (चित्) बोध, (आनन्द) सुख, (सच्चिदानन्द) ब्रह्म।

• माया व्युत्पत्ति: मा (नहीं) + या (जो है) = माया। अर्थ: जो वास्तव में है नहीं, पर दिखाई देती है (ईश्वर की शक्ति)। क्रमवार शब्दार्थ: (मा) नहीं, (या) जो है, (माया) भ्रम।

• मिथ्या व्युत्पत्ति: मिथ + य = मिथ्या। अर्थ: जो अस्थायी है और बदलता रहता है। क्रमवार शब्दार्थ: (मिथ) परिवर्तनशील, (मिथ्या) असत्य/सापेक्ष।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 37
• उपाधि व्युत्पत्ति: उप (समीप) + धा (धारण करना) = उपाधि। अर्थ: वह सीमित करने वाला माध्यम जो आत्मा को शरीर से जोड़ता है। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (धा) धारक, (उपाधि) सीमित-अंग।

• जीवात्मा व्युत्पत्ति: जीवन् (प्राणी) + आत्मा = जीवात्मा। अर्थ: वह आत्मा जो शरीर में बँधी हुई प्रतीत होती है। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवन्) जीवित, (आत्मा) चेतन, (जीवात्मा) व्यक्ति।

• परमात्मा व्युत्पत्ति: पर (सर्वश्रेष्ठ) + आत्मा = परमात्मा। अर्थ: समस्त प्राणियों का मूल और ईश्वर। क्रमवार शब्दार्थ: (पर) परम, (आत्मा) शुद्ध चैतन्य, (परमात्मा) ईश्वर।

• आरोपण व्युत्पत्ति: आ (सब ओर से) + रूप (रूप देना) = आरोपण। अर्थ: एक चीज़ पर दूसरी चीज़ को थोप देना (रस्सी पर साँप)। क्रमवार शब्दार्थ: (आ) पूर्ण, (रूप) दर्शन, (आरोपण) प्रक्षेप।

• अपवाद व्युत्पत्ति: अप (दूर करना) + वाद (कथन) = अपवाद। अर्थ: मिथ्या को दूर करके सत्य को स्थापित करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अप) निषेध, (वाद) कथन, (अपवाद) निराकरण।

• विवेक व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + विच् (जानना) = विवेक। अर्थ: यथार्थ और अयथार्थ के बीच का निर्णय। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (वेक) ज्ञान, (विवेक) प्रज्ञा।

• वैराग्य व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + राग (आसक्ति) = वैराग्य। अर्थ: इंद्रिय-भोगों के प्रति अरुचि। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) रहित, (राग) आसक्ति, (वैराग्य) विरक्ति।

• षट्सम्पत्ति व्युत्पत्ति: षट् (छह) + सम्पत्ति = षट्सम्पत्ति। अर्थ: मन-इंद्रियों को वश में करने वाले छह गुण (शम, दम आदि)। क्रमवार शब्दार्थ: (षट्) छह, (सम्पत्ति) गुण, (षट्सम्पत्ति) साधक-योग्यता।

• शम व्युत्पत्ति: शम् (शांत होना) = शमः। अर्थ: मन का नियंत्रण। क्रमवार शब्दार्थ: (शम्) उपशमन, (शम) मानसिक-शांति।

• दम व्युत्पत्ति: दम् (दमन करना) = दमः। अर्थ: बाह्य इंद्रियों का निग्रह। क्रमवार शब्दार्थ: (दम्) नियंत्रण, (दम) इंद्रिय-जय।

• उपरति व्युत्पत्ति: उप (समीप) + रम् (रुकना) = उपरति। अर्थ: धर्म-कार्यों के अतिरिक्त विषयों से उपराम होना। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) पूर्ण, (रति) उपशम, (उपरति) विरक्ति।

• तितिक्षा व्युत्पत्ति: तिक् (सहन करना) = तितिक्षा। अर्थ: सर्दी-गर्मी आदि द्वंद्वों को सहने की क्षमता। क्रमवार शब्दार्थ: (तिक्) सहिष्णुता, (तितिक्षा) धैर्य।

• श्रद्धा व्युत्पत्ति: श्रत् (सत्य) + धा (धारण) = श्रद्धा। अर्थ: गुरु और शास्त्रों में दृढ़ विश्वास। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रत्) सत्य, (धा) स्थापना, (श्रद्धा) आस्था।

• समाधान व्युत्पत्ति: सम् (अच्छी तरह) + आ + धा = समाधानम्। अर्थ: मन का एक लक्ष्य (ब्रह्म) पर स्थिर होना। क्रमवार शब्दार्थ: (सम्) पूर्ण, (आधान) स्थापना, (समाधान) एकाग्रता।

• मुमुक्षुत्व व्युत्पत्ति: मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा वाला) + त्व = मुमुक्षुत्वम्। अर्थ: मोक्ष प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा। क्रमवार शब्दार्थ: (मुमुक्षु) मोक्ष-कामी, (त्व) गुण, (मुमुक्षुत्व) जिज्ञासा।

• अध्यास व्युत्पत्ति: अधि (ऊपर) + आस (बैठना) = अध्यासः। अर्थ: एक पर दूसरे का भ्रम (अज्ञान का मूल)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (आस) आरोपित, (अध्यास) भ्रम।

• अद्वैत व्युत्पत्ति: न + द्वैत (दो) = अद्वैतम्। अर्थ: ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं है।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (द्वैत) दूसरा, (अद्वैत) एकत्व।

• अवस्थात्रय व्युत्पत्ति: अवस्था + त्रय (तीन) = अवस्थात्रयम्। अर्थ: जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (अवस्था) स्थिति, (त्रय) तीन, (अवस्थात्रय) तीन स्तर।

• जाग्रत व्युत्पत्ति: जागृ (जागना) = जाग्रत्। अर्थ: चेतना की वह अवस्था जिसमें इन्द्रियाँ कार्य करती हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (जागृ) जागना, (जाग्रत्) प्रत्यक्ष-बोध।

• स्वप्न व्युत्पत्ति: स्वप् (सोना) = स्वप्नः। अर्थ: मन के संकल्पों से निर्मित मानसिक जगत।
क्रमवार शब्दार्थ: (स्वप्) शयन, (स्वप्न) कल्पना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 38
• सुषुप्ति व्युत्पत्ति: सु (अच्छी तरह) + स्वप् (सोना) = सुषुप्तिः। अर्थ: गाढ़ निद्रा, जहाँ मन शांत होता है। क्रमवार शब्दार्थ: (सु) गाढ़, (स्वप्) निद्रा, (सुषुप्ति) अज्ञान-सुख।

• तुरीय व्युत्पत्ति: चतुर् (चौथा) = तुरीयम्। अर्थ: तीनों अवस्थाओं का साक्षी, शुद्ध ब्रह्म।
क्रमवार शब्दार्थ: (चतुर्) चौथा, (तुरीय) साक्षी-भाव।

• साक्षी व्युत्पत्ति: साक्षात् + ई (देखने वाला) = साक्षी। अर्थ: जो अवस्थाओं को बिना लिप्त हुए देखता है। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षात्) प्रत्यक्ष, (ई) दृष्टा, (साक्षी) चैतन्य।

• पंचकोश व्युत्पत्ति: पंच (पाँच) + कोश = पंचकोशः। अर्थ: आत्मा को ढकने वाली पाँच परतें।
क्रमवार शब्दार्थ: (पंच) पाँच, (कोश) आवरण, (पंचकोश) देह-समूह।

• अन्नमयकोश व्युत्पत्ति: अन्न + मय (बना हुआ) = अन्नमयकोशः। अर्थ: भौतिक शरीर (स्थूल देह)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अन्न) भोजन, (मय) निर्मित, (अन्नमय) भौतिक।

• प्राणमयकोश व्युत्पत्ति: प्राण + मय = प्राणमयकोशः। अर्थ: श्वास और ऊर्जा का समूह। क्रमवार शब्दार्थ: (प्राण) वायु, (मय) निर्मित, (प्राणमय) ऊर्जा।

• मनोमयकोश व्युत्पत्ति: मनस् + मय = मनोमयकोशः। अर्थ: संकल्प-विकल्प करने वाला मन। क्रमवार शब्दार्थ: (मनस्) मन, (मय) निर्मित, (मनोमय) मानसिक।

• विज्ञानमयकोश व्युत्पत्ति: विज्ञान (बुद्धि) + मय = विज्ञानमयकोशः। अर्थ: बुद्धि और अहंकार का समूह। क्रमवार शब्दार्थ: (विज्ञान) बुद्धि, (मय) निर्मित, (विज्ञानमय) बौद्धिक।

• आनन्दमयकोश व्युत्पत्ति: आनन्द + मय = आनन्दमयकोशः। अर्थ: सुषुप्ति में रहने वाला अज्ञान और सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (मय) निर्मित, (आनन्दमय) अविद्या।

• ईश्वर व्युत्पत्ति: ईश् (शासन करना) = ईश्वरः। अर्थ: ब्रह्माण्ड का नियंता। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्) सामर्थ्य, (ईश्वर) स्वामी।

• हिरण्यगर्भ व्युत्पत्ति: हिरण्य (स्वर्ण/तेज) + गर्भ (भ्रूण) = हिरण्यगर्भः। अर्थ: समष्टि सूक्ष्म शरीर, जगत का बीज। क्रमवार शब्दार्थ: (हिरण्य) तेज, (गर्भ) आधार, (हिरण्यगर्भ) सृष्टिकर्ता।

• विराट् व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + राज् (प्रकाशमान) = विराट्। अर्थ: समष्टि स्थूल जगत। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (राज्) प्रकाश, (विराट) ब्रह्माण्ड।

• अहंकार व्युत्पत्ति: अहम् (मैं) + कार (करना) = अहंकारः। अर्थ: कर्तापन का अभिमान। क्रमवार शब्दार्थ: (अहम्) अहम्, (कार) निर्माण, (अहंकार) अहंता।

• बुद्धि व्युत्पत्ति: बुध् (जानना) = बुद्धिः। अर्थ: निर्णय लेने वाली शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (बुध्) ज्ञान, (बुद्धि) प्रज्ञा।

• मन व्युत्पत्ति: मन् (सोचना) = मनः। अर्थ: चिंतन का केंद्र। क्रमवार शब्दार्थ: (मन्) मनन, (मन) संकल्प।

• चित्त व्युत्पत्ति: चित् (चेतन होना) = चित्तम्। अर्थ: जहाँ संस्कार जमा होते हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्) चेतना, (चित्त) स्मृति-भण्डार।

• इन्द्रिय व्युत्पत्ति: इन्द्र (स्वामी/आत्मा) + य = इन्द्रियम्। अर्थ: आत्मा के द्वार या उपकरण। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्र) आत्मा, (य) साधन, (इन्द्रिय) द्वार।

• विषय व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + सि (प्राप्त करना) = विषयः। अर्थ: इंद्रियों का भोग्य। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (सि) प्राप्ति, (विषय) भोग।

• अविद्या व्युत्पत्ति: न (नहीं) + विद्या (ज्ञान) = अविद्या। अर्थ: ब्रह्म को न देख पाना।
क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (विद्या) बोध, (अविद्या) अज्ञान।

• सत्त्वगुण व्युत्पत्ति: सत् (शुद्धता) + गुण = सत्त्वगुणः। अर्थ: प्रकाश और शांति का गुण।
क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) निर्मल, (गुण) तत्व, (सत्त्व) प्रकाश।

• रजोगुण व्युत्पत्ति: रजस् (धूल/चंचलता) + गुण = रजोगुणः। अर्थ: क्रियाशीलता और कामना का गुण।
क्रमवार शब्दार्थ: (रजस्) चंचलता, (गुण) तत्व, (रजोगुण) कर्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 39
• तमोगुण व्युत्पत्ति: तमस् (अंधकार) + गुण = तमोगुणः। अर्थ: जड़ता और मोह का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (तमस्) अंधकार, (गुण) तत्व, (तमोगुण) आलस्य।

• पुरुष व्युत्पत्ति: पुरि (शरीर में) + शेते (सोने वाला) = पुरुषः। अर्थ: जीवात्मा या चैतन्य। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरि) शरीर, (शेते) वासी, (पुरुष) चेतन।

• प्रकृति व्युत्पत्ति: प्र (विशेष) + कृ (करना) = प्रकृतिः। अर्थ: संसार की रचना करने वाली शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्र) प्रकृष्ट, (कृ) रचना, (प्रकृति) जड़-शक्ति।

• सृष्टि-क्रम व्युत्पत्ति: सृष्टि + क्रम = सृष्टि-क्रमः। अर्थ: ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का अनुक्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (सृष्टि) निर्माण, (क्रम) प्रक्रिया, (सृष्टि-क्रम) उद्भव।

• लय-क्रम व्युत्पत्ति: लय + क्रम = लय-क्रमः। अर्थ: विनाश की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (लय) विलय, (क्रम) प्रक्रिया, (लय-क्रम) संहार।

• मोक्ष व्युत्पत्ति: मुच् (छूट जाना) = मोक्षः। अर्थ: अज्ञान और जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (मुच्) मुक्त, (मोक्ष) परम-पद।

• वाद व्युत्पत्ति: वदति इति वादः। अर्थ: सत्य की स्थापना के लिए किया गया तार्किक विचार-विमर्श।
क्रमवार शब्दार्थ: (वदति) बोलना/चर्चा करना, (वादः) संवाद।

• जल्प व्युत्पत्ति: जल्पति इति जल्पः। अर्थ: केवल अपनी बात सिद्ध करने के लिए तर्क-कुतर्क करना।
क्रमवार शब्दार्थ: (जल्पति) बकना, (जल्पः) वितंडावादी चर्चा।

• वितण्डा व्युत्पत्ति: विशिष्टं तण्डं (हिंसा) यस्यां सा। अर्थ: बिना किसी सिद्धांत के केवल दूसरे के पक्ष को गलत सिद्ध करने की प्रवृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (तण्ड) काटना, (वितण्डा) खण्डन-मात्र।

• अनिर्वचनीय व्युत्पत्ति: न निर्वक्तुं शक्यते इति। अर्थ: जिसे सत् या असत् के रूप में परिभाषित न किया जा सके (माया)। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (निर्) परिभाषित करना, (अनिर्वचनीय) अवर्णनीय।

• विवर्तवाद व्युत्पत्ति: विवर्तस्य (आभासी परिवर्तन) वादः। अर्थ: ब्रह्म का जगत के रूप में केवल आभासी परिवर्तन होना (वास्तविक नहीं)। क्रमवार शब्दार्थ: (विवर्त) आभास, (वाद) सिद्धांत।

• परिणामवाद व्युत्पत्ति: परिणामस्य (रूपांतरण) वादः। अर्थ: कारण का वास्तविक रूप से कार्य में बदल जाना (जैसे दूध का दही बनना)। क्रमवार शब्दार्थ: (परिणाम) परिवर्तन, (वाद) सिद्धांत।

• अधिकरण व्युत्पत्ति: अधिक्रियते इति अधिकरणम्। अर्थ: ब्रह्मसूत्र का एक विशिष्ट विषय या प्रकरण। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (करण) साधन, (अधिकरण) अध्याय-खंड।

• विषय व्युत्पत्ति: विषि इति विषयः। अर्थ: शास्त्र या चर्चा का मूल प्रतिपाद्य (ब्रह्म)।
क्रमवार शब्दार्थ: (वि) विशेष, (विषय) लक्ष्य।

• प्रयोजन व्युत्पत्ति: प्रयुज्यते इति प्रयोजनम्। अर्थ: शास्त्र पढ़ने का उद्देश्य (मोक्ष)।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्र) विशेष, (योजन) साधन, (प्रयोजन) उद्देश्य।

• सम्बन्ध व्युत्पत्ति: सम् (एक साथ) + बन्ध। अर्थ: शास्त्र और उसके लक्ष्य (ब्रह्म) के बीच का संबंध। क्रमवार शब्दार्थ: (सम्) साथ, (बन्ध) जुड़ाव, (सम्बन्ध) तादात्म्य।

• पराविद्या व्युत्पत्ति: परा (सर्वोच्च) विद्या। अर्थ: ब्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (परा) श्रेष्ठ, (विद्या) ज्ञान, (पराविद्या) आत्मज्ञान।

• अपराविद्या व्युत्पत्ति: न परा इति अपरा। अर्थ: कर्मकांड और लौकिक ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरा) गौण, (विद्या) विद्या, (अपराविद्या) शास्त्र-ज्ञान।

• प्रपत्ति व्युत्पत्ति: प्र (समर्पण) + पद। अर्थ: ईश्वर के प्रति पूर्ण शरणागति। क्रमवार शब्दार्थ: (प्र) पूरी तरह, (पत्ति) गिरना/समर्पण, (प्रपत्ति) शरणागति।

• शरणागति व्युत्पत्ति: शरणं (आश्रय) + गति। अर्थ: ईश्वर की शरण में जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (शरणं) आश्रय, (गति) जाना, (शरणागति) समर्पण।

• गुरु-कृपा व्युत्पत्ति: गुरुः च कृपा च। अर्थ: गुरु का अनुग्रह जो ज्ञान का मार्ग खोलता है।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुरु) शिक्षक, (कृपा) अनुग्रह।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 40
• सत्-संग व्युत्पत्ति: सतां (सज्जनों का) संगः। अर्थ: सत्य का संग करना। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) सत्य, (संग) साथ, (सत्-संग) आध्यात्मिक साहचर्य।

• भावना व्युत्पत्ति: भावयति इति भावना। अर्थ: विचार को बार-बार मन में लाना। क्रमवार शब्दार्थ: (भावयति) विचारना, (भावना) ध्यान।

• साधक व्युत्पत्ति: साधयति इति साधकः। अर्थ: साधना करने वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (साधयति) पूरा करना, (साधक) अभ्यासी।

• साध्य व्युत्पत्ति: साधनीयं इति साध्यम्। अर्थ: जो प्राप्त करने योग्य हो (परम लक्ष्य)।
क्रमवार शब्दार्थ: (साध्य) लक्ष्य।

• प्रतिबिम्ब व्युत्पत्ति: प्रति (सामने) + बिम्ब (आकृति)। अर्थ: आत्मा का देह में पड़ने वाला आभास (जैसे जल में सूर्य का प्रतिबिंब)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रति) सादृश्य, (बिम्ब) रूप, (प्रतिबिम्ब) छाया।

• बिम्ब व्युत्पत्ति: बिम्बति इति बिम्बम्। अर्थ: मूल तत्व (शुद्ध चैतन्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (मूल) वास्तविकता।

• अवच्छेद व्युत्पत्ति: अव (अलग) + छिद् (काटना)। अर्थ: सीमांकन (आकाश जैसे पात्र से अलग दिखता है, वैसे ही आत्मा देह से)। क्रमवार शब्दार्थ: (अवच्छेद) सीमित करना।

• आभास-वाद व्युत्पत्ति: आभासस्य वादः। अर्थ: यह सिद्धांत कि जीव ब्रह्म का प्रतिबिंब है।
क्रमवार शब्दार्थ: (आभास) प्रतीति, (वाद) मत।

• उपासना व्युत्पत्ति: उप (निकट) + आस (बैठना)। अर्थ: ईश्वर के स्वरूप का निरंतर चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) समीप, (आसना) बैठना, (उपासना) ध्यान।

• सगुण-ब्रह्म व्युत्पत्ति: सह (गुणों के साथ) ब्रह्म। अर्थ: ईश्वर (ईश्वर), जो गुणों से युक्त है।
क्रमवार शब्दार्थ: (स) सहित, (गुण) विशेषण, (सगुण-ब्रह्म) साकार ईश्वर।

• निर्गुण-ब्रह्म व्युत्पत्ति: न गुणाः यस्मिन्। अर्थ: ब्रह्म का शुद्ध, निराकार स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्) बिना, (गुण) विशेषता, (निर्गुण) शुद्ध-चेतन।

• क्रम-मुक्ति व्युत्पत्ति: क्रमेण (धीरे-धीरे) मुक्तिः। अर्थ: सगुण ब्रह्म की उपासना से धीरे- धीरे मुक्ति पाना। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रम) चरणबद्ध, (मुक्ति) मोक्ष।

• सद्यो-मुक्ति व्युत्पत्ति: सद्यः (तत्काल) मुक्तिः। अर्थ: ज्ञान होते ही तुरंत मोक्ष की प्राप्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (सद्यः) तुरंत, (मुक्ति) निर्वाण।

• जीवन्मुक्त व्युत्पत्ति: जीवन् (जीवित रहते हुए) मुक्तः। अर्थ: जो जीते जी अज्ञान से मुक्त हो गया हो। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवन्) जीवित, (मुक्त) स्वतंत्र।

• विदेह-मुक्त व्युत्पत्ति: विदेह (शरीर रहित) + मुक्त। अर्थ: मृत्यु के उपरांत प्राप्त होने वाली मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (विदेह) देहहीन, (मुक्त) स्वतंत्र।

• प्रारब्ध व्युत्पत्ति: प्र + आरब्ध (आरंभ किया हुआ)। अर्थ: जो कर्म इस जन्म का कारण बने हैं।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रारब्ध) फल देने हेतु कर्म।

• सञ्चित व्युत्पत्ति: सम् + चित् (इकट्ठा करना)। अर्थ: पूर्व जन्मों के जमा हुए कर्म। क्रमवार शब्दार्थ: (सञ्चित) संचय।

• आगामी व्युत्पत्ति: आगच्छति इति। अर्थ: जो कर्म भविष्य में फल देंगे। क्रमवार शब्दार्थ: (आगामी) भावी कर्म।

• तत्व-बोध व्युत्पत्ति: तत्वस्य (सत्य का) बोधः। अर्थ: यथार्थ का ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्व) सत्य, (बोध) ज्ञान।

• स्व-स्वरूप व्युत्पत्ति: स्व (स्वयं का) + स्वरूपम्। अर्थ: आत्मा की अपनी स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व) अपना, (स्वरूप) प्रकृति।

• दृष्टि-सृष्टि व्युत्पत्ति: दृष्टिः (ज्ञान) एव सृष्टिः। अर्थ: इस सिद्धांत का मानना कि देखने (ज्ञान) से ही जगत बनता है। क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टि) ज्ञान, (सृष्टि) जगत।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 41
• सृष्टि-दृष्टि व्युत्पत्ति: सृष्टिः पूर्वं ततः दृष्टिः। अर्थ: पहले जगत बना, फिर उसे देखा गया (यथार्थवादी सिद्धांत)। क्रमवार शब्दार्थ: (सृष्टि) जगत, (दृष्टि) अनुभव।

• अवस्था-अभिमानी व्युत्पत्ति: अवस्थायाम् अभिमानः। अर्थ: जो तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) से जुड़ा है। क्रमवार शब्दार्थ: (अवस्था) स्थिति, (अभिमानी) कर्ता।

• विश्व व्युत्पत्ति: विशेषेण अत्ति (भोगता है)। अर्थ: जाग्रत अवस्था का अभिमानी जीव। क्रमवार शब्दार्थ: (विश्व) जाग्रत-पुरुष।

• तैजस व्युत्पत्ति: तेजसः (तेज) युक्तः। अर्थ: स्वप्न अवस्था का अभिमानी जीव। क्रमवार शब्दार्थ: (तैजस) स्वप्न-द्रष्टा।

• प्राज्ञ व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण अज्ञः। अर्थ: सुषुप्ति (गाढ़ निद्रा) का अभिमानी। क्रमवार शब्दार्थ: (प्राज्ञ) सुषुप्ति-द्रष्टा।

• कारण-शरीर व्युत्पत्ति: कारणम् एव शरीरम्। अर्थ: अज्ञान का वह आवरण जो बीज रूप है। क्रमवार शब्दार्थ: (कारण) मूल, (शरीर) आवरण।

• सूक्ष्म-शरीर व्युत्पत्ति: सूक्ष्मम् (अदृश्य) शरीरम्। अर्थ: मन, बुद्धि और प्राणों का समूह।
क्रमवार शब्दार्थ: (सूक्ष्म) अदृश्य, (शरीर) देह।

• स्थूल-शरीर व्युत्पत्ति: स्थूलम् (दृश्य) शरीरम्। अर्थ: पंचभूतों से बना यह हाड़-मांस का शरीर।
क्रमवार शब्दार्थ: (स्थूल) भौतिक, (शरीर) देह।

• व्यष्टि व्युत्पत्ति: व्यष्टिः (व्यक्तिगत)। अर्थ: इकाई या एक व्यक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यष्टि) एक, (अंश) हिस्सा।

• समष्टि व्युत्पत्ति: सम् (पूर्ण) + व्यष्टि। अर्थ: ब्रह्माण्ड या सामूहिक रूप। क्रमवार शब्दार्थ: (समष्टि) पूर्णता।

• अखण्ड-एक-रस व्युत्पत्ति: अखण्डं च तत् एकरसम्। अर्थ: जो हर जगह एक समान और अखंड है। क्रमवार शब्दार्थ: (अखण्ड) अविभाज्य, (एकरस) एकसमान।

• ब्रह्म-वित् व्युत्पत्ति: ब्रह्म वेत्ति (जानता है)। अर्थ: ब्रह्म को जानने वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (वित्) ज्ञानी।

• साक्षी-चैतन्य व्युत्पत्ति: साक्षी च असौ चैतन्यम्। अर्थ: वह शुद्ध ज्ञान जो सब कुछ देखता है पर लिप्त नहीं होता। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षी) गवाह, (चैतन्य) चेतना।

• कैवल्य-पद व्युत्पत्ति: केवलस्य (मुक्त) पदम्। अर्थ: परम मुक्ति की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (पद) स्थान।

801. कैवल्य-पद - परम-मुक्ति की स्थिति व्युत्पत्ति: केवलस्य (शुद्धस्य) पदम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (पद) स्थान।

802. अद्वैत-निष्ठ - अभेद भाव में दृढ़ व्युत्पत्ति: अद्वैते निष्ठा यस्य। क्रमवार
शब्दार्थ: (अद्वैत) एकता, (निष्ठ) स्थित।

803. आत्म-रमण - स्वयं में आनंदित व्युत्पत्ति: आत्मनि रतिः। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म)
स्वयं, (रमण) विहार।

804. ब्रह्म-लीन - परमात्मा में समाया हुआ व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि लीनः। क्रमवार
शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (लीन) विलीन।

805. चित्त-विराम - मन की पूर्ण शांति व्युत्पत्ति: चित्तस्य विश्रामः। क्रमवार
शब्दार्थ: (चित्त) मन, (विराम) विश्राम।

806. माया-जाल - भ्रम का संसार व्युत्पत्ति: मायायाः जालं (बंधन)। क्रमवार शब्दार्थ:
(माया) अविद्या, (जाल) फंदा।

807. ज्ञान-अग्नि - अज्ञान को जलाने वाला बोध व्युत्पत्ति: ज्ञानमेव अग्निः। क्रमवार
शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (अग्नि) दहन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 42
808. मोह-नाश - भ्रम का अंत व्युत्पत्ति: मोहस्य नाशः। क्रमवार शब्दार्थ: (मोह) अज्ञान,
(नाश) समाप्ति।

809. तत्त्व-निष्ठा - सत्य में दृढ़ता व्युत्पत्ति: तत्त्वे निष्ठा। क्रमवार शब्दार्थ:
(तत्त्व) यथार्थ, (निष्ठा) दृढ़ता।

810. मोक्ष-कामी - मुक्ति का इच्छुक व्युत्पत्ति: मोक्षं कामयते इति। क्रमवार शब्दार्थ:
(मोक्ष) मुक्ति, (कामी) चाहने वाला।

811. भाव-अतीत - भावनाओं से परे व्युत्पत्ति: भावैः अतीतम्। क्रमवार शब्दार्थ: (भाव)
भावना, (अतीत) परे।

812. गुण-अतीत - तीनों गुणों से परे व्युत्पत्ति: गुणेभ्यः अतीतम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(गुण) प्रकृति, (अतीत) निर्लिप्त।

813. काल-अतीत - समय की सीमा से परे व्युत्पत्ति: कालस्य अतीतम्। क्रमवार शब्दार्थ: (काल)
समय, (अतीत) परे।

814. देश-अतीत - स्थान की सीमा से मुक्त व्युत्पत्ति: देशात् अतीतम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(देश) स्थान, (अतीत) व्यापक।

815. निर्लिप्त - किसी में न फँसने वाला व्युत्पत्ति: न लिप्यते इति। क्रमवार शब्दार्थ:
(निर्) बिना, (लिप्त) आसक्त।

816. अनासक्त - विरक्त भाव व्युत्पत्ति: न आसक्तिः यस्य। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं,
(आसक्ति) लगाव।

817. आत्म-तृप्त - स्वयं में संतुष्ट व्युत्पत्ति: आत्मना तृप्तः। क्रमवार शब्दार्थ:
(आत्म) आत्मा, (तृप्त) संतुष्ट।

818. नित्य-शुद्ध - सदैव पवित्र व्युत्पत्ति: नित्यं च तत् शुद्धं च। क्रमवार शब्दार्थ:
(नित्य) शाश्वत, (शुद्ध) निर्मल।

819. बुद्ध-मुक्त - ज्ञानी और स्वतंत्र व्युत्पत्ति: बुद्धः च मुक्तः च। क्रमवार
शब्दार्थ: (बुद्ध) ज्ञानी, (मुक्त) स्वतंत्र।

820. अखंड-बोध - अविभाज्य ज्ञान व्युत्पत्ति: अखण्डस्य बोधः। क्रमवार शब्दार्थ: (अखंड)
पूर्ण, (बोध) ज्ञान।

821. अनन्य-भाव - एकाग्र समर्पण व्युत्पत्ति: न अन्यस्य भावः। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य)
एकनिष्ठ, (भाव) प्रेम।

822. परा-भक्ति - सर्वोच्च प्रेम व्युत्पत्ति: परा च सा भक्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (परा)
श्रेष्ठ, (भक्ति) अनुराग।

823. ज्ञान-योग - विचार द्वारा साधना व्युत्पत्ति: ज्ञानाय योगः। क्रमवार शब्दार्थ:
(ज्ञान) बोध, (योग) जुड़ाव।

824. कर्म-योग - निष्काम कर्म मार्ग व्युत्पत्ति: कर्मणा योगः। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म)
कार्य, (योग) साधना।

825. भक्ति-योग - प्रेम द्वारा साधना व्युत्पत्ति: भक्त्या योगः। क्रमवार शब्दार्थ:
(भक्ति) प्रेम, (योग) मिलन।

826. राज-योग - मन नियंत्रण मार्ग व्युत्पत्ति: राज्ञां (मुख्य) योगः। क्रमवार शब्दार्थ:
(राज) श्रेष्ठ, (योग) अभ्यास।

827. आत्म-साक्षात्कार - स्वयं का प्रत्यक्ष ज्ञान व्युत्पत्ति: आत्मनः साक्षात्कारः।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (साक्षात्कार) अनुभव।

828. ब्रह्म-सायुज्य - ब्रह्म से एकरूपता व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः सायुज्यम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (सायुज्य) मिलन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 43
829. परम-शान्ति - सर्वोच्च स्थिरता व्युत्पत्ति: परमा च सा शान्तिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(परम) उत्कृष्ट, (शान्ति) स्थिरता।

830. संसार-व्याधि - संसार रूपी रोग व्युत्पत्ति: संसारस्य व्याधिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(संसार) लोक, (व्याधि) रोग।

831. अविद्या-नाश - अज्ञान का अंत व्युत्पत्ति: अविद्यायाः नाशः। क्रमवार शब्दार्थ:
(अविद्या) अज्ञान, (नाश) अंत।

832. वासना-क्षय - इच्छाओं का अंत व्युत्पत्ति: वासनानां क्षयः। क्रमवार शब्दार्थ:
(वासना) इच्छा, (क्षय) कमी।

833. मन-नाश - मानसिक अस्थिरता का अंत व्युत्पत्ति: मनसः नाशः। क्रमवार शब्दार्थ: (मन)
संकल्प, (नाश) विलय।

834. द्वैत-भ्रम - भेद का मिथ्या ज्ञान व्युत्पत्ति: द्वैतस्य भ्रमः। क्रमवार शब्दार्थ:
(द्वैत) दो, (भ्रम) अविद्या।

835. अभेद-दृष्टि - एकता का दर्शन व्युत्पत्ति: अभेदे दृष्टिः। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद)
एकता, (दृष्टि) अनुभव।

836. पूर्ण-बोध - संपूर्ण सत्य का ज्ञान व्युत्पत्ति: पूर्णस्य बोधः। क्रमवार शब्दार्थ:
(पूर्ण) समग्र, (बोध) ज्ञान।

837. सच्चिद्-रूप - अस्तित्व-चेतना स्वरूप व्युत्पत्ति: सत्-चित् रूपम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (सत्-चित्) ब्रह्म, (रूप) स्वरूप।

838. निर्विशेष - गुणों से परे व्युत्पत्ति: न विशेषः यस्य। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्)
रहित, (विशेष) भेद।

839. सविशेष - गुणों सहित व्युत्पत्ति: सहितः विशेषैः। क्रमवार शब्दार्थ: (स) सहित,
(विशेष) भेद।

840. उपाधि-रहित - सीमाओं से मुक्त व्युत्पत्ति: उपाधिः रहितं यस्य। क्रमवार शब्दार्थ:
(उपाधि) सीमा, (रहित) मुक्त।

841. साक्षी-भाव - द्रष्टा की स्थिति व्युत्पत्ति: साक्षिणः भावः। क्रमवार शब्दार्थ:
(साक्षी) गवाह, (भाव) स्थिति।

842. अहं-ममत्व - मैं और मेरा व्युत्पत्ति: अहं च ममत्वं च। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं)
अहंकार, (ममत्व) मोह।

843. नाम-रूप - जगत का नाम-आकार व्युत्पत्ति: नाम च रूपं च। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम)
संज्ञा, (रूप) आकार।

844. कार्य-कारण - उत्पत्ति और हेतु व्युत्पत्ति: कार्यं च कारणं च। क्रमवार शब्दार्थ:
(कार्य) परिणाम, (कारण) मूल।

845. भेद-बुद्धि - अंतर देखने वाली बुद्धि व्युत्पत्ति: भेदस्य बुद्धिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (भेद) अंतर, (बुद्धि) प्रज्ञा।

846. अभेद-बुद्धि - एकत्व देखने वाली बुद्धि व्युत्पत्ति: अभेदस्य बुद्धिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (बुद्धि) विवेक।

847. आत्म-विद्वान - आत्मज्ञानी व्युत्पत्ति: आत्मा विद्वान्। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म)
स्वयं, (विद्वान) ज्ञानी।

848. अमृत-तत्त्व - अविनाशी सार व्युत्पत्ति: अमृतस्य तत्त्वम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(अमृत) शाश्वत, (तत्त्व) सार।

849. स्व-प्रकाश - स्वयं चमकने वाला व्युत्पत्ति: स्वयमेव प्रकाशः। क्रमवार शब्दार्थ:
(स्व) स्वयं, (प्रकाश) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 44
850. वेदान्त-सार - शास्त्रों का निचोड़ व्युत्पत्ति: वेदान्तस्य सारः। क्रमवार शब्दार्थ:
(वेदान्त) उपनिषद, (सार) निचोड़।

851. • अहंता - मैं होने का भाव या अहंकार व्युत्पत्ति: अहम् (मैं) + ता (भाव)। क्रमवार
शब्दार्थ: (अहं) स्व, (अहंता) व्यक्तित्व।

852. • ममता - 'मेरा' होने का मोह व्युत्पत्ति: मम (मेरा) + ता (भाव)। क्रमवार शब्दार्थ:
(मम) स्वत्व, (ममता) आसक्ति।

853. • आधिव्याधि - मन और शरीर के रोग व्युत्पत्ति: आदि (मानसिक) च व्याधि (शारीरिक) च।
क्रमवार शब्दार्थ: (आधि) मन का रोग, (व्याधि) देह का रोग।

854. • साधारणीकरण - विशेष को सामान्य बनाने की प्रक्रिया व्युत्पत्ति: साधारणम् +
करणम्। क्रमवार शब्दार्थ: (साधारण) सामान्य, (करण) प्रक्रिया।

855. • विभक्ति - अलग करने की प्रक्रिया व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + भज् (विभाजन)। क्रमवार
शब्दार्थ: (वि) विशेष, (भक्ति) विभाजन।

856. • अविभक्त - जो विभाजित न हो सके व्युत्पत्ति: न विभक्तः इति। क्रमवार शब्दार्थ: (अ)
नहीं, (विभक्त) खंडित।

857. • अनन्यता - एकत्व का भाव व्युत्पत्ति: अनन्यस्य भावः। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं,
(अन्य) दूसरा।

858. • आध्यात्मिक - आत्मा से संबंधित व्युत्पत्ति: अध्यात्मम् + इक। क्रमवार शब्दार्थ:
(अधि) संबंधित, (आत्म) आत्मा।

859. • आधिदैविक - देवताओं से संबंधित कष्ट व्युत्पत्ति: अधि दैवम् + इक। क्रमवार
शब्दार्थ: (दैविक) दिव्य, (कष्ट) बाधा।

860. • आधिभौतिक - संसार के पदार्थों से संबंधित व्युत्पत्ति: अधि भौतिकम् + इक। क्रमवार
शब्दार्थ: (भौतिक) सांसारिक, (कष्ट) बाह्य।

861. • प्रमाण - सत्य जानने का साधन व्युत्पत्ति: प्र (विशेष) + मा (मानना/जानना)।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) ज्ञान का स्रोत।

862. • प्रमेय - जानने योग्य वस्तु या विषय व्युत्पत्ति: प्र (विशेष) + मा (मापना) + य।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमेय) ज्ञेय।

863. • प्रमाता - जानने वाला या ज्ञाता व्युत्पत्ति: प्र (विशेष) + मा (जानना) + तृ।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाता) अनुभवकर्ता।

864. • ज्ञान-शक्ति - जानने की सामर्थ्य व्युत्पत्ति: ज्ञानस्य शक्तिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (शक्ति) सामर्थ्य।

865. • क्रिया-शक्ति - कार्य करने की सामर्थ्य व्युत्पत्ति: क्रियायाः शक्तिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (क्रिया) कर्म, (शक्ति) ऊर्जा।

866. • इच्छा-शक्ति - चाहने की सामर्थ्य व्युत्पत्ति: इच्छायाः शक्तिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (इच्छा) कामना, (शक्ति) सामर्थ्य।

867. • अव्याकृत - अव्यक्त या मूल प्रकृति व्युत्पत्ति: न व्याकृतम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(व्याकृत) प्रकट, (अव्याकृत) अप्रकट।

868. • बीजावस्था - कारण रूप में स्थित स्थिति व्युत्पत्ति: बीजम् इव अवस्था। क्रमवार
शब्दार्थ: (बीज) कारण, (अवस्था) स्थिति।

869. • लिंग-देह - सूक्ष्म शरीर व्युत्पत्ति: लिंगं (सूचक) शरीरम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(लिंग) सूक्ष्म, (देह) शरीर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 45
870. • स्थूल-देह - भौतिक शरीर व्युत्पत्ति: स्थूलं शरीरम्। क्रमवार शब्दार्थ: (स्थूल)
भौतिक, (देह) तन।

871. • पंचभूत - पांच भौतिक तत्व व्युत्पत्ति: पञ्च (पांच) + भूतानि। क्रमवार शब्दार्थ:
(पंच) पांच, (भूत) तत्व।

872. • तनमात्रा - सूक्ष्म तत्व व्युत्पत्ति: तत् + मात्रा। क्रमवार शब्दार्थ: (तन) वह,
(मात्रा) सूक्ष्म अंश।

873. • अष्टधा-प्रकृति - आठ प्रकार की प्रकृति व्युत्पत्ति: अष्टधा (आठ प्रकार) +
प्रकृतिः। क्रमवार शब्दार्थ: (अष्ट) आठ, (प्रकृति) शक्ति।

874. • सृष्टि-विलय - बनने और मिटने का क्रम व्युत्पत्ति: सृष्टिः च विलयः च। क्रमवार
शब्दार्थ: (सृष्टि) निर्माण, (विलय) अंत।

875. • अद्वैत-ज्ञान - भेद-रहित बोध व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य ज्ञानम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(अद्वैत) एकता, (ज्ञान) बोध।

876. • द्वैत-प्रपंच - भेदों का संसार व्युत्पत्ति: द्वैतस्य प्रपंचः। क्रमवार शब्दार्थ:
(द्वैत) दो, (प्रपंच) विस्तार।

877. • चिदाभास - चैतन्य का प्रतिबिंब व्युत्पत्ति: चित् + आभासः। क्रमवार शब्दार्थ:
(चित्) चेतना, (आभास) छाया।

878. • अविद्या-लेश - अज्ञान का थोड़ा अंश व्युत्पत्ति: अविद्यायाः लेशः। क्रमवार
शब्दार्थ: (लेश) कण, (अविद्या) अज्ञान।

879. • ब्रह्म-विद्-वर - उत्तम ब्रह्मज्ञानी व्युत्पत्ति: ब्रह्मवित् + वर (श्रेष्ठ)।
क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्मवित्) ज्ञानी, (वर) श्रेष्ठ।

880. • ब्रह्म-विद्-वरीय - श्रेष्ठतम ब्रह्मज्ञानी व्युत्पत्ति: ब्रह्मवित् + वरीय
(सर्वश्रेष्ठ)। क्रमवार शब्दार्थ: (वरीय) सर्वोपरि।

881. • अवस्था-साक्षी - तीन अवस्थाओं को देखने वाला व्युत्पत्ति: अवस्थायाः साक्षी।
क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षी) गवाह।

882. • अंतःकरण-वृत्तियाँ - मन की लहरें व्युत्पत्ति: अंतःकरणस्य वृत्तयः। क्रमवार
शब्दार्थ: (अंतःकरण) मन, (वृत्तियाँ) तरंगें।

883. • अहं-वृत्ति - 'मैं' की लहर व्युत्पत्ति: अहं इति वृत्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं)
अहंकार, (वृत्ति) लहर।

884. • इदं-वृत्ति - 'यह' की लहर व्युत्पत्ति: इदं इति वृत्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (इदं)
यह, (वृत्ति) लहर।

885. • अखंड-आनंद - अविभाजित सुख व्युत्पत्ति: अखंडः आनन्दः। क्रमवार शब्दार्थ: (अखंड)
पूर्ण, (आनंद) सुख।

886. • अद्वय-वस्तु - दूसरी न होने वाली सत्ता व्युत्पत्ति: न द्वयम् यस्याः। क्रमवार
शब्दार्थ: (अद्वय) एक, (वस्तु) पदार्थ।

887. • आत्म-निष्ठता - आत्मा में स्थित होना व्युत्पत्ति: आत्मनि निष्ठा। क्रमवार
शब्दार्थ: (निष्ठता) स्थिरता।

888. • ब्रह्म-परायण - ब्रह्म में लीन रहने वाला व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि परायणः। क्रमवार
शब्दार्थ: (परायण) समर्पित।

889. • असंग-आत्मा - निर्लिप्त रहने वाली आत्मा व्युत्पत्ति: असंगा (न जुड़ने वाली) आत्मा।
क्रमवार शब्दार्थ: (असंग) मुक्त।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 46
890. • अविकार-भाव - परिवर्तन से रहित स्थिति व्युत्पत्ति: विकारस्य अभावः। क्रमवार
शब्दार्थ: (अविकार) स्थिरता।

891. • अद्वैत-सिद्धांत - एकता का दर्शन व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य सिद्धांतः। क्रमवार
शब्दार्थ: (सिद्धांत) मत।

892. • आत्म-ज्ञान-दीप - आत्मज्ञान का प्रकाश व्युत्पत्ति: आत्मज्ञानमेव दीपः। क्रमवार
शब्दार्थ: (दीप) प्रकाश।

893. • मोह-अंधकार - अज्ञान का अंधेरा व्युत्पत्ति: मोहस्य अंधकारः। क्रमवार शब्दार्थ:
(मोह) अविद्या, (अंधकार) तम।

894. • सत्य-अनुसंधान - सत्य की खोज व्युत्पत्ति: सत्यस्य अनुसंधानम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(सत्य) यथार्थ, (अनुसंधान) शोध।

895. • मिथ्या-निषेध - असत्य का त्याग व्युत्पत्ति: मिथ्यायाः निषेधः। क्रमवार शब्दार्थ:
(निषेध) त्याग।

896. • साक्षी-चैतन्य-मात्र - केवल साक्षी चेतना व्युत्पत्ति: साक्षी चैतन्यं मात्रं।
क्रमवार शब्दार्थ: (मात्र) केवल।

897. • नित्य-निरंतर - सदा रहने वाला व्युत्पत्ति: नित्यं च निरंतरं च। क्रमवार शब्दार्थ:
(निरंतर) सदैव।

898. • शाश्वत-तत्व - सनातन सत्य व्युत्पत्ति: शाश्वतं तत्त्वम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(शाश्वत) चिरंतन।

899. • परमार्थ-सत्य - सर्वोच्च यथार्थ व्युत्पत्ति: परमार्थस्य सत्यम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (परमार्थ) सर्वोच्च लक्ष्य।

900. • मोक्ष-अवस्था - मुक्ति की स्थिति व्युत्पत्ति: मोक्षस्य अवस्था। क्रमवार
शब्दार्थ: (मोक्ष) कैवल्य, (अवस्था) स्थिति।

901. अज्ञान-तिमिरांध व्युत्पत्ति: अज्ञान-तिमिरम् (अंधकार) अन्धः यस्य सः। अर्थ: अज्ञान
रूपी अंधकार में डूबा हुआ। क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (तिमिर) अंधकार, (अंध) दृष्टिहीन।

902. ज्ञान-अंजन व्युत्पत्ति: ज्ञानम् एव अंजनम् (मलहम) ज्ञान-अंजनम्। अर्थ: वह ज्ञान, जो
अज्ञान के परदे को हटाकर दृष्टि खोलता है। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (अंजन) औषधि/सुरुमा।

903. अद्वैत-बोध व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य (अभेद का) बोधः। अर्थ: ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा
कुछ नहीं है, ऐसा अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (बोध) ज्ञान।

904. द्वैत-आभास व्युत्पत्ति: द्वैतस्य (भेद का) आभासः। अर्थ: जगत का अलग-अलग रूपों में
दिखाई देना (जो वास्तविक नहीं है)। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) दो/भेद, (आभास) प्रतीति।

905. साक्षि-भाव व्युत्पत्ति: साक्षिणः भावः साक्षि-भावः। अर्थ: दृष्टा बनकर घटनाओं को
तटस्थ भाव से देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षि) गवाह, (भाव) स्थिति।

906. अहं-ब्रह्मास्मि-अनुभव व्युत्पत्ति: अहं ब्रह्म अस्मि इति अनुभवः। अर्थ: मैं ब्रह्म
ही हूँ, ऐसा प्रत्यक्ष आत्म-साक्षात्कार। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) मैं, (ब्रह्म) परमात्मा, (अस्मि) हूँ।

907. तत्त्वमसि-महावाक्य व्युत्पत्ति: तत्त्वम् असि इति महावाक्यम्। अर्थ: वह ब्रह्म
तुम ही हो, यह उपनिषद का मुख्य संदेश। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) वह, (त्वम्) तुम, (असि) हो।

908. सर्वात्म-भाव व्युत्पत्ति: सर्वम् आत्मा इति भावः। अर्थ: सब कुछ आत्मा ही है, ऐसा
दृष्टि-कोण। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्व) सब कुछ, (आत्म) स्वयं, (भाव) बोध।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 47
909. असंग-स्वभाव व्युत्पत्ति: असंगा (अलिप्त) स्वभावः यस्य। अर्थ: आत्मा का किसी भी गुण
या धर्म से न जुड़ना। क्रमवार शब्दार्थ: (असंग) मुक्त, (स्वभाव) प्रकृति।

910. निर्लिप्त-स्थिति व्युत्पत्ति: न लिप्यते इति निर्लिप्तः। अर्थ: कर्म करते हुए भी
परिणामों से न जुड़ने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्) बिना, (लिप्त) आसक्त, (स्थिति)
दशा।

911. आत्म-विस्तार व्युत्पत्ति: आत्मनः विस्तारः। अर्थ: स्वयं की चेतना का सर्वव्यापक
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) आत्मा, (विस्तार) फैलाव।

912. ब्रह्म-विद्योपासना व्युत्पत्ति: ब्रह्म-विद्यायाः उपासना। अर्थ: ब्रह्म के ज्ञान
का निरंतर ध्यान करना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म-विद्या) आत्मज्ञान, (उपासना) ध्यान।

913. यथार्थ-ज्ञान व्युत्पत्ति: यथा (जैसा) अर्थः (वस्तु) तस्य ज्ञानम्। अर्थ: वस्तु को
उसके वास्तविक स्वरूप में जानना। क्रमवार शब्दार्थ: (यथार्थ) सत्य, (ज्ञान) बोध।

914. अयथार्थ-प्रतीति व्युत्पत्ति: न यथार्थः अयथार्थः। अर्थ: जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा
न जानकर भ्रमित होना। क्रमवार शब्दार्थ: (अ) नहीं, (यथार्थ) सत्य, (प्रतीति) आभास।

915. चित्त-प्रसाद व्युत्पत्ति: चित्तस्य प्रसादः (प्रसन्नता)। अर्थ: मन की आंतरिक
निर्मलता और शांति। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (प्रसाद) स्वच्छता/आनंद।

916. अंतःकरण-शुद्धि व्युत्पत्ति: अंतःकरणस्य शुद्धिः। अर्थ: मन, बुद्धि और अहंकार का
पवित्र होना। क्रमवार शब्दार्थ: (अंतःकरण) मन, (शुद्धि) निर्मलता।

917. विषय-विरक्ति व्युत्पत्ति: विषयाणाम् विरक्तिः। अर्थ: इंद्रिय-भोगों के प्रति
अरुचि होना। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय) भोग, (विरक्ति) अरुचि।

918. संसार-सारता व्युत्पत्ति: संसारस्य सारता (अनित्यता)। अर्थ: संसार की नश्वरता को
ठीक से समझ लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (संसार) लोक, (सारता) क्षणभंगुरता।

919. मोक्ष-अभिलाषा व्युत्पत्ति: मोक्षाय अभिलाषा। अर्थ: परम मुक्ति प्राप्त करने की
तीव्र इच्छा। क्रमवार शब्दार्थ: (मोक्ष) मुक्ति, (अभिलाषा) चाह।

920. साधन-चतुष्टय व्युत्पत्ति: साधनानां चतुष्टयम्। अर्थ: मोक्ष के लिए आवश्यक चार
मुख्य योग्यताएं। क्रमवार शब्दार्थ: (साधन) उपाय, (चतुष्टय) चार।

921. विवेक-वैराग्य-युग्म व्युत्पत्ति: विवेकः च वैराग्यं च। अर्थ: सत्य का बोध और मोह का
त्याग। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक) प्रज्ञा, (वैराग्य) विरक्ति।

922. शम-दम-आदि व्युत्पत्ति: शमः दमः आदयः येषां ते। अर्थ: मन और इंद्रियों को नियंत्रित
करने वाले गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (शम) मन-जय, (दम) इंद्रिय-जय।

923. उपरति-प्रसाद व्युत्पत्ति: उपरतेः प्रसादः। अर्थ: सांसारिक क्रियाओं से रुकने का
मानसिक सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (उपरति) उपराम, (प्रसाद) शांति।

924. तितिक्षा-शक्ति व्युत्पत्ति: तितिक्षायाः शक्तिः। अर्थ: सुख-दुख आदि द्वंद्वों को
सहन करने की क्षमता। क्रमवार शब्दार्थ: (तितिक्षा) धैर्य, (शक्ति) सामर्थ्य।

925. समाधान-निष्ठा व्युत्पत्ति: समाधानस्य निष्ठा। अर्थ: चित्त का एक ही ब्रह्म-लक्ष्य
पर अडिग रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (समाधान) एकाग्रता, (निष्ठा) दृढ़ता।

926. श्रद्धा-भक्ति व्युत्पत्ति: श्रद्धा च भक्तिः च। अर्थ: गुरु-शास्त्र में विश्वास और
ईश्वर के प्रति प्रेम। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रद्धा) आस्था, (भक्ति) अनुराग।

927. आत्म-चिंतन व्युत्पत्ति: आत्मनः चिंतनम्। अर्थ: अपने वास्तविक स्वरूप का निरंतर
विचार करना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (चिंतन) विचार।

928. ब्रह्म-चिंतन व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः चिंतनम्। अर्थ: परमात्मा के स्वरूप में मन को
टिकाना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (चिंतन) मनन।

929. अखंड-चिन्तन व्युत्पत्ति: अखंडं च तत् चिन्तनं च। अर्थ: बिना किसी व्यवधान के ब्रह्म
का ध्यान। क्रमवार शब्दार्थ: (अखंड) पूर्ण, (चिंतन) मनन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 48
930. वासना-क्षय व्युत्पत्ति: वासनानां क्षयः। अर्थ: दबी हुई इच्छाओं का पूरी तरह समाप्त
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (वासना) कामना, (क्षय) अंत।

931. मनोनाश-प्रक्रिया व्युत्पत्ति: मनसः नाशस्य प्रक्रिया। अर्थ: मन के चंचल संकल्पों
को शांत करने का तरीका। क्रमवार शब्दार्थ: (मन) संकल्प, (नाश) विलय।

932. तत्त्व-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: तत्त्वस्य साक्षात्कारः। अर्थ: परम सत्य (ब्रह्म)
का सीधा अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्व) सत्य, (साक्षात्कार) अनुभव।

933. जीवन्मुक्ति-अवस्था व्युत्पत्ति: जीवन्मुक्तेः अवस्था। अर्थ: देह में रहते हुए भी
अज्ञान से मुक्त होने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (जीवन्मुक्त) जीवित मुक्त, (अवस्था) स्थिति।

934. विदेह-मुक्ति-प्रकार व्युत्पत्ति: विदेहमुक्तेः प्रकारः। अर्थ: शरीर छूटने के बाद
प्राप्त होने वाली मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (विदेह) देहहीन, (मुक्ति) मोक्ष।

935. क्रम-मुक्ति-मार्ग व्युत्पत्ति: क्रममुक्तेः मार्गः। अर्थ: उपासना के द्वारा
चरणबद्ध मोक्ष का रास्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रम) चरण, (मुक्ति) मोक्ष।

936. सद्यो-मुक्ति-अनुभव व्युत्पत्ति: सद्योमुक्तेः अनुभवः। अर्थ: ब्रह्म-ज्ञान के
तुरंत बाद मोक्ष का अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (सद्यः) तत्काल, (अनुभव) साक्षात्कार।

937. अविद्या-निवृत्ति व्युत्पत्ति: अविद्यायाः निवृत्तिः। अर्थ: अज्ञान का पूरी तरह
मिट जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (निवृत्ति) समाप्ति।

938. प्रारब्ध-भोग व्युत्पत्ति: प्रारब्धस्य भोगः। अर्थ: जो कर्म इस जन्म का कारण बने
हैं, उनका फल भोगना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रारब्ध) पूर्व-कर्म, (भोग) अनुभव।

939. संचित-कर्म-नाश व्युत्पत्ति: संचित-कर्मणाम् नाशः। अर्थ: पिछले अनेक जन्मों के
इकट्ठे कर्मों का समाप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (संचित) जमा, (नाश) अंत।

940. आगामी-अकर्मण्य व्युत्पत्ति: आगामी कर्मणाम् अकर्मण्यता। अर्थ: भविष्य के कर्मों
का फल से न बँधना। क्रमवार शब्दार्थ: (आगामी) भविष्य, (अकर्मण्य) निष्फल।

941. ब्रह्म-एकत्व व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः एकत्वम्। अर्थ: ब्रह्म का अद्वितीय या केवल एक
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकत्व) एकता।

942. आत्मा-अनात्मा-भेद व्युत्पत्ति: आत्मा च अनात्मा च तयोः भेदः। अर्थ: स्वयं (आत्मा)
और शरीर (अनात्मा) के बीच अंतर का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) स्व, (अनात्मा) जड़/देह।

943. दृश्य-जगत-मिथ्या व्युत्पत्ति: दृश्यं जगत मिथ्या। अर्थ: दिखने वाला संसार अस्थायी
या मायावी है। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्य) संसार, (मिथ्या) आभासी।

944. सत्य-एकमात्र व्युत्पत्ति: सत्यम् एकमात्रम्। अर्थ: केवल ब्रह्म ही एकमात्र सत्य
है। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्य) यथार्थ, (एकमात्र) केवल।

945. आत्म-अनन्यता व्युत्पत्ति: आत्मनः अनन्यता। अर्थ: आत्मा से भिन्न कुछ भी नहीं है।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्वयं, (अनन्यता) एकरूपता।

946. ब्रह्म-आनंद व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः आनन्दः। अर्थ: ब्रह्म की प्राप्ति से उत्पन्न
परमानंद। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (आनंद) सुख।

947. अद्वैत-दर्शन व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य दर्शनम्। अर्थ: भेद-रहित दृष्टि से सत्य को
देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (दर्शन) शास्त्र/दृष्टि।

948. आत्म-साक्षी व्युत्पत्ति: आत्मनः साक्षी। अर्थ: अपनी ही चेतना को दृष्टा के रूप में
जानना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (साक्षी) दृष्टा।

949. नित्य-निरंजन व्युत्पत्ति: नित्यं च निरंजनं च। अर्थ: जो सदैव शुद्ध और दोष-रहित है।
क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) शाश्वत, (निरंजन) दोषरहित।

950. कैवल्य-प्राप्ति व्युत्पत्ति: कैवल्यस्य प्राप्तिः। अर्थ: परम मोक्ष या आत्म-
स्थिति का प्राप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (प्राप्ति) उपलब्धि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 49
951. • आनन्द-स्वरूप - जो स्वयं सुख का आकार है व्युत्पत्ति: आनन्दः स्वरूपं यस्य।
क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (स्वरूप) प्रकृति।

952. • भूमा - जो अनंत और असीम है व्युत्पत्ति: भूम् (विस्तार) + म। क्रमवार शब्दार्थ:
(भूमा) पूर्णता, (अनंत) असीमित।

953. • अल्प - जो परिमित या छोटा है व्युत्पत्ति: अल्प (न्यून) इति। क्रमवार शब्दार्थ:
(अल्प) सीमित, (तुच्छ) थोड़ा।

954. • आकाश - वेदान्त सम्मत शून्य या अव्यक्त तत्व व्युत्पत्ति: आ (सब ओर) + काश्
(प्रकाशित होना)। क्रमवार शब्दार्थ: (आकाश) अवकाश, (तत्व) सूक्ष्मभूत।

955. • प्राण - वह शक्ति जो जीवन का आधार है व्युत्पत्ति: प्र + अन (श्वास लेना)। क्रमवार
शब्दार्थ: (प्राण) जीवन-शक्ति, (अन) गति।

956. • मानस - वह मन जो संकल्प-विकल्प करता है व्युत्पत्ति: मन् (सोचना) + अस। क्रमवार
शब्दार्थ: (मन) चिंतन, (सत्) तत्व।

957. • संकल्प - मन का दृढ़ निश्चय व्युत्पत्ति: सम् (पूर्ण) + क्लृप् (निश्चय करना)।
क्रमवार शब्दार्थ: (सम्) अच्छी तरह, (कल्प) विचार।

958. • विचार - सत्य की खोज में चिंतन व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + चर् (चलना)। क्रमवार
शब्दार्थ: (वि) विशेष, (चार) चिंतन।

959. • ध्यान - एक लक्ष्य पर मन की एकाग्रता व्युत्पत्ति: ध्ये (चिंतन करना) + अन।
क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (चिन्तन) विचार।

960. • विज्ञान - विशेष ज्ञान या बोध व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + ज्ञा (जानना)। क्रमवार
शब्दार्थ: (वि) विशिष्ट, (ज्ञान) बोध।

961. • बल - मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति व्युत्पत्ति: बल (शक्ति) इति। क्रमवार शब्दार्थ:
(बल) सामर्थ्य, (शक्ति) ऊर्जा।

962. • अन्न - भौतिक तत्व या पदार्थ व्युत्पत्ति: अद् (खाना) + न। क्रमवार शब्दार्थ:
(अन्न) भोजन, (तत्व) भौतिक आधार।

963. • आप - जल का सूक्ष्म स्वरूप व्युत्पत्ति: आप् (व्याप्त होना)। क्रमवार शब्दार्थ:
(आप) जल, (तत्व) द्रव।

964. • तेज - अग्नि या ऊर्जा का सूक्ष्म स्वरूप व्युत्पत्ति: तिज् (तीक्ष्ण होना)।
क्रमवार शब्दार्थ: (तेज) प्रकाश, (ऊर्जा) गर्मी।

965. • सत्य - जो कालत्रय (भूत-वर्तमान-भविष्य) में अपरिवर्तनीय है व्युत्पत्ति: सत् (सदा
रहने वाला) + य। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) नित्य, (य) स्वरूप।

966. • सुख - आनंद का सांसारिक अनुभव व्युत्पत्ति: सु (अच्छा) + ख (आकाश/स्थान)। क्रमवार
शब्दार्थ: (सु) शुभ, (ख) स्थिति।

967. • अखण्ड-आकार - बिना टुकड़ों का एक स्वरूप व्युत्पत्ति: अखण्डः आकारः यस्य। क्रमवार
शब्दार्थ: (अखण्ड) अविभाज्य, (आकार) स्वरूप।

968. • वृत्ति-व्याप्ति - मन का विषय तक पहुंचना व्युत्पत्ति: वृत्तेः व्याप्तिः।
क्रमवार शब्दार्थ: (वृत्ति) मन की लहर, (व्याप्ति) फैलाव।

969. • फल-व्याप्ति - चैतन्य का विषय को प्रकाशित करना व्युत्पत्ति: फलस्य (चैतन्य)
व्याप्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (फल) परिणाम, (व्याप्ति) ज्ञान।

970. • अन्तःकरण-वृत्ति - मन की स्थिति व्युत्पत्ति: अन्तःकरणस्य वृत्तिः। क्रमवार
शब्दार्थ: (अन्तःकरण) मन, (वृत्ति) तरंगे।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 50
971. • अहं-वृत्ति - 'मैं' का आभास व्युत्पत्ति: अहं इति वृत्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं)
स्व, (वृत्ति) भावना।

972. • साक्षी-चैतन्य - गवाह स्वरूप चेतना व्युत्पत्ति: साक्षिणः चैतन्यम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (साक्षी) द्रष्टा, (चैतन्य) ज्ञान।

973. • जीव-ब्रह्म-ऐक्य - जीवात्मा और परमात्मा की एकता व्युत्पत्ति: जीवस्य ब्रह्मणः च
ऐक्यम्। क्रमवार शब्दार्थ: (जीव) प्राणी, (ब्रह्म) परमात्मा, (ऐक्य) एकता।

974. • महावाक्य-अनुसंधान - वेदों के सार का विचार व्युत्पत्ति: महावाक्यस्य
अनुसंधानम्। क्रमवार शब्दार्थ: (महावाक्य) उपनिषद्-सूत्र, (अनुसंधान) शोध।

975. • श्रवण - गुरु से वेदान्त का उपदेश सुनना व्युत्पत्ति: श्रु (सुनना) + अन। क्रमवार
शब्दार्थ: (श्रवण) सुनना, (उपदेश) ज्ञान।

976. • मनन - सुने हुए का विचार करना व्युत्पत्ति: मन् (सोचना) + अन। क्रमवार शब्दार्थ:
(मनन) चिंतन, (विचार) तर्क।

977. • निदिध्यासन - दृढ़तापूर्वक ध्यान करना व्युत्पत्ति: नि (निश्चित) + ध्यै (ध्यान)।
क्रमवार शब्दार्थ: (निदिध्यासन) अभ्यास, (समाधि) स्थिति।

978. • अपरोक्ष-अनुभूति - प्रत्यक्ष अनुभव व्युत्पत्ति: अपरोक्षः (प्रत्यक्ष) अनुभूतिः।
क्रमवार शब्दार्थ: (अपरोक्ष) सीधा, (अनुभूति) साक्षात्कार।

979. • तत्व-जिज्ञासा - सत्य को जानने की इच्छा व्युत्पत्ति: तत्वस्य जिज्ञासा। क्रमवार
शब्दार्थ: (तत्व) सत्य, (जिज्ञासा) जानने की इच्छा।

980. • स्वयं-प्रकाश - जो अपने आप प्रकाशित हो व्युत्पत्ति: स्वयं प्रकाशते इति। क्रमवार
शब्दार्थ: (स्वयं) स्वतः, (प्रकाश) ज्ञान।

981. • वस्तु-तत्व - वास्तविकता का सार व्युत्पत्ति: वस्तुनः तत्वम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(वस्तु) पदार्थ, (तत्व) स्वभाव।

982. • माया-विच्छेद - भ्रम का कटना व्युत्पत्ति: मायायाः विच्छेदः। क्रमवार शब्दार्थ:
(माया) अविद्या, (विच्छेद) अंत।

983. • अविद्या-नाश - अज्ञान का अंत व्युत्पत्ति: अविद्यायाः नाशः। क्रमवार शब्दार्थ:
(अविद्या) अज्ञान, (नाश) समाप्ति।

984. • प्रपंच-विलय - जगत का ब्रह्म में लीन होना व्युत्पत्ति: प्रपंचस्य विलयः। क्रमवार
शब्दार्थ: (प्रपंच) जगत, (विलय) अंत।

985. • अद्वैत-सिद्धांत - गैर-द्वैतवाद का नियम व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य सिद्धांतः।
क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (सिद्धांत) तर्क।

986. • ज्ञान-निष्ठा - ज्ञान में दृढ़ स्थिति व्युत्पत्ति: ज्ञाने निष्ठा। क्रमवार
शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (निष्ठा) अटल रहना।

987. • भक्ति-निष्ठा - प्रेम में दृढ़ स्थिति व्युत्पत्ति: भक्तौ निष्ठा। क्रमवार
शब्दार्थ: (भक्ति) अनुराग, (निष्ठा) समर्पण।

988. • कर्म-निष्ठा - निष्काम कर्म में दृढ़ता व्युत्पत्ति: कर्मणि निष्ठा। क्रमवार
शब्दार्थ: (कर्म) कार्य, (निष्ठा) लगन।

989. • योग-भ्रष्ट - जो अभ्यास में गिर गया हो व्युत्पत्ति: योगतः भ्रष्टः। क्रमवार
शब्दार्थ: (योग) साधना, (भ्रष्ट) पथ-भ्रष्ट।

990. • संन्यास-आश्रम - त्याग का मार्ग व्युत्पत्ति: सम् + न्यस् (सब कुछ छोड़ना)।
क्रमवार शब्दार्थ: (संन्यास) त्याग, (आश्रम) जीवन-चरण।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 51
991. • तुरीयातीत - चौथी अवस्था से भी परे व्युत्पत्ति: तुरीयात् अतीतम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (तुरीय) चौथी अवस्था, (अतीत) परे।

992. • महाकारण-शरीर - अज्ञान का मूल बीज व्युत्पत्ति: महत् (बड़ा) कारण-शरीरम्। क्रमवार
शब्दार्थ: (महा) महान, (कारण) बीज।

993. • पर-ब्रह्म - सर्वोच्च परमात्मा व्युत्पत्ति: परं (श्रेष्ठ) ब्रह्म। क्रमवार
शब्दार्थ: (पर) परम, (ब्रह्म) ईश्वर।

994. • अक्षर-ब्रह्म - अविनाशी परमात्मा व्युत्पत्ति: न क्षरति (नाश) इति। क्रमवार
शब्दार्थ: (अक्षर) अविनाशी, (ब्रह्म) नित्य।

995. • अखण्ड-रस - असीमित आनंद का स्वाद व्युत्पत्ति: अखण्डः रसः (आनंद)। क्रमवार
शब्दार्थ: (अखण्ड) पूर्ण, (रस) आनंद।

996. • रसानन्द - आनंद का अनुभव व्युत्पत्ति: रसस्य आनन्दः। क्रमवार शब्दार्थ: (रस) सार,
(आनन्द) सुख।

997. • अन्तर्यामी - भीतर स्थित नियंता व्युत्पत्ति: अन्तः (भीतर) + यम (नियंत्रण)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तः) हृदय, (यामी) स्वामी।

998. • पूर्णत्व - पूर्ण होने की अवस्था व्युत्पत्ति: पूर्णस्य भावः। क्रमवार शब्दार्थ:
(पूर्ण) समग्र, (त्व) गुण।

999. • आत्म-विभूति - आत्मा का वैभव व्युत्पत्ति: आत्मनः विभूतिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(आत्म) स्व, (विभूति) वैभव।

1000. • कैवल्य-मोक्ष - पूर्ण स्वतंत्रता व्युत्पत्ति: केवलस्य (मुक्त) भावः। क्रमवार
शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (मोक्ष) मुक्ति।

1001. अनन्य-भक्ति - ईश्वर के प्रति एकनिष्ठ प्रेम व्युत्पत्ति: न अन्यः (कोई दूसरा नहीं)
भक्तिः यस्यां सा। अर्थ: जहाँ उपास्य के अतिरिक्त किसी अन्य का चिंतन न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकाग्र, (भक्ति) अनुराग।

1002. ब्रह्म-सुख - परमात्मा जनित आनंद व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः सुखम्। अर्थ: ब्रह्म-अनुभव
से प्राप्त दिव्य आनंद। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (सुख) आनंद।

1003. विज्ञानात्मा - बुद्धि युक्त जीव व्युत्पत्ति: विज्ञानं (बुद्धि) आत्मा यस्य। अर्थ:
वह चैतन्य जो बुद्धि के माध्यम से कार्य करता है। क्रमवार शब्दार्थ: (विज्ञान) बुद्धि, (आत्मा) चेतना।

1004. प्राण-विद्या - जीवन शक्ति का ज्ञान व्युत्पत्ति: प्राणस्य विद्या। अर्थ: श्वास और
जीवनी शक्ति पर आधारित उपासना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्राण) जीवन-शक्ति, (विद्या) ज्ञान।

1005. मनोमय-कोश - मन का आवरण व्युत्पत्ति: मनः एव मयम् (युक्त) कोशः। अर्थ: संकल्प-विकल्प
करने वाला सूक्ष्म शरीर का स्तर। क्रमवार शब्दार्थ: (मन) संकल्प, (मय) युक्त, (कोश) परत।

1006. विज्ञानमय-कोश - बुद्धि का आवरण व्युत्पत्ति: विज्ञानं (बोध) मयम् कोशः। अर्थ:
बुद्धि और ज्ञान का सूक्ष्म आवरण। क्रमवार शब्दार्थ: (विज्ञान) विवेक, (कोश) आवरण।

1007. आनन्दमय-कोश - सुख का आवरण व्युत्पत्ति: आनन्दः मयम् कोशः। अर्थ: सुषुप्ति और समाधि
का आनंदमय स्तर। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (कोश) आवरण।

1008. अन्नमय-कोश - भौतिक देह व्युत्पत्ति: अन्नं मयम् कोशः। अर्थ: भोजन से बना यह स्थूल
शरीर। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्न) भोजन, (कोश) शारीरिक परत।

1009. प्राणमय-कोश - ऊर्जा का स्तर व्युत्पत्ति: प्राणः मयम् कोशः। अर्थ: पंच-प्राणों से
निर्मित शरीर का आवरण। क्रमवार शब्दार्थ: (प्राण) शक्ति, (कोश) आवरण।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 52
1010. उपनिषद्-विद्या - ब्रह्म ज्ञान व्युत्पत्ति: उप (समीप) + नि (निश्चय) + सद् (बैठना)।
अर्थ: गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया गया रहस्य ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (उपनिषद्) ब्रह्मविद्या, (विद्या) ज्ञान।

1011. आत्म-बोध - स्वयं का ज्ञान व्युत्पत्ति: आत्मनः बोधः। अर्थ: अपने वास्तविक स्वरूप को
जानना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (बोध) ज्ञान।

1012. सर्व-खल्विदम् - सब कुछ ब्रह्म ही है व्युत्पत्ति: सर्वं खलु इदं (ब्रह्म)। अर्थ:
संपूर्ण जगत ब्रह्म ही है। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्व) सब, (खलु) निश्चय, (इदम्) यह।

1013. नेति-नेति - यह भी नहीं, वह भी नहीं व्युत्पत्ति: न इति, न इति। अर्थ: ब्रह्म को जानने
के लिए अनात्म वस्तुओं का निषेध। क्रमवार शब्दार्थ: (न) नहीं, (इति) ऐसा।

1014. सत्य-ज्ञान-अनंत - ब्रह्म के विशेषण व्युत्पत्ति: सत्यं च ज्ञानं च अनंतं च। अर्थ: जो
नित्य, बोधस्वरूप और असीम है। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्य) नित्य, (ज्ञान) बोध, (अनंत) असीमित।

1015. ब्रह्म-साक्षात्कार - ब्रह्म का प्रत्यक्ष दर्शन व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः
साक्षात्कारः। अर्थ: ब्रह्म को अनुभव का विषय बनाना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (साक्षात्कार) अनुभव।

1016. अद्वय-ज्ञान - दो से रहित बोध व्युत्पत्ति: न द्वयं (दो) यत्र। अर्थ: जहाँ एकता के
सिवा कुछ न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वय) अद्वितीय, (ज्ञान) बोध।

1017. विषाद-योग - दुख का अनुभव व्युत्पत्ति: विषादस्य योगः। अर्थ: मोह से उत्पन्न मानसिक
दुख। क्रमवार शब्दार्थ: (विषाद) दुख, (योग) संबंध।

1018. सांख्य-योग - विवेक का मार्ग व्युत्पत्ति: संख्या (विवेक) योगः। अर्थ: प्रकृति और
पुरुष का भेद करने वाला मार्ग। क्रमवार शब्दार्थ: (सांख्य) गणना/विवेक, (योग) मार्ग।

1019. निष्काम-कर्म - फल की इच्छा से मुक्त कार्य व्युत्पत्ति: निष् (रहित) + काम (इच्छा) +
कर्म। अर्थ: स्वार्थ रहित कर्म। क्रमवार शब्दार्थ: (निष्काम) इच्छाहीन, (कर्म) कार्य।

1020. स्थितप्रज्ञ - स्थिर बुद्धि वाला व्युत्पत्ति: स्थिता प्रज्ञा यस्य। अर्थ: जिसका मन
सुख-दुख में विचलित न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (स्थित) स्थिर, (प्रज्ञ) बुद्धि।

1021. गुणातीत - गुणों से परे व्युत्पत्ति: गुणात् (सत्, रज, तम) अतीतम्। अर्थ: प्रकृति के
तीनों गुणों से मुक्त पुरुष। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) प्रकृति के स्वभाव, (अतीत) परे।

1022. क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ - देह और देही व्युत्पत्ति: क्षेत्रं (शरीर) + क्षेत्रज्ञ
(आत्मा)। अर्थ: शरीर और उसे जानने वाला चैतन्य। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षेत्र) शरीर, (क्षेत्रज्ञ) आत्मा।

1023. पुरुषोत्तम - सर्वोच्च पुरुष व्युत्पत्ति: पुरुषः उत्तमः। अर्थ: जो क्षर और अक्षर से
भी श्रेष्ठ है (परमात्मा)। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरुष) आत्मा/ईश्वर, (उत्तम) श्रेष्ठ।

1024. अद्वैत-सिद्धि - एकता की स्थापना व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य सिद्धिः। अर्थ: द्वैत के
भ्रम का मिटना। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (सिद्धि) प्राप्ति।

1025. माया-शक्ति - भ्रम पैदा करने वाली ऊर्जा व्युत्पत्ति: मायायाः शक्तिः। अर्थ: ईश्वर
की वह शक्ति जिससे संसार भासता है। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) भ्रम, (शक्ति) सामर्थ्य।

1026. ईश्वर-प्रणिधान - ईश्वर में समर्पण व्युत्पत्ति: ईश्वरस्य प्रणिधानम्। अर्थ: सब कुछ
ईश्वर को समर्पित करना। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (प्रणिधान) समर्पण।

1027. आत्म-संयम - स्वयं पर नियंत्रण व्युत्पत्ति: आत्मनः संयमः। अर्थ: मन को वश में रखना।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (संयम) नियंत्रण।

1028. अभ्यास-योग - बार-बार करने की साधना व्युत्पत्ति: अभ्यासस्य योगः। अर्थ: चित्त को
स्थिर करने का निरंतर प्रयत्न। क्रमवार शब्दार्थ: (अभ्यास) पुनरावृत्ति, (योग) जुड़ाव।

1029. वैराग्य-भावना - संसार से अरुचि व्युत्पत्ति: वैराग्यस्य भावना। अर्थ: सांसारिक
वस्तुओं में दोष देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (वैराग्य) अनासक्ति, (भावना) विचार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 53
1030. चित्त-वृत्ति-निरोध - मन की लहरों को रोकना व्युत्पत्ति: चित्त-वृत्तीनां निरोधः।
अर्थ: योग का मुख्य लक्ष्य (पतंजलि योगसूत्र)। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (वृत्ति) लहर, (निरोध) रोक।

1031. अष्टांग-योग - योग के आठ अंग व्युत्पत्ति: अष्ट (आठ) अंगानि। अर्थ: यम, नियम आदि आठ
सोपान। क्रमवार शब्दार्थ: (अष्ट) आठ, (योग) मार्ग।

1032. यमनियम - आचरण के नियम व्युत्पत्ति: यमः च नियमः च। अर्थ: संयम और अनुशासन। क्रमवार
शब्दार्थ: (यम) निषेध, (नियम) विधि।

1033. आसन-प्राणायाम - शारीरिक और प्राणिक स्थिरता व्युत्पत्ति: आसनं च प्राणायामः। अर्थ:
शरीर और श्वास का अभ्यास। क्रमवार शब्दार्थ: (आसन) शारीरिक स्थिति, (प्राणायाम) श्वास नियंत्रण।

1034. प्रत्याहार - इंद्रियों का अंतर्मुखी होना व्युत्पत्ति: प्रति + आ + हृ (खींचना)।
अर्थ: मन को बाहरी विषयों से हटाना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रति) विपरीत, (आहार) विषय।

1035. धारणा - मन का एक स्थान पर ठहराव व्युत्पत्ति: धृ (धारण करना) + अना। अर्थ: चित्त को
एक ध्येय पर रोकना। क्रमवार शब्दार्थ: (धारणा) एकाग्रता।

1036. ध्यान-समाधि - उच्चतम मानसिक स्थिति व्युत्पत्ति: ध्यानं च समाधिः। अर्थ: पूर्ण
तन्मयता की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) चिंतन, (समाधि) पूर्ण मिलन।

1037. विवेक-ख्याति - यथार्थ का ज्ञान व्युत्पत्ति: विवेकस्य ख्यातिः। अर्थ: प्रकृति और
पुरुष का स्पष्ट भेद। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक) बोध, (ख्याति) ज्ञान।

1038. अस्मिता - अहंकार का सूक्ष्म रूप व्युत्पत्ति: अस्मि (मैं हूँ) + ता। अर्थ: 'मैं हूँ'
का सूक्ष्म भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (अस्मिता) अहंकार।

1039. क्लेश-पंचक - पांच प्रकार के दुख व्युत्पत्ति: क्लेशस्य पञ्चकम्। अर्थ: अविद्या,
अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश। क्रमवार शब्दार्थ: (क्लेश) दुख, (पंचक) समूह।

1040. कर्म-विपाक - कर्मों का फल व्युत्पत्ति: कर्मणाम् विपाकः। अर्थ: कर्मों का पककर फल
देना। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म) कार्य, (विपाक) फल।

1041. संस्कार-शेष - शेष बचे हुए प्रभाव व्युत्पत्ति: संस्काराणां शेषः। अर्थ: कर्मों के
मन में पड़े हुए चिन्ह। क्रमवार शब्दार्थ: (संस्कार) प्रभाव, (शेष) बाकी।

1042. कैवल्य-पद - शुद्ध मुक्ति व्युत्पत्ति: केवलस्य (मुक्त) पदम्। अर्थ: जहाँ कोई द्वैत
नहीं रहता। क्रमवार शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (पद) स्थिति।

1043. ईश्वर-प्रसादन - ईश्वर की कृपा व्युत्पत्ति: ईश्वरस्य प्रसादनम्। अर्थ: साधना से
ईश्वर को प्रसन्न करना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रसादन) कृपा।

1044. चित्त-प्रसाद - मन की निर्मलता व्युत्पत्ति: चित्तस्य प्रसादः। अर्थ: मन का प्रसन्न
और शांत होना। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (प्रसाद) शांति।

1045. आत्म-साक्षात्कार - स्व का अनुभव व्युत्पत्ति: आत्मनः साक्षात्कारः। अर्थ: स्वयं को
आत्मा के रूप में अनुभव करना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्वयं, (साक्षात्कार) अनुभव।

1046. ब्रह्म-भवन - ब्रह्म में स्थिति व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः भवनम्। अर्थ: ब्रह्म के ही
स्वरूप में स्थित हो जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (भवन) होना।

1047. अद्वैत-उपदेश - एकता का उपदेश व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य उपदेशः। अर्थ: गुरु द्वारा
दिया गया अभेद ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (उपदेश) शिक्षा।

1048. आत्म-विश्राम - स्वयं में विश्राम व्युत्पत्ति: आत्मनि विश्रामः। अर्थ: चित्त का
आत्मा में टिक जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (विश्राम) ठहराव।

1049. पूर्ण-ब्रह्म - पूर्ण परमात्मा व्युत्पत्ति: पूर्णं च तत् ब्रह्म च। अर्थ: जो हर तरह
से संपूर्ण है। क्रमवार शब्दार्थ: (पूर्ण) परिपूर्ण, (ब्रह्म) ईश्वर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 54
1050. अमृत-त्व - अमरता व्युत्पत्ति: अमृतस्य भावः। अर्थ: आत्मा का अविनाशी स्वभाव।
क्रमवार शब्दार्थ: (अमृत) नित्य, (त्व) स्थिति।

1051. • स्वरूप-लक्षण - वस्तु का वह लक्षण जो सदा उससे अलग न हो व्युत्पत्ति: स्वरूपं
(स्वाभाविक) लक्षणं (परिभाषा) यस्य। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वरूप) मूल स्वभाव, (लक्षण)
विशेषता।

1052. • तटस्थ-लक्षण - किसी वस्तु को बाहर से पहचानने वाला गुण (जैसे जगत का कारण होना)
व्युत्पत्ति: तटस्थं (बाह्य) लक्षणं (चिह्न) च। क्रमवार शब्दार्थ: (तटस्थ) बाह्य, (लक्षण) पहचान।

1053. • अध्यारोप - रस्सी में साँप की तरह ब्रह्म पर जगत का आरोपण व्युत्पत्ति: अधि (ऊपर) +
आरोप (बिठाना)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) अतिरिक्त, (आरोप) भ्रांति।

1054. • अपवाद - सत्य के बोध से मिथ्या का निषेध व्युत्पत्ति: अप (दूर करना) + वाद (कथन)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अपवाद) निषेध/खंडन।

1055. • विवर्त-वाद - ब्रह्म का जगत् के रूप में केवल प्रतीत होना (परिवर्तन नहीं)
व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + वृत् (घूमना/बदलना)। क्रमवार शब्दार्थ: (विवर्त) आभास, (वाद) सिद्धांत।

1056. • परिणाम-वाद - कार्य का कारण से वास्तविक रूप बदलना व्युत्पत्ति: परि (चारों ओर) +
नम् (झुकना/बदलना)। क्रमवार शब्दार्थ: (परिणाम) रूपांतरण, (वाद) मत।

1057. • आवरण-शक्ति - माया की वह शक्ति जो सत्य को छिपा लेती है व्युत्पत्ति: आवृति (ढंकना)
+ शक्तिः। क्रमवार शब्दार्थ: (आवरण) पर्दा, (शक्ति) सामर्थ्य।

1058. • विक्षेप-शक्ति - माया की वह शक्ति जो असत्य को फैलाती है व्युत्पत्ति: वि (विशेष)
+ क्षिप् (फेंकना)। क्रमवार शब्दार्थ: (विक्षेप) प्रसार, (शक्ति) सामर्थ्य।

1059. • प्रतिबिम्ब-वाद - जीव का ब्रह्म का प्रतिबिंब होना व्युत्पत्ति: प्रति (समान) +
बिम्ब (छाया)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिबिम्ब) छाया, (वाद) सिद्धांत।

1060. • अवच्छेद-वाद - ब्रह्म का माया के माध्यम से सीमाबद्ध होना व्युत्पत्ति: अवच्छेद
(सीमा) + वाद। क्रमवार शब्दार्थ: (अवच्छेद) परिसीमन, (वाद) मत।

1061. • अविद्या-निवृत्ति - अज्ञान का समूल नाश व्युत्पत्ति: अविद्यायाः निवृत्तिः।
क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (निवृत्ति) समाप्ति।

1062. • चित्-जड़-ग्रंथि - आत्मा और देह का अभेद संबंध व्युत्पत्ति: चित् (चेतन) + जड़ (देह)
+ ग्रंथि (गांठ)। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्) चेतना, (जड़) पदार्थ, (ग्रंथि) बंधन।

1063. • हृदय-ग्रंथि - अहंभाव की गाँठ व्युत्पत्ति: हृदयस्य ग्रंथिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(हृदय) अंतःकरण, (ग्रंथि) गांठ।

1064. • दृश्य-अनुवाद - दृश्य जगत को मिथ्या कहना व्युत्पत्ति: दृश्यस्य (संसार का)
अनुवादः (कथन)। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्य) संसार, (अनुवाद) निरूपण।

1065. • कूटस्थ-ब्रह्म - जो विकारों के बीच भी स्थिर है व्युत्पत्ति: कूट
(ढेर/अपरिवर्तनीय) + स्थ (स्थित)। क्रमवार शब्दार्थ: (कूट) अचल, (स्थ) स्थिर।

1066. • प्रत्यगात्मा - अंतर्यामी आत्मा व्युत्पत्ति: प्रति + अञ्च् (भीतर की ओर जाना)।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रत्यक्) आंतरिक, (आत्मा) स्व।

1067. • साक्षी-चैतन्य - साक्षी रूप में स्थित चेतना व्युत्पत्ति: साक्षी (द्रष्टा) +
चैतन्य (ज्ञान)। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षी) द्रष्टा, (चैतन्य) शुद्ध ज्ञान।

1068. • अखंड-एकरस - जो सदा एक जैसा और पूर्ण है व्युत्पत्ति: अखंडं (अविभाज्य) + एकरस (एक
जैसा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अखंड) पूर्ण, (एकरस) अभिन्न।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 55
1069. • उपाधि-भेद - सीमित करने वाले कारकों के कारण भेद व्युत्पत्ति: उपाधेः (सीमा) भेदः।
क्रमवार शब्दार्थ: (उपाधि) सीमा, (भेद) अंतर।

1070. • निरुपाधिक-ब्रह्म - वह ब्रह्म जो किसी सीमा में नहीं है व्युत्पत्ति: न + उपाधि +
क। क्रमवार शब्दार्थ: (निरुपाधिक) सीमाहीन।

1071. • ब्रह्म-विद्योपनिषद् - ब्रह्म विद्या प्रदान करने वाला शास्त्र व्युत्पत्ति:
ब्रह्म-विद्या + उपनिषद्। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (उपनिषद्) ज्ञान।

1072. • आत्म-रति - आत्मा में ही आनंद लेना व्युत्पत्ति: आत्मनि रतिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(आत्म) स्व, (रति) आनंद।

1073. • सर्व-ब्रह्म-प्रत्यय - सब में ब्रह्म का अनुभव व्युत्पत्ति: सर्वं ब्रह्म इति
प्रत्ययः। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्व) सब, (प्रत्यय) बोध।

1074. • अभेद-उपासना - एकत्व का निरंतर ध्यान व्युत्पत्ति: अभेदे उपासना। क्रमवार
शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (उपासना) ध्यान।

1075. • अहंग्रह-उपासना - मैं ब्रह्म हूँ, ऐसा ध्यान करना व्युत्पत्ति: अहं (मैं) + ग्रह
(ग्रहण करना)। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) स्व, (ग्रह) धारणा।

1076. • सगुण-ब्रह्म - गुणों के साथ ईश्वर व्युत्पत्ति: स (सहित) + गुण (विशिष्टता)।
क्रमवार शब्दार्थ: (सगुण) रूपाकार, (ब्रह्म) ईश्वर।

1077. • निर्गुण-ब्रह्म - निराकार परमात्मा व्युत्पत्ति: निर् (रहित) + गुण। क्रमवार
शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (ब्रह्म) परमतत्व।

1078. • अनादि-माया - माया जिसका कोई आदि (आरंभ) नहीं है व्युत्पत्ति: न + आदिः यस्याः सा।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनादि) शाश्वत, (माया) अविद्या।

1079. • परम-पद - मोक्ष की स्थिति व्युत्पत्ति: परमं पदम्। क्रमवार शब्दार्थ: (परम)
सर्वोच्च, (पद) स्थान।

1080. • ब्रह्म-निर्वाण - ब्रह्म में विलीन होना व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि निर्वाणम्।
क्रमवार शब्दार्थ: (निर्वाण) विलीनता।

1081. • अविज्ञेय - जिसे बुद्धि से नहीं जाना जा सकता (ब्रह्म का लक्षण) व्युत्पत्ति: न +
विज्ञेय (जानने योग्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (अ) नहीं, (विज्ञेय) बोधगम्य।

1082. • सत्य-काम - जिसके सभी संकल्प सत्य हैं व्युत्पत्ति: सत्यः कामाः यस्य। क्रमवार
शब्दार्थ: (सत्य) यथार्थ, (काम) इच्छा।

1083. • सत्य-संकल्प - जिसका संकल्प कभी व्यर्थ नहीं होता व्युत्पत्ति: सत्यः संकल्पः
यस्य। क्रमवार शब्दार्थ: (संकल्प) निश्चय।

1084. • आकाश-लिंग - निराकार का प्रतीक व्युत्पत्ति: आकाशं (शून्य) + लिंगम् (प्रतीक)।
क्रमवार शब्दार्थ: (आकाश) शून्य, (लिंग) चिन्ह।

1085. • अक्षर-परब्रह्म - अविनाशी सर्वोच्च तत्व व्युत्पत्ति: अक्ष (नाश रहित) + पर +
ब्रह्म। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्षर) शाश्वत।

1086. • पुरुष-सूक्त - विराट पुरुष का वर्णन करने वाला वैदिक मन्त्र व्युत्पत्ति:
पुरुषस्य सूक्तम्। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरुष) परमात्मा, (सूक्त) स्तुति।

1087. • ब्रह्म-सूत्र - वेदान्त के सिद्धांतों का संक्षिप्त सूत्र व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः
सूत्रम्। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) सिद्धांत, (सूत्र) संक्षिप्त वचन।

1088. • अद्वैत-श्रुति - एकता प्रतिपादक वेदवाक्य व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य श्रुतिः (वेद)।
क्रमवार शब्दार्थ: (श्रुति) वेद।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 56
1089. • स्मृति-प्रमाण - ऋषियों के स्मृत ग्रंथ व्युत्पत्ति: स्मृतं (याद किया हुआ) +
प्रमाणम्। क्रमवार शब्दार्थ: (स्मृति) परंपरा, (प्रमाण) आधार।

1090. • युक्ति-अनुभव - तर्क और प्रत्यक्ष का मेल व्युत्पत्ति: युक्तिः च अनुभवः च।
क्रमवार शब्दार्थ: (युक्ति) तर्क, (अनुभव) प्रत्यक्ष।

1091. • अध्यास-भाष्य - शंकराचार्य का प्रथम भाष्य भाग व्युत्पत्ति: अध्यासस्य भाष्यम्।
क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यास) भ्रांति, (भाष्य) व्याख्या।

1092. • आत्म-अनत्म-विवेक - आत्म और शरीर का अंतर व्युत्पत्ति: आत्म (स्व) + अनत्म (देह) +
विवेक (भेद)। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक) प्रज्ञा।

1093. • दृश्य-अनुवाद - जगत को कल्पित कहना व्युत्पत्ति: दृश्यस्य अनुवादः। क्रमवार
शब्दार्थ: (दृश्य) प्रपंच।

1094. • अद्वैत-प्रदीप - एकता का ज्ञान दीपक व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य प्रदीपः। क्रमवार
शब्दार्थ: (प्रदीप) प्रकाश।

1095. • आत्म-विभूति - आत्मा का ऐश्वर्य व्युत्पत्ति: आत्मनः विभूतिः। क्रमवार शब्दार्थ:
(विभूति) वैभव।

1096. • शून्य-अद्वैत - शून्य (निराकार) ही अद्वैत है व्युत्पत्ति: शून्यम् च तद्
अद्वैतम्। क्रमवार शब्दार्थ: (शून्य) रिक्तता/ब्रह्म।

1097. • तत्त्व-बोध - सत्य का ज्ञान व्युत्पत्ति: तत्त्वस्य बोधः। क्रमवार शब्दार्थ:
(तत्त्व) यथार्थ।

1098. • माया-बीज - अज्ञान का मूल कारण व्युत्पत्ति: मायायाः बीजम्। क्रमवार शब्दार्थ:
(बीज) कारण।

1099. • ब्रह्म-तटस्थ - जो तट पर (साक्षी) स्थित है व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि तटस्थः। क्रमवार
शब्दार्थ: (तटस्थ) साक्षी।

1100. • कैवल्य-सिद्धान्त - मुक्ति का मार्ग व्युत्पत्ति: कैवल्यस्य सिद्धान्तः। क्रमवार
शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (सिद्धान्त) सिद्धांत।

1101. अपरोक्षानुभूति व्युत्पत्ति: अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) + अनुभूति (अनुभव)। अर्थ: ब्रह्म
का साक्षात्, इंद्रिय-निरपेक्ष अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरोक्ष) सीधा, (अनुभूति) साक्षात्कार।

1102. अर्थापत्ति व्युत्पत्ति: अर्थ (विषय) + आपत्ति (प्राप्ति/कल्पना)। अर्थ: वेदान्त
सम्मत ज्ञान का एक प्रमाण, जहाँ एक तथ्य से दूसरे की कल्पना अनिवार्य हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थ) सत्य, (आपत्ति) तर्क-आधार।

1103. अविचारित-रमणीयता व्युत्पत्ति: अविचारित (बिना सोचे) + रमणीयता (सुंदरता)। अर्थ:
माया की वह विशेषता कि जब तक विचार न किया जाए, तब तक ही यह जगत सत्य/सुंदर लगता है। क्रमवार शब्दार्थ: (अविचारित) तर्करहित, (रमणीयता) मोहकता।

1104. अनात्मन् व्युत्पत्ति: न + आत्मन्। अर्थ: देह, मन आदि वह जो आत्मा नहीं है। क्रमवार
शब्दार्थ: (अ) नहीं, (आत्मन्) चैतन्य।

1105. अभेद-श्रुति व्युत्पत्ति: अभेदस्य श्रुतिः (वेद)। अर्थ: वे वेदमंत्र जो जीव और
ब्रह्म की एकता प्रतिपादित करते हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (श्रुति) वेदवाणी।

1106. आत्माराम व्युत्पत्ति: आत्मनि एव रामः (क्रीड़ा/आनंद) यस्य। अर्थ: जो अपनी ही आत्मा
में संतुष्ट है। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मन्) स्व, (राम) आनंद लेने वाला।

1107. आरम्भ-वाद व्युत्पत्ति: आरम्भ (उत्पत्ति) + वाद। अर्थ: कार्य के पूर्व कारण में
कार्य का न होना (न्याय-वैशेषिक मत)। क्रमवार शब्दार्थ: (आरम्भ) सृजन, (वाद) सिद्धांत।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 57
1108. अवच्छेदक-धर्म व्युत्पत्ति: अवच्छेदक (सीमा) + धर्म (विशेषता)। अर्थ: वह गुण जो एक
वस्तु को दूसरी से भिन्न करता है। क्रमवार शब्दार्थ: (अवच्छेदक) विभाजक, (धर्म) गुण।

1109. अनुस्यूत व्युत्पत्ति: अनु + सी (सिलना) + त। अर्थ: जो सब में व्याप्त या पिरोया हुआ
हो (जैसे धागे में मणियाँ)। क्रमवार शब्दार्थ: (अनु) सादृश्य, (स्यूत) गुंथा हुआ।

1110. अंतर्यामित्त्व व्युत्पत्ति: अन्तर् (भीतर) + यम (नियमन) + त्व। अर्थ: सबके भीतर
रहकर शासन करने वाला ईश्वर का गुण। क्रमवार शब्दार्थ: (अंतः) भीतर, (यम) नियंता।

1111. अभिज्ञा व्युत्पत्ति: अभि (विशेष) + ज्ञा (जानना)। अर्थ: किसी विषय का विशिष्ट और
गहरा ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अभि) पूर्ण, (ज्ञा) ज्ञान।

1112. अनध्यवसाय व्युत्पत्ति: अन (नहीं) + अधि (ऊपर) + अवसाय (निर्णय)। अर्थ: निर्णय न ले
पाने की अवस्था, भ्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (अन) अभाव, (अध्यवसाय) निश्चय।

1113. ईक्षण व्युत्पत्ति: ईक्ष् (देखना)। अर्थ: सृष्टि रचना के पूर्व ईश्वर का संकल्प-
पूर्वक देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (ईक्षण) प्रेक्षण/संकल्प।

1114. इयत्ता व्युत्पत्ति: इयत् (इतनी) + ता (भाव)। अर्थ: किसी वस्तु की सीमा या परिमाण।
क्रमवार शब्दार्थ: (इयत्) परिमाण, (ता) मात्रा।

1115. उपक्रम-उपसंहार व्युत्पत्ति: उपक्रम (शुरुआत) + उपसंहार (अंत)। अर्थ: किसी शास्त्र
या विचार की शुरुआत और अंत में एक ही अर्थ का होना (तात्पर्य निर्णय हेतु)। क्रमवार शब्दार्थ: (उपक्रम) आरम्भ, (उपसंहार) निष्कर्ष।

1116. उपादान-कारण व्युत्पत्ति: उपादान (सामग्री) + कारण। अर्थ: वह सामग्री जिससे कोई
वस्तु बनी हो (जैसे मिट्टी घड़े का उपादान है)। क्रमवार शब्दार्थ: (उपादान) मूल-सामग्री, (कारण) हेतु।

1117. निमित्त-कारण व्युत्पत्ति: निमित्त (उद्देश्य/कर्ता) + कारण। अर्थ: रचना करने वाला
कर्ता (जैसे कुम्हार घड़े का निमित्त है)। क्रमवार शब्दार्थ: (निमित्त) कर्ता, (कारण) हेतु।

1118. उदासी व्युत्पत्ति: उदास (उदासीन)। अर्थ: सुख-दुख के द्वंद्वों से निर्लिप्त रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (उदासी) तटस्थता।

1119. उपलक्षण व्युत्पत्ति: उप (समीप) + लक्षण। अर्थ: वह गुण जो वस्तु के स्वरूप को बदले
बिना उसकी पहचान करा दे (जैसे 'कौए वाला घर')। क्रमवार शब्दार्थ: (उप) सहायक, (लक्षण) पहचान।

1120. ओत-प्रोत व्युत्पत्ति: ओत (ताना) + प्रोत (बाना)। अर्थ: पूरी तरह व्याप्त। क्रमवार
शब्दार्थ: (ओत) ताना, (प्रोत) बाना/ओतप्रोत।

1121. औपाधिक व्युत्पत्ति: उपाधि + क। अर्थ: जो सीमा या माध्यम के कारण दिखाई दे। क्रमवार
शब्दार्थ: (उपाधि) माध्यम, (क) संबंधित।

1122. कर्तापन व्युत्पत्ति: कर्तृ (करने वाला) + पन (भाव)। अर्थ: 'मैं करने वाला हूँ' ऐसा
अज्ञानपूर्ण बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्ता) कर्म का स्वामी, (पन) भाव।

1123. करण-शरीर व्युत्पत्ति: करण (साधन) + शरीर। अर्थ: इंद्रियाँ और मन, जो कार्य के साधन
हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (करण) उपकरण, (शरीर) देह।

1124. काल-त्रय व्युत्पत्ति: कालस्य त्रयम्। अर्थ: भूत, वर्तमान और भविष्य। क्रमवार
शब्दार्थ: (काल) समय, (त्रय) तीन।

1125. किंचित्ज्ञ व्युत्पत्ति: किंचित् (थोड़ा) + ज्ञ (जानने वाला)। अर्थ: अल्पज्ञ जीव,
जिसका ज्ञान सीमित है। क्रमवार शब्दार्थ: (किंचित्) अल्प, (ज्ञ) ज्ञाता।

1126. केवलाद्वैत व्युत्पत्ति: केवलम् + अद्वैतम्। अर्थ: शुद्ध और अद्वितीय ब्रह्म का
सिद्धांत। क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (अद्वैत) एकत्व।

1127. कूटस्थ-चैतन्य व्युत्पत्ति: कूट (अविकारी) + स्थ (स्थित) + चैतन्य। अर्थ: वह चेतना
जो समस्त विकारों के भीतर निर्विकार है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थ) अचल, (चैतन्य) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 58
1128. गोचर व्युत्पत्ति: गो (इंद्रिय/विषय) + चर (चलना/व्याप्त)। अर्थ: जो इंद्रियों की
पहुंच में हो। क्रमवार शब्दार्थ: (गो) इंद्रिय, (चर) विषय।

1129. ग्रन्थि-भेद व्युत्पत्ति: ग्रन्थि (गांठ/हृदयग्रंथि) + भेद (छेदना)। अर्थ: ब्रह्म-
ज्ञान से अज्ञान की गाँठ का खुल जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (ग्रन्थि) बंधन, (भेद) खुलना।

1130. चक्षुष्मान् व्युत्पत्ति: चक्षुः (आँख) + मान् (वाला)। अर्थ: ज्ञानी, जिसे तत्व का
ज्ञान है। क्रमवार शब्दार्थ: (चक्षु) ज्ञानदृष्टि, (मान्) युक्त।

1131. चराचर व्युत्पत्ति: चर (चलने वाला) + अचर (स्थिर)। अर्थ: समस्त दृश्य जगत। क्रमवार
शब्दार्थ: (चर) जंगम, (अचर) स्थावर।

1132. चित्त-शुद्धि व्युत्पत्ति: चित्तस्य शुद्धिः। अर्थ: मन की मलिनता का दूर होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (शुद्धि) पवित्रता।

1133. चिन्मात्र व्युत्पत्ति: चित् + मात्र। अर्थ: जो केवल चेतना ही है। क्रमवार
शब्दार्थ: (चित्) चेतना, (मात्र) केवल।

1134. चेतना-अचेतना व्युत्पत्ति: चेतना च अचेतना च। अर्थ: सजीव और निर्जीव का भेद। क्रमवार
शब्दार्थ: (चेतना) बोध, (अचेतना) जड़ता।

1135. जगत्-मिथ्यात्व व्युत्पत्ति: जगतः मिथ्यात्वम्। अर्थ: जगत के नश्वर होने का बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (जगत) प्रपंच, (मिथ्यात्व) नश्वरता।

1136. जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति व्युत्पत्ति: जाग्रत्, स्वप्नः, सुषुप्तिः। अर्थ: चेतना की
तीन अवस्थाएं। क्रमवार शब्दार्थ: (जाग्रत) प्रत्यक्ष, (स्वप्न) मानसिक, (सुषुप्ति) अज्ञान-सुख।

1137. तत्व-मसि व्युत्पत्ति: तत् (वह) त्वम् (तुम) असि (हो)। अर्थ: वह ब्रह्म तुम ही हो।
क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) परमात्मा, (त्वम्) जीव, (असि) ऐक्य।

1138. त्रैकालिक-सत्य व्युत्पत्ति: त्रैकालिकं (तीनों काल में रहने वाला) + सत्यम्। अर्थ:
जो ब्रह्म तीनों कालों में अपरिवर्तित है। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रैकालिक) सदा, (सत्य)
नित्य।

1139. दृश्य-अदृश्य व्युत्पत्ति: दृश्यं (दिखने वाला) + अदृश्यम् (न दिखने वाला)। अर्थ:
स्थूल और सूक्ष्म तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (दृश्य) इंद्रियगोचर, (अदृश्य) परोक्ष।

1140. द्वैत-भ्रांति व्युत्पत्ति: द्वैतस्य भ्रांतिः। अर्थ: दो के भेद का अज्ञान। क्रमवार
शब्दार्थ: (द्वैत) भेद, (भ्रांति) अविद्या।

1141. धर्म-अधर्म व्युत्पत्ति: धर्म (न्याय) + अधर्म (अन्याय)। अर्थ: शुभ और अशुभ कर्म।
क्रमवार शब्दार्थ: (धर्म) कर्तव्य, (अधर्म) पाप।

1142. ध्यान-गम्य व्युत्पत्ति: ध्यानं (ध्यान से) + गम्य (प्राप्त करने योग्य)। अर्थ: जो
ध्यान द्वारा ही अनुभव में आता है। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (गम्य) प्राप्य।

1143. नित्य-नैमित्तिक व्युत्पत्ति: नित्यं (रोज) + नैमित्तिक (किसी निमित्त से)। अर्थ:
प्रतिदिन के और विशेष अवसर के कर्म। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) सदा, (नैमित्तिक) विशिष्ट।

1144. परमात्म-ज्ञान व्युत्पत्ति: परमात्मनः ज्ञानम्। अर्थ: ईश्वर का वास्तविक बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (परमात्म) ईश्वर, (ज्ञान) बोध।

1145. पुनर्जन्म-चक्र व्युत्पत्ति: पुनः (फिर) + जन्म (उत्पत्ति) + चक्रम्। अर्थ: बार-बार
जन्म लेने का सिलसिला। क्रमवार शब्दार्थ: (पुनर्जन्म) पुनरावृत्ति, (चक्र) घेरा।

1146. प्रतिभासिक-सत्ता व्युत्पत्ति: प्रतिभासः (आभास) + सत्ता। अर्थ: वह सत्ता जो केवल
भ्रम में दिखती है (जैसे स्वप्न)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभासिक) आभासी, (सत्ता)
अस्तित्व।

1147. व्यावहारिक-सत्ता व्युत्पत्ति: व्यवहारिक (व्यवहार योग्य) + सत्ता। अर्थ: वह जगत
जिसमें हम व्यवहार करते हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यावहारिक) सांसारिक, (सत्ता) अस्तित्व।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 59
1148. पारमार्थिक-सत्ता व्युत्पत्ति: परमार्थ (ब्रह्म) + सत्ता। अर्थ: ब्रह्म की परम
सत्ता (सत्य)। क्रमवार शब्दार्थ: (पारमार्थिक) सत्य, (सत्ता) अस्तित्व।

1149. मायावी-जगत व्युत्पत्ति: माया (भ्रम) + वी (युक्त) + जगत। अर्थ: माया से निर्मित
संसार। क्रमवार शब्दार्थ: (मायावी) भ्रमित, (जगत) प्रपंच।

1150. शब्दातीत व्युत्पत्ति: शब्द (शब्दों) + अतीत (परे)। अर्थ: वह जिसे वाणी से नहीं कहा
जा सकता। क्रमवार शब्दार्थ: (शब्द) वाणी, (अतीत) परे।

1151. अधिष्ठान व्युत्पत्ति: अधि (ऊपर) + स्था (स्थित होना)। अर्थ: वह आधार जिस पर कोई भ्रम
टिकता है (जैसे रस्सी, सर्प के भ्रम का अधिष्ठान है)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधि) ऊपर, (ष्ठान) स्थान/आधार।

1152. अध्यारोप-अपवाद व्युत्पत्ति: अध्यारोप (आरोपण) + अपवाद (निषेध)। अर्थ: ब्रह्म पर
जगत का आरोप करना और फिर ज्ञान से उसका निषेध करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यारोप) मिथ्या- ज्ञान, (अपवाद) यथार्थ-बोध।

1153. अखण्ड-भाव व्युत्पत्ति: न + खण्डः (टुकड़ा) भावः। अर्थ: अखंडता का अनुभव, जहाँ कोई भेद
नहीं है। क्रमवार शब्दार्थ: (अखण्ड) अविभाज्य, (भाव) बोध।

1154. आत्म-अनत्म-विवेक व्युत्पत्ति: आत्मा च अनत्मा च तयोः विवेकः। अर्थ: आत्मा और देह के
अंतर को पहचानने की बुद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) चैतन्य, (अनत्म) जड़, (विवेक) प्रज्ञा।

1155. अनिर्वचनीय-ख्याति व्युत्पत्ति: न + निर्वचनीय (वर्णन योग्य) + ख्याति (ज्ञान)।
अर्थ: माया का वह स्वरूप जिसे 'सत्' या 'असत्' नहीं कहा जा सकता। क्रमवार शब्दार्थ: (अनिर्वचनीय) अवर्णनीय, (ख्याति) प्रतीति।

1156. अनन्य-योग व्युत्पत्ति: न + अन्यः (दूसरा नहीं) + योगः। अर्थ: ईश्वर से अभिन्न होने
का मार्ग। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकनिष्ठ, (योग) मिलन।

1157. अभेद-सायुज्य व्युत्पत्ति: अभेद (एकता) + सायुज्य (जुड़ना)। अर्थ: ब्रह्म के साथ
पूर्ण तादात्म्य (एकता)। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (सायुज्य) तादात्म्य।

1158. अमृतात्मा व्युत्पत्ति: अमृतः (अविनाशी) + आत्मा। अर्थ: आत्मा का वह स्वरूप जो कभी
नष्ट नहीं होता। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृत) नित्य, (आत्मा) चैतन्य।

1159. अविद्या-लेश व्युत्पत्ति: अविद्यायाः लेशः (छोटा अंश)। अर्थ: ब्रह्मज्ञान के बाद भी
प्रारब्ध के कारण बचा हुआ अविद्या का सूक्ष्म अंश। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (लेश) कण।

1160. अद्वैत-प्रकाशा व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य प्रकाशः (ज्ञान)। अर्थ: एकता के सिद्धांत को
प्रकाशित करने वाला ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (प्रकाश) ज्ञान।

1161. आत्म-रमण व्युत्पत्ति: आत्मनि (आत्मा में) + रमण (विहार)। अर्थ: अपनी आत्मा में ही
आनंद लेने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (रमण) विहार।

1162. ईश्वर-त्व व्युत्पत्ति: ईश्वर + त्व (भाव)। अर्थ: ईश्वर होने का गुण या स्वरूप
(सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता)। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (त्व) गुण।

1163. एकात्मता व्युत्पत्ति: एक + आत्मता (आत्मा का भाव)। अर्थ: समस्त जीवधारियों में एक
ही आत्मा के होने का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (एक) अभिन्न, (आत्मता) चैतन्यता।

1164. ज्ञेय-ब्रह्म व्युत्पत्ति: ज्ञेय (जानने योग्य) + ब्रह्म। अर्थ: वह परमात्मा जो
ज्ञान का अंतिम विषय है। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञेय) ज्ञातव्य, (ब्रह्म) परमात्मा।

1165. तत्तत्-साक्षी व्युत्पत्ति: तत्तत् (विभिन्न) + साक्षी (द्रष्टा)। अर्थ: विभिन्न
अवस्थाओं का गवाह चैतन्य। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्तत्) भिन्न, (साक्षी) गवाह।

1166. तुरीय-चैतन्य व्युत्पत्ति: तुरीय (चौथा) + चैतन्य। अर्थ: जाग्रत, स्वप्न और
सुषुप्ति से परे शुद्ध चेतना। क्रमवार शब्दार्थ: (तुरीय) चौथी अवस्था, (चैतन्य) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 60
1167. त्रिगुणातीत व्युत्पत्ति: त्रि (तीन) + गुण (सत्-रज-तम) + अतीत (परे)। अर्थ: जो
प्रकृति के तीनों गुणों के प्रभाव से मुक्त हो। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिगुण) प्रकृति,
(अतीत) परे।

1168. त्रिविध-ताप व्युत्पत्ति: त्रि (तीन) + विध (प्रकार) + ताप (कष्ट)। अर्थ: आधिदैविक,
आधिभौतिक और आध्यात्मिक कष्ट। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रि) तीन, (ताप) पीड़ा।

1169. दार्शनिक-दृष्टि व्युत्पत्ति: दर्शनस्य दृष्टिः। अर्थ: सत्य को तत्व-ज्ञान की
दृष्टि से देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) तत्वदर्शी, (दृष्टि) दृष्टिकोण।

1170. द्वैत-निवारण व्युत्पत्ति: द्वैतस्य (भेद का) निवारण (नाश)। अर्थ: भेद-बुद्धि का अंत
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) अंतर, (निवारण) विनाश।

1171. नित्य-सिद्ध व्युत्पत्ति: नित्यं (सदा) + सिद्ध (पूर्ण)। अर्थ: वह ब्रह्म जो स्वतः
और सदैव पूर्ण है। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) शाश्वत, (सिद्ध) पूर्ण।

1172. निर्विकल्प-समाधि व्युत्पत्ति: निर् (रहित) + विकल्प (भेद/विचार) + समाधि। अर्थ:
जहाँ ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाए। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्विकल्प) भेदहीन, (समाधि) एकाग्रता।

1173. निदिध्यासन व्युत्पत्ति: नि (निश्चयपूर्वक) + ध्यै (ध्यान)। अर्थ: आत्म-तत्व में
निरंतर एकाग्रता का अभ्यास। क्रमवार शब्दार्थ: (निदिध्यास) चिंतन, (ध्यान) अभ्यास।

1174. पञ्चीकरण व्युत्पत्ति: पञ्च (पाँच) + करण (मिश्रण)। अर्थ: पंचभूतों के आपस में मिलने
की प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (पंच) पाँच, (करण) मिश्रण।

1175. पर-विद्या व्युत्पत्ति: परा (सर्वोच्च) + विद्या। अर्थ: उपनिषदों द्वारा प्राप्त
ब्रह्म-ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (परा) श्रेष्ठ, (विद्या) ज्ञान।

1176. परा-शक्ति व्युत्पत्ति: परा (उत्कृष्ट) + शक्ति। अर्थ: परमात्मा की रचनात्मक
सामर्थ्य। क्रमवार शब्दार्थ: (परा) सर्वोच्च, (शक्ति) ऊर्जा।

1177. प्रतिपादक-वाक्य व्युत्पत्ति: प्रतिपादक (अर्थ बताने वाला) + वाक्य। अर्थ: वे वाक्य
जो ब्रह्म का बोध कराते हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिपादक) व्याख्याकार, (वाक्य) सूत्र।

1178. प्रपंच-विलय व्युत्पत्ति: प्रपंच (संसार) + विलय (समाप्ति)। अर्थ: ब्रह्मांड का
ब्रह्म में लीन होना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रपंच) जगत, (विलय) अंत।

1179. ब्रह्म-सायुज्य व्युत्पत्ति: ब्रह्मणः सायुज्यम्। अर्थ: ब्रह्म के साथ पूर्ण
तादात्म्य की अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (सायुज्य) मिलन।

1180. भावातीत व्युत्पत्ति: भाव (विचार) + अतीत (परे)। अर्थ: जो मन के विचारों से परे है।
क्रमवार शब्दार्थ: (भाव) विचार, (अतीत) परे।

1181. भूमा-सुख व्युत्पत्ति: भूमा (विशाल/पूर्ण) + सुखम्। अर्थ: असीमित पूर्णता का आनंद।
क्रमवार शब्दार्थ: (भूमा) पूर्ण, (सुख) आनंद।

1182. मति-योग व्युत्पत्ति: मति (बुद्धि) + योग। अर्थ: विवेकपूर्ण बुद्धि से साधना।
क्रमवार शब्दार्थ: (मति) प्रज्ञा, (योग) जुड़ाव।

1183. महा-वाक्य व्युत्पत्ति: महत् (महान) + वाक्य। अर्थ: वेदों के चार प्रमुख सूत्र (जैसे
तत्त्वमसि)। क्रमवार शब्दार्थ: (महा) श्रेष्ठ, (वाक्य) उपदेश।

1184. माया-जाल व्युत्पत्ति: माया (भ्रम) + जाल (फँदा)। अर्थ: संसार के मोह का चक्र।
क्रमवार शब्दार्थ: (माया) अविद्या, (जाल) घेरा।

1185. मुमुक्षु-त्व व्युत्पत्ति: मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा वाला) + त्व (भाव)। अर्थ: मोक्ष
पाने की तीव्र तड़प। क्रमवार शब्दार्थ: (मुमुक्षु) साधक, (त्व) भाव।

1186. यथार्थ-बोध व्युत्पत्ति: यथार्थ (सत्य) + बोध (ज्ञान)। अर्थ: वस्तुओं का उनके
वास्तविक स्वरूप में ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (यथार्थ) सत्य, (बोध) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 61
1187. योग-माया व्युत्पत्ति: योग (युक्त) + माया। अर्थ: ईश्वर की वह शक्ति जो भ्रमित करती
है। क्रमवार शब्दार्थ: (योग) जुड़ाव, (माया) शक्ति।

1188. लक्ष्य-अर्थ व्युत्पत्ति: लक्ष्य (इशारा) + अर्थ। अर्थ: किसी शब्द का मुख्य संकेत
(जैसे 'तत्त्वमसि' में जीव-ब्रह्म की एकता)। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्ष्य) संकेत, (अर्थ)
तात्पर्य।

1189. वाच्यार्थ व्युत्पत्ति: वाच्य (कहने योग्य/शब्दार्थ) + अर्थ। अर्थ: शब्द का
सामान्य, सीधा अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (वाच्य) शाब्दिक, (अर्थ) मतलब।

1190. विवर्त-दृष्टि व्युत्पत्ति: विवर्त (आभास) + दृष्टि। अर्थ: जगत को ब्रह्म का आभास
मानने वाली दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (विवर्त) माया, (दृष्टि) नजरिया।

1191. वृत्ति-व्याप्ति व्युत्पत्ति: वृत्ति (मन) + व्याप्ति (फैलाव)। अर्थ: मन का ज्ञान के
विषय तक पहुँचना। क्रमवार शब्दार्थ: (वृत्ति) लहर, (व्याप्ति) पहुँच।

1192. वैराग्य-बोधिनी व्युत्पत्ति: वैराग्य (विरक्ति) + बोधिनी (ज्ञान देने वाली)। अर्थ:
विरक्ति उत्पन्न करने वाली बुद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (वैराग्य) अनासक्ति, (बोधिनी) जगाने वाली।

1193. व्यष्टि-समष्टि व्युत्पत्ति: व्यष्टि (इकाई) + समष्टि (समूह)। अर्थ: एक जीव और
संपूर्ण ब्रह्मांड। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यष्टि) व्यक्तिगत, (समष्टि) सामूहिक।

1194. शत-पथ व्युत्पत्ति: शत (सौ) + पथ (मार्ग)। अर्थ: ब्राह्मण ग्रंथों का एक प्रमुख भाग
(उपनिषद तत्व)। क्रमवार शब्दार्थ: (शत) सौ, (पथ) मार्ग।

1195. सगुण-साकार व्युत्पत्ति: स (सहित) + गुण (साकार)। अर्थ: गुणों और रूप वाला ईश्वर।
क्रमवार शब्दार्थ: (सगुण) रूपयुक्त, (साकार) आकृतिवान।

1196. सत्-चित्-आनंद व्युत्पत्ति: सत् (नित्य) + चित् (ज्ञान) + आनंद (सुख)। अर्थ: ब्रह्म
का त्रिगुणात्मक स्वरूप। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्) अस्तित्व, (चित्) चेतना, (आनंद) सुख।

1197. सविकल्प-समाधि व्युत्पत्ति: स (सहित) + विकल्प (भेद) + समाधि। अर्थ: वह समाधि जिसमें
ध्याता-ध्यान-ध्येय का भेद बना रहता है। क्रमवार शब्दार्थ: (सविकल्प) भेदयुक्त, (समाधि) एकाग्रता।

1198. साक्षि-द्रष्टा व्युत्पत्ति: साक्षी (गवाह) + द्रष्टा (देखने वाला)। अर्थ: वह चेतना
जो सब कुछ देखते हुए भी तटस्थ है। क्रमवार शब्दार्थ: (साक्षि) साक्षी, (द्रष्टा) दृष्टा।

1199. स्वरूप-स्थित व्युत्पत्ति: स्वरूपे (स्वयं में) + स्थित। अर्थ: अपनी आत्मा में सदा
टिका हुआ। क्रमवार शब्दार्थ: (स्वरूप) स्व, (स्थित) स्थिर।

1200. कैवल्य-ज्ञान व्युत्पत्ति: कैवल्यस्य (मुक्ति का) ज्ञानम्। अर्थ: पूर्ण स्वतंत्रता
का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (कैवल्य) मोक्ष, (ज्ञान) बोध।

1201. अभेदानुभूति व्युत्पत्ति: अभेद (एकता) + अनुभूति (अनुभव)। अर्थ: जीव और ब्रह्म की
एकता का प्रत्यक्ष अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (अनुभूति) साक्षात्कार।

1202. अद्वैत-प्रमाण व्युत्पत्ति: अद्वैतस्य प्रमाणम्। अर्थ: एकता सिद्ध करने वाले तर्क
या शास्त्र। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकत्व, (प्रमाण) आधार।

1203. आत्मावलंबन व्युत्पत्ति: आत्मन् (स्वयं) + अवलंबन (सहारा)। अर्थ: अपनी आत्मा पर ही
निर्भर रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (अवलंबन) आश्रय।

1204. अनासक्ति-योग व्युत्पत्ति: अनासक्ति (विरक्ति) + योग। अर्थ: फलों में मोह रखे बिना
कार्य करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अनासक्ति) वैराग्य, (योग) साधना।

1205. अन्तस्थ-ब्रह्म व्युत्पत्ति: अन्तस्थ (भीतर स्थित) + ब्रह्म। अर्थ: जो हृदय के भीतर
स्थित परमात्मा है। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तस्थ) भीतरी, (ब्रह्म) ईश्वर।

1206. अपरिणामी व्युत्पत्ति: न + परिणामी (बदलने वाला)। अर्थ: जिसका स्वरूप कभी नहीं
बदलता (जैसे कूटस्थ ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरिणामी) स्थिर, (अविकारी) अचल।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 62
1207. अप्रमेय व्युत्पत्ति: न + प्रमेयं (मापने योग्य)। अर्थ: जो इंद्रियों या तर्कों से
सीमाबद्ध न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अप्रमेय) असीम, (अतर्क्य) बुद्धि से परे।

1208. अर्थ-प्रकाशन व्युत्पत्ति: अर्थ (तथ्य) + प्रकाशन (प्रकट करना)। अर्थ: शास्त्रों के
गूढ़ अर्थ को स्पष्ट करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थ) सत्य, (प्रकाशन) बोध।

1209. अध्यात्म-विद्या व्युत्पत्ति: अध्यात्म (आत्मा) + विद्या (ज्ञान)। अर्थ: आत्मज्ञान
का सर्वोच्च शास्त्र। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्म) आत्मविषयक, (विद्या) ज्ञान।

1210. अननुभूत व्युत्पत्ति: न + अनुभूत (अनुभव किया हुआ)। अर्थ: जो अनुभव का विषय नहीं बना
है। क्रमवार शब्दार्थ: (अननुभूत) अपरोक्ष-हीन।

1211. अन्वय-व्यतिरेक व्युत्पत्ति: अन्वय (सह-उपस्थिति) + व्यतिरेक (सह-अनुपस्थिति)।
अर्थ: सत्य को खोजने की तर्क-पद्धति (जहाँ यह है, वह भी है; जहाँ वह नहीं है, यह भी नहीं है)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अन्वय) व्याप्ति, (व्यतिरेक) अभाव।

1212. अव्याकृत-आकाश व्युत्पत्ति: अव्याकृत (अव्यक्त) + आकाश। अर्थ: सृष्टि के पूर्व की
मूल सूक्ष्म स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (अव्याकृत) अप्रकट, (आकाश) शून्य।

1213. अशरीरी व्युत्पत्ति: न + शरीरम् + ई (युक्त)। अर्थ: जिसका कोई भौतिक शरीर नहीं, वह
आत्मा। क्रमवार शब्दार्थ: (अशरीरी) देहहीन, (शुद्ध) चैतन्य।

1214. अष्ट-सिद्धि व्युत्पत्ति: अष्ट (आठ) + सिद्धि (शक्तियां)। अर्थ: योगशास्त्र में
वर्णित आठ दिव्य सिद्धियां। क्रमवार शब्दार्थ: (अष्ट) संख्या, (सिद्धि) सामर्थ्य।

1215. आत्म-संयम व्युत्पत्ति: आत्मनः संयमः। अर्थ: इंद्रियों और मन को अपने वश में करना।
क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (संयम) नियंत्रण।

1216. आत्म-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: आत्मनः साक्षात्कारः। अर्थ: अपने वास्तविक स्वरूप
का प्रत्यक्ष दर्शन। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) चैतन्य, (साक्षात्कार) अनुभव।

1217. आधिदैविक-ताप व्युत्पत्ति: अधि (संबंधी) + दैव (देवता) + ताप। अर्थ: दैवीय शक्तियों
या प्राकृतिक आपदाओं से कष्ट। क्रमवार शब्दार्थ: (आधिदैविक) प्रारब्धजन्य, (ताप) पीड़ा।

1218. आधिभौतिक-ताप व्युत्पत्ति: अधि + भौतिक + ताप। अर्थ: अन्य प्राणियों या पदार्थों से
प्राप्त कष्ट। क्रमवार शब्दार्थ: (भौतिक) सांसारिक, (ताप) पीड़ा।

1219. आध्यात्मिक-ताप व्युत्पत्ति: अधि + आत्मन् + ताप। अर्थ: स्वयं के शरीर और मन से
उत्पन्न कष्ट। क्रमवार शब्दार्थ: (आध्यात्मिक) स्वजन्य, (ताप) पीड़ा।

1220. आनन्द-लहरी व्युत्पत्ति: आनन्दस्य लहरी (तरंग)। अर्थ: परमानंद की निरंतर बहने वाली
धारा। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (लहरी) तरंग।

1221. आश्रय-भेद व्युत्पत्ति: आश्रयस्य (आधार का) भेदः। अर्थ: अलग-अलग आधारों के कारण होने
वाला अंतर। क्रमवार शब्दार्थ: (आश्रय) आधार, (भेद) अंतर।

1222. इन्द्रिय-निग्रह व्युत्पत्ति: इन्द्रियाणां निग्रहः। अर्थ: इंद्रियों को विषयों से
दूर रखना। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रिय) साधन, (निग्रह) दमन।

1223. उपदेश-वाक्य व्युत्पत्ति: उपदेशस्य वाक्यम्। अर्थ: गुरु द्वारा दिया गया सत्य वचन।
क्रमवार शब्दार्थ: (उपदेश) शिक्षा, (वाक्य) वचन।

1224. उपनिषद्-सार व्युत्पत्ति: उपनिषदाम् सारः। अर्थ: उपनिषदों का निचोड़ (ब्रह्मज्ञान)।
क्रमवार शब्दार्थ: (उपनिषद्) श्रुति, (सार) निचोड़।

1225. ऋतम्भरा-प्रज्ञा व्युत्पत्ति: ऋतम् (सत्य) + भर (धारण करने वाली) + प्रज्ञा। अर्थ:
वह बुद्धि जो केवल सत्य ही सत्य देखती है। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋत) सत्य, (प्रज्ञा) बुद्धि।

1226. एकाग्र-चित्त व्युत्पत्ति: एकं अग्रं यस्य सः। अर्थ: जिसका मन एक ही लक्ष्य पर टिका
हो। क्रमवार शब्दार्थ: (एकाग्र) केंद्रित, (चित्त) मन।

1227. ऐकान्तिक-सुख व्युत्पत्ति: एक + अन्तिक (अति) + सुखम्। अर्थ: सर्वोच्च या एकांत सुख
(ब्रह्मानंद)। क्रमवार शब्दार्थ: (ऐकान्तिक) चरम, (सुख) आनंद।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 63
1228. कल्पित-जगत व्युत्पत्ति: कल्पित (मानसिक) + जगत। अर्थ: वह संसार जो माया से बना है।
क्रमवार शब्दार्थ: (कल्पित) आभासी, (जगत) प्रपंच।

1229. कर्म-फलाकांक्षा व्युत्पत्ति: कर्म-फलस्य आकांक्षा। अर्थ: कर्म के परिणाम की इच्छा।
क्रमवार शब्दार्थ: (कर्मफल) परिणाम, (आकांक्षा) चाह।

1230. कार्य-कारण-भाव व्युत्पत्ति: कार्यं च कारणं च तयोः भावः। अर्थ: उत्पाद और उसके मूल
कारण का संबंध। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (कारण) मूल।

1231. कारण-शरीर व्युत्पत्ति: कारणस्य शरीरम्। अर्थ: वह सूक्ष्म शरीर जो अविद्या का आधार
है। क्रमवार शब्दार्थ: (कारण) बीज, (शरीर) देह।

1232. कुण्डलिनी-शक्ति व्युत्पत्ति: कुण्डलिनी (साँप के समान) + शक्ति। अर्थ: मूलाधार में
स्थित सुप्त चेतना शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (कुण्डलिनी) चेतना, (शक्ति) ऊर्जा।

1233. कूटावस्था व्युत्पत्ति: कूट (ढेर/अपरिवर्तनीय) + अवस्था। अर्थ: वह स्थिति जो सदा एक
सी रहती है (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटावस्था) अपरिवर्तनशीलता।

1234. केवल-ज्ञान व्युत्पत्ति: केवलं (शुद्ध) + ज्ञानम्। अर्थ: शुद्ध और निरपेक्ष बोध।
क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (ज्ञान) बोध।

1235. क्रिया-प्रमाण व्युत्पत्ति: क्रियायाः प्रमाणम्। अर्थ: कर्मों द्वारा सत्य की
सिद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कार्य, (प्रमाण) सिद्धि।

1236. क्षर-अक्षर-भेद व्युत्पत्ति: क्षर (नश्वर) + अक्षर (अविनाशी) + भेद। अर्थ: देह और
आत्मा के बीच का अंतर। क्रमवार शब्दार्थ: (क्षर) नाशवान, (अक्षर) नित्य।

1237. गम्भीर-भाव व्युत्पत्ति: गम्भीरः भावः। अर्थ: गहरा और स्थिर मानसिक भाव। क्रमवार
शब्दार्थ: (गम्भीर) गहरा, (भाव) स्थिति।

1238. गुण-दोष-दर्शन व्युत्पत्ति: गुणं दोषं च दर्शनम्। अर्थ: वस्तुओं के भले-बुरे को
परखने की दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण-दोष) विशेषता, (दर्शन) देखना।

1239. ज्ञान-निष्ठा व्युत्पत्ति: ज्ञाने निष्ठा। अर्थ: ज्ञान में अडिग रहना। क्रमवार
शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (निष्ठा) स्थिरता।

1240. ज्ञानाग्नि व्युत्पत्ति: ज्ञानम् एव अग्निः। अर्थ: वह बोध जो कर्मों के संस्कारों
को जला दे। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (अग्नि) दहन।

1241. तत्त्व-मसी-वाक्य व्युत्पत्ति: तत्त्वमसि (महावाक्य)। अर्थ: उपनिषद का वह सूत्र जो
ब्रह्म को तुममें दिखाता है। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्वमसि) सूत्र, (वाक्य) उपदेश।

1242. तन्मात्र-तत्व व्युत्पत्ति: तत् + मात्र (सूक्ष्म)। अर्थ: पाँच सूक्ष्म भूत तत्व।
क्रमवार शब्दार्थ: (तन्मात्र) सूक्ष्म-पदार्थ।

1243. तमो-गुण व्युत्पत्ति: तमस् (अंधकार) + गुण। अर्थ: आलस्य और अज्ञान का गुण। क्रमवार
शब्दार्थ: (तम) जड़ता, (गुण) स्वभाव।

1244. तर्कातीत व्युत्पत्ति: तर्क (बुद्धि) + अतीत (परे)। अर्थ: जिसे तर्क से नहीं समझा जा
सकता। क्रमवार शब्दार्थ: (तर्क) युक्ति, (अतीत) परे।

1245. त्रिकालातीत व्युत्पत्ति: त्रिकाल (भूत-वर्तमान-भविष्य) + अतीत। अर्थ: जो समय की
सीमा से बाहर है। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) समय, (अतीत) मुक्त।

1246. त्रि-गुण-मय व्युत्पत्ति: त्रि + गुण + मय (युक्त)। अर्थ: तीनों गुणों (सत्-रज-तम) से
भरा हुआ प्रपंच। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिगुण) प्रकृति, (मय) युक्त।

1247. दान्त-पुरुष व्युत्पत्ति: दान्त (दमन करने वाला) + पुरुष। अर्थ: जिसने अपनी
इंद्रियों को जीत लिया हो। क्रमवार शब्दार्थ: (दान्त) संयमी, (पुरुष) व्यक्ति।

1248. दार्शनिक-तर्क व्युत्पत्ति: दर्शनस्य तर्कः। अर्थ: सत्य की स्थापना के लिए की गई
दलील। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) तत्वमीमांसीय, (तर्क) युक्ति।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 64
1249. दुःख-निवृत्ति व्युत्पत्ति: दुःखस्य निवृत्तिः। अर्थ: सभी कष्टों का पूरी तरह
समाप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (दुःख) पीड़ा, (निवृत्ति) अंत।

1250. देहाध्यास व्युत्पत्ति: देह (शरीर) + अध्यास (भ्रम)। अर्थ: शरीर को ही मैं मान लेने
की भ्रांति। क्रमवार शब्दार्थ: (देह) शरीर, (अध्यास) मिथ्या-बोध।

1251. • धृति व्युत्पत्ति: धृ (धारण करना) + ति। अर्थ: धैर्य या वह मानसिक स्थिरता जो धर्म
को धारण करती है। क्रमवार शब्दार्थ: (धृति) धैर्य, (धारण) स्थिति।

1252. • धर्म-क्षेत्र व्युत्पत्ति: धर्मस्य क्षेत्रम्। अर्थ: कुरुक्षेत्र आदि वह स्थान
जहाँ धर्म का निर्णय हो (प्रतीकात्मक रूप से शरीर)। क्रमवार शब्दार्थ: (धर्म) कर्तव्य, (क्षेत्र) स्थल।

1253. • ध्वंसाभाव व्युत्पत्ति: ध्वंस (विनाश) + अभाव (नहीं होना)। अर्थ: किसी वस्तु के
नष्ट हो जाने के बाद उसका न होना। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्वंस) विनाश, (अभाव) शून्यता।

1254. • निश्चय-बुद्धि व्युत्पत्ति: निश्चयः बुद्धिः यस्यां सा। अर्थ: वह बुद्धि जो सत्य
को निश्चित रूप से पहचान ले। क्रमवार शब्दार्थ: (निश्चय) दृढ़ता, (बुद्धि) विवेक।

1255. • निर्विशेष-ब्रह्म व्युत्पत्ति: निर् (रहित) + विशेष (गुण/भेद)। अर्थ: गुण-भेद से
रहित परम तत्व। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्विशेष) निराकार, (ब्रह्म) परमात्मा।

1256. • निस्पृहता व्युत्पत्ति: निस् (रहित) + स्पृहा (इच्छा)। अर्थ: वस्तुओं को पाने की
इच्छा का पूरी तरह समाप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (निस्पृह) इच्छाहीन, (ता) भाव।

1257. • नैष्कर्म्य-सिद्धि व्युत्पत्ति: नैष्कर्म्य (कर्महीन स्थिति) + सिद्धि
(प्राप्ति)। अर्थ: आत्मज्ञान द्वारा कर्तापन के अहंकार से मुक्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (नैष्कर्म्य) अकर्मण्यत्व, (सिद्धि) उपलब्धि।

1258. • परोक्ष-ज्ञान व्युत्पत्ति: पर (दूसरे/दूर) + अक्ष (इंद्रिय) + ज्ञान। अर्थ: जो
शास्त्रों के माध्यम से सुना गया ज्ञान है (प्रत्यक्ष नहीं)। क्रमवार शब्दार्थ: (परोक्ष) अप्रत्यक्ष, (ज्ञान) बोध।

1259. • परमार्थ-स्थिति व्युत्पत्ति: परमार्थ (ब्रह्म) + स्थिति। अर्थ: अंतिम सत्य या
आत्म-स्वरूप में सदा के लिए स्थिर होना। क्रमवार शब्दार्थ: (परमार्थ) सत्य, (स्थिति) दशा।

1260. • प्रमातृ-चैतन्य व्युत्पत्ति: प्रमातृ (जानने वाला) + चैतन्य। अर्थ: वह चेतना जो
ज्ञाता के रूप में कार्य करती है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमातृ) ज्ञाता, (चैतन्य) ज्ञान।

1261. • प्रमेय-चैतन्य व्युत्पत्ति: प्रमेय (ज्ञेय) + चैतन्य। अर्थ: वह चेतना जो विषय के
रूप में उपस्थित हो। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमेय) ज्ञातव्य, (चैतन्य) ज्ञान।

1262. • प्रमाण-चैतन्य व्युत्पत्ति: प्रमाण (साधन) + चैतन्य। अर्थ: वह चेतना जो ज्ञान
प्राप्ति के माध्यम के रूप में हो। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) हेतु, (चैतन्य) ज्ञान।

1263. • प्रवृत्ति-मार्ग व्युत्पत्ति: प्रवृत्ति (संसार में जुड़ाव) + मार्ग। अर्थ: सकाम
कर्मों और सांसारिक कर्तव्यों का रास्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रवृत्ति) कार्य, (मार्ग) पंथ।

1264. • निवृत्ति-मार्ग व्युत्पत्ति: निवृत्ति (संसार से अलगाव) + मार्ग। अर्थ:
आत्मज्ञान और सन्यास का रास्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (निवृत्ति) त्याग, (मार्ग) पंथ।

1265. • पुरुषार्थ-चतुष्टय व्युत्पत्ति: पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) + चतुष्टय
(चार)। अर्थ: मानव जीवन के चार परम लक्ष्य। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरुषार्थ) साध्य, (चतुष्टय) समूह।

1266. • प्रणव-नाद व्युत्पत्ति: प्रणव (ॐ) + नाद (ध्वनि)। अर्थ: 'ॐ' की वह सूक्ष्म ध्वनि जो
समाधि में सुनाई देती है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रणव) ओंकार, (नाद) शब्द।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 65
1267. • प्रज्ञालोक व्युत्पत्ति: प्रज्ञा (बुद्धि) + आलोक (प्रकाश)। अर्थ: आत्म-विवेक का
वह प्रकाश जो अज्ञान मिटा दे। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञा) बोध, (आलोक) उजाला।

1268. • प्रतिभास-सत्य व्युत्पत्ति: प्रतिभास (आभास) + सत्य। अर्थ: वह जो क्षणिक भ्रम में
सच लगे (जैसे स्वप्न)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभास) आभासी, (सत्य) यथार्थ।

1269. • फल-श्रुति व्युत्पत्ति: फल (परिणाम) + श्रुति (वेदवचन)। अर्थ: किसी साधना के अंत
में मिलने वाले लाभ का वर्णन। क्रमवार शब्दार्थ: (फल) परिणाम, (श्रुति) कथन।

1270. • ब्रह्म-वर्चस व्युत्पत्ति: ब्रह्म (परमात्मा) + वर्चस (तेज)। अर्थ: ब्रह्म-अनुभव
से उत्पन्न आध्यात्मिक आभा। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) दिव्य, (वर्चस) तेज।

1271. • ब्रह्म-संस्था व्युत्पत्ति: ब्रह्मणि (ब्रह्म में) + संस्था (स्थिति)। अर्थ: जो
हर स्थिति में ब्रह्म में ही टिका हो। क्रमवार शब्दार्थ: (संस्था) अटल स्थिति।

1272. • बोध-सार व्युत्पत्ति: बोध (ज्ञान) + सार (तत्व)। अर्थ: ज्ञान का वह मूल तत्व जो
मोक्ष देता है। क्रमवार शब्दार्थ: (बोध) ज्ञान, (सार) निचोड़।

1273. • मौन-योग व्युत्पत्ति: मौन (शांत) + योग। अर्थ: वाणी और मन का निरोध कर स्थित होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (मौन) चुप्पी, (योग) समाधि।

1274. • महा-भूत व्युत्पत्ति: महत् (बड़ा) + भूत (तत्व)। अर्थ: पंचमहाभूत (आकाश, वायु,
अग्नि, जल, पृथ्वी)। क्रमवार शब्दार्थ: (महा) विशाल, (भूत) तत्व।

1275. • माया-आश्रय व्युत्पत्ति: माया (अविद्या) + आश्रय (आधार)। अर्थ: वह ब्रह्म, जो माया
का आधार है। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) भ्रम, (आश्रय) आधार।

1276. • मुक्ति-पद व्युत्पत्ति: मुक्तेः पदम्। अर्थ: मोक्ष की अवस्था या स्थान। क्रमवार
शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (पद) स्थिति।

1277. • मोक्ष-हेतु व्युत्पत्ति: मोक्षस्य हेतुः। अर्थ: मुक्ति का कारण (ज्ञान)। क्रमवार
शब्दार्थ: (मोक्ष) स्वतंत्रता, (हेतु) कारण।

1278. • यथोक्त-कर्म व्युत्पत्ति: यथा (जैसा) + उक्त (कहा गया) + कर्म। अर्थ: शास्त्रों
में बताए अनुसार किया गया कार्य। क्रमवार शब्दार्थ: (यथोक्त) शास्त्रानुसार, (कर्म) कार्य।

1279. • योग-रूढ़ व्युत्पत्ति: योग (अभ्यास) + रूढ़ (स्थापित)। अर्थ: जो अभ्यास द्वारा
समाधि में स्थापित हो गया हो। क्रमवार शब्दार्थ: (योग) साधना, (रूढ़) स्थिर।

1280. • युक्त-आहार व्युत्पत्ति: युक्त (संतुलित) + आहार। अर्थ: साधना के योग्य उचित
भोजन। क्रमवार शब्दार्थ: (युक्त) संतुलित, (आहार) भोजन।

1281. • लक्षण-अवृत्ति व्युत्पत्ति: लक्षण (संकेत) + अवृत्ति (प्रयोग)। अर्थ: शब्द के
सीधे अर्थ को छोड़कर उसके लक्षित अर्थ को समझना। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्षण) संकेत, (अवृत्ति) प्रक्रिया।

1282. • लोक-संग्रह व्युत्पत्ति: लोक (जनता) + संग्रह (कल्याण)। अर्थ: समाज के कल्याण के
लिए कर्म करना। क्रमवार शब्दार्थ: (लोक) संसार, (संग्रह) भलाई।

1283. • विक्षेप-अभाव व्युत्पत्ति: विक्षेप (मन का भटकना) + अभाव (अभाव)। अर्थ: मन का पूरी
तरह शांत होना। क्रमवार शब्दार्थ: (विक्षेप) चंचलता, (अभाव) समाप्ति।

1284. • विषय-उपभोग व्युत्पत्ति: विषय (इंद्रिय के भोग) + उपभोग। अर्थ: इंद्रियों द्वारा
विषयों का भोग करना। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय) वस्तु, (उपभोग) सुख।

1285. • वृत्ति-उदय व्युत्पत्ति: वृत्ति (मन की लहर) + उदय (उठना)। अर्थ: मन में किसी
विचार या लहर का उठना। क्रमवार शब्दार्थ: (वृत्ति) संकल्प, (उदय) प्राकट्य।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 66
1286. • वैराग्य-अग्नि व्युत्पत्ति: वैराग्यम् एव अग्निः। अर्थ: वह विरक्ति जो सांसारिक
वासनाओं को जला दे। क्रमवार शब्दार्थ: (वैराग्य) अनासक्ति, (अग्नि) दहन।

1287. • व्यापकत्व व्युत्पत्ति: व्यापक (सब जगह) + त्व। अर्थ: सर्वत्र होने का गुण (ब्रह्म
का लक्षण)। क्रमवार शब्दार्थ: (व्यापक) सर्वव्यापी, (त्व) स्वभाव।

1288. • शब्द-ब्रह्म व्युत्पत्ति: शब्दः एव ब्रह्म। अर्थ: वह ब्रह्म जो वेदों के शब्दों और
मंत्रों में अभिव्यक्त है। क्रमवार शब्दार्थ: (शब्द) ध्वनि, (ब्रह्म) ईश्वर।

1289. • शास्त्र-अनुशीलन व्युत्पत्ति: शास्त्र + अनुशीलन (गहन अध्ययन)। अर्थ: ग्रंथों का
बार-बार चिंतन-मनन करना। क्रमवार शब्दार्थ: (शास्त्र) ज्ञान-ग्रंथ, (अनुशीलन) अध्ययन।

1290. • शुद्ध-बुद्ध-मुक्त व्युत्पत्ति: शुद्ध (निर्मल) + बुद्ध (जागृत) + मुक्त। अर्थ:
आत्मा का त्रिविध लक्षण। क्रमवार शब्दार्थ: (शुद्ध) पवित्र, (बुद्ध) ज्ञानी, (मुक्त) स्वतंत्र।

1291. • श्रुति-प्रमाण व्युत्पत्ति: श्रुतेः प्रमाणम्। अर्थ: वेदों को ज्ञान का सर्वोच्च
आधार मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रुति) वेद, (प्रमाण) साक्ष्य।

1292. • सगुण-उपासना व्युत्पत्ति: सगुणस्य उपासना। अर्थ: ईश्वर के रूप और गुणों की पूजा।
क्रमवार शब्दार्थ: (सगुण) रूपाकार, (उपासना) ध्यान।

1293. • सद्यो-मुक्ति व्युत्पत्ति: सद्यः (तत्काल) + मुक्ति। अर्थ: ज्ञान होते ही तुरंत
मोक्ष मिल जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (सद्यः) तत्काल, (मुक्ति) मोक्ष।

1294. • सत्यासत्य-विवेक व्युत्पत्ति: सत्यम् + असत्यम् + विवेकः। अर्थ: सच और झूठ के भेद
को जानने वाली बुद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्य) यथार्थ, (असत्य) मिथ्या, (विवेक) बुद्धि।

1295. • सर्वात्म-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: सर्वात्मनः साक्षात्कारः। अर्थ: सब कुछ आत्मा
ही है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (सर्वात्म) परमात्मा, (साक्षात्कार)
अनुभव।

1296. • सहज-समाधि व्युत्पत्ति: सहज (स्वाभाविक) + समाधि। अर्थ: वह समाधि जो अभ्यास के
बिना निरंतर बनी रहे। क्रमवार शब्दार्थ: (सहज) स्वाभाविक, (समाधि) एकाग्रता।

1297. • सृष्टि-प्रक्रिया व्युत्पत्ति: सृष्टेः प्रक्रिया। अर्थ: ब्रह्मांड के बनने का
क्रम (वेदान्त मत)। क्रमवार शब्दार्थ: (सृष्टि) ब्रह्मांड, (प्रक्रिया) क्रम।

1298. • स्थूल-शरीर व्युत्पत्ति: स्थूल (बड़ा/दृश्य) + शरीर। अर्थ: वह शरीर जो पंचभूतों से
बना और आंखों से दिखता है। क्रमवार शब्दार्थ: (स्थूल) भौतिक, (शरीर) देह।

1299. • सूक्ष्म-शरीर व्युत्पत्ति: सूक्ष्म (अदृश्य) + शरीर। अर्थ: मन, बुद्धि और
इंद्रियों का समुदाय। क्रमवार शब्दार्थ: (सूक्ष्म) अदृश्य, (शरीर) देह।

1300. • ज्ञान-अग्नि-दग्ध व्युत्पत्ति: ज्ञानेन अग्निना दग्धः। अर्थ: जिसका अज्ञान ज्ञान
रूपी अग्नि से जल चुका हो। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (अग्नि) ज्वाला, (दग्ध) जला हुआ।

1301. • अद्वैत-निष्ठ - जो पूर्णतः अभेद ज्ञान में स्थित है। व्युत्पत्ति: अद्वैत (एकता) +
निष्ठ (स्थित)। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकात्मता, (निष्ठ) स्थिर।

1302. • अनन्य-चित्त - जिसका मन कहीं और न भटके, एकाग्र। व्युत्पत्ति: न + अन्य (दूसरा) +
चित्त (मन)। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकाग्र, (चित्त) मन।

1303. • अभावात्मक-तर्क - अभाव के माध्यम से सत्य का ज्ञान करना। व्युत्पत्ति: अभाव +
आत्मक + तर्क। क्रमवार शब्दार्थ: (अभाव) न होना, (तर्क) युक्ति।

1304. • आत्म-लक्षण - आत्मा की पहचान बताने वाले गुण। व्युत्पत्ति: आत्मन् + लक्षण
(चिह्न)। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (लक्षण) पहचान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 67
1305. • आत्म-विद् - जो आत्म-तत्व को जानने वाला है। व्युत्पत्ति: आत्मन् + विद् (जानने
वाला)। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) ब्रह्म, (विद्) ज्ञाता।

1306. • इष्ट-देवता - वह रूप जिसमें साधक ईश्वर को देखता है। व्युत्पत्ति: इष्ट (पसंदीदा)
+ देवता। क्रमवार शब्दार्थ: (इष्ट) प्रिय, (देवता) ईश्वर।

1307. • ईक्षणात्मक-सृष्टि - ईश्वर के संकल्प (ईक्षण) से बनी सृष्टि। व्युत्पत्ति: ईक्षण
(दृष्टि/संकल्प) + आत्मक। क्रमवार शब्दार्थ: (ईक्षण) संकल्प, (सृष्टि) जगत।

1308. • उत्पत्ति-विनाश - संसार की उत्पन्न होने और मिटने की प्रक्रिया। व्युत्पत्ति:
उत्पत्ति + विनाश। क्रमवार शब्दार्थ: (उत्पत्ति) सृजन, (विनाश) अंत।

1309. • उपलक्षण-विधि - किसी वस्तु को अन्य उदाहरण से समझाना। व्युत्पत्ति: उप (समीप) +
लक्षण + विधि। क्रमवार शब्दार्थ: (उपलक्षण) गौण पहचान, (विधि) तरीका।

1310. • एकाग्रता-सिद्धि - मन को एक लक्ष्य पर साध लेने की सफलता। व्युत्पत्ति: एकाग्रता +
सिद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (एकाग्र) केंद्रित, (सिद्धि) सफलता।

1311. • कर्ता-भोक्ता - जीव का वह भाव जो कर्म करता है और फल भोगता है। व्युत्पत्ति: कर्ता
+ भोक्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्ता) करने वाला, (भोक्ता) अनुभव करने वाला।

1312. • काल-चक्र - समय का निरंतर चलता हुआ घेरा। व्युत्पत्ति: काल (समय) + चक्र। क्रमवार
शब्दार्थ: (काल) समय, (चक्र) वृत्त।

1313. • किंचित्-ज्ञता - जीव के ज्ञान का सीमित होना। व्युत्पत्ति: किंचित् (थोड़ा) + ज्ञता
(ज्ञान का भाव)। क्रमवार शब्दार्थ: (किंचित्) अल्प, (ज्ञता) बोध।

1314. • केवलात्मा - वह शुद्ध आत्मा जो उपाधियों से मुक्त है। व्युत्पत्ति: केवल (शुद्ध) +
आत्मा। क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) निरपेक्ष, (आत्मा) चैतन्य।

1315. • क्रिया-फल - कर्म के द्वारा प्राप्त होने वाला परिणाम। व्युत्पत्ति: क्रिया + फल।
क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कर्म, (फल) परिणाम।

1316. • गुणात्मक-प्रकृति - जो तीन गुणों (सत्-रज-तम) से बनी है। व्युत्पत्ति: गुण + आत्मक
+ प्रकृति। क्रमवार शब्दार्थ: (गुणात्मक) विशिष्ट, (प्रकृति) जड़तत्व।

1317. • ग्रहण-शक्ति - ज्ञान को धारण करने की क्षमता। व्युत्पत्ति: ग्रहण + शक्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (ग्रहण) स्वीकारना, (शक्ति) क्षमता।

1318. • चित्त-विशुद्धि - मन के मैल का पूरी तरह साफ होना। व्युत्पत्ति: चित्त + विशुद्धि
(पूर्ण पवित्रता)। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (विशुद्धि) निर्मलता।

1319. • चिदाभास - बुद्धि में प्रतिबिंबित होने वाली चेतना। व्युत्पत्ति: चित् (चेतना) +
आभास (प्रतिबिंब)। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्) बोध, (आभास) झलक।

1320. • चेतन-तत्व - वह तत्व जिसमें बोध या जागृति है। व्युत्पत्ति: चेतन + तत्व। क्रमवार
शब्दार्थ: (चेतन) जागरूक, (तत्व) पदार्थ।

1321. • जड़-चेतन-विवेक - जड़ (पदार्थ) और चेतन (आत्मा) का अंतर समझना। व्युत्पत्ति: जड़ +
चेतन + विवेक। क्रमवार शब्दार्थ: (जड़) निर्जीव, (चेतन) सजीव, (विवेक) भेद।

1322. • जीव-ब्रह्म-अभेद - जीव और ब्रह्म का एक होना। व्युत्पत्ति: जीव + ब्रह्म + अभेद
(बिना अंतर)। क्रमवार शब्दार्थ: (जीव) आत्मा, (ब्रह्म) परमात्मा, (अभेद) एकता।

1323. • तत्-पद-अर्थ - महावाक्य में 'तत्' (ईश्वर) का अर्थ। व्युत्पत्ति: तत् (वह) + पद +
अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्) ईश्वर, (पद) शब्द।

1324. • त्वं-पद-अर्थ - महावाक्य में 'त्वम्' (जीव) का अर्थ। व्युत्पत्ति: त्वम् (तुम) + पद
+ अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (त्वम्) जीव, (पद) शब्द।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 68
1325. • तर्काधारित-बोध - युक्तियों के माध्यम से हुआ ज्ञान। व्युत्पत्ति: तर्क + आधारित
+ बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (तर्क) युक्ति, (बोध) ज्ञान।

1326. • त्रिपुटी - ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का समूह। व्युत्पत्ति: त्रि + पुटी (तीन का
समूह)। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रि) तीन, (पुटी) त्रिगुणात्मक मिलाप।

1327. • त्रैगुण्य - तीन गुणों की स्थिति (सत्, रज, तम)। व्युत्पत्ति: त्रि (तीन) + गुण + य
(भाव)। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रै) तीन, (गुण्य) गुणवाला।

1328. • दर्शन-प्रमाण - सत्य को देखने का आधार। व्युत्पत्ति: दर्शन + प्रमाण। क्रमवार
शब्दार्थ: (दर्शन) अवलोकन, (प्रमाण) साक्ष्य।

1329. • द्वैत-भास - जहाँ दो होने का भ्रम हो। व्युत्पत्ति: द्वैत (भेद) + भास (आभास)।
क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) अंतर, (भास) प्रतीत होना।

1330. • ध्यान-धारणा - मन को एकाग्र करने की प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: ध्यान + धारणा।
क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (धारणा) ठहराव।

1331. • नाम-रूप-प्रपंच - नामों और आकृतियों से बना संसार। व्युत्पत्ति: नाम + रूप +
प्रपंच। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम) संज्ञा, (रूप) आकार, (प्रपंच) जगत।

1332. • नित्य-नैमित्तिक-कर्म - वे कर्म जो हमेशा और विशेष मौकों पर होते हैं।
व्युत्पत्ति: नित्य + नैमित्तिक + कर्म। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) सदा, (नैमित्तिक) अवसर-जन्य।

1333. • निर्विकार-चैतन्य - जो चेतना कभी बदलती नहीं। व्युत्पत्ति: निर् (रहित) + विकार
(बदलाव) + चैतन्य। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्विकार) अपरिवर्तनीय, (चैतन्य) ज्ञान।

1334. • नैमित्तिक-प्रलय - ब्रह्मा की आयु के अंत में होने वाला महाविनाश। व्युत्पत्ति:
नैमित्तिक + प्रलय। क्रमवार शब्दार्थ: (नैमित्तिक) कारण-जन्य, (प्रलय) अंत।

1335. • परा-प्रकृति - ईश्वर की सर्वोच्च शक्ति (जीव-शक्ति)। व्युत्पत्ति: परा (श्रेष्ठ)
+ प्रकृति। क्रमवार शब्दार्थ: (परा) उत्कृष्ट, (प्रकृति) ऊर्जा।

1336. • प्रमाता - ज्ञान को प्राप्त करने वाला (ज्ञाता)। व्युत्पत्ति: प्र + मा
(मापना/जानना) + तृ (कर्ता)। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमा) यथार्थ ज्ञान, (तृ) करने वाला।

1337. • प्रमाण-शास्त्र - ज्ञान के साधनों का शास्त्र (न्याय दर्शन)। व्युत्पत्ति: प्रमाण
+ शास्त्र। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) ज्ञान-साधन, (शास्त्र) ग्रंथ।

1338. • फल-श्रुति-ज्ञान - शास्त्र के फल को जानने का बोध। व्युत्पत्ति: फल + श्रुति +
ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (फल) लाभ, (श्रुति) वेद, (ज्ञान) बोध।

1339. • ब्रह्म-तत्त्व-मीमांसा - ब्रह्म के स्वरूप पर गहन विचार। व्युत्पत्ति: ब्रह्म +
तत्त्व + मीमांसा (गहन चिंतन)। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (मीमांसा) विचार।

1340. • भासमान-जगत - जो संसार दिखाई देता है, भले ही वह माया हो। व्युत्पत्ति: भासमान
(दिखता हुआ) + जगत। क्रमवार शब्दार्थ: (भासमान) दृश्य, (जगत) प्रपंच।

1341. • मन्त्र-अनुष्ठान - मंत्रों का विधिवत जप। व्युत्पत्ति: मन्त्र + अनुष्ठान।
क्रमवार शब्दार्थ: (मन्त्र) ध्वनि, (अनुष्ठान) साधना।

1342. • माया-निवृत्ति - भ्रम का पूरी तरह मिट जाना। व्युत्पत्ति: माया + निवृत्ति (अंत)।
क्रमवार शब्दार्थ: (माया) अज्ञान, (निवृत्ति) समाप्ति।

1343. • मुक्ति-साधन - मोक्ष प्राप्त करने के उपाय। व्युत्पत्ति: मुक्ति + साधन। क्रमवार
शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (साधन) उपाय।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 69
1344. • योग-साधना - एकाग्रता का अभ्यास। व्युत्पत्ति: योग + साधना। क्रमवार शब्दार्थ:
(योग) जुड़ाव, (साधना) अभ्यास।

1345. • लक्षण-लक्ष्यार्थ - संकेत के माध्यम से अर्थ समझना। व्युत्पत्ति: लक्षण (संकेत) +
लक्ष्य + अर्थ। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्ष्य) संकेतित, (अर्थ) तात्पर्य।

1346. • विवर्त-दृष्टि - संसार को केवल एक बदलाव (आभास) देखना। व्युत्पत्ति: विवर्त (आभास)
+ दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (विवर्त) मायावी-बदलाव, (दृष्टि) नजरिया।

1347. • विवेक-वैराग्य - सही-गलत की परख और संसार से विरक्ति। व्युत्पत्ति: विवेक (परख) +
वैराग्य (विरक्ति)। क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक) बुद्धि, (वैराग्य) अनासक्ति।

1348. • विशुद्ध-चेतना - एकदम शुद्ध ज्ञान की अवस्था। व्युत्पत्ति: विशुद्ध (पवित्र) +
चेतना। क्रमवार शब्दार्थ: (विशुद्ध) निर्मल, (चेतना) बोध।

1349. • श्रुति-स्मृति - वेद (श्रुति) और ऋषि-वचन (स्मृति)। व्युत्पत्ति: श्रुति +
स्मृति। क्रमवार शब्दार्थ: (श्रुति) वेद, (स्मृति) परंपरा।

1350. • सांख्य-प्रक्रिया - प्रकृति और पुरुष के भेद की विधि। व्युत्पत्ति: सांख्य
(गणना/ज्ञान) + प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (सांख्य) विवेक, (प्रक्रिया) विधि।

1351. • अज्ञान-नाश - अविद्या का समूल विनाश। व्युत्पत्ति: अज्ञान (अविद्या) + नाश।
क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (नाश) समाप्ति।

1352. • आत्म-निवेदन - स्वयं को ईश्वर के प्रति पूर्णतः समर्पित करना। व्युत्पत्ति:
आत्मन् + निवेदनम्। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (निवेदन) समर्पण।

1353. • अनुवाद-वाक्य - शास्त्र में पूर्वोक्त विषय को पुनः स्पष्ट करने वाला वाक्य।
व्युत्पत्ति: अनु (पीछे) + वद् (कहना)। क्रमवार शब्दार्थ: (अनुवाद) पुनर्कथन, (वाक्य) वचन।

1354. • अंतःकरण-शुद्धि - मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की पवित्रता। व्युत्पत्ति: अंतःकरण
(मनोमय उपकरण) + शुद्धि। क्रमवार शब्दार्थ: (अंतःकरण) मन, (शुद्धि) निर्मलता।

1355. • अन्य-अभाव - 'अन्य' (परमात्मा से भिन्न कुछ और) का न होना। व्युत्पत्ति: अन्य
(दूसरा) + अभाव। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्य) भिन्न, (अभाव) न होना।

1356. • अत्यन्तिक-दुःख-निवृत्ति - दुःखों का पूर्ण और स्थायी अंत (मोक्ष)। व्युत्पत्ति:
अत्यन्तिक (अत्यंत) + दुःख + निवृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (अत्यन्तिक) पूर्ण, (दुःख) पीड़ा, (निवृत्ति) समाप्ति।

1357. • आनन्द-स्वरूप - जिसका स्वभाव ही सुख है (ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: आनन्द + स्वरूप
(स्वभाव)। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (स्वरूप) स्वभाव।

1358. • अधिष्ठान-ज्ञान - आधार (ब्रह्म) का वास्तविक बोध। व्युत्पत्ति: अधिष्ठान (आधार) +
ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिष्ठान) नींव, (ज्ञान) बोध।

1359. • अखण्ड-चैतन्य - वह चेतना जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते। व्युत्पत्ति: अखण्ड
(अविभाज्य) + चैतन्य। क्रमवार शब्दार्थ: (अखण्ड) पूर्ण, (चैतन्य) ज्ञान।

1360. • अज्ञान-वृत्ति-नाश - अज्ञानजन्य मानसिक लहरों का अंत। व्युत्पत्ति: अज्ञान +
वृत्ति (लहर) + नाश। क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (वृत्ति) संकल्प, (नाश) अंत।

1361. • अभिनिवेश - मृत्यु का भय या जीवन से अत्यधिक लगाव। व्युत्पत्ति: अभि + नि + विश्
(प्रवेश/लगाव)। क्रमवार शब्दार्थ: (अभिनिवेश) मोह/भय।

1362. • अर्पण-योग - अपने कर्म और फल को ईश्वर को अर्पित करना। व्युत्पत्ति: अर्पण
(समर्पण) + योग। क्रमवार शब्दार्थ: (अर्पण) दान, (योग) जुड़ाव।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 70
1363. • असंग-आत्मा - वह आत्मा जो किसी भी गुण या कर्म से नहीं जुड़ी। व्युत्पत्ति: असंग
(मुक्त) + आत्मा। क्रमवार शब्दार्थ: (असंग) निर्लिप्त, (आत्मा) स्व।

1364. • अविद्या-क्लेश - अज्ञान के कारण होने वाला मानसिक कष्ट। व्युत्पत्ति: अविद्या +
क्लेश। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (क्लेश) पीड़ा।

1365. • अक्षर-विद्या - उस अविनाशी तत्व का ज्ञान। व्युत्पत्ति: अक्षर (नाशरहित) +
विद्या। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्षर) शाश्वत, (विद्या) ज्ञान।

1366. • आनन्द-मीमांसा - सुख के वास्तविक स्वरूप पर विचार। व्युत्पत्ति: आनन्द + मीमांसा
(गहन चिंतन)। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (मीमांसा) तर्क।

1367. • आत्म-विद्या - स्वयं को जानने का विज्ञान। व्युत्पत्ति: आत्मन् + विद्या। क्रमवार
शब्दार्थ: (आत्म) चैतन्य, (विद्या) शास्त्र।

1368. • अवच्छेद-काल - काल (समय) द्वारा सीमित होना। व्युत्पत्ति: अवच्छेद (सीमा) + काल।
क्रमवार शब्दार्थ: (अवच्छेद) परिधि, (काल) समय।

1369. • अज्ञान-संचय - जन्मों के संस्कारों से इकट्ठा अज्ञान। व्युत्पत्ति: अज्ञान +
संचय। क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (संचय) जमाव।

1370. • अंतर्यामी-ईश्वर - सबके हृदय में स्थित शासक। व्युत्पत्ति: अंतर्यामी (भीतर का
नियंता) + ईश्वर। क्रमवार शब्दार्थ: (अंतर्यामी) भीतरी, (ईश्वर) परमात्मा।

1371. • आभास-मात्र - केवल एक भ्रम या झलक। व्युत्पत्ति: आभास + मात्र। क्रमवार शब्दार्थ:
(आभास) प्रतीति, (मात्र) केवल।

1372. • अज्ञान-आवरण - सत्य को ढंकने वाली अज्ञान की परत। व्युत्पत्ति: अज्ञान + आवरण
(पर्दा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (आवरण) ढक्कन।

1373. • आत्म-बोध-विधि - आत्मज्ञान प्राप्ति का तरीका। व्युत्पत्ति: आत्म + बोध (ज्ञान) +
विधि। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (बोध) ज्ञान, (विधि) प्रक्रिया।

1374. • अर्थ-निष्ठा - अर्थ (तत्व) में अडिग रहना। व्युत्पत्ति: अर्थ + निष्ठा (स्थिरता)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अर्थ) सार, (निष्ठा) अटल भाव।

1375. • आनन्द-घन - सुख का सघन स्वरूप। व्युत्पत्ति: आनन्द + घन (पिंड/सघन)। क्रमवार
शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (घन) ठोस।

1376. • आत्म-प्रतिष्ठा - अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो जाना। व्युत्पत्ति: आत्मन् +
प्रतिष्ठा (स्थापना)। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (प्रतिष्ठा) स्थिति।

1377. • अधिकारी-भेद - साधकों की योग्यता में अंतर। व्युत्पत्ति: अधिकारी (पात्र) + भेद
(अंतर)। क्रमवार शब्दार्थ: (अधिकारी) पात्र, (भेद) भिन्नता।

1378. • अनित्य-वस्तु - जो टिकने वाली नहीं है। व्युत्पत्ति: न + नित्य + वस्तु। क्रमवार
शब्दार्थ: (अनित्य) नाशवान, (वस्तु) पदार्थ।

1379. • अविद्या-प्रत्यय - अज्ञान से उत्पन्न विचार। व्युत्पत्ति: अविद्या + प्रत्यय
(विचार/धारणा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (प्रत्यय) संकल्प।

1380. • आनन्दमय-विग्रह - आनन्द से निर्मित स्वरूप। व्युत्पत्ति: आनन्दमय + विग्रह
(शरीर/स्वरूप)। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्दमय) सुखी, (विग्रह) आकार।

1381. • आत्म-स्वरूप-निष्ठा - अपने आत्म-स्वभाव में अडिग रहना। व्युत्पत्ति: आत्म-स्वरूप
+ निष्ठा। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (स्वरूप) स्वभाव, (निष्ठा) स्थिरता।

1382. • अमृत-नाड़ी - वह सूक्ष्म मार्ग जो अमरत्व की ओर ले जाए। व्युत्पत्ति: अमृत + नाड़ी
(मार्ग)। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृत) शाश्वत, (नाड़ी) पथ।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 71
1383. • अज्ञान-जन्य - जो अज्ञान से पैदा हुआ हो। व्युत्पत्ति: अज्ञान + जन्य (पैदा हुआ)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (जन्य) उत्पन्न।

1384. • अनन्यता - एक ही का भाव, कोई दूसरा नहीं। व्युत्पत्ति: अनन्य + ता। क्रमवार
शब्दार्थ: (अनन्य) एकाग्र, (ता) भाव।

1385. • अनुवाद-प्रणाली - व्याख्या करने की पद्धति। व्युत्पत्ति: अनुवाद + प्रणाली।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनुवाद) व्याख्या, (प्रणाली) पद्धति।

1386. • अज्ञान-गह्वर - अज्ञान की गहरी खाई। व्युत्पत्ति: अज्ञान + गह्वर (गुफा/खाई)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अज्ञान) अंधकार, (गह्वर) गहराई।

1387. • आत्म-रूप - आत्मा का ही स्वरूप। व्युत्पत्ति: आत्मन् + रूप। क्रमवार शब्दार्थ:
(आत्म) स्व, (रूप) स्वरूप।

1388. • अभ्यास-निष्ठा - बार-बार के अभ्यास में दृढ़ता। व्युत्पत्ति: अभ्यास + निष्ठा।
क्रमवार शब्दार्थ: (अभ्यास) पुनरावृत्ति, (निष्ठा) स्थिरता।

1389. • आनन्द-सिन्धु - सुख का विशाल सागर। व्युत्पत्ति: आनन्द + सिन्धु (सागर)। क्रमवार
शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (सिन्धु) अथाह भंडार।

1390. • अध्यात्म-शास्त्र - आत्मज्ञान सिखाने वाले ग्रंथ। व्युत्पत्ति: अध्यात्म +
शास्त्र। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्म) आत्मविषयक, (शास्त्र) ग्रंथ।

1391. • अविद्या-वंचना - अज्ञान द्वारा ठगा जाना (भ्रम)। व्युत्पत्ति: अविद्या + वंचना
(धोखा)। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (वंचना) छल।

1392. • आत्म-प्रणव - आत्मा का 'ॐ' स्वरूप। व्युत्पत्ति: आत्मन् + प्रणव (ॐ)। क्रमवार
शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (प्रणव) मूल-ध्वनि।

1393. • अनन्वय - जिसका कोई अन्य आधार न हो (ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: न + अन्वय (सम्बन्ध)।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्वय) अद्वितीय/स्वतंत्र।

1394. • अधिकार-तत्व - योग्यता का सिद्धांत। व्युत्पत्ति: अधिकार + तत्व। क्रमवार
शब्दार्थ: (अधिकार) पात्रता, (तत्व) आधार।

1395. • आत्म-शांति - आत्मा में प्राप्त परम शांति। व्युत्पत्ति: आत्मन् + शांति। क्रमवार
शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (शांति) स्थिरता।

1396. • अज्ञान-पटल - अज्ञान का पर्दा। व्युत्पत्ति: अज्ञान + पटल (परत)। क्रमवार
शब्दार्थ: (अज्ञान) अविद्या, (पटल) आवरण।

1397. • अनुभव-सिद्ध - जिसे अनुभव से प्रमाणित किया गया हो। व्युत्पत्ति: अनुभव + सिद्ध।
क्रमवार शब्दार्थ: (अनुभव) साक्षात्कार, (सिद्ध) प्रमाणित।

1398. • अभेद-भावना - एकता का चिंतन। व्युत्पत्ति: अभेद + भावना। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद)
एकता, (भावना) ध्यान।

1399. • आत्म-दर्शन - अपने स्वरूप को देखना। व्युत्पत्ति: आत्मन् + दर्शन। क्रमवार
शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (दर्शन) देखना।

1400. • अमृत-पद - अविनाशी स्थिति। व्युत्पत्ति: अमृत + पद। क्रमवार शब्दार्थ: (अमृत)
अमरता, (पद) स्थिति।

1401. अभेद-दृष्टि - संसार को केवल ब्रह्म का विस्तार देखने वाली दृष्टि। व्युत्पत्ति:
अभेद (एकता) + दृष्टि (नजरिया)। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (दृष्टि) नजरिया।

1402. अद्वैत-साधना - ब्रह्म-एकत्व की प्राप्ति हेतु किया गया अभ्यास। व्युत्पत्ति:
अद्वैत (एकता) + साधना। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकात्मता, (साधना) अभ्यास।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 72
1403. अनात्म-त्याग - देह-बुद्धि और शरीर के प्रति मोह का परित्याग। व्युत्पत्ति: अनात्मन्
+ त्याग। क्रमवार शब्दार्थ: (अनात्म) जड़, (त्याग) छोड़ना।

1404. आत्म-अनुसन्धान - स्वयं के वास्तविक स्वरूप की खोज। व्युत्पत्ति: आत्मन् +
अनुसन्धान (खोज)। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (अनुसन्धान) अन्वेषण।

1405. ईश्वर-प्रणिधान - ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण। व्युत्पत्ति: ईश्वर + प्रणिधान
(अर्पण)। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (प्रणिधान) समर्पण।

1406. उपराम-वृत्ति - मन का विषयों से लौट आना। व्युत्पत्ति: उप (समीप) + रम् (ठहरना) +
वृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (उपराम) निवृत्ति, (वृत्ति) मानसिक अवस्था।

1407. ऊर्ध्व-चेतना - आत्मा का उच्च स्तरीय बोध। व्युत्पत्ति: ऊर्ध्व (ऊपर) + चेतना।
क्रमवार शब्दार्थ: (ऊर्ध्व) उच्च, (चेतना) जागृति।

1408. ऋजु-मार्ग - मोक्ष का सीधा और सरल रास्ता। व्युत्पत्ति: ऋजु (सीधा) + मार्ग। क्रमवार
शब्दार्थ: (ऋजु) सरल, (मार्ग) पंथ।

1409. एकात्म-योग - आत्मा और परमात्मा के मिलन की स्थिति। व्युत्पत्ति: एक + आत्मन् + योग।
क्रमवार शब्दार्थ: (एकात्म) एकरूप, (योग) जुड़ाव।

1410. अहं-विस्मृति - 'मैं' (अहंकार) का विस्मृत होना। व्युत्पत्ति: अहं (अहंकार) +
विस्मृति (भुलाना)। क्रमवार शब्दार्थ: (अहं) स्व-अभिमान, (विस्मृति) भूलना।

1411. कर्म-त्याग - कर्तापन के अहंकार का विसर्जन। व्युत्पत्ति: कर्म + त्याग। क्रमवार
शब्दार्थ: (कर्म) क्रिया, (त्याग) त्याग।

1412. कार्य-कारण-विलय - सृष्टि का अपने मूल में लीन होना। व्युत्पत्ति: कार्य (जगत) + कारण
(मूल) + विलय। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (विलय) अंत।

1413. कूटस्थ-सत्य - जो अपरिवर्तनीय सत्य है। व्युत्पत्ति: कूटस्थ (अविचल) + सत्य।
क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थ) स्थिर, (सत्य) यथार्थ।

1414. केवलाद्वैत-सिद्धि - अद्वैत की प्राप्ति। व्युत्पत्ति: केवलाद्वैत + सिद्धि।
क्रमवार शब्दार्थ: (केवलाद्वैत) शुद्ध-एकता, (सिद्धि) प्राप्ति।

1415. क्रिया-शून्यता - कर्म से पूर्ण विरक्ति की अवस्था। व्युत्पत्ति: क्रिया + शून्यता
(अभाव)। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कार्य, (शून्यता) अभाव।

1416. गुरु-आज्ञा - आत्म-ज्ञान हेतु गुरु का आदेश। व्युत्पत्ति: गुरु + आज्ञा (उपदेश)।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुरु) मार्गदर्शक, (आज्ञा) आदेश।

1417. गुण-साम्यावस्था - प्रकृति के तीनों गुणों का संतुलन। व्युत्पत्ति: गुण + साम्य +
अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) प्रकृति-तत्व, (साम्य) संतुलन।

1418. ज्ञान-वैराग्य - बोध और उससे उत्पन्न अनासक्ति। व्युत्पत्ति: ज्ञान + वैराग्य।
क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (वैराग्य) विरक्ति।

1419. तत्त्व-मीमांसा - मूल सत्यों का दार्शनिक विश्लेषण। व्युत्पत्ति: तत्त्व +
मीमांसा। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्व) सत्य, (मीमांसा) तर्क।

1420. तनु-वृत्ति - मन की बहुत सूक्ष्म अवस्था। व्युत्पत्ति: तनु (पतली/सूक्ष्म) + वृत्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (तनु) सूक्ष्म, (वृत्ति) लहर।

1421. तपोमय-शरीर - तप से शुद्ध देह। व्युत्पत्ति: तपः + मय + शरीर। क्रमवार शब्दार्थ:
(तपोमय) तेजपूर्ण, (शरीर) देह।

1422. त्रिकाल-दृष्टि - काल के पार देखने वाली दृष्टि। व्युत्पत्ति: त्रिकाल (भूत-वर्तमान-
भविष्य) + दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) समय, (दृष्टि) अंतर्दृष्टि।

1423. दार्शनिक-प्रक्रिया - सत्य तक पहुँचने का तार्किक क्रम। व्युत्पत्ति: दार्शनिक +
प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) तत्वदर्शी, (प्रक्रिया) क्रम।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 73
1424. दृष्टा-दृश्य-विवेक - देखने वाले (आत्मा) और दृश्य (जगत) का अंतर। व्युत्पत्ति:
दृष्टा (देखने वाला) + दृश्य (वस्तु) + विवेक। क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टा) चैतन्य, (दृश्य)
जड़, (विवेक) प्रज्ञा।

1425. द्वैत-प्रपञ्च - भेदों का संसार। व्युत्पत्ति: द्वैत (भेद) + प्रपञ्च (जगत)। क्रमवार
शब्दार्थ: (द्वैत) अंतर, (प्रपञ्च) मायावी संसार।

1426. ध्यान-स्थित - जो ध्यान में अडिग है। व्युत्पत्ति: ध्यान + स्थित। क्रमवार शब्दार्थ:
(ध्यान) एकाग्रता, (स्थित) स्थिर।

1427. नाम-स्मरण - ईश्वर के नाम का निरंतर जप। व्युत्पत्ति: नाम + स्मरण। क्रमवार
शब्दार्थ: (नाम) संज्ञा, (स्मरण) जप।

1428. नित्य-शुद्ध - जो सदैव पवित्र है (आत्मा)। व्युत्पत्ति: नित्य + शुद्ध। क्रमवार
शब्दार्थ: (नित्य) शाश्वत, (शुद्ध) निर्मल।

1429. निर्गुण-उपासना - निराकार ब्रह्म की साधना। व्युत्पत्ति: निर्गुण (गुणरहित) +
उपासना। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (उपासना) ध्यान।

1430. नैष्ठिक-ब्रह्मचारी - आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला। व्युत्पत्ति: नैष्ठिक
(अटल) + ब्रह्मचारी। क्रमवार शब्दार्थ: (नैष्ठिक) दृढ़, (ब्रह्मचारी) इंद्रिय-नियंत्रित।

1431. परम-पद-प्राप्ति - मुक्ति का लक्ष्य पाना। व्युत्पत्ति: परम + पद + प्राप्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (परम) श्रेष्ठ, (पद) लक्ष्य, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1432. प्रज्ञा-प्रवाह - निरंतर ज्ञान की धारा। व्युत्पत्ति: प्रज्ञा (बुद्धि) + प्रवाह।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञा) बोध, (प्रवाह) धारा।

1433. प्रतिभा-ज्ञान - अंतःस्फूर्त ज्ञान। व्युत्पत्ति: प्रतिभा (स्फुरण) + ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभा) अंतर्दृष्टि, (ज्ञान) बोध।

1434. प्रमाण-बल - शास्त्र-प्रमाण की शक्ति। व्युत्पत्ति: प्रमाण + बल। क्रमवार शब्दार्थ:
(प्रमाण) आधार, (बल) सामर्थ्य।

1435. ब्रह्म-निर्वाण - ब्रह्म में विलीन होना। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + निर्वाण (अस्त
होना)। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (निर्वाण) विलीनता।

1436. भावात्मक-शक्ति - सकारात्मक ऊर्जा। व्युत्पत्ति: भाव + आत्मक + शक्ति। क्रमवार
शब्दार्थ: (भावात्मक) सकारात्मक, (शक्ति) ऊर्जा।

1437. मौन-निष्ठ - मौन में स्थित होना। व्युत्पत्ति: मौन + निष्ठ (स्थित)। क्रमवार
शब्दार्थ: (मौन) चुप्पी, (निष्ठ) अटल।

1438. माया-शक्ति - भ्रम पैदा करने वाली शक्ति। व्युत्पत्ति: माया + शक्ति। क्रमवार
शब्दार्थ: (माया) अविद्या, (शक्ति) सामर्थ्य।

1439. मुक्ति-काँक्षा - मुक्ति पाने की इच्छा। व्युत्पत्ति: मुक्ति + आकाँक्षा। क्रमवार
शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (आकाँक्षा) चाह।

1440. योग-विभूति - योग से प्राप्त सिद्धियां। व्युत्पत्ति: योग + विभूति
(ऐश्वर्य/सिद्धि)। क्रमवार शब्दार्थ: (योग) साधना, (विभूति) सामर्थ्य।

1441. लक्ष्य-निष्ठ - लक्ष्य में अडिग। व्युत्पत्ति: लक्ष्य + निष्ठ। क्रमवार शब्दार्थ:
(लक्ष्य) उद्देश्य, (निष्ठ) स्थित।

1442. विवेक-ख्याति - सत्य की स्पष्ट पहचान। व्युत्पत्ति: विवेक + ख्याति (ज्ञान)।
क्रमवार शब्दार्थ: (विवेक) बुद्धि, (ख्याति) बोध।

1443. विशुद्ध-मन - निर्मल अंतःकरण। व्युत्पत्ति: विशुद्ध (पवित्र) + मन। क्रमवार
शब्दार्थ: (विशुद्ध) निर्मल, (मन) चित्त।

1444. शब्दावली-ज्ञान - शब्दों के अर्थ का ज्ञान। व्युत्पत्ति: शब्दावली + ज्ञान। क्रमवार
शब्दार्थ: (शब्दावली) शब्दसमूह, (ज्ञान) बोध।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 74
1445. शास्त्र-अध्ययन - ग्रंथों को पढ़ना। व्युत्पत्ति: शास्त्र + अध्ययन। क्रमवार
शब्दार्थ: (शास्त्र) ज्ञानग्रंथ, (अध्ययन) पढ़ना।

1446. श्रुति-वाक्य - वेदों के वचन। व्युत्पत्ति: श्रुति + वाक्य। क्रमवार शब्दार्थ:
(श्रुति) वेद, (वाक्य) वचन।

1447. सगुण-ब्रह्मवाद - ईश्वर को साकार मानने वाला मत। व्युत्पत्ति: सगुण + ब्रह्म + वाद।
क्रमवार शब्दार्थ: (सगुण) रूपाकार, (ब्रह्म) ईश्वर, (वाद) सिद्धांत।

1448. सत्य-अनुसंधान - सत्य की खोज। व्युत्पत्ति: सत्य + अनुसंधान। क्रमवार शब्दार्थ:
(सत्य) यथार्थ, (अनुसंधान) खोज।

1449. सर्व-आत्मा - जो सब कुछ है। व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + आत्मा। क्रमवार शब्दार्थ:
(सर्व) पूर्ण, (आत्मा) परमात्मा।

1450. ज्ञान-निष्ठ - ज्ञान में स्थित व्यक्ति। व्युत्पत्ति: ज्ञान + निष्ठ। क्रमवार
शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (निष्ठ) स्थिर।

1451. अद्वैत-सिद्धि व्युत्पत्ति: अद्वैत (एकता) + सिद्धि (प्राप्ति/प्रमाण)। अर्थ:
अद्वैत तत्व की स्थापना या उसे सिद्ध करना। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकात्मता, (सिद्धि) उपलब्धि।

1452. आत्म-निष्ठता व्युत्पत्ति: आत्मन् (स्व) + निष्ठता (स्थिरता)। अर्थ: आत्मा में ही
पूरी तरह स्थित हो जाने का भाव। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) चैतन्य, (निष्ठता) स्थिरता।

1453. अविद्या-निवृत्ति व्युत्पत्ति: अविद्या + निवृत्ति (अंत)। अर्थ: अज्ञान का पूरी तरह
मिट जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (अविद्या) अज्ञान, (निवृत्ति) समाप्ति।

1454. अनन्य-भक्ति व्युत्पत्ति: न + अन्य (दूसरा) + भक्ति। अर्थ: ईश्वर के अतिरिक्त किसी
और का चिंतन न होना। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकनिष्ठ, (भक्ति) प्रेम।

1455. अभेद-भाव व्युत्पत्ति: अ + भेद + भाव। अर्थ: 'मैं' और 'ब्रह्म' में अंतर न मानने की
स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकता, (भाव) बोध।

1456. आत्मा-अनात्मा-विवेक व्युत्पत्ति: आत्मा + अनात्मा + विवेक। अर्थ: आत्मा (चेतन) और
अनात्मा (जड़) के अंतर को परखना। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्मा) चैतन्य, (अनात्मा) जड़, (विवेक) प्रज्ञा।

1457. अस्थिर-मति व्युत्पत्ति: अस्थिर (चंचल) + मति (बुद्धि)। अर्थ: वह बुद्धि जो विषयों
की ओर भागती है। क्रमवार शब्दार्थ: (अस्थिर) चंचल, (मति) बुद्धि।

1458. अध्यात्म-श्रवण व्युत्पत्ति: अध्यात्म + श्रवण (सुनना)। अर्थ: गुरुमुख से आत्म-
ज्ञान का उपदेश सुनना। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्म) आत्मज्ञान, (श्रवण) सुनना।

1459. इच्छा-त्याग व्युत्पत्ति: इच्छा + त्याग। अर्थ: भौतिक कामनाओं को छोड़ देना। क्रमवार
शब्दार्थ: (इच्छा) कामना, (त्याग) विसर्जन।

1460. ईश्वर-प्रसाद व्युत्पत्ति: ईश्वर + प्रसाद (अनुग्रह/कृपा)। अर्थ: ईश्वर की कृपा, जो
ज्ञान का द्वार खोलती है। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (प्रसाद) कृपा।

1461. उपाधि-त्याग व्युत्पत्ति: उपाधि (बाह्य लक्षण) + त्याग। अर्थ: नाम, रूप, देह आदि
सीमाओं से मुक्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (उपाधि) बंधन, (त्याग) विमुक्ति।

1462. एकत्व-दर्शन व्युत्पत्ति: एकत्व (एक होने का भाव) + दर्शन। अर्थ: समस्त जगत में एक ही
ब्रह्म को देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (एकत्व) एकता, (दर्शन) बोध।

1463. कर्ता-भाव-नाश व्युत्पत्ति: कर्ता (करने वाला) + भाव (अहंकार) + नाश। अर्थ: 'मैं करता
हूँ' इस भ्रम का समाप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्ता) अहं, (भाव) स्थिति, (नाश) अंत।

1464. काम-क्रोध-जय व्युत्पत्ति: काम + क्रोध + जय (विजय)। अर्थ: वासना और आवेश पर पूर्ण
नियंत्रण। क्रमवार शब्दार्थ: (काम) वासना, (क्रोध) आवेश, (जय) विजय।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 75
1465. कारण-सत् व्युत्पत्ति: कारण (मूल) + सत् (सत्य)। अर्थ: वह जो सृष्टि का मूल सत्य है
(ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (कारण) उत्पत्ति-स्थान, (सत्) सत्य।

1466. कार्य-प्रपंच व्युत्पत्ति: कार्य (उत्पन्न वस्तु) + प्रपंच। अर्थ: माया से उत्पन्न
होने वाला जगत। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (प्रपंच) प्रसार।

1467. कुतर्क-परिहार व्युत्पत्ति: कुतर्क (गलत तर्क) + परिहार (त्याग)। अर्थ: व्यर्थ और
भ्रामक तर्कों का त्याग करना। क्रमवार शब्दार्थ: (कुतर्क) अयुक्ति, (परिहार) वर्जन।

1468. केवल-चिन्मात्र व्युत्पत्ति: केवल + चित् (चेतना) + मात्र। अर्थ: विशुद्ध रूप से
चेतना ही होना। क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (चिन्मात्र) चैतन्य।

1469. क्षमा-भाव व्युत्पत्ति: क्षमा + भाव। अर्थ: द्वेष का त्याग कर सहिष्णु बने रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (क्षमा) सहिष्णुता, (भाव) वृत्ति।

1470. ज्ञान-वैराग्य-युग व्युत्पत्ति: ज्ञान + वैराग्य + युग (जोड़ा)। अर्थ: बोध और
अनासक्ति का संगम। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (वैराग्य) विरक्ति।

1471. गुण-गुणी-भेद व्युत्पत्ति: गुण (विशेषता) + गुणी (वस्तु) + भेद। अर्थ: गुण और उसे
धारण करने वाले में अंतर का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) लक्षण, (गुणी) धारी, (भेद) अंतर।

1472. चैतन्य-मात्र व्युत्पत्ति: चैतन्य + मात्र। अर्थ: शुद्ध ज्ञान-शक्ति जो
अपरिवर्तनीय है। क्रमवार शब्दार्थ: (चैतन्य) बोध, (मात्र) केवल।

1473. चित्त-निरोध व्युत्पत्ति: चित्त + निरोध (रोकना)। अर्थ: मन की चंचलता को पूरी तरह
थाम लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (चित्त) मन, (निरोध) स्थिरता।

1474. जन्म-मरण-भय व्युत्पत्ति: जन्म + मरण + भय। अर्थ: संसार चक्र में पड़ने का डर।
क्रमवार शब्दार्थ: (जन्म) उत्पत्ति, (मरण) अंत, (भय) त्रास।

1475. जाग्रत-अवस्था व्युत्पत्ति: जाग्रत (जागना) + अवस्था। अर्थ: चेतना की वह स्थिति
जिसमें इंद्रियां कार्य करती हैं। क्रमवार शब्दार्थ: (जाग्रत) प्रत्यक्ष, (अवस्था) स्थिति।

1476. तत्व-विचार व्युत्पत्ति: तत्व (सत्य) + विचार। अर्थ: यथार्थ को जानने हेतु गहरा
चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्व) सत्य, (विचार) मनन।

1477. तमो-नाश व्युत्पत्ति: तमस् (अंधकार/आलस्य) + नाश। अर्थ: जड़ता और अज्ञान का समाप्त
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (तमो) अज्ञान, (नाश) समाप्ति।

1478. त्रिकाल-सत्य व्युत्पत्ति: त्रिकाल (तीनों काल) + सत्य। अर्थ: जो भूत, वर्तमान और
भविष्य में एक समान रहे। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) समय, (सत्य) यथार्थ।

1479. दोष-दर्शन व्युत्पत्ति: दोष + दर्शन। अर्थ: सांसारिक वस्तुओं में कमियों को देखना
(वैराग्य हेतु)। क्रमवार शब्दार्थ: (दोष) कमी, (दर्शन) देखना।

1480. धर्म-अधर्म-क्षय व्युत्पत्ति: धर्म + अधर्म + क्षय (विनाश)। अर्थ: पुण्य और पाप के
बंधनों का अंत। क्रमवार शब्दार्थ: (धर्म) पुण्य, (अधर्म) पाप, (क्षय) अंत।

1481. ध्यान-योग व्युत्पत्ति: ध्यान + योग। अर्थ: एकाग्रता के माध्यम से जुड़ने की
प्रक्रिया। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (योग) मिलन।

1482. नित्य-नियम व्युत्पत्ति: नित्य (प्रतिदिन) + नियम। अर्थ: आध्यात्मिक अनुशासन का
पालन। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) सदा, (नियम) अनुशासन।

1483. निर्गुण-ब्रह्म व्युत्पत्ति: निर्गुण (गुण-रहित) + ब्रह्म। अर्थ: जो गुणों, रूपों और
आकारों से परे है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (ब्रह्म) परमात्मा।

1484. निर्वाण-पद व्युत्पत्ति: निर्वाण (बुझना/विलय) + पद। अर्थ: वह स्थिति जहाँ अहंकार
समाप्त हो जाता है। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्वाण) विलीनता, (पद) अवस्था।

1485. परम-ज्ञान व्युत्पत्ति: परम (सर्वोच्च) + ज्ञान। अर्थ: वह बोध जो आत्मा को मुक्ति
दिलाता है। क्रमवार शब्दार्थ: (परम) श्रेष्ठ, (ज्ञान) बोध।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 76
1486. पुरुष-प्रकृति-विवेक व्युत्पत्ति: पुरुष (आत्मा) + प्रकृति (जड़) + विवेक। अर्थ:
चेतन और जड़ के अंतर को समझना। क्रमवार शब्दार्थ: (पुरुष) चैतन्य, (प्रकृति) जड़, (विवेक) प्रज्ञा।

1487. प्रपंच-शमन व्युत्पत्ति: प्रपंच (संसार) + शमन (शांत होना)। अर्थ: संसार के आभास का
शांत हो जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रपंच) जगत, (शमन) शांति।

1488. ब्रह्म-ज्ञानी व्युत्पत्ति: ब्रह्म + ज्ञानी (जानने वाला)। अर्थ: जिसने ब्रह्म को
साक्षात कर लिया है। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (ज्ञानी) ज्ञाता।

1489. भक्ति-योग व्युत्पत्ति: भक्ति + योग। अर्थ: प्रेम के माध्यम से परमात्मा से जुड़ना।
क्रमवार शब्दार्थ: (भक्ति) प्रेम, (योग) जुड़ाव।

1490. मौन-साधना व्युत्पत्ति: मौन + साधना। अर्थ: वाणी के निरोध द्वारा अंतर्मुखी होना।
क्रमवार शब्दार्थ: (मौन) चुप्पी, (साधना) अभ्यास।

1491. माया-विनिवृत्ति व्युत्पत्ति: माया + विनिवृत्ति (विशेष रूप से अंत)। अर्थ: भ्रम का
पूर्णतः हट जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) अज्ञान, (विनिवृत्ति) पूर्ण अंत।

1492. मुक्ति-मार्ग व्युत्पत्ति: मुक्ति + मार्ग। अर्थ: मोक्ष प्राप्ति का साधन या
रास्ता। क्रमवार शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (मार्ग) पंथ।

1493. यज्ञ-कर्म व्युत्पत्ति: यज्ञ + कर्म। अर्थ: शास्त्रानुसार किए गए अनुष्ठानिक
कार्य। क्रमवार शब्दार्थ: (यज्ञ) अनुष्ठान, (कर्म) क्रिया।

1494. योग-भ्रष्ट व्युत्पत्ति: योग + भ्रष्ट। अर्थ: जो साधना करते-करते विचलित हो गया हो।
क्रमवार शब्दार्थ: (योग) साधना, (भ्रष्ट) पथच्युत।

1495. लक्षण-लक्ष्य व्युत्पत्ति: लक्षण (संकेत) + लक्ष्य (साध्य)। अर्थ: संकेत से मुख्य
साध्य को समझना। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्षण) इशारा, (लक्ष्य) उद्देश्य।

1496. लोक-परलोक-ज्ञान व्युत्पत्ति: लोक + परलोक + ज्ञान। अर्थ: इस संसार और अगले लोक का
बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (लोक) इहलोक, (परलोक) स्वर्ग/नरक, (ज्ञान) बोध।

1497. विषय-वैराग्य व्युत्पत्ति: विषय (इंद्रिय-वस्तु) + वैराग्य। अर्थ: सांसारिक
वस्तुओं के प्रति अरुचि। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय) वस्तु, (वैराग्य) अनासक्ति।

1498. सत्संग-प्रभाव व्युत्पत्ति: सत्संग (सज्जन संगत) + प्रभाव। अर्थ: अच्छे लोगों के
साथ का परिणाम। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्संग) उत्तम साथ, (प्रभाव) असर।

1499. स्व-स्वरूप-ज्ञान व्युत्पत्ति: स्व (स्वयं) + स्वरूप + ज्ञान। अर्थ: अपनी आत्मा का
वास्तविक बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (ज्ञान) बोध।

1500. हृदय-ग्रंथि-नाश व्युत्पत्ति: हृदय + ग्रंथि (गांठ) + नाश। अर्थ: आत्मा के ऊपर चढ़ी
अज्ञान की गाँठ का खुलना। क्रमवार शब्दार्थ: (हृदय) अंतःकरण, (ग्रंथि) बंधन, (नाश) अंत।

1501. • अक्षर-ब्रह्म-विद्या व्युत्पत्ति: अक्षर (अविनाशी) + ब्रह्म + विद्या। अर्थ: उस
ब्रह्म को जानने का ज्ञान जो कभी नष्ट नहीं होता। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्षर) नित्य,
(ब्रह्म) परमात्मा, (विद्या) ज्ञान।

1502. • अति-चेतना व्युत्पत्ति: अति (परे) + चेतना। अर्थ: सामान्य बोध से परे की जाग्रत
अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (अति) उच्च, (चेतना) बोध।

1503. • अद्वैत-अनुभव व्युत्पत्ति: अद्वैत + अनुभव। अर्थ: 'दो नहीं हैं' - इस तत्व का
प्रत्यक्ष बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकात्मता, (अनुभव) प्रत्यक्ष।

1504. • अनन्य-भाव व्युत्पत्ति: न + अन्य + भाव। अर्थ: जब साधक को अपने इष्ट के सिवा कुछ न
दिखे। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकनिष्ठ, (भाव) स्थिति।

1505. • अपरोक्ष-अनुभूति व्युत्पत्ति: अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) + अनुभूति। अर्थ: बिना किसी
माध्यम के आत्मा का साक्षात्कार। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरोक्ष) प्रत्यक्ष, (अनुभूति) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 77
1506. • आत्म-रति व्युत्पत्ति: आत्मन् + रति (आनंद/प्रेम)। अर्थ: आत्मा में ही रमण करने का
सुख। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (रति) प्रेम।

1507. • आध्यात्मिक-दृष्टि व्युत्पत्ति: अध्यात्म (आत्मा संबंधी) + दृष्टि। अर्थ: आत्म-
तत्व को देखने वाली दिव्य दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (आध्यात्मिक) आत्मनिष्ठ, (दृष्टि)
नजरिया।

1508. • आनन्द-मय-कोश व्युत्पत्ति: आनन्द + मय + कोश (आवरण)। अर्थ: आत्मा को ढंकने वाला वह
आवरण जो सुख से बना है। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (मय) युक्त, (कोश) परत।

1509. • इन्द्रिय-जय व्युत्पत्ति: इन्द्रिय + जय (विजय)। अर्थ: इंद्रियों को विषयों के
अधीन न होने देना। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रिय) विषय-साधन, (जय) नियंत्रण।

1510. • ईश्वर-भावापन्न व्युत्पत्ति: ईश्वर + भाव + आपन्न (प्राप्त)। अर्थ: वह स्थिति
जिसमें भक्त ईश्वरमय हो जाता है। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (भाव) अवस्था।

1511. • उपासना-योग व्युत्पत्ति: उपासना + योग। अर्थ: निरंतर ध्यान के माध्यम से मिलन।
क्रमवार शब्दार्थ: (उपासना) भक्ति/ध्यान, (योग) जुड़ाव।

1512. • ऋत-सत्य व्युत्पत्ति: ऋत (प्राकृतिक व्यवस्था) + सत्य। अर्थ: सृष्टि का वह सनातन
नियम जो अटल है। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋत) व्यवस्था, (सत्य) यथार्थ।

1513. • एकात्म-भावना व्युत्पत्ति: एक + आत्म + भावना। अर्थ: सबमें एक ही आत्मा के दर्शन
का चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (एकात्म) एकता, (भावना) विचार।

1514. • कर्म-संन्यास व्युत्पत्ति: कर्म + संन्यास (त्याग)। अर्थ: फलों की इच्छा छोड़कर
कर्म का त्याग (निष्काम कर्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म) क्रिया, (संन्यास) विरक्ति।

1515. • कल्पना-अतीत व्युत्पत्ति: कल्पना + अतीत (परे)। अर्थ: जो मन के विचारों या
संकल्पों से परे है। क्रमवार शब्दार्थ: (कल्पना) विचार, (अतीत) परे।

1516. • कार्य-कारण-विवेक व्युत्पत्ति: कार्य + कारण + विवेक। अर्थ: परिणाम और उसके मूल
के भेद को समझना। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (कारण) बीज, (विवेक) प्रज्ञा।

1517. • कूटास्थ-चैतन्य व्युत्पत्ति: कूटास्थ (अविचल) + चैतन्य। अर्थ: वह शुद्ध चेतना जो
कभी नहीं बदलती। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटास्थ) स्थिर, (चैतन्य) ज्ञान।

1518. • केवलं-ब्रह्म व्युत्पत्ति: केवलम् + ब्रह्म। अर्थ: निर्गुण, निराकार, शुद्ध
परमात्मा। क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (ब्रह्म) ईश्वर।

1519. • क्रिया-शक्ति व्युत्पत्ति: क्रिया + शक्ति। अर्थ: कार्य करने की सामर्थ्य (माया
का एक गुण)। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कर्म, (शक्ति) ऊर्जा।

1520. • गुण-परिवर्तन व्युत्पत्ति: गुण + परिवर्तन। अर्थ: सत्-रज-तम का आपस में बदलना।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) प्रकृति, (परिवर्तन) बदलाव।

1521. • ज्ञान-पिपासा व्युत्पत्ति: ज्ञान + पिपासा (प्यास)। अर्थ: सत्य को जानने की तीव्र
इच्छा। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (पिपासा) चाह।

1522. • ज्ञाता-ज्ञेय-भाव व्युत्पत्ति: ज्ञाता + ज्ञेय + भाव। अर्थ: जानने वाला और जिसे
जाना जाए, इनके बीच का संबंध। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञाता) विषय, (ज्ञेय) पदार्थ।

1523. • तत्व-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: तत्व + साक्षात्कार। अर्थ: सत्य का प्रत्यक्ष
दर्शन। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्व) सत्य, (साक्षात्कार) अनुभव।

1524. • तनु-मानस व्युत्पत्ति: तनु (सूक्ष्म) + मानस (मन)। अर्थ: वह मन जो विषयों से हटकर
सूक्ष्म हो गया हो। क्रमवार शब्दार्थ: (तनु) पतला/सूक्ष्म, (मानस) मन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 78
1525. • तपो-निष्ठा व्युत्पत्ति: तपः + निष्ठा। अर्थ: तपस्या के मार्ग पर दृढ़ रहना।
क्रमवार शब्दार्थ: (तप) साधना, (निष्ठा) स्थिरता।

1526. • त्रिकाल-ज्ञ व्युत्पत्ति: त्रि + काल + ज्ञ (जानने वाला)। अर्थ: जो भूत, वर्तमान,
भविष्य का ज्ञाता हो। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) समय, (ज्ञ) ज्ञाता।

1527. • दार्शनिक-मीमांसा व्युत्पत्ति: दार्शनिक + मीमांसा। अर्थ: सत्य पर दार्शनिक
तर्क-वितर्क। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) चिंतन, (मीमांसा) तर्क।

1528. • दृष्टा-पद व्युत्पत्ति: दृष्टा + पद। अर्थ: वह साक्षी स्थिति जो सब कुछ देखती है।
क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टा) साक्षी, (पद) स्थान।

1529. • द्वैत-भ्रम व्युत्पत्ति: द्वैत + भ्रम। अर्थ: सत्य को दो भागों में देखने की भूल।
क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) अंतर, (भ्रम) अविद्या।

1530. • ध्यान-स्थितप्रज्ञ व्युत्पत्ति: ध्यान + स्थित + प्रज्ञ। अर्थ: वह जो ध्यान में
स्थिर बुद्धि वाला हो। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (स्थितप्रज्ञ) स्थिर-बुद्धि।

1531. • नाम-रूप-त्याग व्युत्पत्ति: नाम + रूप + त्याग। अर्थ: संसार के बाह्य आवरणों से
मोह छोड़ना। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम) पहचान, (रूप) आकार, (त्याग) विमुक्ति।

1532. • नित्य-नूतन व्युत्पत्ति: नित्य (शाश्वत) + नूतन (नया)। अर्थ: परमात्मा जो सदा एक
जैसा होकर भी हर पल नया लगता है। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) शाश्वत, (नूतन) नवीन।

1533. • निर्गुण-तत्व व्युत्पत्ति: निर्गुण + तत्व। अर्थ: गुणों से परे का मूल सत्य।
क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (तत्व) पदार्थ।

1534. • निर्वाण-प्राप्ति व्युत्पत्ति: निर्वाण + प्राप्ति। अर्थ: मुक्ति की अवस्था को
पा लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्वाण) मोक्ष, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1535. • परमार्थ-साधना व्युत्पत्ति: परमार्थ + साधना। अर्थ: मोक्ष के लिए की जाने वाली
साधना। क्रमवार शब्दार्थ: (परमार्थ) मोक्ष, (साधना) अभ्यास।

1536. • प्रज्ञा-चक्षु व्युत्पत्ति: प्रज्ञा + चक्षु (आंख)। अर्थ: ज्ञान की वह आंख जो सत्य
देखती है। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञा) बुद्धि, (चक्षु) नेत्र।

1537. • प्रतिभा-ज्ञान व्युत्पत्ति: प्रतिभा (स्फुरण) + ज्ञान। अर्थ: बिना पढ़ा हुआ, भीतर
से उठा हुआ ज्ञान। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभा) अंतःस्फूर्ति, (ज्ञान) बोध।

1538. • प्रमाण-शुद्धि व्युत्पत्ति: प्रमाण + शुद्धि। अर्थ: ज्ञान के साधनों का दोषमुक्त
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) आधार, (शुद्धि) निर्मलता।

1539. • ब्रह्म-भाव व्युत्पत्ति: ब्रह्म + भाव। अर्थ: स्वयं को ब्रह्म के रूप में अनुभव
करना। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (भाव) स्वरूप।

1540. • भावातीत-स्थिति व्युत्पत्ति: भाव + अतीत + स्थिति। अर्थ: विचारों से परे की
अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (भाव) विचार, (अतीत) परे, (स्थिति) अवस्था।

1541. • मौन-समाधि व्युत्पत्ति: मौन + समाधि। अर्थ: वाणी के मौन के साथ मन का पूर्ण लय।
क्रमवार शब्दार्थ: (मौन) चुप्पी, (समाधि) एकाग्रता।

1542. • माया-जाल-नाश व्युत्पत्ति: माया + जाल + नाश। अर्थ: अज्ञान के चक्र से बाहर
निकलना। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) भ्रम, (जाल) फंदा, (नाश) समाप्ति।

1543. • मुक्ति-आनंद व्युत्पत्ति: मुक्ति + आनंद। अर्थ: बंधन मुक्त होने के बाद का सुख।
क्रमवार शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (आनंद) परमसंतोष।

1544. • यज्ञ-स्वरूप व्युत्पत्ति: यज्ञ + स्वरूप। अर्थ: त्याग और अर्पण का भाव। क्रमवार
शब्दार्थ: (यज्ञ) अर्पण, (स्वरूप) प्रकार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 79
1545. • योग-स्थित व्युत्पत्ति: योग + स्थित। अर्थ: साधना में पूरी तरह डूबा हुआ। क्रमवार
शब्दार्थ: (योग) साधना, (स्थित) स्थिर।

1546. • लक्ष्य-निर्धारण व्युत्पत्ति: लक्ष्य + निर्धारण। अर्थ: मोक्ष को अपना अंतिम
ध्येय चुनना। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्ष्य) ध्येय, (निर्धारण) निश्चय।

1547. • लोक-कल्याण व्युत्पत्ति: लोक + कल्याण। अर्थ: संसार के भले के लिए कार्य करना।
क्रमवार शब्दार्थ: (लोक) जन, (कल्याण) भलाई।

1548. • विषय-निग्रह व्युत्पत्ति: विषय + निग्रह (दमन/नियंत्रण)। अर्थ: भोगों पर काबू
पाना। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय) भोग, (निग्रह) नियंत्रण।

1549. • सत्संग-प्राप्ति व्युत्पत्ति: सत्संग + प्राप्ति। अर्थ: ज्ञानी जनों का साथ
मिलना। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्संग) श्रेष्ठ-साथ, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1550. • स्व-स्वरूप-स्थिति व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + स्थिति। अर्थ: अपने वास्तविक
स्वरूप में सदा टिके रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व-स्वरूप) आत्मतत्व, (स्थिति) स्थिरता।

1551. अखण्ड-बोध व्युत्पत्ति: अखण्ड (अविभाज्य) + बोध (ज्ञान)। अर्थ: वह ज्ञान जो कभी
खंडित नहीं होता, अखंड ब्रह्म का अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (अखण्ड) अविभाज्य, (बोध) चैतन्य।

1552. अजाति-वाद व्युत्पत्ति: न + जाति (उत्पत्ति) + वाद। अर्थ: वह सिद्धांत जो कहता है कि
वास्तव में कोई सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई (गौड़पाद कारिका)। क्रमवार शब्दार्थ: (अजाति)
अजन्मा, (वाद) सिद्धांत।

1553. अद्वैत-स्थिति व्युत्पत्ति: अद्वैत + स्थिति (अवस्था)। अर्थ: जहाँ 'मैं' और 'वह' के
बीच कोई भेद न हो। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकता, (स्थिति) अवस्था।

1554. अनन्य-भक्त व्युत्पत्ति: न + अन्य + भक्त। अर्थ: जिसका चित्त ईश्वर के अतिरिक्त
कहीं न लगे। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकनिष्ठ, (भक्त) उपासक।

1555. अपरिग्रह-व्रत व्युत्पत्ति: अपरिग्रह (संग्रह न करना) + व्रत। अर्थ: अनावश्यक
वस्तुओं का संग्रह न करने का संकल्प। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरिग्रह) त्याग, (व्रत) संकल्प।

1556. आत्म-विस्मृति व्युत्पत्ति: आत्मन् + विस्मृति (भूलना)। अर्थ: अपने वास्तविक स्वरूप
को भूल जाना (अविद्या)। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (विस्मृति) विस्मरण।

1557. आध्यात्मिक-उन्नति व्युत्पत्ति: अध्यात्म + उन्नति। अर्थ: आत्मा के विकास का
मार्ग। क्रमवार शब्दार्थ: (आध्यात्मिक) आत्मनिष्ठ, (उन्नति) विकास।

1558. आनन्द-मय-अनुभव व्युत्पत्ति: आनन्द + मय + अनुभव। अर्थ: परमानंद का साक्षात अनुभव।
क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (अनुभव) साक्षात्कार।

1559. इच्छा-निरोध व्युत्पत्ति: इच्छा + निरोध। अर्थ: वासनाओं को मन से मिटाना। क्रमवार
शब्दार्थ: (इच्छा) कामना, (निरोध) रोक।

1560. ईश्वर-सान्निध्य व्युत्पत्ति: ईश्वर + सान्निध्य (निकटता)। अर्थ: ईश्वर की निकटता
का अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वर) परमात्मा, (सान्निध्य) निकटता।

1561. उपासना-निष्ठ व्युत्पत्ति: उपासना + निष्ठ। अर्थ: ध्यान और भक्ति में दृढ़। क्रमवार
शब्दार्थ: (उपासना) ध्यान, (निष्ठ) अटल।

1562. ऋत-बोध व्युत्पत्ति: ऋत (धर्म) + बोध। अर्थ: सृष्टि के शाश्वत नियमों का ज्ञान।
क्रमवार शब्दार्थ: (ऋत) विधान, (बोध) ज्ञान।

1563. एकाग्र-चेतना व्युत्पत्ति: एकाग्र (केंद्रित) + चेतना। अर्थ: वह बोध जो एक ही बिंदु
पर टिका हो। क्रमवार शब्दार्थ: (एकाग्र) केंद्रित, (चेतना) बोध।

1564. कर्म-विपाक व्युत्पत्ति: कर्म + विपाक (फल का पकना)। अर्थ: कर्मों के फलों का उदय
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म) क्रिया, (विपाक) परिणाम।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 80
1565. कल्पना-विलय व्युत्पत्ति: कल्पना + विलय। अर्थ: मन के संकल्पों का शांत हो जाना।
क्रमवार शब्दार्थ: (कल्पना) विचार, (विलय) अंत।

1566. कार्य-कारण-नियम व्युत्पत्ति: कार्य + कारण + नियम। अर्थ: हर परिणाम के पीछे एक कारण
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (कारण) हेतु।

1567. कूटस्थ-प्रकाश व्युत्पत्ति: कूटस्थ (अपरिवर्तनीय) + प्रकाश। अर्थ: वह चेतना जो सदा
प्रकाशित रहती है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थ) स्थिर, (प्रकाश) ज्ञान।

1568. केवल-ज्ञान व्युत्पत्ति: केवल (शुद्ध) + ज्ञान। अर्थ: निरपेक्ष, पूर्ण बोध। क्रमवार
शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (ज्ञान) बोध।

1569. क्रिया-निवृत्ति व्युत्पत्ति: क्रिया + निवृत्ति। अर्थ: कर्तापन का भाव मिटने से
कर्म का अंत। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कर्म, (निवृत्ति) विराम।

1570. गुरु-परंपरा व्युत्पत्ति: गुरु + परंपरा। अर्थ: ज्ञान के हस्तांतरण का आदि क्रम।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुरु) मार्गदर्शक, (परंपरा) वंशक्रम।

1571. गुण-साम्य व्युत्पत्ति: गुण + साम्य (समानता)। अर्थ: गुणों के संघर्ष की समाप्ति।
क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) प्रकृति, (साम्य) संतुलन।

1572. ज्ञान-वैराग्य-परायण व्युत्पत्ति: ज्ञान + वैराग्य + परायण। अर्थ: बोध और अनासक्ति
में डूबा हुआ। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (वैराग्य) विरक्ति, (परायण) लीन।

1573. तत्व-बोध व्युत्पत्ति: तत्व (सत्य) + बोध। अर्थ: ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान। क्रमवार
शब्दार्थ: (तत्व) यथार्थ, (बोध) ज्ञान।

1574. तनु-वृत्ति व्युत्पत्ति: तनु (सूक्ष्म) + वृत्ति। अर्थ: मन की अत्यंत सूक्ष्म लहर।
क्रमवार शब्दार्थ: (तनु) सूक्ष्म, (वृत्ति) लहर।

1575. तपो-बल व्युत्पत्ति: तप + बल। अर्थ: साधना से प्राप्त आध्यात्मिक शक्ति। क्रमवार
शब्दार्थ: (तप) साधना, (बल) सामर्थ्य।

1576. त्रिकाल-ज्ञता व्युत्पत्ति: त्रिकाल (समय) + ज्ञता। अर्थ: समय के पार देखने की
शक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) कालत्रय, (ज्ञता) बोध।

1577. दार्शनिक-युक्ति व्युत्पत्ति: दार्शनिक + युक्ति। अर्थ: सत्य को सिद्ध करने वाला
तर्क। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) तत्वचिंतक, (युक्ति) तर्क।

1578. दृष्टा-स्वभाव व्युत्पत्ति: दृष्टा (साक्षी) + स्वभाव। अर्थ: आत्मा का तटस्थ बने
रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टा) साक्ष्य, (स्वभाव) प्रकृति।

1579. द्वैत-प्रपञ्च-लय व्युत्पत्ति: द्वैत + प्रपञ्च + लय। अर्थ: भेद-बुद्धि और संसार का
ब्रह्म में विलीन होना। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) भेद, (प्रपञ्च) माया, (लय) विलीन।

1580. ध्यान-निरत व्युत्पत्ति: ध्यान + निरत (लगा हुआ)। अर्थ: जो सदा ध्यान में संलग्न हो।
क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (निरत) रत।

1581. नाम-रूप-मिथ्यात्व व्युत्पत्ति: नाम-रूप + मिथ्यात्व। अर्थ: संसार के नाम-आकार को
असत्य मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम-रूप) संसार, (मिथ्यात्व) असत्य।

1582. नित्य-सिद्ध-स्वभाव व्युत्पत्ति: नित्य + सिद्ध + स्वभाव। अर्थ: ब्रह्म का नित्य
पूर्ण होना। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) शाश्वत, (सिद्ध) पूर्ण, (स्वभाव) प्रकृति।

1583. निर्गुण-उपासक व्युत्पत्ति: निर्गुण + उपासक। अर्थ: निराकार ब्रह्म की साधना करने
वाला। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (उपासक) ध्यानी।

1584. निर्वाण-दीपक व्युत्पत्ति: निर्वाण + दीपक। अर्थ: ज्ञान का वह प्रकाश जो मोक्ष दे।
क्रमवार शब्दार्थ: (निर्वाण) मोक्ष, (दीपक) प्रकाश।

1585. परम-ज्ञान-निष्ठ व्युत्पत्ति: परम + ज्ञान + निष्ठ। अर्थ: सर्वोच्च बोध में स्थित।
क्रमवार शब्दार्थ: (परम) श्रेष्ठ, (ज्ञान) बोध, (निष्ठ) स्थित।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 81
1586. प्रज्ञा-ज्योति व्युत्पत्ति: प्रज्ञा + ज्योति। अर्थ: विवेक की प्रकाशमयी किरण।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञा) बुद्धि, (ज्योति) प्रकाश।

1587. प्रतिभा-ज्ञान व्युत्पत्ति: प्रतिभा + ज्ञान। अर्थ: अंतःस्फूर्त सत्य बोध। क्रमवार
शब्दार्थ: (प्रतिभा) अंतर्दृष्टि, (ज्ञान) बोध।

1588. प्रमाण-सिद्ध व्युत्पत्ति: प्रमाण + सिद्ध। अर्थ: साक्ष्यों द्वारा पुष्ट सत्य।
क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) आधार, (सिद्ध) प्रमाणित।

1589. ब्रह्म-निर्वाण-पद व्युत्पत्ति: ब्रह्म + निर्वाण + पद। अर्थ: ब्रह्म में विलीन
होने की स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (निर्वाण) मोक्ष, (पद) स्थान।

1590. भावात्मक-शक्ति व्युत्पत्ति: भाव + आत्मक + शक्ति। अर्थ: सकारात्मक संकल्प की
सामर्थ्य। क्रमवार शब्दार्थ: (भाव) विचार, (शक्ति) ऊर्जा।

1591. मौन-योग व्युत्पत्ति: मौन + योग। अर्थ: वाणी का त्याग कर आत्मस्थ होना। क्रमवार
शब्दार्थ: (मौन) निशब्द, (योग) समाधि।

1592. माया-जाल-विमोचन व्युत्पत्ति: माया-जाल + विमोचन (छुटकारा)। अर्थ: अज्ञान के बंधन से
मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (माया-जाल) भ्रम, (विमोचन) मुक्ति।

1593. मुक्ति-प्रदायिनी व्युत्पत्ति: मुक्ति + प्रदायिनी (देने वाली)। अर्थ: मोक्ष दिलाने
वाली विद्या। क्रमवार शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (प्रदायिनी) देने वाली।

1594. यज्ञ-भावना व्युत्पत्ति: यज्ञ + भावना। अर्थ: सब कुछ अर्पण करने का भाव। क्रमवार
शब्दार्थ: (यज्ञ) अर्पण, (भावना) विचार।

1595. योग-निद्रा व्युत्पत्ति: योग + निद्रा। अर्थ: वह अवस्था जहाँ मन सोए हुए के समान
शांत हो, पर चैतन्य हो। क्रमवार शब्दार्थ: (योग) साधना, (निद्रा) शून्यता।

1596. लक्ष्य-निर्णीत व्युत्पत्ति: लक्ष्य + निर्णीत। अर्थ: जिसका अंतिम साध्य निश्चित
हो। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्ष्य) उद्देश्य, (निर्णीत) तय।

1597. लोक-कल्याणार्थ व्युत्पत्ति: लोक + कल्याण + अर्थ। अर्थ: जगत की भलाई के लिए।
क्रमवार शब्दार्थ: (लोक) संसार, (कल्याण) भलाई, (अर्थ) उद्देश्य।

1598. विषय-भोग-त्याग व्युत्पत्ति: विषय-भोग + त्याग। अर्थ: भौतिक सुखों की लालसा का अंत।
क्रमवार शब्दार्थ: (विषय) वस्तु, (त्याग) विसर्जन।

1599. सत्संग-सुधार व्युत्पत्ति: सत्संग + सुधार। अर्थ: उत्तम संगति से चरित्र में बदलाव।
क्रमवार शब्दार्थ: (सत्संग) श्रेष्ठ साथ, (सुधार) परिवर्तन।

1600. स्व-स्वरूप-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + साक्षात्कार। अर्थ: अपनी आत्मा
को साक्षात देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व-स्वरूप) आत्मतत्व, (साक्षात्कार) दर्शन।

1601. • अभेदानन्द व्युत्पत्ति: अभेद (एकता) + आनन्द। अर्थ: जीव और ब्रह्म की एकता के बोध
से मिलने वाला परमानन्द। क्रमवार शब्दार्थ: (अभेद) एकात्मता, (आनन्द) सुख।

1602. • अन्तर्यामी-भाव व्युत्पत्ति: अन्तर्यामी (भीतर स्थित नियंता) + भाव। अर्थ: ईश्वर
को सबके हृदय में स्थित शासक के रूप में देखने की वृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (अन्तर्यामी) परमात्मा, (भाव) बोध।

1603. • अध्यात्म-योग व्युत्पत्ति: अध्यात्म (आत्मविषयक) + योग। अर्थ: आत्मा के साथ जुड़ने
या एकाकार होने की साधना। क्रमवार शब्दार्थ: (अध्यात्म) आत्मस्वरूप, (योग) मिलन।

1604. • अपर-विद्या व्युत्पत्ति: न + पर (श्रेष्ठ) + विद्या। अर्थ: सांसारिक और कर्मकाण्ड
संबंधी ज्ञान (परा-विद्या से निम्न)। क्रमवार शब्दार्थ: (अपर) गौण, (विद्या) ज्ञान।

1605. • आगम-प्रमाण व्युत्पत्ति: आगम (शास्त्र/वेद) + प्रमाण। अर्थ: शास्त्रों के वचनों
को ज्ञान का आधार मानना। क्रमवार शब्दार्थ: (आगम) वेदवाक्य, (प्रमाण) आधार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 82
1606. • आत्म-तृप्ति व्युत्पत्ति: आत्मन् + तृप्ति (संतुष्टि)। अर्थ: आत्मा के बोध से मन
में उपजी पूर्ण संतुष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (तृप्ति) संतोष।

1607. • आभास-विवेक व्युत्पत्ति: आभास (प्रतिबिम्ब) + विवेक। अर्थ: वास्तविक सत्य और उसके
आभास के अंतर को पहचानना। क्रमवार शब्दार्थ: (आभास) झलक, (विवेक) प्रज्ञा।

1608. • इच्छा-दोष व्युत्पत्ति: इच्छा + दोष (खामी)। अर्थ: वासनाओं को आत्म-ज्ञान में बाधक
मानकर उसमें दोष देखना। क्रमवार शब्दार्थ: (इच्छा) कामना, (दोष) न्यूनता।

1609. • इन्द्रियातीत व्युत्पत्ति: इन्द्रिय + अतीत (परे)। अर्थ: जो पंच-इंद्रियों की
पहुँच से बाहर है (परब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (इन्द्रिय) साधन, (अतीत) परे।

1610. • उपासना-फल व्युत्पत्ति: उपासना + फल। अर्थ: ध्यान और अनुष्ठान से प्राप्त होने
वाला परिणाम। क्रमवार शब्दार्थ: (उपासना) ध्यान, (फल) सिद्धि।

1611. • ऊर्ध्व-गमन व्युत्पत्ति: ऊर्ध्व (ऊपर) + गमन। अर्थ: चेतना का सांसारिक विषयों से
परमात्मा की ओर बढ़ना। क्रमवार शब्दार्थ: (ऊर्ध्व) उच्च, (गमन) गति।

1612. • ऋत-संकल्प व्युत्पत्ति: ऋत (सत्य) + संकल्प। अर्थ: वह दृढ़ निश्चय जो सत्य और धर्म
के अनुकूल हो। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋत) यथार्थ, (संकल्प) दृढ़ता।

1613. • एकाग्रता-निरोध व्युत्पत्ति: एकाग्रता + निरोध। अर्थ: मन की चंचलता को एकाग्रता
द्वारा रोकना। क्रमवार शब्दार्थ: (एकाग्रता) ध्यान, (निरोध) रुकावट।

1614. • कठोपनिषद्-सार व्युत्पत्ति: कठोपनिषद् + सार। अर्थ: नचिकेता-यम संवाद का
आध्यात्मिक निचोड़। क्रमवार शब्दार्थ: (कठोपनिषद्) श्रुति-ग्रंथ, (सार) तत्व।

1615. • कर्म-बन्धन-क्षय व्युत्पत्ति: कर्म-बन्धन + क्षय। अर्थ: कर्मों के संस्कारों का
पूरी तरह समाप्त होना। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म) क्रिया, (बन्धन) जाल, (क्षय) अंत।

1616. • कार्य-करण-विच्छेद व्युत्पत्ति: कार्य-करण + विच्छेद (अलगाव)। अर्थ: संसार के
कारण-परिणाम चक्र से मुक्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य-करण) संबंध, (विच्छेद) अलगाव।

1617. • कूटस्थ-ब्रह्म व्युत्पत्ति: कूटस्थ (अविकारी) + ब्रह्म। अर्थ: वह परमात्मा जो सदा
स्थिर और अपरिवर्तनीय है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थ) अचल, (ब्रह्म) ईश्वर।

1618. • केवलाद्वैत-प्रमाण व्युत्पत्ति: केवलाद्वैत + प्रमाण। अर्थ: शुद्ध अद्वैतवाद को
सिद्ध करने वाले शास्त्रीय तर्क। क्रमवार शब्दार्थ: (केवलाद्वैत) शुद्ध-एकता, (प्रमाण) आधार।

1619. • क्रिया-फल-अपेक्षा व्युत्पत्ति: क्रिया + फल + अपेक्षा। अर्थ: कर्म करने के बाद
परिणाम की चाह रखना (जिसे वर्जित कहा गया है)। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया) कर्म, (अपेक्षा) इच्छा।

1620. • गुरु-कृपा व्युत्पत्ति: गुरु + कृपा। अर्थ: मार्गदर्शक का वह आशीर्वाद जो अज्ञान
का पर्दा हटा दे। क्रमवार शब्दार्थ: (गुरु) मार्गदर्शक, (कृपा) अनुग्रह।

1621. • गुण-तीत व्युत्पत्ति: गुण + अतीत (परे)। अर्थ: जो प्रकृति के तीनों गुणों (सत्, रज,
तम) से ऊपर है। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण) प्रकृति-तत्व, (अतीत) परे।

1622. • गोचर-अगोचर व्युत्पत्ति: गोचर (दृश्य) + अगोचर (अदृश्य)। अर्थ: जो इंद्रियों को
दिखता है और जो नहीं दिखता (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (गोचर) प्रत्यक्ष, (अगोचर) अप्रत्यक्ष।

1623. • ज्ञान-दीप व्युत्पत्ति: ज्ञान + दीप (प्रकाश)। अर्थ: वह बोध जो अज्ञान के अन्धकार
को नष्ट कर दे। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान) बोध, (दीप) प्रकाश।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 83
1624. • तत्व-मसी-अनुभव व्युत्पत्ति: तत्त्वमसि (महावाक्य) + अनुभव। अर्थ: 'वह तुम ही हो' -
इस सूत्र का प्रत्यक्ष साक्षात्कार। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्वमसि) महावाक्य, (अनुभव) साक्षात्कार।

1625. • तप-शुद्धि व्युत्पत्ति: तप + शुद्धि। अर्थ: तपस्या के द्वारा अंतःकरण का पवित्र
होना। क्रमवार शब्दार्थ: (तप) साधना, (शुद्धि) निर्मलता।

1626. • त्रय-प्रस्थान व्युत्पत्ति: त्रय (तीन) + प्रस्थान (आधार)। अर्थ: उपनिषद,
ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता का समूह। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रय) तीन, (प्रस्थान) आधारभूत-शास्त्र।

1627. • दार्शनिक-युक्तिवाद व्युत्पत्ति: दार्शनिक + युक्तिवाद। अर्थ: तर्कों के माध्यम
से दार्शनिक सत्यों का निरूपण। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) तत्वदर्शी, (युक्तिवाद) तर्क-पद्धति।

1628. • दृष्टा-साक्षी व्युत्पत्ति: दृष्टा (देखने वाला) + साक्षी (गवाह)। अर्थ: वह आत्मा
जो केवल तटस्थ भाव से सब देखती है। क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टा) चैतन्य, (साक्षी) तटस्थ।

1629. • द्वैत-भावन व्युत्पत्ति: द्वैत + भावन। अर्थ: 'मैं' और 'प्रकृति' को अलग-अलग समझने
की वृत्ति। क्रमवार शब्दार्थ: (द्वैत) भेद, (भावन) विचार।

1630. • ध्यान-निष्ठा व्युत्पत्ति: ध्यान + निष्ठा। अर्थ: एकाग्रता में अडिग रहने की
स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (ध्यान) एकाग्रता, (निष्ठा) स्थिरता।

1631. • नाम-रूप-व्याप्ति व्युत्पत्ति: नाम-रूप + व्याप्ति। अर्थ: संसार के सभी नामों और
आकारों में ब्रह्म का फैलाव। क्रमवार शब्दार्थ: (नाम-रूप) संसार, (व्याप्ति) प्रसार।

1632. • नित्य-नैमित्तिक-विवेक व्युत्पत्ति: नित्य + नैमित्तिक + विवेक। अर्थ: प्रतिदिन
के कर्मों और विशेष अवसर के कर्मों का भेद जानना। क्रमवार शब्दार्थ: (नित्य) सदा,
(नैमित्तिक) अवसर-जन्य, (विवेक) बोध।

1633. • निर्गुण-उपासना व्युत्पत्ति: निर्गुण + उपासना। अर्थ: बिना रूप-आकार के ब्रह्म पर
एकाग्र होना। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्गुण) निराकार, (उपासना) ध्यान।

1634. • निर्वाण-भूमि व्युत्पत्ति: निर्वाण + भूमि (स्थान)। अर्थ: मोक्ष की अवस्था को
प्राप्त करने का क्षेत्र। क्रमवार शब्दार्थ: (निर्वाण) मोक्ष, (भूमि) आधार।

1635. • परम-पवित्र व्युत्पत्ति: परम (श्रेष्ठ) + पवित्र। अर्थ: जो अतिशय शुद्ध और दिव्य
है (ब्रह्म)। क्रमवार शब्दार्थ: (परम) सर्वोच्च, (पवित्र) निर्मल।

1636. • प्रज्ञा-स्थिरता व्युत्पत्ति: प्रज्ञा + स्थिरता। अर्थ: विवेक बुद्धि का सदा एक
समान बने रहना। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रज्ञा) बोध, (स्थिरता) अचलभाव।

1637. • प्रतिभा-सत्य व्युत्पत्ति: प्रतिभा (अंतःस्फूर्ति) + सत्य। अर्थ: जो अंतर्ज्ञान
से सत्य के रूप में जाना जाए। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रतिभा) अंतर्दृष्टि, (सत्य) यथार्थ।

1638. • प्रमाण-मीमांसा व्युत्पत्ति: प्रमाण + मीमांसा। अर्थ: ज्ञान के साधनों का
सूक्ष्म विवेचन करने वाला शास्त्र। क्रमवार शब्दार्थ: (प्रमाण) आधार, (मीमांसा) चिंतन।

1639. • ब्रह्म-साक्षात्कार व्युत्पत्ति: ब्रह्म + साक्षात्कार। अर्थ: परमात्मा का
प्रत्यक्ष दर्शन। क्रमवार शब्दार्थ: (ब्रह्म) परमात्मा, (साक्षात्कार) अनुभव।

1640. • भावात्मक-ध्यान व्युत्पत्ति: भावात्मक (सकारात्मक) + ध्यान। अर्थ: सकारात्मक
गुणों या ब्रह्म-स्वरूप पर किया गया चिंतन। क्रमवार शब्दार्थ: (भावात्मक) शुभ, (ध्यान) एकाग्रता।

1641. • मौन-अवस्था व्युत्पत्ति: मौन + अवस्था। अर्थ: वाणी के रुक जाने के बाद की मानसिक
स्थिति। क्रमवार शब्दार्थ: (मौन) निशब्दता, (अवस्था) स्थिति।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 84
1642. • माया-आवरण व्युत्पत्ति: माया + आवरण। अर्थ: अविद्या का वह पर्दा जो सत्य को छिपाता
है। क्रमवार शब्दार्थ: (माया) भ्रम, (आवरण) पर्दा।

1643. • मुक्ति-साध्य व्युत्पत्ति: मुक्ति + साध्य (लक्ष्य)। अर्थ: मोक्ष को ही जीवन का
एकमात्र लक्ष्य बनाना। क्रमवार शब्दार्थ: (मुक्ति) मोक्ष, (साध्य) ध्येय।

1644. • यज्ञ-भाव व्युत्पत्ति: यज्ञ + भाव। अर्थ: संपूर्ण कर्मों को ईश्वर के प्रति भेंट
मानने की दृष्टि। क्रमवार शब्दार्थ: (यज्ञ) अर्पण, (भाव) दृष्टिकोण।

1645. • योग-आरूढ़ व्युत्पत्ति: योग + आरूढ़ (स्थापित)। अर्थ: वह साधक जो समाधि की स्थिति
में स्थित हो गया हो। क्रमवार शब्दार्थ: (योग) साधना, (आरूढ़) स्थित।

1646. • लक्ष्यार्थ-ज्ञान व्युत्पत्ति: लक्ष्यार्थ (संकेतित अर्थ) + ज्ञान। अर्थ: शब्दों
के वाच्य अर्थ को छोड़कर मुख्य भाव को समझना। क्रमवार शब्दार्थ: (लक्ष्यार्थ) मर्म, (ज्ञान) बोध।

1647. • लोक-संग्रह-धर्म व्युत्पत्ति: लोक-संग्रह + धर्म। अर्थ: समाज के कल्याण को ध्यान
में रखकर किया गया कर्तव्य। क्रमवार शब्दार्थ: (लोक-संग्रह) जन-कल्याण, (धर्म) कर्तव्य।

1648. • विषय-वासना-क्षय व्युत्पत्ति: विषय-वासना + क्षय। अर्थ: इंद्रिय-सुखों की चाह का
पूरी तरह मिट जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय-वासना) चाह, (क्षय) अंत।

1649. • सत्संग-सुफल व्युत्पत्ति: सत्संग + सुफल (अच्छा परिणाम)। अर्थ: ज्ञानी जनों के
सान्निध्य से मिलने वाली आध्यात्मिक उन्नति। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्संग) श्रेष्ठ-साथ,
(सुफल) अच्छा परिणाम।

1650. • स्व-स्वरूप-बोध व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + बोध। अर्थ: स्वयं के वास्तविक स्वरूप
(आत्मा) को जागृत रूप से जानना। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (बोध) ज्ञान।

1651. • अक्षय-पद व्युत्पत्ति: न + क्षय (विनाश) + पद (स्थान/अवस्था)। अर्थ: वह शाश्वत
स्थिति जो कभी नष्ट नहीं होती। क्रमवार शब्दार्थ: (अक्षय) अविनाशी, (पद) अवस्था।

1652. • अद्वैत-प्रतीति व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रतीति (अनुभव/ज्ञान)। अर्थ: संसार में एक
ही तत्व के होने का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (अद्वैत) एकात्मता, (प्रतीति) बोध।

1653. • अनन्य-शरणागति व्युत्पत्ति: न + अन्य + शरण + आगति। अर्थ: ईश्वर के अतिरिक्त किसी
अन्य का आश्रय न लेना। क्रमवार शब्दार्थ: (अनन्य) एकनिष्ठ, (शरणागति) समर्पण।

1654. • अपरोक्ष-ज्ञान व्युत्पत्ति: अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) + ज्ञान। अर्थ: वह ज्ञान जो बिना
किसी साधन के स्वतः प्राप्त हो (आत्म-साक्षात्कार)। क्रमवार शब्दार्थ: (अपरोक्ष)
प्रत्यक्ष, (ज्ञान) बोध।

1655. • आत्म-प्रतीति व्युत्पत्ति: आत्मन् + प्रतीति। अर्थ: आत्मा के अस्तित्व का आंतरिक
अनुभव। क्रमवार शब्दार्थ: (आत्म) स्व, (प्रतीति) बोध।

1656. • आधि-व्याधि-नाश व्युत्पत्ति: आधि (मानसिक कष्ट) + व्याधि (शारीरिक रोग) + नाश।
अर्थ: आत्मज्ञान द्वारा मानसिक और शारीरिक दुःखों का अंत। क्रमवार शब्दार्थ: (आधि) मानसिक-ताप, (व्याधि) शारीरिक-रोग, (नाश) समाप्ति।

1657. • आनन्द-मय-ब्रह्म व्युत्पत्ति: आनन्द + मय + ब्रह्म। अर्थ: ब्रह्म का स्वरूप जो
शुद्ध आनंदमय है। क्रमवार शब्दार्थ: (आनन्द) सुख, (मय) युक्त, (ब्रह्म) परमात्मा।

1658. • इष्ट-निष्ठता व्युत्पत्ति: इष्ट (पसंदीदा/देवता) + निष्ठता। अर्थ: अपने आराध्य के
प्रति अटल स्थिरता। क्रमवार शब्दार्थ: (इष्ट) आराध्य, (निष्ठता) एकाग्रता।

1659. • ईश्वरीय-शक्ति व्युत्पत्ति: ईश्वर + ईय (संबंधी) + शक्ति। अर्थ: जगत को संचालित
करने वाली परमात्मा की सामर्थ्य (माया)। क्रमवार शब्दार्थ: (ईश्वरीय) दिव्य, (शक्ति)
ऊर्जा।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 85
1660. • उपासना-पद्धति व्युत्पत्ति: उपासना + पद्धति (विधि)। अर्थ: ईश्वर को पाने के लिए
निर्धारित साधना क्रम। क्रमवार शब्दार्थ: (उपासना) ध्यान, (पद्धति) प्रणाली।

1661. • ऊर्ध्व-लोक व्युत्पत्ति: ऊर्ध्व (ऊपर) + लोक। अर्थ: सूक्ष्म और दिव्य आध्यात्मिक
स्तर। क्रमवार शब्दार्थ: (ऊर्ध्व) उच्च, (लोक) तल।

1662. • ऋत-सत्य-वाक्य व्युत्पत्ति: ऋत + सत्य + वाक्य। अर्थ: धर्म और यथार्थ पर आधारित
वेद-वचन। क्रमवार शब्दार्थ: (ऋत) विधान, (सत्य) यथार्थ, (वाक्य) वचन।

1663. • एकाग्र-चित्तता व्युत्पत्ति: एकाग्र + चित्तता। अर्थ: मन की एक ही लक्ष्य पर टिकी
रहने वाली अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (एकाग्र) केंद्रित, (चित्तता) मन की स्थिति।

1664. • कर्म-फल-त्याग व्युत्पत्ति: कर्म-फल + त्याग। अर्थ: कर्मों के परिणामों की इच्छा
का परित्याग। क्रमवार शब्दार्थ: (कर्म-फल) परिणाम, (त्याग) विसर्जन।

1665. • कल्पान्त-काल व्युत्पत्ति: कल्प + अंत + काल। अर्थ: ब्रह्मांडीय प्रलय का समय।
क्रमवार शब्दार्थ: (कल्पान्त) महाप्रलय, (काल) समय।

1666. • कार्य-कारण-अद्वैत व्युत्पत्ति: कार्य + कारण + अद्वैत। अर्थ: परिणाम और उसके मूल
कारण में कोई भेद नहीं है (सब ब्रह्म ही है)। क्रमवार शब्दार्थ: (कार्य) परिणाम, (कारण) मूल, (अद्वैत) एकता।

1667. • कूटस्थ-साक्षी व्युत्पत्ति: कूटस्थ (स्थिर) + साक्षी (द्रष्टा)। अर्थ: वह आत्मा
जो संसार में रहकर भी अलिप्त देखती है। क्रमवार शब्दार्थ: (कूटस्थ) अचल, (साक्षी) गवाह।

1668. • केवलात्म-योग व्युत्पत्ति: केवल + आत्म + योग। अर्थ: विशुद्ध आत्मा से जुड़ने की
अवस्था। क्रमवार शब्दार्थ: (केवल) शुद्ध, (आत्म) स्वरूप, (योग) मिलन।

1669. • क्रिया-शक्ति-विलय व्युत्पत्ति: क्रिया-शक्ति + विलय। अर्थ: सांसारिक गतिविधियों
की सामर्थ्य का शांत हो जाना। क्रमवार शब्दार्थ: (क्रिया-शक्ति) कर्म-सामर्थ्य, (विलय) शमन।

1670. • गुरु-भक्ति व्युत्पत्ति: गुरु + भक्ति। अर्थ: मार्गदर्शक के प्रति अटूट प्रेम और
विश्वास। क्रमवार शब्दार्थ: (गुरु) मार्गदर्शक, (भक्ति) समर्पण।

1671. • गुण-त्रय-अतिक्रमण व्युत्पत्ति: गुण-त्रय (सत्-रज-तम) + अतिक्रमण (पार करना)।
अर्थ: प्रकृति के तीनों गुणों से ऊपर उठना। क्रमवार शब्दार्थ: (गुण-त्रय) त्रिगुण,
(अतिक्रमण) लंघन।

1672. • गोचर-ज्ञान व्युत्पत्ति: गोचर (इंद्रिय-दृश्य) + ज्ञान। अर्थ: इंद्रियों के
माध्यम से प्राप्त होने वाला व्यावहारिक बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (गोचर) प्रत्यक्ष, (ज्ञान) बोध।

1673. • ज्ञान-पिपासा-तृप्ति व्युत्पत्ति: ज्ञान-पिपासा + तृप्ति। अर्थ: सत्य जानने की
प्यास का शांत होना। क्रमवार शब्दार्थ: (ज्ञान-पिपासा) जिज्ञासा, (तृप्ति) संतोष।

1674. • तत्त्व-निर्णय व्युत्पत्ति: तत्त्व + निर्णय। अर्थ: सत्य क्या है, इसका अंतिम
निश्चय। क्रमवार शब्दार्थ: (तत्त्व) यथार्थ, (निर्णय) फैसला।

1675. • तपो-अग्नि व्युत्पत्ति: तपः + अग्नि। अर्थ: साधना की वह तीव्रता जो कर्म-बंधनों को
जला दे। क्रमवार शब्दार्थ: (तप) साधना, (अग्नि) ज्वाला।

1676. • त्रिकाल-साक्षी व्युत्पत्ति: त्रिकाल (भूत-वर्तमान-भविष्य) + साक्षी। अर्थ: वह जो
तीनों कालों का दृष्टा है। क्रमवार शब्दार्थ: (त्रिकाल) कालत्रय, (साक्षी) द्रष्टा।

1677. • दार्शनिक-दृष्टिकोण व्युत्पत्ति: दार्शनिक + दृष्टिकोण। अर्थ: सत्य को देखने का
तार्किक नजरिया। क्रमवार शब्दार्थ: (दार्शनिक) विवेकपूर्ण, (दृष्टिकोण) नजरिया।

1678. • दृष्टा-दृश्य-भेद व्युत्पत्ति: दृष्टा + दृश्य + भेद। अर्थ: साक्षी (आत्मा) और जड़
पदार्थ के अंतर का बोध। क्रमवार शब्दार्थ: (दृष्टा) चैतन्य, (दृश्य) पदार्थ, (भेद) अंतर।

1679. [illegible]

1680. [illegible]

1681. [illegible]

1682. [illegible]

1683. [illegible]

1684. [illegible]

1685. [illegible]

1686. [illegible]

1687. [illegible]

1688. [illegible]

1689. [illegible]

1690. [illegible]

1691. [illegible]

1692. [illegible]

1693. [illegible]

1694. [illegible]

1695. [illegible]

1696. [illegible]

1697. [illegible]

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 87
1698. • विषय-वैराग्य-परायणता व्युत्पत्ति: विषय-वैराग्य + परायणता। अर्थ: सांसारिक
भोगों से विरक्त होने में पूरी निष्ठा। क्रमवार शब्दार्थ: (विषय-वैराग्य) अनासक्ति,
(परायणता) निष्ठा।

1699. • सत्संग-साधना व्युत्पत्ति: सत्संग + साधना। अर्थ: ज्ञानियों के साथ के माध्यम से
अभ्यास करना। क्रमवार शब्दार्थ: (सत्संग) श्रेष्ठ-संगति, (साधना) अभ्यास।

1700. • स्व-स्वरूप-अनुसंधान व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + अनुसंधान। अर्थ: अपने निज-तत्व
(आत्मा) की खोज। क्रमवार शब्दार्थ: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (अनुसंधान) खोज।

1701. अध्यारोप-अपवाद - पहले असत्य को सत्य मानना, फिर उसे तर्कों से हटाना। व्युत्पत्ति:
अध्यारोप (आरोपण) + अपवाद (निषेध)। क्रमवार: (अध्यारोप) आरोपित करना, (अपवाद) हटाना (सत्य स्थापना की प्रक्रिया)।

1702. तुरीय-चैतन्य - जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति से परे चौथी चेतना (ब्रह्म)।
व्युत्पत्ति: तुरीय (चौथा) + चैतन्य (चेतना)। क्रमवार: (तुरीय) चतुर्थ स्तर, (चैतन्य) शुद्ध बोध।

1703. अनिर्वचनीय-माया - वह शक्ति जिसे न 'सत्य' कहा जा सकता है, न 'असत्य'। व्युत्पत्ति: न +
निर्वचनीय (वर्णन योग्य)। क्रमवार: (अनिर्वचनीय) अवर्णनीय, (माया) भ्रमशक्ति।

1704. अखण्डैकरस - ब्रह्म का वह स्वरूप जो सर्वत्र एकसमान और अविभाज्य है। व्युत्पत्ति:
अखण्ड (अविभाज्य) + एक + रस (तत्व)। क्रमवार: (अखण्ड) अखंडित, (एक-रस) समरूप।

1705. तटस्थ-लक्षण - किसी वस्तु की पहचान उसके बाह्य कार्यों से बताना। व्युत्पत्ति: तटस्थ
(किनारे पर स्थित) + लक्षण (परिभाषा)। क्रमवार: (तटस्थ) गौण, (लक्षण) पहचान।

1706. स्वरूप-लक्षण - ब्रह्म को उसके आंतरिक स्वभाव (सत्-चित्-आनंद) से परिभाषित करना।
व्युत्पत्ति: स्वरूप (निज स्वभाव) + लक्षण। क्रमवार: (स्वरूप) आत्मवत, (लक्षण) परिभाषा।

1707. सच्चिदानन्द-घन - आनंद और चेतना का अत्यधिक सघन और ठोस स्वरूप। व्युत्पत्ति:
सत्+चित्+आनन्द + घन (सघन)। क्रमवार: (सच्चिदानन्द) त्रिकाल-सत्य-बोध-आनंद, (घन)
ठोस/पिंड।

1708. विक्षेप-शक्ति - माया की वह सामर्थ्य जो मन में हलचल और चंचलता पैदा करती है।
व्युत्पत्ति: विक्षेप (फैलाव/विचलन) + शक्ति। क्रमवार: (विक्षेप) चंचलता, (शक्ति) सामर्थ्य।

1709. आवरण-शक्ति - माया का वह पर्दा जो सत्य को ढंक लेता है। व्युत्पत्ति: आवरण
(ढक्कन/पर्दा) + शक्ति। क्रमवार: (आवरण) पर्दा, (शक्ति) सामर्थ्य।

1710. स्फोट-ब्रह्म - वह आदि-ध्वनि (ॐ) जिससे संपूर्ण जगत का प्राकट्य हुआ। व्युत्पत्ति:
स्फोट (अचानक फूटना/प्रकट होना)। क्रमवार: (स्फोट) मूल-ध्वनि, (ब्रह्म) परमात्मा।

1711. समष्टि-चेतना - व्यापक या विराट चैतन्य (ईश्वर का व्यापक स्वरूप)। व्युत्पत्ति:
समष्टि (समूह) + चेतना। क्रमवार: (समष्टि) व्यापकता, (चेतना) बोध।

1712. व्यष्टि-चेतना - व्यक्तिगत या जीव-चेतना (एकल सत्ता)। व्युत्पत्ति: व्यष्टि (अंश) +
चेतना। क्रमवार: (व्यष्टि) व्यक्तिगत, (चेतना) बोध।

1713. निर्गुण-ब्रह्मवाद - वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर को निराकार माना गया है।
व्युत्पत्ति: निर्गुण (गुणरहित) + ब्रह्म + वाद। क्रमवार: (निर्गुण) निराकार, (ब्रह्मवाद) सिद्धांत।

1714. सविकल्पक-ज्ञान - वह ज्ञान जहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद हो। व्युत्पत्ति: स +
विकल्प (भेद) + ज्ञान। क्रमवार: (सविकल्पक) भेदयुक्त, (ज्ञान) बोध।

1715. निर्विकल्पक-ज्ञान - भेद-रहित, शुद्ध अखंड ब्रह्म का अनुभव। व्युत्पत्ति: निर् +
विकल्प (भेद) + ज्ञान। क्रमवार: (निर्विकल्पक) अभेद, (ज्ञान) अनुभव।

1716. अद्वैत-सिद्धान्त-न्याय - अद्वैत स्थापना के लिए प्रयुक्त तार्किक प्रक्रिया।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + सिद्धान्त + न्याय (तर्क)। क्रमवार: (अद्वैत) एकता, (न्याय) तर्क।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 88
1717. विशिष्ट-अद्वैत-तत्व - ब्रह्म के साथ गुणों की विशिष्टता का सिद्धांत। व्युत्पत्ति:
विशिष्ट (विशेषण युक्त) + अद्वैत। क्रमवार: (विशिष्ट) गुणयुक्त, (अद्वैत) एकत्व।

1718. अवस्थात्रय-विवेक - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति का दार्शनिक विश्लेषण। व्युत्पत्ति:
अवस्था + त्रय (तीन) + विवेक। क्रमवार: (अवस्थात्रय) तीन स्थितियाँ, (विवेक) विश्लेषण।

1719. अन्नमय-कोश - शरीर का सबसे स्थूल अन्न-निर्मित आवरण। व्युत्पत्ति: अन्न + मय (युक्त)
+ कोश (परत)। क्रमवार: (अन्नमय) भौतिक, (कोश) आवरण।

1720. प्राणमय-कोश - ऊर्जा या प्राणों का सूक्ष्म शरीर। व्युत्पत्ति: प्राण + मय + कोश।
क्रमवार: (प्राणमय) जीवनशक्ति, (कोश) परत।

1721. मनोमय-कोश - संकल्प-विकल्प करने वाला मानसिक स्तर। व्युत्पत्ति: मनस् + मय + कोश।
क्रमवार: (मनोमय) मानसिक, (कोश) परत।

1722. विज्ञानमय-कोश - बुद्धि या निर्णय लेने वाला स्तर। व्युत्पत्ति: विज्ञान (विशेष
ज्ञान/बुद्धि) + मय + कोश। क्रमवार: (विज्ञानमय) बौद्धिक, (कोश) परत।

1723. आनन्दमय-कोश - सुषुप्ति जैसा सुखद सूक्ष्म आवरण। व्युत्पत्ति: आनन्द + मय + कोश।
क्रमवार: (आनन्दमय) सुखपूर्ण, (कोश) परत।

1724. पंचीकरण-प्रक्रिया - पंच-तत्वों (क्षिति-जल-पावक-गगन-समीर) के आपस में मिलने की
विधि। व्युत्पत्ति: पंच + करण (करना/मिलाना)। क्रमवार: (पंचीकरण) तत्वों का मिश्रण।

1725. मायावी-जगत - भ्रमवश सत्य प्रतीत होने वाला संसार। व्युत्पत्ति: माया + ई (युक्त) +
जगत। क्रमवार: (मायावी) भ्रमजन्य, (जगत) प्रपंच।

1726. कूटस्थ-सत्यता - जो सत्य कभी नहीं बदलता। व्युत्पत्ति: कूटस्थ (अविचल) + सत्यता।
क्रमवार: (कूटस्थ) स्थिर, (सत्यता) यथार्थ।

1727. आत्मा-अनात्मा-भेद - चेतन और जड़ का मौलिक अंतर। व्युत्पत्ति: आत्मा + अनात्मा + भेद।
क्रमवार: (आत्मा) चैतन्य, (अनात्मा) जड़, (भेद) अंतर।

1728. साक्षी-चैतन्य - वह जो सब देख रहा है, पर स्वयं निर्विकार है। व्युत्पत्ति: साक्षी
(द्रष्टा) + चैतन्य। क्रमवार: (साक्षी) तटस्थ, (चैतन्य) ज्ञान।

1729. ब्रह्म-विद्-ब्रह्मैव - ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जाता है। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + विद् (ज्ञाता) + ब्रह्म + एव (ही)। क्रमवार: (ब्रह्म-विद्) ज्ञाता, (ब्रह्मैव) ब्रह्म ही।

1730. अध्यास-भाष्य - सत्य पर असत्य के अधिरोपण पर किया गया दार्शनिक भाष्य। व्युत्पत्ति:
अध्यास (भ्रमवश आरोपण) + भाष्य (व्याख्या)। क्रमवार: (अध्यास) आरोपित-भ्रम, (भाष्य) व्याख्या।

1731. तत्व-मसि-महावाक्य - उपनिषदों का गूढ़तम सूत्र (तुम वही हो)। व्युत्पत्ति: तत् +
त्वम् + असि। क्रमवार: (तत्व) वह, (मसि) हो।

1732. सर्व-खल्विदं-ब्रह्म - यह सब कुछ निश्चय ही ब्रह्म है। व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + खलु
(निश्चय ही) + इदं (यह) + ब्रह्म। क्रमवार: (सर्व) समग्र, (ब्रह्म) ईश्वर।

1733. अहम-ब्रह्मास्मि - मैं ही ब्रह्म हूँ। व्युत्पत्ति: अहम् (मैं) + ब्रह्म + अस्मि
(हूँ)। क्रमवार: (अहम्) स्व, (अस्मि) हूँ।

1734. अयमात्मा-ब्रह्म - यह आत्मा ही ब्रह्म है। व्युत्पत्ति: अयम् (यह) + आत्मा + ब्रह्म।
क्रमवार: (अयम्) यह, (आत्मा) स्व।

1735. अविद्या-मूलक-संसार - अज्ञान से उपजा हुआ संसार। व्युत्पत्ति: अविद्या + मूलक +
संसार। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान, (मूलक) आधारित।

1736. चिद्-जड़-ग्रंथि - चेतना और जड़ (शरीर) के आपस में उलझने का बंधन। व्युत्पत्ति: चित् +
जड़ + ग्रंथि (गांठ)। क्रमवार: (चिद्-जड़) चेतन-निर्जीव, (ग्रंथि) बंधन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 89
1737. परम-पद-प्राप्ति - मुक्ति के अंतिम पड़ाव तक पहुँचना। व्युत्पत्ति: परम (सर्वोच्च) +
पद + प्राप्ति। क्रमवार: (परम) उच्चतम, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1738. अक्षर-ब्रह्म-योग - अविनाशी ब्रह्म से जुड़ाव। व्युत्पत्ति: अक्षर (नाशरहित) +
ब्रह्म + योग। क्रमवार: (अक्षर) शाश्वत, (योग) जुड़ाव।

1739. आत्म-विभूति - स्वयं आत्मा का ऐश्वर्य या शक्ति। व्युत्पत्ति: आत्मन् + विभूति
(ऐश्वर्य)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (विभूति) सामर्थ्य।

1740. इच्छा-रहित-स्थिति - वासनाओं के शमन की अवस्था। व्युत्पत्ति: इच्छा + रहित +
स्थिति। क्रमवार: (इच्छा) कामना, (रहित) मुक्त।

1741. ईश्वर-प्रसाद-लक्षण - कृपा मिलने के चिह्न (आंतरिक शांति)। व्युत्पत्ति: ईश्वर +
प्रसाद + लक्षण। क्रमवार: (प्रसाद) अनुग्रह, (लक्षण) संकेत।

1742. उपासना-फल-सिद्धि - ध्यान के पूर्ण फल की प्राप्ति। व्युत्पत्ति: उपासना + फल +
सिद्धि। क्रमवार: (उपासना) भक्ति, (सिद्धि) सफलता।

1743. एकात्म-योग-परायण - पूर्णतः एकत्व के ध्यान में लीन। व्युत्पत्ति: एकात्म + योग +
परायण। क्रमवार: (एकात्म) एकत्व, (परायण) मग्न।

1744. कार्य-कारण-मिथ्यात्व - कारण और कार्य दोनों को ब्रह्म से पृथक असत्य मानना।
व्युत्पत्ति: कार्य-कारण + मिथ्यात्व। क्रमवार: (कार्य-कारण) सृजन-प्रक्रिया, (मिथ्यात्व) असत्यता।

1745. कूटस्थ-प्रकाशमय - वह प्रकाश जो सदैव स्थित रहता है। व्युत्पत्ति: कूटस्थ +
प्रकाशमय। क्रमवार: (कूटस्थ) अचल, (प्रकाशमय) ज्योतिर्मय।

1746. केवलाद्वैत-प्रमाण-मीमांसा - अद्वैत के प्रमाणों का तर्कपूर्ण अध्ययन।
व्युत्पत्ति: केवलाद्वैत + प्रमाण + मीमांसा। क्रमवार: (केवलाद्वैत) शुद्ध-एकता,
(मीमांसा) तर्कशास्त्र।

1747. ज्ञान-वैराग्य-परायणता - बोध और विरक्ति में अटलता। व्युत्पत्ति: ज्ञान + वैराग्य +
परायणता। क्रमवार: (ज्ञान) बोध, (परायणता) निष्ठा।

1748. तत्व-साक्षात्कार-विधि - सत्य को प्रत्यक्ष देखने का तरीका। व्युत्पत्ति: तत्व +
साक्षात्कार + विधि। क्रमवार: (साक्षात्कार) अनुभव, (विधि) प्रक्रिया।

1749. त्रिकाल-ज्ञता-शक्ति - तीनों कालों को जानने की अंतर्निहित शक्ति। व्युत्पत्ति:
त्रिकाल + ज्ञता + शक्ति। क्रमवार: (त्रिकाल) कालत्रय, (ज्ञता) बोध।

1750. स्व-स्वरूप-अनुसंधान-निष्ठ - अपने निज स्वरूप की खोज में पूरी तरह तल्लीन।
व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + अनुसंधान + निष्ठ। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (अनुसंधान) खोज, (निष्ठ) स्थित।

1751. जीवन्मुक्ति - जीवित रहते हुए ही अहंकार और अविद्या से मुक्त होना। व्युत्पत्ति:
जीवन् (जीवित) + मुक्ति। क्रमवार: (जीवन्) देह-अवस्था में, (मुक्ति) मोक्ष।

1752. निदिध्यासन - आत्म-तत्व पर निरंतर गहन चिंतन और एकाग्रता। व्युत्पत्ति: निदि
(निश्चित) + ध्यासन (ध्यान)। क्रमवार: (निदि) दृढ़, (ध्यासन) चिंतन।

1753. अविद्या-लेश - ज्ञानी के अंतःकरण में अज्ञान का अत्यंत सूक्ष्म अवशेष (प्रारब्ध-भोग
तक)। व्युत्पत्ति: अविद्या + लेश (अंश/शेष)। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान, (लेश) अंश।

1754. प्रतिबिम्ब-वाद - जीव को ब्रह्म का प्रतिबिंब मानने का सिद्धांत। व्युत्पत्ति:
प्रति (सामने) + बिम्ब (छाया) + वाद। क्रमवार: (प्रतिबिम्ब) छाया, (वाद) सिद्धांत।

1755. अवच्छेद-वाद - ब्रह्म को ही अविद्या के कारण सीमित (अवच्छिन्न) मानना। व्युत्पत्ति:
अवच्छेद (सीमा) + वाद। क्रमवार: (अवच्छेद) सीमा, (वाद) सिद्धांत।

1756. ब्रह्म-वित्-वरिष्ठ - ब्रह्म के ज्ञाताओं में भी श्रेष्ठतम (साक्षात अनुभावी)।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म-वित् (ज्ञाता) + वरिष्ठ (श्रेष्ठ)। क्रमवार: (ब्रह्म-वित्) आत्मज्ञानी, (वरिष्ठ) सर्वश्रेष्ठ।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 90
1757. साधना-चतुष्टय - मोक्ष हेतु आवश्यक चार साधन (विवेक, वैराग्य, षट्-सम्पत्ति,
मुमुक्षुत्व)। व्युत्पत्ति: साधना + चतुष्टय (चार का समूह)। क्रमवार: (साधना) अभ्यास, (चतुष्टय) चार तत्व।

1758. षट्-सम्पत्ति - (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान) - मन की पवित्रता के छह
साधन। व्युत्पत्ति: षट् (छह) + सम्पत्ति (वैभव/गुण)। क्रमवार: (षट्) छह, (सम्पत्ति) आंतरिक
गुण।

1759. मुमुक्षुत्व - मोक्ष पाने की तीव्र और अनिवार्य व्याकुलता। व्युत्पत्ति: मुमुक्षु
(मोक्ष-इच्छुक) + त्व। क्रमवार: (मुमुक्षु) मोक्षार्थी, (त्व) भाव।

1760. तितिक्षा - द्वंद्वों (सुख-दुःख, शीत-उष्ण) को बिना विचलित हुए सहने की शक्ति।
व्युत्पत्ति: तिज् (सहन करना) + सा। क्रमवार: (तितिक्षा) सहनशीलता।

1761. उपशम - वृत्तियों का मन में शांत हो जाना। व्युत्पत्ति: उप (समीप) + शम (शांति)।
क्रमवार: (उपशम) पूर्ण-विराम।

1762. अधिष्ठान-सत्य - वह आधार जिस पर संसार का आभास टिका है। व्युत्पत्ति: अधिष्ठान (आधार)
+ सत्य। क्रमवार: (अधिष्ठान) नींव, (सत्य) यथार्थ।

1763. विवेक-ख्याति - सत् और असत् को पहचानने वाली प्रबुद्ध बुद्धि। व्युत्पत्ति: विवेक
(भेद-ज्ञान) + ख्याति (ज्ञान)। क्रमवार: (विवेक) प्रज्ञा, (ख्याति) बोध।

1764. आभास-मात्रता - जगत का केवल एक प्रतीति या झलक होना, यथार्थ नहीं। व्युत्पत्ति: आभास
+ मात्रता। क्रमवार: (आभास) प्रतीति, (मात्रता) केवलत्व।

1765. ब्रह्म-सायुज्य - ब्रह्म के साथ तादात्म्य या मिलन की अवस्था। व्युत्पत्ति: ब्रह्म
+ सायुज्य (मिलन)। क्रमवार: (ब्रह्म) ईश्वर, (सायुज्य) तादात्म्य।

1766. निर्विषय-ज्ञान - वह बोध जहाँ कोई दूसरा विषय (ज्ञेय) न बचा हो। व्युत्पत्ति: निर्
(रहित) + विषय + ज्ञान। क्रमवार: (निर्विषय) विषय-रहित, (ज्ञान) अनुभव।

1767. अखण्ड-ब्रह्मचर्य - केवल देह ही नहीं, मन और इन्द्रियों की अखंड पवित्रता।
व्युत्पत्ति: अखण्ड (अविभाज्य) + ब्रह्मचर्य। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (ब्रह्मचर्य) संयम।

1768. तत्व-मसि-अनुसंधान - 'तत्वमसि' महावाक्य का निरंतर आत्म-चिंतन। व्युत्पत्ति: तत्वमसि
+ अनुसंधान। क्रमवार: (तत्वमसि) सूत्र, (अनुसंधान) खोज।

1769. अविद्या-निवर्तक - वह ज्ञान जो अज्ञान को मिटाने में समर्थ हो। व्युत्पत्ति: अविद्या
+ निवर्तक (मिटाने वाला)। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (निवर्तक) विनाशक।

1770. ईश्वर-कोटि - वे महापुरुष जो ईश्वर के अंश स्वरूप होते हैं। व्युत्पत्ति: ईश्वर +
कोटि (श्रेणी)। क्रमवार: (ईश्वर) परमात्मा, (कोटि) श्रेणी।

1771. जीव-कोटि - सांसारिक बन्धनों में पड़े हुए सामान्य जीव। व्युत्पत्ति: जीव + कोटि।
क्रमवार: (जीव) प्राणी, (कोटि) श्रेणी।

1772. अन्तर्ज्ञान - भीतर से स्फुरित होने वाला दिव्य बोध। व्युत्पत्ति: अन्तर् (भीतर) +
ज्ञान। क्रमवार: (अन्तर्) आंतरिक, (ज्ञान) बोध।

1773. सत्व-शुद्धि - अंतःकरण के सत्त्व गुण का निर्मल होना। व्युत्पत्ति: सत्व (गुण) +
शुद्धि। क्रमवार: (सत्व) शुद्धता, (शुद्धि) निर्मलता।

1774. भाव-समाधि - प्रेम और भक्ति की अधिकता से उत्पन्न अद्वैत स्थिति। व्युत्पत्ति: भाव
(अनुराग) + समाधि। क्रमवार: (भाव) प्रेम, (समाधि) तन्मयता।

1775. अद्वैत-निष्ठ - जो केवल एकता के सिद्धांत में स्थित है। व्युत्पत्ति: अद्वैत + निष्ठ
(स्थित)। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (निष्ठ) अटल।

1776. ब्रह्म-स्वरूपावस्थिति - ब्रह्म के अपने वास्तविक रूप में टिके रहना। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + स्वरूप + अवस्थिति। क्रमवार: (ब्रह्म) आत्मा, (अवस्थिति) स्थिरता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 91
1777. असंप्रज्ञात-समाधि - जहाँ कोई विषय या विचार शेष न रहे, निर्विकल्प स्थिति।
व्युत्पत्ति: अ + संप्रज्ञात (ज्ञात) + समाधि। क्रमवार: (असंप्रज्ञात) विचार-शून्य,
(समाधि) एकाग्रता।

1778. अनात्म-संस्कार - जड़ जगत को सत्य मानने की आदत। व्युत्पत्ति: अनात्म + संस्कार
(आदत)। क्रमवार: (अनात्म) जड़, (संस्कार) स्मृति-चिह्न।

1779. सृष्टि-दृष्टि-वाद - वह मत जो कहता है कि 'दृष्टि' (ज्ञान) होने से ही 'सृष्टि' का
अस्तित्व है। व्युत्पत्ति: सृष्टि + दृष्टि + वाद। क्रमवार: (सृष्टि) जगत, (दृष्टि) अनुभव।

1780. दृष्टि-सृष्टि-वाद - जो देखता है, वही जगत रचता है (मानसिक कल्पना)। व्युत्पत्ति:
दृष्टि + सृष्टि + वाद। क्रमवार: (दृष्टि) अनुभव, (सृष्टि) कल्पना।

1781. अद्वैत-प्रपञ्च-विलय - ब्रह्म के सिवा बाकी सबको मिथ्या मानकर लीन कर देना।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रपञ्च + विलय। क्रमवार: (अद्वैत) एकता, (प्रपञ्च) जगत, (विलय) शमन।

1782. ब्रह्म-अद्वैत - परमात्मा ही एकमात्र सत्य है। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + अद्वैत।
क्रमवार: (ब्रह्म) ईश्वर, (अद्वैत) अद्वैतता।

1783. अविद्या-नाश-उपाय - अज्ञान को मिटाने का तरीका। व्युत्पत्ति: अविद्या + नाश + उपाय।
क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (नाश) समाप्ति, (उपाय) तरीका।

1784. पूर्ण-बोध - जहाँ कोई अधूरापन न बचे (ब्रह्म-ज्ञान)। व्युत्पत्ति: पूर्ण (अखण्ड) +
बोध। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (बोध) ज्ञान।

1785. अस्तित्व-बोध - 'मैं हूँ' (सत्) का निरंतर अनुभव। व्युत्पत्ति: अस्तित्व (होना) +
बोध। क्रमवार: (अस्तित्व) सत्ता, (बोध) अनुभव।

1786. अहं-ब्रह्मास्मि-अनुसंधान - 'मैं ब्रह्म हूँ' का निरंतर मनन। व्युत्पत्ति: अहं-
ब्रह्मास्मि + अनुसंधान। क्रमवार: (अहं-ब्रह्मास्मि) महावाक्य, (अनुसंधान) खोज।

1787. निर्द्वन्द्व-अवस्था - सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि के द्वन्द्व से मुक्त स्थिति।
व्युत्पत्ति: निर् (रहित) + द्वन्द्व (जोड़ा) + अवस्था। क्रमवार: (निर्द्वन्द्व) द्वंद्व-मुक्त, (अवस्था) स्थिति।

1788. माया-शक्ति-विलाप - अविद्या की शक्ति का अंत हो जाना। व्युत्पत्ति: माया-शक्ति +
विलाप (समाप्ति/शमन)। क्रमवार: (माया-शक्ति) भ्रम, (विलाप) अंत।

1789. ब्रह्म-साक्षात्कार-विधि - परमात्मा को जानने का विधान। व्युत्पत्ति: ब्रह्म +
साक्षात्कार + विधि। क्रमवार: (ब्रह्म) ईश्वर, (साक्षात्कार) अनुभव।

1790. अमृतत्व-प्राप्ति - जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति (मोक्ष)। व्युत्पत्ति: अमृतत्व
(अमरता) + प्राप्ति। क्रमवार: (अमृतत्व) अमरता, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1791. सत्य-अनुभूति - सत्य को प्रत्यक्ष अनुभव करना। व्युत्पत्ति: सत्य + अनुभूति।
क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (अनुभूति) साक्षात्कार।

1792. ज्ञाता-ज्ञेय-अभेद - जानने वाला और जिसे जाना जाए, उन दोनों का एक होना। व्युत्पत्ति:
ज्ञाता + ज्ञेय + अभेद। क्रमवार: (ज्ञाता) विषय, (ज्ञेय) वस्तु, (अभेद) एकता।

1793. अध्यारोप-त्याग - जो आरोपित है, उसे छोड़ देना। व्युत्पत्ति: अध्यारोप + त्याग।
क्रमवार: (अध्यारोप) आरोपित, (त्याग) विसर्जन।

1794. आत्म-बोध-साधन - आत्मा को जानने के माध्यम। व्युत्पत्ति: आत्म-बोध + साधन। क्रमवार:
(आत्म-बोध) आत्मज्ञान, (साधन) माध्यम।

1795. संसार-मिथ्यात्व - जगत के असत्य होने का दृढ़ निश्चय। व्युत्पत्ति: संसार +
मिथ्यात्व। क्रमवार: (संसार) प्रपंच, (मिथ्यात्व) असत्यता।

1796. ब्रह्म-तत्व-निष्ठा - ब्रह्म के सत्य में अडिग रहना। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-तत्व +
निष्ठा। क्रमवार: (ब्रह्म-तत्व) परमात्मा, (निष्ठा) अटल-स्थित।

1797. [illegible]

1798. [illegible]

1799. [illegible]

1800. [illegible]

1801. [illegible]

1802. [illegible]

1803. [illegible]

1804. [illegible]

1805. [illegible]

1806. [illegible]

1807. [illegible]

1808. [illegible]

1809. [illegible]

1810. [illegible]

1811. [illegible]

1812. [illegible]

1813. [illegible]

1814. [illegible]

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 93
1815. • श्रवण-विधि - वेदान्त वाक्यों को गुरुमुख से सुनने की अनुशासित प्रक्रिया।
व्युत्पत्ति: श्रवण (सुनना) + विधि। क्रमवार: (श्रवण) ज्ञान-श्रुति, (विधि) प्रक्रिया।

1816. • मनन-प्रक्रिया - सुने हुए उपदेशों का तर्कपूर्ण चिंतन। व्युत्पत्ति: मनन (चिंतन)
+ प्रक्रिया। क्रमवार: (मनन) विचार, (प्रक्रिया) विधि।

1817. • निदिध्यासन-निष्ठ - आत्म-तत्व में मन को पूरी तरह एकाग्र करने वाला। व्युत्पत्ति:
निदिध्यासन + निष्ठ (स्थित)। क्रमवार: (निदिध्यासन) ध्यान, (निष्ठ) अटल।

1818. • सत्यासत्य-विवेक - सत्य और असत्य का भेद करने वाली बुद्धि। व्युत्पत्ति: सत्य +
असत्य + विवेक। क्रमवार: (सत्य) नित्य, (असत्य) अनित्य, (विवेक) बोध।

1819. • अविद्या-पटल-भेदन - अज्ञान के पर्दे को फाड़ना। व्युत्पत्ति: अविद्या + पटल (परदा)
+ भेदन (फाड़ना)। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (पटल) आवरण, (भेदन) विच्छेद।

1820. • ब्रह्म-एकरसता - ब्रह्म का हर अवस्था में एक समान होना। व्युत्पत्ति: ब्रह्म +
एकरसता। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरसता) समरूपता।

1821. • माया-सृष्टि-लीला - ब्रह्मांड का खेल जो माया द्वारा रचा गया है। व्युत्पत्ति:
माया + सृष्टि + लीला। क्रमवार: (माया) अविद्या, (सृष्टि) प्रपंच, (लीला) खेल।

1822. • आत्म-स्वरूप-उपलब्धि - अपने निज स्वरूप को पा लेना। व्युत्पत्ति: आत्म-स्वरूप +
उपलब्धि। क्रमवार: (आत्म-स्वरूप) निज-तत्व, (उपलब्धि) प्राप्ति।

1823. • अहंकार-निवृत्ति - 'मैं' भाव का पूर्ण विलोप। व्युत्पत्ति: अहंकार + निवृत्ति।
क्रमवार: (अहंकार) कर्तापन, (निवृत्ति) अंत।

1824. • परमात्म-ज्ञान - सर्वोच्च सत्ता (ब्रह्म) का ज्ञान। व्युत्पत्ति: परम + आत्म +
ज्ञान। क्रमवार: (परमात्म) ईश्वर, (ज्ञान) बोध।

1825. • अद्वैत-प्रमाण - एकता को सिद्ध करने वाले शास्त्र-वाक्य। व्युत्पत्ति: अद्वैत +
प्रमाण। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रमाण) आधार।

1826. • साक्षी-चैतन्य-स्थित - द्रष्टा के रूप में सदा स्थिर। व्युत्पत्ति: साक्षी +
चैतन्य + स्थित। क्रमवार: (साक्षी) गवाह, (चैतन्य) बोध, (स्थित) अचल।

1827. • अविद्या-नाश-अनुभव - भ्रम के हटने के बाद का साक्षात्कार। व्युत्पत्ति: अविद्या +
नाश + अनुभव। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान, (नाश) समाप्ति, (अनुभव) साक्षात्कार।

1828. • मौन-ज्ञान-आदेश - बिना शब्दों के प्राप्त होने वाला आत्मिक उपदेश। व्युत्पत्ति:
मौन + ज्ञान + आदेश। क्रमवार: (मौन) निशब्द, (ज्ञान) बोध, (आदेश) उपदेश।

1829. • ब्रह्म-निर्वाण-निष्ठ - मोक्ष की अवस्था में अडिग। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + निर्वाण
+ निष्ठ। क्रमवार: (ब्रह्म) ईश्वर, (निर्वाण) मोक्ष, (निष्ठ) स्थित।

1830. • संसार-वृक्ष-छेदन - अविद्या रूपी संसार के पेड़ को विवेक रूपी कुल्हाड़ी से काटना।
व्युत्पत्ति: संसार-वृक्ष + छेदन (काटना)। क्रमवार: (संसार-वृक्ष) मोह-जाल, (छेदन) काटना।

1831. • अविद्या-समुद्र-तरण - अज्ञान के महासागर को पार करना। व्युत्पत्ति: अविद्या +
समुद्र + तरण (पार करना)। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (समुद्र) विस्तार, (तरण) पार पाना।

1832. • आत्मा-अधिष्ठान - वह धरातल जिस पर आत्मा स्थित है। व्युत्पत्ति: आत्मा +
अधिष्ठान। क्रमवार: (आत्मा) स्व, (अधिष्ठान) नींव।

1833. • स्व-स्वरूप-प्रतिष्ठा - अपने निज तत्व में स्थापित हो जाना। व्युत्पत्ति: स्व-
स्वरूप + प्रतिष्ठा। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (प्रतिष्ठा) स्थापना।

1834. • ज्ञान-वैराग्य-परायण - जो बोध और अनासक्ति में मग्न है। व्युत्पत्ति: ज्ञान +
वैराग्य + परायण। क्रमवार: (ज्ञान-वैराग्य) युगल, (परायण) मग्न।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 94
1835. • अद्वैत-अमृत-पान - एकता के आनंद को ग्रहण करना। व्युत्पत्ति: अद्वैत + अमृत + पान।
क्रमवार: (अद्वैत) एकात्मता, (अमृत) अमरता, (पान) सेवन।

1836. • चिद्-जड़-भेद-ज्ञान - चेतन और निर्जीव में अंतर जानना। व्युत्पत्ति: चिद् (चेतन) +
जड़ + भेद + ज्ञान। क्रमवार: (चिद्) चैतन्य, (जड़) निर्जीव, (भेद) अंतर।

1837. • अविद्या-माया-जाल - अज्ञान का बुना हुआ फंदा। व्युत्पत्ति: अविद्या + माया + जाल।
क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (माया) अविद्या, (जाल) फंदा।

1838. • पूर्ण-ब्रह्म-अनुभव - अखंड परमात्मा का साक्षात्कार। व्युत्पत्ति: पूर्ण +
ब्रह्म + अनुभव। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (ब्रह्म) ईश्वर, (अनुभव) दर्शन।

1839. • अहं-ग्रंथि-मोचन - अहंकार की गाँठ को खोलना। व्युत्पत्ति: अहं (स्व) + ग्रंथि
(गांठ) + मोचन (खोलना)। क्रमवार: (अहं) कर्तापन, (ग्रंथि) बंधन, (मोचन) मुक्ति।

1840. • लोक-कल्याण-धर्म - संसार की भलाई को ही कर्तव्य मानना। व्युत्पत्ति: लोक-कल्याण +
धर्म। क्रमवार: (लोक-कल्याण) परहित, (धर्म) कर्तव्य।

1841. • ब्रह्म-निष्ठ-साधना - परमात्मा में स्थित होने वाला अभ्यास। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-
निष्ठ + साधना। क्रमवार: (ब्रह्म-निष्ठ) परमात्मा-स्थित, (साधना) अभ्यास।

1842. • अद्वैत-सत्य-प्रतिष्ठा - एकता ही सत्य है, इसका दृढ़ निश्चय। व्युत्पत्ति: अद्वैत
+ सत्य + प्रतिष्ठा। क्रमवार: (अद्वैत) एकात्म, (सत्य) यथार्थ, (प्रतिष्ठा) स्थापना।

1843. • अविद्या-तिमिर-नाशक - अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने वाला प्रकाश। व्युत्पत्ति:
अविद्या + तिमिर (अंधेरा) + नाशक (नष्ट करने वाला)। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (तिमिर)
अंधकार, (नाशक) सूर्य।

1844. • आत्म-विभूति-योग - आत्मा के ऐश्वर्य से जुड़ना। व्युत्पत्ति: आत्म + विभूति + योग।
क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (विभूति) सामर्थ्य, (योग) जुड़ाव।

1845. • विषय-वासना-विनाश - भोग की इच्छाओं का अंत। व्युत्पत्ति: विषय-वासना + विनाश।
क्रमवार: (विषय-वासना) भोग, (विनाश) अंत।

1846. • सत्संग-अनुभव-लाभ - ज्ञानियों के साथ का फल। व्युत्पत्ति: सत्संग + अनुभव + लाभ।
क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-साथ, (अनुभव) ज्ञान, (लाभ) प्राप्ति।

1847. • स्व-स्वरूप-ज्ञान-विधि - निज-तत्व जानने का मार्ग। व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप +
ज्ञान + विधि। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (ज्ञान) बोध, (विधि) मार्ग।

1848. • अखण्ड-ध्यान-समाधि - बिना रुके एकाग्रता की पराकाष्ठा। व्युत्पत्ति: अखण्ड +
ध्यान + समाधि। क्रमवार: (अखण्ड) अविच्छिन्न, (ध्यान) एकाग्रता, (समाधि) पूर्णता।

1849. • अविद्या-बंधन-मुक्ति - अज्ञान के जाल से आजादी। व्युत्पत्ति: अविद्या-बंधन +
मुक्ति। क्रमवार: (अविद्या-बंधन) भ्रम-जाल, (मुक्ति) मोक्ष।

1850. • ब्रह्म-एकरस-स्थिति - ब्रह्म के आनंद में सदा टिके रहना। व्युत्पत्ति: ब्रह्म +
एकरस + स्थिति। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (स्थिति) स्थिरता।

1851. • अक्षर-ब्रह्म-अनुसंधान - उस शाश्वत ब्रह्म की निरंतर खोज जो कभी क्षरित नहीं
होता। व्युत्पत्ति: अक्षर (अविनाशी) + ब्रह्म + अनुसंधान। क्रमवार: (अक्षर) शाश्वत, (ब्रह्म) परमात्मा, (अनुसंधान) खोज।

1852. • अविद्या-शवलित-ईश्वर - अविद्या (माया) से युक्त होकर जो ब्रह्म 'ईश्वर' के रूप में
प्रतीत होता है। व्युत्पत्ति: अविद्या + शवलित (मिश्रित/युक्त) + ईश्वर। क्रमवार: (अविद्या) माया, (शवलित) सम्मिश्रित, (ईश्वर) सगुण-ब्रह्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 95
1853. • आत्म-अद्वैत-बोधि - 'स्वयं ही पूर्ण ब्रह्म है' - इस अभेद ज्ञान का उदय।
व्युत्पत्ति: आत्म (स्व) + अद्वैत (एकता) + बोधि (ज्ञान)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (अद्वैत) एकात्मता, (बोधि) ज्ञान।

1854. • अविद्या-निवृत्ति-क्रम - भ्रम के हटने और यथार्थ के प्रकट होने की सोपान-
प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: अविद्या + निवृत्ति + क्रम। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान,
(निवृत्ति) समाप्ति, (क्रम) प्रक्रिया।

1855. • अहं-ग्रंथि-विभेदन - आत्मा और देह के बीच बंधी 'मैं' की गाँठ को काट देना।
व्युत्पत्ति: अहं (अहंकार) + ग्रंथि (गांठ) + विभेदन (काटना)। क्रमवार: (अहं) कर्तापन, (ग्रंथि) बंधन, (विभेदन) काटना।

1856. • उपाधि-विगलित-चेतन - शरीर, मन, बुद्धि आदि सीमाओं (उपाधियों) से मुक्त चैतन्य।
व्युत्पत्ति: उपाधि + विगलित (मुक्त) + चेतन। क्रमवार: (उपाधि) बंधन, (विगलित) रहित, (चेतन) शुद्ध-बोध।

1857. • ईक्षण-सृष्टि-वाद - यह सिद्धांत कि जगत केवल ब्रह्म के 'संकल्प' या 'दृष्टि' मात्र
से उत्पन्न प्रतीत होता है। व्युत्पत्ति: ईक्षण (दृष्टि/संकल्प) + सृष्टि + वाद। क्रमवार: (ईक्षण) संकल्प, (सृष्टि) जगत, (वाद) सिद्धांत।

1858. • एकात्म-योग-परायणता - सबमें एक ही आत्मा के दर्शन में पूर्ण निष्ठा। व्युत्पत्ति:
एकात्म + योग + परायणता। क्रमवार: (एकात्म) एकत्व, (योग) जुड़ाव, (परायणता) अटल-निष्ठा।

1859. • कूटस्थ-सत्य-प्रतिबोध - उस सत्य का ज्ञान जो किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलता।
व्युत्पत्ति: कूटस्थ (स्थिर) + सत्य + प्रतिबोध (विशेष ज्ञान)। क्रमवार: (कूटस्थ) अचल,
(सत्य) यथार्थ, (प्रतिबोध) साक्षात्कार।

1860. • चिद्-जड़-ग्रंथि-मोचन - चेतना (आत्मा) और जड़ (शरीर) के मिथ्या संयोग को समाप्त करना।
व्युत्पत्ति: चिद् + जड़ + ग्रंथि + मोचन। क्रमवार: (चिद्) चेतन, (जड़) निर्जीव, (ग्रंथि)
गांठ, (मोचन) मुक्ति।

1861. • तटस्थ-लक्षण-ज्ञान - ब्रह्म को उसके कार्यों (जैसे सृष्टि रचना) से पहचानना।
व्युत्पत्ति: तटस्थ (गौण) + लक्षण (परिभाषा) + ज्ञान। क्रमवार: (तटस्थ) अप्रत्यक्ष,
(लक्षण) पहचान, (ज्ञान) बोध।

1862. • स्वरूप-लक्षण-साक्षात्कार - ब्रह्म को उसके निज स्वरूप (सत्-चित्-आनंद) से
साक्षात अनुभव करना। व्युत्पत्ति: स्वरूप + लक्षण + साक्षात्कार। क्रमवार: (स्वरूप) निज-स्वभाव, (लक्षण) परिभाषा, (साक्षात्कार) अनुभव।

1863. • त्रिकाल-अबाधित-सत्ता - वह जो भूत, वर्तमान और भविष्य में कभी खंडित नहीं होती
(ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: त्रिकाल + अबाधित (अखंड) + सत्ता (होना)। क्रमवार: (त्रिकाल) कालत्रय, (अबाधित) अखंड, (सत्ता) अस्तित्व।

1864. • दहर-विद्या-निष्ठ - हृदयाकाश में स्थित ब्रह्म का निरंतर ध्यान करने वाला।
व्युत्पत्ति: दहर (हृदय-आकाश) + विद्या + निष्ठ। क्रमवार: (दहर) सूक्ष्म-स्थान, (विद्या) साधना, (निष्ठ) स्थित।

1865. • दृष्टि-सृष्टि-प्रक्रिया - 'जैसा देखते हैं, वैसा ही संसार बनता है' - इस मानसिक
निर्माण की प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: दृष्टि + सृष्टि + प्रक्रिया। क्रमवार: (दृष्टि)
अनुभव, (सृष्टि) निर्माण, (प्रक्रिया) विधि।

1866. • द्वैत-प्रपञ्च-विलय - दो होने के भ्रम और संसार के फैलाव का ब्रह्म में विलीन
होना। व्युत्पत्ति: द्वैत + प्रपञ्च + विलय। क्रमवार: (द्वैत) भेद, (प्रपञ्च) फैलाव, (विलय) शमन।

1867. • निर्विषय-समाधि - वह स्थिति जहाँ कोई भी इंद्रिय-विषय मन में न रहे। व्युत्पत्ति:
निर् (रहित) + विषय + समाधि। क्रमवार: (निर्विषय) विषय-शून्य, (समाधि) एकाग्रता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 96
1868. • परमार्थ-सत्य-निष्ठ - परम सत्य (ब्रह्म) में ही अटल रहने वाला। व्युत्पत्ति:
परमार्थ (मोक्ष/ब्रह्म) + सत्य + निष्ठ। क्रमवार: (परमार्थ) सर्वोच्च, (सत्य) यथार्थ,
(निष्ठ) स्थित।

1869. • माया-शक्ति-विमोचन - अज्ञान की भ्रम पैदा करने वाली शक्ति से छुटकारा।
व्युत्पत्ति: माया-शक्ति + विमोचन। क्रमवार: (माया-शक्ति) भ्रम-सामर्थ्य, (विमोचन) मुक्ति।

1870. • मुमुक्षु-साधना-मार्ग - मोक्ष की तीव्र इच्छा रखने वाले का साधना पथ।
व्युत्पत्ति: मुमुक्षु + साधना + मार्ग। क्रमवार: (मुमुक्षु) मोक्षार्थी, (साधना) अभ्यास, (मार्ग) पथ।

1871. • योग-भ्रष्ट-निवृत्ति - साधना के मार्ग से विचलित होने से बचने का उपाय।
व्युत्पत्ति: योग-भ्रष्ट + निवृत्ति (बचना/दूर रहना)। क्रमवार: (योग-भ्रष्ट) विचलन, (निवृत्ति) बचाव।

1872. • लक्ष्यार्थ-बोध-विधि - वाक्यों के वाच्य-अर्थ को छोड़कर गूढ़ अर्थ समझने की विधि।
व्युत्पत्ति: लक्ष्यार्थ + बोध + विधि। क्रमवार: (लक्ष्यार्थ) मर्म, (बोध) ज्ञान, (विधि) प्रक्रिया।

1873. • लोक-संग्रह-कर्तव्य - संसार की सुव्यवस्था और कल्याण के लिए कार्य करना।
व्युत्पत्ति: लोक-संग्रह + कर्तव्य। क्रमवार: (लोक-संग्रह) जन-कल्याण, (कर्तव्य) धर्म।

1874. • विषय-वैराग्य-परायणता - भौतिक भोगों के प्रति पूरी तरह अनासक्त रहना।
व्युत्पत्ति: विषय-वैराग्य + परायणता। क्रमवार: (विषय-वैराग्य) भोग-विरक्ति, (परायणता) निष्ठा।

1875. • सत्संग-सुफल-प्राप्ति - सत्पुरुषों के संग से प्राप्त होने वाला आध्यात्मिक फल।
व्युत्पत्ति: सत्संग + सुफल + प्राप्ति। क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-संगति, (सुफल) अच्छा- परिणाम, (प्राप्ति) उपलब्धि।

1876. • स्व-स्वरूप-अनुसंधान-निष्ठ - स्वयं के वास्तविक आत्म-तत्व की खोज में तल्लीन।
व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप + अनुसंधान + निष्ठ। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (अनुसंधान) खोज, (निष्ठ) मग्न।

1877. • अखण्ड-चैतन्य-प्रकाश - वह ज्ञान जो कहीं से भी खंडित नहीं होता। व्युत्पत्ति:
अखण्ड + चैतन्य + प्रकाश। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (चैतन्य) बोध, (प्रकाश) ज्ञान।

1878. • अविद्या-जाल-विमोचन - अज्ञान के फंदे से पूर्ण मुक्ति। व्युत्पत्ति: अविद्या-जाल
+ विमोचन। क्रमवार: (अविद्या-जाल) भ्रम-तंत्र, (विमोचन) मुक्ति।

1879. • ब्रह्म-एकरस-अनुभव - हर परिस्थिति में ब्रह्म के आनंद का अनुभव। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + एकरस + अनुभव। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (अनुभव) साक्षात्कार।

1880. • आत्म-विभूति-साक्षात्कार - स्वयं आत्मा के अनंत ऐश्वर्य का अनुभव। व्युत्पत्ति:
आत्म + विभूति + साक्षात्कार। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (विभूति) ऐश्वर्य, (साक्षात्कार) अनुभव।

1881. • अद्वैत-प्रतीति-प्रकाश - एकता के बोध का भीतर चमकना। व्युत्पत्ति: अद्वैत +
प्रतीति + प्रकाश। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रतीति) अनुभव, (प्रकाश) बोध।

1882. • अन्तर्ज्ञान-चक्षु - वह दिव्य दृष्टि जो भीतर के सत्य को देखती है। व्युत्पत्ति:
अन्तर्ज्ञान + चक्षु। क्रमवार: (अन्तर्ज्ञान) आंतरिक-बोध, (चक्षु) नेत्र।

1883. • अविद्या-नाश-अवधि - वह सीमा जहाँ अज्ञान समाप्त हो जाता है। व्युत्पत्ति: अविद्या
+ नाश + अवधि (सीमा)। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (नाश) अंत, (अवधि) सीमा।

1884. • पूर्ण-बोध-प्राप्ति - वह अवस्था जहाँ और कुछ जानना शेष न रहे। व्युत्पत्ति: पूर्ण
+ बोध + प्राप्ति। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (बोध) ज्ञान, (प्राप्ति) उपलब्धि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 97
1885. • अस्तित्व-बोध-स्थिरता - 'मैं हूँ' की सत्ता में सदा टिके रहना। व्युत्पत्ति:
अस्तित्व + बोध + स्थिरता। क्रमवार: (अस्तित्व) सत्ता, (बोध) ज्ञान, (स्थिरता) अचलभाव।

1886. • निर्द्वन्द्व-ज्ञान-परायण - सुख-दुःख से परे ज्ञान में लीन। व्युत्पत्ति:
निर्द्वन्द्व + ज्ञान + परायण। क्रमवार: (निर्द्वन्द्व) द्वंद्व-मुक्त, (ज्ञान) बोध,
(परायण) मग्न।

1887. • ब्रह्म-साक्षात्कार-फल - परमात्मा को जानने के बाद मिलने वाला शाश्वत शांति।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म-साक्षात्कार + फल। क्रमवार: (ब्रह्म-साक्षात्कार) अनुभव, (फल) परिणाम।

1888. • अमृतत्व-मार्ग-साधक - अमरता पाने के मार्ग पर चलने वाला। व्युत्पत्ति: अमृतत्व +
मार्ग + साधक। क्रमवार: (अमृतत्व) अमरता, (मार्ग) पंथ, (साधक) अभ्यासी।

1889. • सत्य-अनुभूति-प्रकर्ष - सत्य के साक्षात्कार की सर्वोच्च अवस्था। व्युत्पत्ति:
सत्य + अनुभूति + प्रकर्ष (सर्वोच्चता)। क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (अनुभूति) अनुभव, (प्रकर्ष) चरम।

1890. • अद्वैत-सत्य-प्रतिष्ठा - एकता ही एकमात्र सत्य है - इस निश्चय में दृढ़ता।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + सत्य + प्रतिष्ठा। क्रमवार: (अद्वैत) एकात्म, (सत्य) यथार्थ, (प्रतिष्ठा) स्थापना।

1891. • अविद्या-तिमिर-नाशक-सूर्य - अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने वाला ज्ञान-सूर्य।
व्युत्पत्ति: अविद्या + तिमिर + नाशक + सूर्य। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (तिमिर) अंधकार, (नाशक) मिटाने वाला, (सूर्य) प्रकाश।

1892. • आत्म-स्वरूप-उपलब्धि-निष्ठ - आत्म-ज्ञान में अटल स्थित। व्युत्पत्ति: आत्म-स्वरूप
+ उपलब्धि + निष्ठ। क्रमवार: (आत्म-स्वरूप) निज-तत्व, (उपलब्धि) प्राप्ति, (निष्ठ) स्थित।

1893. • विषय-वासना-विनाश-काल - वह समय जब सारी वासनाएं समाप्त हो जाएं। व्युत्पत्ति:
विषय-वासना + विनाश + काल। क्रमवार: (विषय-वासना) भोग-चाह, (विनाश) अंत, (काल) समय।

1894. • सत्संग-साधना-सुफल - सत्संग और अभ्यास का सर्वश्रेष्ठ परिणाम। व्युत्पत्ति:
सत्संग + साधना + सुफल। क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-संगति, (साधना) अभ्यास, (सुफल) श्रेष्ठ-परिणाम।

1895. • स्व-स्वरूप-ज्ञान-विधि-सार - आत्म-ज्ञान के मार्ग का निचोड़। व्युत्पत्ति: स्व-
स्वरूप + ज्ञान + विधि + सार। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (ज्ञान) बोध, (विधि) मार्ग, (सार) निचोड़।

1896. • अखण्ड-ध्यान-समाधि-सिद्धि - अखंड एकाग्रता की पूर्णता। व्युत्पत्ति: अखण्ड +
ध्यान + समाधि + सिद्धि। क्रमवार: (अखण्ड) अविच्छिन्न, (ध्यान) एकाग्रता, (समाधि) तन्मयता, (सिद्धि) सफलता।

1897. • अविद्या-बंधन-मुक्ति-अवस्था - अज्ञान के बंधनों से आजादी वाली स्थिति।
व्युत्पत्ति: अविद्या-बंधन + मुक्ति + अवस्था। क्रमवार: (अविद्या-बंधन) भ्रम-जाल, (मुक्ति) आजादी, (अवस्था) स्थिति।

1898. • ब्रह्म-एकरस-स्थिति-बोध - ब्रह्म के आनंद में सदा स्थिर रहने का ज्ञान।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म + एकरस + स्थिति + बोध। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (स्थिति) स्थिरता, (बोध) ज्ञान।

1899. • आत्म-अनुभव-दीप्ति - आत्म-साक्षात्कार की चमक। व्युत्पत्ति: आत्म-अनुभव +
दीप्ति। क्रमवार: (आत्म-अनुभव) साक्षात्कार, (दीप्ति) चमक।

1900. • अद्वैत-प्रकाश-अविचल - जो एकता के प्रकाश में सदा अटल है। व्युत्पत्ति: अद्वैत +
प्रकाश + अविचल। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रकाश) ज्ञान, (अविचल) स्थिर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 98
1901. • अनुबन्ध-चतुष्टय - शास्त्र अध्ययन के चार अनिवार्य आधार (अधिकारी, विषय, सम्बन्ध,
प्रयोजन)। व्युत्पत्ति: अनुबन्ध (आधार) + चतुष्टय (चार)। क्रमवार: (अनुबन्ध) आधार,
(चतुष्टय) चार तत्व।

1902. • अधिकारी-लक्षण - वेदान्त पढ़ने के लिए आवश्यक पात्रता (साधना-चतुष्टय संपन्न)।
व्युत्पत्ति: अधिकारी (पात्र) + लक्षण (परिभाषा)। क्रमवार: (अधिकारी) योग्य-व्यक्ति,
(लक्षण) मानदंड।

1903. • विषय-स्वरूप - वह सत्य जिसे वेदान्त सिद्ध करता है (जीव-ब्रह्म की एकता)।
व्युत्पत्ति: विषय (मुख्य वस्तु) + स्वरूप। क्रमवार: (विषय) साध्य, (स्वरूप) प्रकृति।

1904. • सम्बन्ध-निरूपण - शास्त्र और फल के बीच का अनिवार्य जुड़ाव। व्युत्पत्ति: सम्बन्ध
(जुड़ाव) + निरूपण (व्याख्या)। क्रमवार: (सम्बन्ध) कड़ी, (निरूपण) विश्लेषण।

1905. • प्रयोजन-सिद्धि - अविद्या की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति (अंतिम लक्ष्य)।
व्युत्पत्ति: प्रयोजन (उद्देश्य) + सिद्धि (प्राप्ति)। क्रमवार: (प्रयोजन) ध्येय, (सिद्धि) उपलब्धि।

1906. • प्रत्यक्ष-प्रमाण - इंद्रियों द्वारा प्राप्त साक्षात् ज्ञान। व्युत्पत्ति:
प्रति (सामने) + अक्ष (इंद्रिय) + प्रमाण (साक्ष्य)। क्रमवार: (प्रत्यक्ष) इंद्रिय-जन्य, (प्रमाण) आधार।

1907. • अनुमान-प्रमाण - तर्क और व्याप्ति के आधार पर निष्कर्ष निकालना। व्युत्पत्ति: अनु
(पश्चात्) + मान (ज्ञान) + प्रमाण। क्रमवार: (अनुमान) तर्क-बोध, (प्रमाण) साक्ष्य।

1908. • शब्द-प्रमाण - वेद-वाक्यों को सर्वोच्च सत्य मानना (आप्त-वाक्य)। व्युत्पत्ति:
शब्द (श्रुति) + प्रमाण। क्रमवार: (शब्द) श्रुति, (प्रमाण) साक्ष्य।

1909. • उपमान-प्रमाण - सादृश्यता (समानता) के आधार पर ज्ञान। व्युत्पत्ति: उप (समीप) +
मान (ज्ञान) + प्रमाण। क्रमवार: (उपमान) तुलना, (प्रमाण) आधार।

1910. • अर्थापत्ति-प्रमाण - किसी तथ्य को सिद्ध करने के लिए आवश्यक तर्कपूर्ण कल्पना।
व्युत्पत्ति: अर्थ (तथ्य) + आपत्ति (प्राप्ति) + प्रमाण। क्रमवार: (अर्थापत्ति) तार्किक-अनुमान।

1911. • अनुपलब्धि-प्रमाण - अभाव का ज्ञान (जैसे: यहाँ घड़ा नहीं है)। व्युत्पत्ति: अनु (न)
+ उपलब्धि (प्राप्ति) + प्रमाण। क्रमवार: (अनुपलब्धि) अभाव, (प्रमाण) साक्ष्य।

1912. • अन्तःकरण-चतुष्टय - मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का समूह। व्युत्पत्ति: अन्तःकरण
(भीतर का साधन) + चतुष्टय। क्रमवार: (अन्तःकरण) सूक्ष्म-मन, (चतुष्टय) चार।

1913. • मानस-वृत्ति - मन की चंचल लहरों का बार-बार उठना। व्युत्पत्ति: मानस (मन) + वृत्ति
(लहर)। क्रमवार: (मानस) मन, (वृत्ति) हलचल।

1914. • बुद्धि-निश्चयात्मक - वह वृत्ति जो संशय मिटाकर निर्णय लेती है। व्युत्पत्ति:
बुद्धि + निश्चय + आत्मक। क्रमवार: (बुद्धि) प्रज्ञा, (निश्चयात्मक) निर्णयकारी।

1915. • चित्त-संस्कार - अनुभवों की वह छाप जो स्मृति बनाती है। व्युत्पत्ति: चित्त
(स्मृति-भंडार) + संस्कार (छाप)। क्रमवार: (चित्त) स्मृति-केंद्र, (संस्कार) स्मृति-चिह्न।

1916. • अहंकार-अभिमान - 'मैं ही कर्ता हूँ' का मिथ्या भाव। व्युत्पत्ति: अहं + कार (करने
वाला) + अभिमान। क्रमवार: (अहंकार) कर्ता-भाव, (अभिमान) अस्मिता।

1917. • जाग्रत-अवस्था-दृष्टि - स्थूल जगत का बोध (प्रथम अवस्था)। व्युत्पत्ति: जाग्रत
(जागना) + अवस्था + दृष्टि। क्रमवार: (जाग्रत) चेतना, (दृष्टि) बोध।

1918. • स्वप्न-अवस्था-आभास - सूक्ष्म मन की सृष्टि (द्वितीय अवस्था)। व्युत्पत्ति:
स्वप्न + अवस्था + आभास। क्रमवार: (स्वप्न) मानसिक-संसार, (आभास) प्रतीति।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 99
1919. • सुषुप्ति-आनंद-अनुभव - अज्ञान और शांति की स्थिति (तृतीय अवस्था)। व्युत्पत्ति:
सुषुप्ति (गहरी नींद) + आनंद + अनुभव। क्रमवार: (सुषुप्ति) शून्यता, (आनंद) सुख।

1920. • तुरीयातीत-स्थिति - चतुर्थ अवस्था से भी परे का ब्रह्म-भाव। व्युत्पत्ति: तुरीय +
अतीत (परे) + स्थिति। क्रमवार: (तुरीय) चतुर्थ, (अतीत) परे, (स्थिति) अवस्था।

1921. • प्रारब्ध-कर्म-भोग - इस जन्म में जो फल भोगना निश्चित है। व्युत्पत्ति: प्र
(प्रकट) + आरब्ध (शुरू हुआ) + कर्म। क्रमवार: (प्रारब्ध) भोग्य-कर्म, (भोग) अनुभव।

1922. • संचित-कर्म-भंडार - जन्मों के जमा हुए कर्मों का संग्रह। व्युत्पत्ति: संचित
(इकट्ठा) + कर्म + भंडार। क्रमवार: (संचित) संग्रहित, (कर्म) क्रिया।

1923. • आगामी-कर्म-फल - भविष्य में होने वाले कर्मों का बीज। व्युत्पत्ति: आगामी (आने
वाला) + कर्म + फल। क्रमवार: (आगामी) भविष्य-कर्म, (फल) परिणाम।

1924. • जीवन्मुक्त-लक्षण - जिसके अहंकार का नाश हो चुका है। व्युत्पत्ति: जीवन् (जीवित) +
मुक्त + लक्षण। क्रमवार: (जीवन्मुक्त) देहधारी-सिद्ध, (लक्षण) चिह्न।

1925. • वेद-वाक्य-अर्थवाद - प्रशंसा या निंदा के द्वारा सत्य को समझाने की शैली।
व्युत्पत्ति: वेद-वाक्य + अर्थवाद (स्तुति/निंदा)। क्रमवार: (वेद-वाक्य) श्रुति, (अर्थवाद) शैली।

1926. • महावाक्य-अनुसन्धान - चार महावाक्यों (तत्त्वमसि आदि) पर गहरा चिंतन।
व्युत्पत्ति: महावाक्य + अनुसन्धान। क्रमवार: (महावाक्य) श्रुति-सूत्र, (अनुसन्धान) खोज।

1927. • सगुण-ब्रह्म-उपासना - नाम-रूप वाले ईश्वर की भक्ति। व्युत्पत्ति: सगुण (गुण-युक्त)
+ ब्रह्म + उपासना। क्रमवार: (सगुण) साकार, (उपासना) ध्यान।

1928. • निर्गुण-ब्रह्म-जिज्ञासा - निराकार सत्य को जानने की तीव्र इच्छा। व्युत्पत्ति:
निर्गुण + ब्रह्म + जिज्ञासा। क्रमवार: (निर्गुण) निराकार, (जिज्ञासा) जानने की चाह।

1929. • अखण्ड-आकार-वृत्ति - मन का ब्रह्म के रूप में स्थिर हो जाना। व्युत्पत्ति: अखण्ड +
आकार + वृत्ति। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (आकार) स्वरूप, (वृत्ति) लहर।

1930. • विकल्प-जाल-छिन्न्न - मानसिक उलझनों को काट देना। व्युत्पत्ति: विकल्प (उलझन) +
जाल + छिन्न्न (कटा हुआ)। क्रमवार: (विकल्प) संशय, (जाल) माया, (छिन्न्न) विच्छेद।

1931. • असंग-आत्म-भाव - आत्मा का किसी भी गुण से न जुड़ना। व्युत्पत्ति: असंग (अकेला) +
आत्म + भाव। क्रमवार: (असंग) निर्लिप्त, (आत्म) चैतन्य।

1932. • कर्ता-कर्म-क्रिया-भेद - काम करने वाला, काम, और काम का फल। व्युत्पत्ति: कर्ता +
कर्म + क्रिया + भेद। क्रमवार: (कर्ता) भोक्ता, (कर्म) विषय, (क्रिया) गति।

1933. • भोक्ता-भोग्य-भोग - सुख लेने वाला, सुख का साधन और सुख। व्युत्पत्ति: भोक्ता +
भोग्य + भोग। क्रमवार: (भोक्ता) जीवात्मा, (भोग्य) पदार्थ, (भोग) अनुभव।

1934. • प्रकृति-पुरुष-विवेक - जड़ और चेतन का अंतर समझना। व्युत्पत्ति: प्रकृति + पुरुष
(आत्मा) + विवेक। क्रमवार: (प्रकृति) जड़, (पुरुष) चैतन्य, (विवेक) बोध।

1935. • त्रिगुणातीत-साधक - जो सत्-रज-तम के प्रभाव से मुक्त है। व्युत्पत्ति: त्रिगुण +
अतीत (परे) + साधक। क्रमवार: (त्रिगुण) प्रकृति, (अतीत) मुक्त, (साधक) अभ्यासी।

1936. • ज्ञान-कर्म-समुच्चय - कर्म और ज्ञान का मेल (वेदान्त में चर्चा का विषय)।
व्युत्पत्ति: ज्ञान + कर्म + समुच्चय (सम्मेलन)। क्रमवार: (ज्ञान) बोध, (कर्म) क्रिया, (समुच्चय) मेल।

1937. • भक्ति-योग-प्राधान्य - प्रेम द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग। व्युत्पत्ति: भक्ति
+ योग + प्राधान्य (मुख्य)। क्रमवार: (भक्ति) समर्पण, (प्राधान्य) महत्ता।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 100
1938. • वैराग्य-शतक-सत्व - अनासक्ति की चरम सीमा। व्युत्पत्ति: वैराग्य + शतक (पूर्णता)
+ सत्व (शक्ति)। क्रमवार: (वैराग्य) विरक्ति, (सत्व) सामर्थ्य।

1939. • विवेक-चूडामणि-सिद्धान्त - शंकराचार्य के ग्रंथ का सार। व्युत्पत्ति: विवेक +
चूडामणि (शिरोमणि) + सिद्धान्त। क्रमवार: (विवेक) ज्ञान, (चूडामणि) श्रेष्ठ, (सिद्धान्त)
नियम।

1940. • आत्मा-अनात्मा-विमर्श - स्वयं और पराये का तर्कपूर्ण विश्लेषण। व्युत्पत्ति:
आत्मा + अनात्मा + विमर्श (विचार)। क्रमवार: (आत्मा) स्व, (अनात्मा) जड़, (विमर्श) मंथन।

1941. • नाम-रूप-त्याग-विधि - संसार के बाहरी स्वरूपों को हटाना। व्युत्पत्ति: नाम-रूप +
त्याग + विधि। क्रमवार: (नाम-रूप) संसार, (त्याग) विसर्जन, (विधि) प्रक्रिया।

1942. • ब्रह्म-सूत्र-भाष्य-चिंतन - सूत्रों की टीका पर मनन। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-सूत्र +
भाष्य + चिंतन। क्रमवार: (ब्रह्म-सूत्र) आधार, (भाष्य) टीका, (चिंतन) मनन।

1943. • गीता-शास्त्र-अर्थावबोध - गीता का गहरा अर्थ समझना। व्युत्पत्ति: गीता-शास्त्र +
अर्थ + अवबोध (समझ)। क्रमवार: (अर्थ) भाव, (अवबोध) बोध।

1944. • उपनिषद-सार-उपासना - वेदों के अंत का अभ्यास। व्युत्पत्ति: उपनिषद + सार +
उपासना। क्रमवार: (उपनिषद) ज्ञान-कांड, (सार) निचोड़, (उपासना) ध्यान।

1945. • अद्वैत-दर्शन-शुद्धि - बिना भेद के देखने की निर्मल दृष्टि। व्युत्पत्ति: अद्वैत
+ दर्शन (दृष्टि) + शुद्धि। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (दर्शन) नजरिया, (शुद्धि) निर्मलता।

1946. • माया-निवृत्ति-साधन - अविद्या के अंत की साधना। व्युत्पत्ति: माया + निवृत्ति +
साधन। क्रमवार: (माया) भ्रम, (निवृत्ति) अंत, (साधन) उपाय।

1947. • ब्रह्म-आत्म-ऐक्य - जीव और ब्रह्म का एकत्व। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + आत्म + ऐक्य
(एकता)। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (आत्म) स्व, (ऐक्य) एकता।

1948. • अन्तर्यामी-विद्या-अनुभूति - सबमें बैठे परमात्मा का अनुभव। व्युत्पत्ति:
अन्तर्यामी + विद्या + अनुभूति। क्रमवार: (अन्तर्यामी) नियंता, (विद्या) साधना, (अनुभूति) साक्षात्कार।

1949. • नित्य-निरंजन-स्वरूप - सदा पवित्र और शुद्ध आत्मा। व्युत्पत्ति: नित्य (सदा) +
निरंजन (दागरहित) + स्वरूप। क्रमवार: (नित्य) शाश्वत, (निरंजन) शुद्ध, (स्वरूप) स्वभाव।

1950. • अद्वैत-परमानन्द-स्थिति - एकता के बोध से प्राप्त सुख की स्थिति। व्युत्पत्ति:
अद्वैत + परमानन्द + स्थिति। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (परमानन्द) चरम-सुख, (स्थिति) अवस्था।

1951. • अखण्ड-चिदात्मा - वह चैतन्य जो खंडित नहीं किया जा सकता, केवल आत्मा है।
व्युत्पत्ति: अखण्ड (अविभाज्य) + चिद् (चेतन) + आत्मा। क्रमवार: (अखण्ड) परिपूर्ण, (चित्) बोध, (आत्मा) स्व।

1952. • अनुवाद-प्रामाण्य - श्रुति वाक्यों को दोहराते हुए प्रमाणिकता स्थापित करने की
पद्धति। व्युत्पत्ति: अनुवाद (पुनर्कथन) + प्रामाण्य (सिद्धता)। क्रमवार: (अनुवाद) कथन, (प्रामाण्य) आधार।

1953. • अविच्छिन्न-चैतन्य - वह बोध जो बीच में कहीं भी रुकता नहीं, निरंतर है।
व्युत्पत्ति: अविच्छिन्न (अखंड) + चैतन्य (बोध)। क्रमवार: (अविच्छिन्न) निरंतर, (चैतन्य) ज्ञान।

1954. • आभास-वाद-रहस्य - जीव के ब्रह्म का आभास होने के पीछे का गूढ़ तर्क। व्युत्पत्ति:
आभास (प्रतिबिम्ब) + वाद (सिद्धांत) + रहस्य (गूढ़)। क्रमवार: (आभास) छाया, (वाद) सिद्धांत, (रहस्य) गुप्त-तत्व।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 101
1955. • आत्म-दृष्टि-प्रसंग - सबमें एक ही आत्मा को देखने का दार्शनिक क्रम। व्युत्पत्ति:
आत्म-दृष्टि (एकत्व-बोध) + प्रसंग (क्रम)। क्रमवार: (आत्म-दृष्टि) एकता, (प्रसंग) क्रम।

1956. • असंग-सच्चिदानन्द - वह जो अस्तित्व, ज्ञान और सुख है, पर किसी से जुड़ा नहीं है।
व्युत्पत्ति: असंग (मुक्त) + सत्+चित्+आनन्द। क्रमवार: (असंग) निर्लिप्त, (सच्चिदानन्द) त्रिकाल-तत्व।

1957. • अपरोक्षानुभूति-साधना - बिना किसी माध्यम के, सीधे अपने आप का अनुभव करना।
व्युत्पत्ति: अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) + अनुभूति (अनुभव) + साधना। क्रमवार: (अपरोक्ष) प्रत्यक्ष, (अनुभूति) साक्षात्कार, (साधना) अभ्यास।

1958. • आनन्दघन-स्वरूप - परमानंद का अत्यधिक सघन और अविनाशी पिण्ड। व्युत्पत्ति: आनन्द +
घन (सघन) + स्वरूप। क्रमवार: (आनन्द) सुख, (घन) ठोस, (स्वरूप) स्वभाव।

1959. • अन्वय-व्यतिरेक - जो 'होने पर' विद्यमान है और 'न होने पर' नहीं - इस विधि से सत्य की
खोज। व्युत्पत्ति: अन्वय (सम्बन्ध) + व्यतिरेक (असम्बन्ध/निषेध)। क्रमवार: (अन्वय) सत्ता, (व्यतिरेक) अभाव।

1960. • अभिव्यक्ति-वाद - ब्रह्म में जगत का केवल प्रकट होना (न कि निर्माण होना)।
व्युत्पत्ति: अभिव (सामने) + व्यक्ति (प्रकट) + वाद। क्रमवार: (अभिव्यक्ति) प्राकट्य,
(वाद) सिद्धांत।

1961. • अवस्थात्रय-साक्षी - तीन अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) को देखने वाला
साक्षी। व्युत्पत्ति: अवस्था-त्रय (तीन स्थितियाँ) + साक्षी (द्रष्टा)। क्रमवार: (अवस्थात्रय) जीवन-क्रम, (साक्षी) गवाह।

1962. • ईश्वर-प्रणिधान-योग - अपना सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर देना। व्युत्पत्ति: ईश्वर
+ प्रणिधान (समर्पण) + योग। क्रमवार: (ईश्वर) परमात्मा, (प्रणिधान) समर्पण, (योग) मिलन।

1963. • उपाधि-विचार-विधि - सीमाओं (शरीर-मन) को हटाकर सत्य को जानने की विधि।
व्युत्पत्ति: उपाधि (सीमा) + विचार + विधि। क्रमवार: (उपाधि) बंधन, (विचार) विश्लेषण, (विधि) मार्ग।

1964. • एकात्म-प्रत्यय-सार - 'मैं ही ब्रह्म हूँ' - इस ज्ञान का मूल निचोड़। व्युत्पत्ति:
एकात्म (एकता) + प्रत्यय (ज्ञान) + सार। क्रमवार: (एकात्म) एकत्व, (प्रत्यय) बोध, (सार) मर्म।

1965. • केवलात्म-ज्ञान-निष्ठा - विशुद्ध आत्म-बोध में अडिग स्थित रहना। व्युत्पत्ति:
केवल (शुद्ध) + आत्म-ज्ञान + निष्ठा। क्रमवार: (केवलात्म) शुद्ध-स्वभाव, (ज्ञान) बोध, (निष्ठा) स्थिरता।

1966. • कूटस्थ-नित्य-सिद्ध - जो सदा से पूर्ण है और स्थिर है। व्युत्पत्ति: कूटस्थ (अचल)
+ नित्य (शाश्वत) + सिद्ध (पूर्ण)। क्रमवार: (कूटस्थ) स्थिर, (नित्य) सदा, (सिद्ध) पूर्ण।

1967. • गुण-त्रय-विभाग-योग - सत्, रज और तम के प्रभाव को समझने का अभ्यास। व्युत्पत्ति:
गुण-त्रय (त्रिगुण) + विभाग (भेद) + योग। क्रमवार: (त्रिगुण) प्रकृति, (विभाग) विश्लेषण, (योग) विवेक।

1968. • चिद्-जड़-विवेचन - चेतन और जड़ के बीच अंतर का मंथन। व्युत्पत्ति: चिद् (चेतन) + जड़ +
विवेचन। क्रमवार: (चिद्) चैतन्य, (जड़) निर्जीव, (विवेचन) विश्लेषण।

1969. • जीवन्मुक्त-लक्षण-मीमांसा - जीवित-मुक्ति की स्थिति का सूक्ष्म विश्लेषण।
व्युत्पत्ति: जीवन्मुक्त + लक्षण + मीमांसा। क्रमवार: (जीवन्मुक्त) देहधारी-सिद्ध,
(लक्षण) चिह्न, (मीमांसा) तर्क।

1970. • ज्ञान-कर्म-भेद-विवेक - बोध और क्रिया के बीच का अंतर समझना। व्युत्पत्ति: ज्ञान
(बोध) + कर्म (क्रिया) + भेद + विवेक। क्रमवार: (ज्ञान) आत्मबोध, (कर्म) अनुष्ठान, (विवेक) प्रज्ञा।

1971. [illegible]

1972. [illegible]

1973. [illegible]

1974. [illegible]

1975. [illegible]

1976. [illegible]

1977. [illegible]

1978. [illegible]

1979. [illegible]

1980. [illegible]

1981. [illegible]

1982. [illegible]

1983. [illegible]

1984. [illegible]

1985. [illegible]

1986. [illegible]

1987. [illegible]

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 103
1988. • यज्ञ-पुरुष-आत्म-ध्यान - यज्ञ के देव (ब्रह्म) का अपने भीतर ध्यान। व्युत्पत्ति:
यज्ञ-पुरुष + आत्म + ध्यान। क्रमवार: (यज्ञ-पुरुष) ईश्वर, (आत्म) स्व, (ध्यान) एकाग्रता।

1989. • योग-भ्रष्ट-विवर्जन - साधना से भटकने के कारणों को दूर करना। व्युत्पत्ति: योग-
भ्रष्ट + विवर्जन (त्यागना)। क्रमवार: (योग-भ्रष्ट) विचलन, (विवर्जन) बचाव।

1990. • लक्ष्यार्थ-अनुसन्धान - शब्दों के पीछे के सत्य को खोजने की प्रक्रिया।
व्युत्पत्ति: लक्ष्यार्थ + अनुसन्धान। क्रमवार: (लक्ष्यार्थ) मर्म, (अनुसन्धान) खोज।

1991. • लोक-संग्रह-कर्म-योग - संसार के कल्याण हेतु कर्म करना। व्युत्पत्ति: लोक-संग्रह
(कल्याण) + कर्म + योग। क्रमवार: (लोक-संग्रह) सेवा, (कर्म-योग) निष्काम-कार्य।

1992. • विषय-वैराग्य-उदय - भौतिक सुखों के प्रति अनासक्ति का जाग्रत होना। व्युत्पत्ति:
विषय-वैराग्य + उदय (जागना)। क्रमवार: (विषय-वैराग्य) भोग-विरक्ति, (उदय) प्राकट्य।

1993. • वेदान्त-सिद्धान्त-श्रवण - वेदान्त के अंतिम सत्यों को ध्यानपूर्वक सुनना।
व्युत्पत्ति: वेदान्त-सिद्धान्त + श्रवण। क्रमवार: (वेदान्त-सिद्धान्त) श्रुति-ज्ञान, (श्रवण) सुनना।

1994. • सत्त्व-शुद्धि-उपाय - अंतःकरण को निर्मल करने का तरीका। व्युत्पत्ति: सत्त्व
(गुण) + शुद्धि + उपाय। क्रमवार: (सत्त्व) शुद्धता, (शुद्धि) निर्मलता, (उपाय) तरीका।

1995. • शम-दम-उपरति-साधन - मन और इन्द्रियों को शांत करने के साधन। व्युत्पत्ति: शम-दम-
उपरति (त्रि-साधन)। क्रमवार: (शम) मन-नियंत्रण, (दम) इंद्रिय-नियंत्रण, (उपरति) विरक्ति।

1996. • सूक्ष्म-शरीर-भेद-ज्ञान - मन, बुद्धि, प्राण आदि का स्वरूप जानना। व्युत्पत्ति:
सूक्ष्म-शरीर + भेद + ज्ञान। क्रमवार: (सूक्ष्म-शरीर) लिङ्ग-देह, (भेद) संरचना, (ज्ञान) बोध।

1997. • सृष्टि-दृष्टि-विवेक - जगत के बनने और देखने की प्रक्रिया का विश्लेषण।
व्युत्पत्ति: सृष्टि + दृष्टि + विवेक। क्रमवार: (सृष्टि) जगत, (दृष्टि) अनुभव, (विवेक) विश्लेषण।

1998. • स्वयं-प्रकाश-चैतन्य - जो स्वयं प्रकाशित है, जिसे किसी और ज्ञान की आवश्यकता
नहीं। व्युत्पत्ति: स्वयं-प्रकाश + चैतन्य। क्रमवार: (स्वयं-प्रकाश) स्वयंभू-ज्ञान, (चैतन्य) आत्म-बोध।

1999. • स्वात्म-रमण-योग - अपनी ही आत्मा के आनंद में लीन रहना। व्युत्पत्ति: स्व+आत्म +
रमण (आनंद) + योग। क्रमवार: (स्वात्म) निज-तत्व, (रमण) आनंद, (योग) लीनता।

2000. • अखण्ड-ब्रह्म-अनुभव - ब्रह्म के परमानंद का पूर्ण, अविच्छिन्न साक्षात्कार।
व्युत्पत्ति: अखण्ड + ब्रह्म + अनुभव। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (ब्रह्म) ईश्वर, (अनुभव) दर्शन।

2001. • अध्यारोप-अपवाद-न्याय - अधिरोपित भ्रम को हटाकर अधिष्ठान (ब्रह्म) को सिद्ध करने
की तार्किक विधि। व्युत्पत्ति: अध्यारोप (आरोप) + अपवाद (निषेध) + न्याय (तर्क)। क्रमवार: (अध्यारोप) भ्रम, (अपवाद) निराकरण, (न्याय) तर्क।

2002. • अनिर्वचनीय-ख्याति - माया को न 'सत्' कह सकते हैं, न 'असत्', इसलिए वह 'अनिर्वचनीय'
है। व्युत्पत्ति: अनिर्वचनीय (अवर्णनीय) + ख्याति (ज्ञान)। क्रमवार: (अनिर्वचनीय) अवर्ण्य, (ख्याति) ज्ञान-प्रकार।

2003. • अद्वैत-प्रपञ्च-प्रविलय - संसार के द्वैत को एकता (ब्रह्म) में विलीन कर देना।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रपञ्च (जगत) + प्रविलय (शमन)। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रपञ्च) विस्तार, (प्रविलय) विलय।

2004. • आत्मा-अनात्मा-विवेक-अग्नि - 'स्व' और 'पर' के अंतर को प्रज्ञा की आग से स्पष्ट
करना। व्युत्पत्ति: आत्मा + अनात्मा + विवेक + अग्नि। क्रमवार: (आत्मा) चेतन, (अनात्मा)
जड़, (विवेक) बोध, (अग्नि) ज्ञान-तेज।

2005. [illegible]

2006. [illegible]

2007. [illegible]

2008. [illegible]

2009. [illegible]

2010. [illegible]

2011. [illegible]

2012. [illegible]

2013. [illegible]

2014. [illegible]

2015. [illegible]

2016. [illegible]

2017. [illegible]

2018. [illegible]

2019. [illegible]

2020. [illegible]

2021. [illegible]

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 105
2022. • लक्ष्यार्थ-बोध-महिमा - शब्दों के पीछे के मर्म को समझने का महत्व। व्युत्पत्ति:
लक्ष्यार्थ + बोध + महिमा। क्रमवार: (लक्ष्यार्थ) गूढ़-अर्थ, (बोध) ज्ञान, (महिमा) महत्त्व।

2023. • लोक-संग्रह-धर्म-निष्ठ - जन-कल्याण को ही धर्म मानने वाला। व्युत्पत्ति: लोक-
संग्रह + धर्म + निष्ठ। क्रमवार: (लोक-संग्रह) जन-सेवा, (धर्म) कर्तव्य, (निष्ठ) अटल।

2024. • विषय-वैराग्य-परायण - जो भौतिक सुखों से पूर्णतः विरक्त है। व्युत्पत्ति: विषय-
वैराग्य + परायण। क्रमवार: (विषय-वैराग्य) भोग-विरक्ति, (परायण) मग्न।

2025. • सत्संग-सुफल-साक्षात्कार - ज्ञानियों के साथ का प्रत्यक्ष अनुभव। व्युत्पत्ति:
सत्संग + सुफल + साक्षात्कार। क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-संगति, (सुफल) श्रेष्ठ-फल, (साक्षात्कार) अनुभव।

2026. • स्व-स्वरूप-अनुसंधान-विधि - निज-तत्व की खोज का तरीका। व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप +
अनुसंधान + विधि। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (अनुसंधान) खोज, (विधि) मार्ग।

2027. • अखण्ड-चैतन्य-विभूति - अखंड बोध का ऐश्वर्य। व्युत्पत्ति: अखण्ड + चैतन्य +
विभूति। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (चैतन्य) बोध, (विभूति) ऐश्वर्य।

2028. • अविद्या-बंधन-विमोचन - अज्ञान की जंजीरों से आजादी। व्युत्पत्ति: अविद्या-बंधन +
विमोचन। क्रमवार: (अविद्या-बंधन) भ्रम-जाल, (विमोचन) मुक्ति।

2029. • ब्रह्म-एकरस-साधना - हर समय ब्रह्म का आनंद लेने का अभ्यास। व्युत्पत्ति: ब्रह्म
+ एकरस + साधना। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (साधना) अभ्यास।

2030. • आत्म-विभूति-साक्षात्कार - स्वयं के भीतर छिपे ऐश्वर्य का अनुभव। व्युत्पत्ति:
आत्म + विभूति + साक्षात्कार। क्रमवार: (आत्म) स्व, (विभूति) शक्ति, (साक्षात्कार) अनुभव।

2031. • अद्वैत-प्रतीति-दीप्ति - एकता के ज्ञान का प्रकाश। व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रतीति
+ दीप्ति। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रतीति) बोध, (दीप्ति) चमक।

2032. • अन्तर्ज्ञान-चक्षु-विवेक - भीतर देखने वाली दिव्य दृष्टि। व्युत्पत्ति:
अन्तर्ज्ञान + चक्षु + विवेक। क्रमवार: (अन्तर्ज्ञान) आंतरिक-दृष्टि, (चक्षु) नेत्र,
(विवेक) बोध।

2033. • अविद्या-नाश-अवधि-सीमा - जहाँ अज्ञान की सीमा समाप्त हो। व्युत्पत्ति: अविद्या +
नाश + अवधि + सीमा। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (नाश) अंत, (अवधि) सीमा।

2034. • पूर्ण-बोध-प्राप्ति-स्थिति - जहाँ सब कुछ पूर्णता में हो। व्युत्पत्ति: पूर्ण +
बोध + प्राप्ति + स्थिति। क्रमवार: (पूर्ण) पूर्णता, (बोध) ज्ञान, (प्राप्ति) उपलब्धि, (स्थिति) अवस्था।

2035. • अस्तित्व-बोध-निरंतरता - 'मैं हूँ' की सत्ता का सदा बना रहना। व्युत्पत्ति:
अस्तित्व + बोध + निरंतरता। क्रमवार: (अस्तित्व) सत्ता, (बोध) ज्ञान, (निरंतरता) शाश्वतता।

2036. • निर्द्वन्द्व-ज्ञान-परायणता - सुख-दुःख से परे बोध में निष्ठा। व्युत्पत्ति:
निर्द्वन्द्व + ज्ञान + परायणता। क्रमवार: (निर्द्वन्द्व) द्वंद्व-मुक्त, (ज्ञान) बोध, (परायणता) निष्ठा।

2037. • ब्रह्म-साक्षात्कार-फल-शांति - परमात्मा के ज्ञान से मिलने वाली परम शांति।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म-साक्षात्कार + फल + शांति। क्रमवार: (ब्रह्म-साक्षात्कार) अनुभव,
(फल) परिणाम, (शांति) स्थिरता।

2038. • अमृतत्व-मार्ग-साधना - अमरता के पथ पर चलना। व्युत्पत्ति: अमृतत्व + मार्ग +
साधना। क्रमवार: (अमृतत्व) अमरता, (मार्ग) पंथ, (साधना) अभ्यास।

2039. • सत्य-अनुभूति-प्रकर्ष-अवस्था - सत्य के अनुभव की पराकाष्ठा। व्युत्पत्ति: सत्य +
अनुभूति + प्रकर्ष + अवस्था। क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (अनुभूति) साक्षात्कार, (प्रकर्ष) चरम, (अवस्था) स्थिति।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 106
2040. • अद्वैत-सत्य-प्रतिष्ठा-बोध - एकता ही सत्य है - इस ज्ञान में दृढ़ता। व्युत्पत्ति:
अद्वैत + सत्य + प्रतिष्ठा + बोध। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (सत्य) यथार्थ, (प्रतिष्ठा)
स्थापना, (बोध) ज्ञान।

2041. • अविद्या-तिमिर-नाशक-प्रकाश - अज्ञान के अंधेरे को मिटाने वाली ज्योति।
व्युत्पत्ति: अविद्या + तिमिर + नाशक + प्रकाश। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (तिमिर) अंधकार,
(नाशक) अंतक, (प्रकाश) ज्ञान।

2042. • आत्म-स्वरूप-उपलब्धि-निष्ठता - आत्म-ज्ञान में पूर्ण स्थिरता। व्युत्पत्ति: आत्म-
स्वरूप + उपलब्धि + निष्ठता। क्रमवार: (आत्म-स्वरूप) निज-तत्व, (उपलब्धि) प्राप्ति, (निष्ठता) अटल-स्थित।

2043. • विषय-वासना-विनाश-काल - वासनाओं के अंत का समय। व्युत्पत्ति: विषय-वासना + विनाश
+ काल। क्रमवार: (विषय-वासना) भोग-इच्छा, (विनाश) शमन, (काल) समय।

2044. • सत्संग-साधना-सुफल-प्राप्ति - सत्संग से मिलने वाला सर्वश्रेष्ठ लाभ।
व्युत्पत्ति: सत्संग + साधना + सुफल + प्राप्ति। क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-साथ, (साधना) अभ्यास, (सुफल) अच्छा-परिणाम, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2045. • स्व-स्वरूप-ज्ञान-विधि-सार - आत्म-ज्ञान का सारतत्व। व्युत्पत्ति: स्व-स्वरूप +
ज्ञान + विधि + सार। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (ज्ञान) बोध, (विधि) मार्ग, (सार) निचोड़।

2046. • अखण्ड-ध्यान-समाधि-सिद्धि - एकाग्रता की पूर्ण सिद्धि। व्युत्पत्ति: अखण्ड +
ध्यान + समाधि + सिद्धि। क्रमवार: (अखण्ड) अविच्छिन्न, (ध्यान) एकाग्रता, (समाधि) तन्मयता, (सिद्धि) सफलता।

2047. • अविद्या-बंधन-मुक्ति-अवस्था - अज्ञान की बेड़ियों से मुक्ति। व्युत्पत्ति:
अविद्या-बंधन + मुक्ति + अवस्था। क्रमवार: (अविद्या-बंधन) भ्रम-जाल, (मुक्ति) आजादी, (अवस्था) स्थिति।

2048. • ब्रह्म-एकरस-स्थिति-बोध - ब्रह्म के आनंद में सदा रहने का ज्ञान। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + एकरस + स्थिति + बोध। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (स्थिति)
स्थिरता, (बोध) ज्ञान।

2049. • आत्म-अनुभव-दीप्ति - आत्म-साक्षात्कार की चमक। व्युत्पत्ति: आत्म-अनुभव +
दीप्ति। क्रमवार: (आत्म-अनुभव) साक्षात्कार, (दीप्ति) चमक।

2050. • अद्वैत-प्रकाश-अविचल - जो एकता के प्रकाश में सदा अटल है। व्युत्पत्ति: अद्वैत +
प्रकाश + अविचल। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रकाश) ज्ञान, (अविचल) स्थिर।

2051. अधिष्ठान-सत्ता-बोध - उस आधार को पहचानना जिस पर सम्पूर्ण जगत टिका है। व्युत्पत्ति:
अधिष्ठान (आधार) + सत्ता (होना) + बोध (ज्ञान)। क्रमवार: (अधिष्ठान) मूल-आधार, (सत्ता) अस्तित्व, (बोध) ज्ञान।

2052. अनन्य-भक्ति-योग - भगवान के सिवाय किसी और का चिंतन न करना। व्युत्पत्ति: अनन्य
(अद्वितीय/दूसरा नहीं) + भक्ति + योग। क्रमवार: (अनन्य) एकाग्र, (भक्ति) प्रेम, (योग)
जुड़ाव।

2053. अनुसन्धान-प्रक्रिया-सार - सत्य को खोजने की पद्धति का निचोड़। व्युत्पत्ति:
अनुसन्धान (खोज) + प्रक्रिया + सार। क्रमवार: (अनुसन्धान) खोज, (प्रक्रिया) विधि, (सार) मर्म।

2054. अपरोक्ष-ज्ञान-ज्योति - आत्म-ज्ञान का साक्षात् प्रकाश। व्युत्पत्ति: अपरोक्ष
(प्रत्यक्ष) + ज्ञान + ज्योति। क्रमवार: (अपरोक्ष) सामने, (ज्ञान) बोध, (ज्योति) प्रकाश।

2055. अविद्या-निवृत्ति-उपाधि - अज्ञान को दूर करने का साधन/सीमा। व्युत्पत्ति: अविद्या
(भ्रम) + निवृत्ति (अंत) + उपाधि। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान, (निवृत्ति) अंत, (उपाधि) लक्षण।

2056. [illegible]

2057. [illegible]

2058. [illegible]

2059. [illegible]

2060. [illegible]

2061. [illegible]

2062. [illegible]

2063. [illegible]

2064. [illegible]

2065. [illegible]

2066. [illegible]

2067. [illegible]

2068. [illegible]

2069. [illegible]

2070. [illegible]

2071. [illegible]

2072. [illegible]

2073. [illegible]

2074. [illegible]

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 108
2075. पंचकोश-विवेक-साधन - पांचों कोशों को हटाकर आत्मा को जानना। व्युत्पत्ति: पंचकोश
(अन्नमयादि) + विवेक + साधन। क्रमवार: (पंचकोश) आवरण, (विवेक) भेद, (साधन) उपाय।

2076. प्रणव-ध्यान-निष्ठा - ॐ के ध्यान में डूब जाना। व्युत्पत्ति: प्रणव (ॐ) + ध्यान +
निष्ठा। क्रमवार: (प्रणव) बीज-मंत्र, (ध्यान) एकाग्रता, (निष्ठा) श्रद्धा।

2077. ब्रह्म-ज्ञान-परंपरा - ज्ञान का गुरु-शिष्य क्रम। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-ज्ञान +
परंपरा। क्रमवार: (ब्रह्म-ज्ञान) आत्मविद्या, (परंपरा) वंशक्रम।

2078. भक्ति-ज्ञान-सामंजस्य - प्रेम और ज्ञान का मेल। व्युत्पत्ति: भक्ति + ज्ञान +
सामंजस्य। क्रमवार: (भक्ति) अनुराग, (ज्ञान) विवेक, (सामंजस्य) तालमेल।

2079. भोक्ता-भोग्य-लय - अनुभव करने वाले का अनुभव में विलीन होना। व्युत्पत्ति: भोक्ता +
भोग्य + लय (शमन)। क्रमवार: (भोक्ता) जीवात्मा, (भोग्य) संसार, (लय) विलीनीकरण।

2080. महावाक्य-अर्थ-बोध - वेदान्त के चार वाक्यों का गहरा अर्थ। व्युत्पत्ति: महावाक्य +
अर्थ + बोध। क्रमवार: (महावाक्य) श्रुति-सार, (अर्थ) तात्पर्य, (बोध) ज्ञान।

2081. माया-शक्ति-उच्छेद - भ्रम पैदा करने वाली माया का नाश। व्युत्पत्ति: माया-शक्ति +
उच्छेद (नाश)। क्रमवार: (माया-शक्ति) भ्रामक, (उच्छेद) विनाश।

2082. मुक्ति-साध्यता-अवस्था - मोक्ष प्राप्त करने की स्थिति। व्युत्पत्ति: मुक्ति +
साध्यता + अवस्था। क्रमवार: (मुक्ति) मोक्ष, (साध्यता) लक्ष्य, (अवस्था) स्थिति।

2083. यज्ञ-पुरुष-आत्म-अर्पण - स्वयं को ईश्वर को सौंपना। व्युत्पत्ति: यज्ञ-पुरुष + आत्म-
अर्पण। क्रमवार: (यज्ञ-पुरुष) ईश्वर, (आत्म-अर्पण) स्वयं का त्याग।

2084. योग-भ्रष्ट-संस्कार-क्षय - साधना में भटके हुए के संस्कार मिटाना। व्युत्पत्ति: योग-
भ्रष्ट + संस्कार + क्षय। क्रमवार: (योग-भ्रष्ट) विचलित, (संस्कार) स्मृति, (क्षय) अंत।

2085. लक्ष्यार्थ-अनुभूति-योग - सत्य के मर्म का प्रत्यक्ष अनुभव। व्युत्पत्ति:
लक्ष्यार्थ + अनुभूति + योग। क्रमवार: (लक्ष्यार्थ) मर्म, (अनुभूति) साक्षात्कार, (योग) मार्ग।

2086. लोक-संग्रह-धर्म-पालन - समाज कल्याण के लिए धर्म करना। व्युत्पत्ति: लोक-संग्रह +
धर्म + पालन। क्रमवार: (लोक-संग्रह) जन-हित, (धर्म) कर्तव्य, (पालन) निष्पादन।

2087. विषय-वैराग्य-परायणता - भौतिक भोगों से विरक्ति। व्युत्पत्ति: विषय-वैराग्य +
परायणता। क्रमवार: (विषय-वैराग्य) भोग-विरक्ति, (परायणता) निष्ठा।

2088. वेदान्त-सिद्धान्त-श्रवण - वेदान्त के सत्यों को सुनना। व्युत्पत्ति: वेदान्त-
सिद्धान्त + श्रवण। क्रमवार: (वेदान्त-सिद्धान्त) उपनिषद-सार, (श्रवण) श्रवण-विधि।

2089. सत्त्व-शुद्धि-उपलब्धि - मन की पवित्रता का अनुभव। व्युत्पत्ति: सत्त्व + शुद्धि +
उपलब्धि। क्रमवार: (सत्त्व) गुण, (शुद्धि) निर्मलता, (उपलब्धि) प्राप्ति।

2090. शम-दम-उपरति-साधन - मन-इंद्रियों को वश में करने के तीन साधन। व्युत्पत्ति: शम (मन-
संयम) + दम (इंद्रिय-संयम) + उपरति (विरक्ति)। क्रमवार: (शम) मानसिक, (दम) शारीरिक, (उपरति) वैराग्य।

2091. सूक्ष्म-शरीर-भेद-बोध - सूक्ष्म देह के अंगों का ज्ञान। व्युत्पत्ति: सूक्ष्म-शरीर
+ भेद + बोध। क्रमवार: (सूक्ष्म-शरीर) लिङ्ग-देह, (भेद) अंतर, (बोध) ज्ञान।

2092. सृष्टि-दृष्टि-वाद-सार - 'दृष्टि ही सृष्टि है' का सिद्धांत। व्युत्पत्ति: सृष्टि +
दृष्टि + वाद + सार। क्रमवार: (सृष्टि) जगत, (दृष्टि) अनुभव, (वाद) सिद्धांत, (सार) मर्म।

2093. स्वयं-प्रकाश-चैतन्य - जिसे किसी और रोशनी की ज़रूरत नहीं। व्युत्पत्ति: स्वयं-
प्रकाश + चैतन्य। क्रमवार: (स्वयं-प्रकाश) स्वतः-सिद्ध, (चैतन्य) बोध।

2094. स्वात्म-रमण-योग - अपनी ही आत्मा में आनंद लेना। व्युत्पत्ति: स्व-आत्म + रमण + योग।
क्रमवार: (स्वात्म) निज-स्वरुप, (रमण) आनंद, (योग) समाधि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 109
2095. अखण्ड-ब्रह्म-अनुभूति - ब्रह्म के परमानंद का पूरा अनुभव। व्युत्पत्ति: अखण्ड +
ब्रह्म + अनुभूति। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (ब्रह्म) परमात्मा, (अनुभूति) साक्षात्कार।

2096. अध्यारोप-अपवाद-न्याय - भ्रम हटाकर सच को जानना। व्युत्पत्ति: अध्यारोप + अपवाद +
न्याय। क्रमवार: (अध्यारोप) अधिरोपण, (अपवाद) निषेध, (न्याय) तर्क।

2097. अनिर्वचनीय-माया-तत्व - माया न सत है न असत। व्युत्पत्ति: अनिर्वचनीय + माया + तत्व।
क्रमवार: (अनिर्वचनीय) अवर्णनीय, (माया) भ्रम, (तत्व) पदार्थ।

2098. अद्वैत-प्रपञ्च-विलय - दो का भेद मिटाना। व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रपञ्च + विलय।
क्रमवार: (अद्वैत) एकात्मकता, (प्रपञ्च) फैलाव, (विलय) शमन।

2099. आत्म-अनात्मा-विवेक - चेतन और जड़ का अंतर। व्युत्पत्ति: आत्म + अनात्मा + विवेक।
क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (अनात्मा) जड़, (विवेक) बोध।

2100. पूर्ण-ब्रह्म-ज्ञान-सिद्धि - ज्ञान की पूर्णता की अवस्था। व्युत्पत्ति: पूर्ण +
ब्रह्म + ज्ञान + सिद्धि। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (ब्रह्म) परमात्मा, (ज्ञान) आत्मबोध, (सिद्धि) सफलता।

2101. • जाग्रत-अवस्था - स्थूल जगत के अनुभवों की अवस्था (जागृत अवस्था)।
व्युत्पत्ति: जागृ (जागना/प्रकट होना) + अवस्था। क्रमवार: (जाग्रत) चेतना, (अवस्था) स्थिति।

2102. • विश्व-व्यष्टि - जाग्रत अवस्था का अभिमानी जीव जो स्थूल जगत का
भोक्ता है। व्युत्पत्ति: विश् (प्रवेश करना) + व्यष्टि (एकल)। क्रमवार: (विश्व) प्रवेश-कर्ता, (व्यष्टि) व्यक्तिगत।

2103. • विराट्-समष्टि - जाग्रत जगत का समष्टि (विराट) रूप, जिसमें समस्त
स्थूल जगत समाहित है। व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + राज् (प्रकाशित होना) + समष्टि (सामूहिक)। क्रमवार: (विराट्) विशाल-प्रकाश, (समष्टि) सार्वभौम।

2104. • स्वप्न-अवस्था - सूक्ष्म जगत की अनुभूतियों का काल, जहाँ मन स्वयं ही
निर्माता है। व्युत्पत्ति: स्वप् (सोना) + न। क्रमवार: (स्वप्न) मानसिक-सृष्टि, (अवस्था) काल।

2105. • तैजस-व्यष्टि - स्वप्न अवस्था का अभिमानी जीव जो सूक्ष्म वासनाओं का
भोक्ता है। व्युत्पत्ति: तेजस् (प्रकाश/तेज) + व्यष्टि। क्रमवार: (तैजस) प्रकाशमय, (व्यष्टि) एकल।

2106. • हिरण्यगर्भ-समष्टि - सूक्ष्म जगत का समष्टि रूप (ब्रह्मा का सूक्ष्म
रूप), जहाँ से समस्त विचार प्रस्फुटित होते हैं। व्युत्पत्ति: हिरण्य (स्वर्ण/प्रकाश) + गर्भ (कोष)। क्रमवार: (हिरण्यगर्भ) प्रकाश-कोष, (समष्टि) सार्वभौम।

2107. • सुषुप्ति-अवस्था - वह स्थिति जहाँ न कोई अनुभव है, न इच्छा, केवल गाढ़
निद्रा का आनंद है। व्युत्पत्ति: सु (अच्छी तरह) + स्वप् (सोना)। क्रमवार: (सुषुप्ति) शून्यता, (अवस्था) स्थिति।

2108. • प्राज्ञ-व्यष्टि - सुषुप्ति अवस्था का अभिमानी जीव, जो शुद्ध आनंद का
भोक्ता है। व्युत्पत्ति: प्र (प्रकृष्ट) + ज्ञा (ज्ञान)। क्रमवार: (प्राज्ञ) आनंद-द्रष्टा, (व्यष्टि) व्यक्तिगत।

2109. • ईश्वर-समष्टि - सुषुप्ति का समष्टि रूप (सर्वज्ञ नियंता), जो समस्त
जगत का कारण है। व्युत्पत्ति: ईश् (शासन करना) + वर + समष्टि। क्रमवार:
(ईश्वर) शासक, (समष्टि) ब्रह्मांडीय।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 110
2110. • तुरीय-स्थिति - चौथी अवस्था, जो तीनों का साक्षी और आधार है; ब्रह्म-
भाव। व्युत्पत्ति: तुरीय (चतुर्थ)। क्रमवार: (तुरीय) परमतत्व, (स्थिति) विशुद्ध-चेतना।

2111. • निद्रा-माया-शक्ति - वह अविद्या रूपी निद्रा जो सत्य को ढके हुए है।
व्युत्पत्ति: निद्रा (सुप्त होना) + माया (भ्रम) + शक्ति। क्रमवार: (निद्रा) अज्ञान, (माया) भ्रम, (शक्ति) क्षमता।

2112. • प्रपंच-उपशम - जहाँ संसार का सारा विस्तार शांत हो जाता है।
व्युत्पत्ति: प्रपंच (फैलाव) + उपशम (शमन)। क्रमवार: (प्रपंच) जगत, (उपशम) शांति।

2113. • स्थूल-भोग-विश्व - स्थूल पदार्थों का उपभोग करने वाला विश्व-जीव।
व्युत्पत्ति: स्थूल (मोटा) + भोग + विश्व। क्रमवार: (स्थूल) भौतिक, (भोग) उपभोग।

2114. • सूक्ष्म-भोग-तैजस - सूक्ष्म वासनाओं का उपभोग करने वाला तैजस-जीव।
व्युत्पत्ति: सूक्ष्म (अदृश्य) + भोग + तैजस। क्रमवार: (सूक्ष्म) मानसिक, (भोग) अनुभव।

2115. • आनंद-भुक्-प्राज्ञ - सुषुप्ति में आनंद का उपभोग करने वाला प्राज्ञ-
जीव। व्युत्पत्ति: आनंद + भुक् (भोक्ता) + प्राज्ञ। क्रमवार: (आनंद) सुख, (भुक्) भोक्ता।

2116. • अमात्र-ओंकार - ओंकार की चतुर्थ मात्रा (मौन), जो ब्रह्म का प्रतीक
है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + मात्रा (विभाग)। क्रमवार: (अमात्र) अविभाजित, (ओंकार) अक्षर-ब्रह्म।

2117. • अ-उ-म-वर्ण - ओंकार के तीन भाग (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति के प्रतीक)।
व्युत्पत्ति: अक्षर + वर्ण। क्रमवार: (अ-उ-म) त्रिकाल-प्रतीक।

2118. • सर्वज्ञत्व-ईश्वर - ईश्वर का वह गुण जो सब कुछ जानता है (समष्टि
कारण)। व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + ज्ञा (जानना) + त्व। क्रमवार: (सर्वज्ञत्व) सर्वज्ञता, (ईश्वर) नियंता।

2119. • अन्तःप्रज्ञ-तैजस - जो भीतर (मन में) ही जानता है। व्युत्पत्ति: अन्तः
(भीतर) + प्रज्ञ (ज्ञान)। क्रमवार: (अन्तःप्रज्ञ) अन्तर्मुखी, (तैजस) सूक्ष्म-द्रष्टा।

2120. • बहिःप्रज्ञ-विश्व - जो बाहर (स्थूल) ही जानता है। व्युत्पत्ति: बहिः
(बाहर) + प्रज्ञ (ज्ञान)। क्रमवार: (बहिःप्रज्ञ) बहिर्मुखी, (विश्व) स्थूल-द्रष्टा।

2121. • अद्वैत-योग-स्थित - दो न होने के योग में स्थिर। व्युत्पत्ति: अ +
द्वैत + योग + स्थित। क्रमवार: (अद्वैत) एकात्मता, (योग) मिलन।

2122. • अविद्या-निद्रा-त्याग - अज्ञान की नींद से जागना। व्युत्पत्ति:
अविद्या + निद्रा + त्याग। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (निद्रा) अचेतनता।

2123. • प्रपञ्च-विलय-बोध - संसार के लीन होने का ज्ञान। व्युत्पत्ति:
प्रपञ्च + विलय + बोध। क्रमवार: (प्रपञ्च) जगत, (विलय) शमन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 111
2124. • आत्म-बोध-प्रदीप्ति - आत्म-ज्ञान का दीपक। व्युत्पत्ति: आत्म-बोध +
प्रदीप्ति (प्रकाश)। क्रमवार: (आत्म-बोध) आत्मज्ञान, (प्रदीप्ति) प्रकाश।

2125. • तुरीय-अनुभूति-साधना - चौथी अवस्था को अनुभव करने का अभ्यास।
व्युत्पत्ति: तुरीय + अनुभूति + साधना। क्रमवार: (तुरीय) चतुर्थ-स्तर,
(अनुभूति) साक्षात्कार, (साधना) अभ्यास।

2126. • अजाति - वह सिद्धांत जिसके अनुसार कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ है; ब्रह्म
सदा अजन्मा है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + जाति (जन्म)। क्रमवार: (अ) निषेध,
(जाति) उत्पत्ति।

2127. • वितथ्य - जिसे हम सत्य समझते हैं, उसका असत्य या भ्रमपूर्ण होना
(मिथ्यात्व)। व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + तथ्य (तथ्य का विपरीत)। क्रमवार: (वि) विशेष, (तथ्य) सत्य-विहीन।

2128. • कार्य-कारण-बंध - कारण और कार्य के उलझाव से उत्पन्न संसार का बंधन।
व्युत्पत्ति: कार्य (परिणाम) + कारण (हेतु) + बंध (बंधन)। क्रमवार: (कार्य) उत्पन्न, (कारण) उत्पादक, (बंध) जकड़न।

2129. • अलात-चक्र - जलती हुई मशाल को तेजी से घुमाने पर दिखने वाला चक्र
(भ्रम का उदाहरण)। व्युत्पत्ति: अलात (अग्नि-पिण्ड/मशाल) + चक्र (गोलाकार)।
क्रमवार: (अलात) अग्नि-पिण्ड, (चक्र) गोल-आभास।

2130. • ऋजु-वक्र - मशाल के घूमने की सीधी (ऋजु) और टेढ़ी (वक्र) गति का भ्रम।
व्युत्पत्ति: ऋजु (सीधा) + वक्र (टेढ़ा)। क्रमवार: (ऋजु) सरल, (वक्र) कुटिल।

2131. • अद्वय-ज्ञान - वह ज्ञान जहाँ द्वैत (भेद) के लिए कोई स्थान न हो।
व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + द्वय (दो)। क्रमवार: (अद्वय) एकत्व, (ज्ञान) बोध।

2132. • स्पर्श-दोष - विषय और इन्द्रिय के संपर्क से उत्पन्न आसक्ति का दोष।
व्युत्पत्ति: स्पर्श (संपर्क) + दोष (बुराई)। क्रमवार: (स्पर्श) संपर्क, (दोष) त्रुटि।

2133. • बीज-अंकुर-न्याय - बीज और अंकुर की तरह कार्य-कारण का अनिश्चित चक्र।
व्युत्पत्ति: बीज + अंकुर + न्याय (तर्क)। क्रमवार: (बीज) कारण, (अंकुर)
कार्य, (न्याय) तर्क-विधि।

2134. • माया-वैभव - अविद्या की शक्ति से फैला हुआ संसार का विस्तार।
व्युत्पत्ति: माया (भ्रम) + वैभव (विस्तार/ऐश्वर्य)। क्रमवार: (माया) अज्ञान, (वैभव) विस्तार।

2135. • संभूत-असंभूत - उत्पन्न और अनुत्पन्न वस्तुओं का विवेचन।
व्युत्पत्ति: संभूत (उत्पन्न) + असंभूत (अनुत्पन्न)। क्रमवार: (संभूत) जात, (असंभूत) अज।

2136. • अभाव-सत्ता - न होने का भी एक बोध होना (अभाव का भी ज्ञान)।
व्युत्पत्ति: अभाव (न होना) + सत्ता (होना)। क्रमवार: (अभाव) शून्यता, (सत्ता) अस्तित्व।

2137. • आत्म-भूत - जो आत्मा से ही उत्पन्न (प्रतीत) होता है। व्युत्पत्ति:
आत्म (स्व) + भूत (उत्पन्न)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (भूत) स्वरूप।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 112
2138. • अपर-प्रत्यय - दूसरों (इन्द्रियों) के माध्यम से होने वाला ज्ञान।
व्युत्पत्ति: अपर (दूसरा) + प्रत्यय (ज्ञान)। क्रमवार: (अपर) अन्य, (प्रत्यय)
बोध।

2139. • स्व-प्रत्यय - स्वयं से ही स्वयं को जानना (आत्म-ज्ञान)। व्युत्पत्ति:
स्व (निज) + प्रत्यय (ज्ञान)। क्रमवार: (स्व) स्वयं, (प्रत्यय) बोध।

2140. • वस्तु-अद्वैत - वस्तुतः (यथार्थ में) सब एक ही है। व्युत्पत्ति: वस्तु
(पदार्थ/तत्व) + अद्वैत। क्रमवार: (वस्तु) तत्व, (अद्वैत) एकत्व।

2141. • निर्भेद-बोध - जहाँ कोई भी भेद न बचा हो। व्युत्पत्ति: निर् (रहित) +
भेद (अंतर) + बोध। क्रमवार: (निर्भेद) एकरस, (बोध) ज्ञान।

2142. • प्रकृति-विकृति-विवेक - कारण (प्रकृति) और कार्य (विकृति) का अंतर।
व्युत्पत्ति: प्रकृति (मूल) + विकृति (रूपांतर) + विवेक। क्रमवार: (प्रकृति) जनक, (विकृति) परिणाम, (विवेक) बोध।

2143. • अनाद्यनंत - जिसका न आदि है और न अंत। व्युत्पत्ति: अन (नहीं) + आदि
(आरम्भ) + अनन्त (अंत रहित)। क्रमवार: (अनादि) अजन्मा, (अनंत) शाश्वत।

2144. • चित्त-स्पंदन - मन की चंचलता (हलचल)। व्युत्पत्ति: चित्त (मन) +
स्पंदन (हलचल)। क्रमवार: (चित्त) मानस, (स्पंदन) गति।

2145. • निरोध-विधि - मन की वृत्तियों को रोकने का अभ्यास। व्युत्पत्ति:
निरोध (रोकना) + विधि। क्रमवार: (निरोध) संयम, (विधि) प्रक्रिया।

2146. • अस्पर्श-साधना - किसी भी विषय से न जुड़ने का अभ्यास। व्युत्पत्ति: अ
(नहीं) + स्पर्श (संपर्क) + साधना। क्रमवार: (अस्पर्श) निर्लिप्तता, (साधना) अभ्यास।

2147. • धर्म-अधर्म-प्रपंच - शुभ और अशुभ कर्मों का संसार। व्युत्पत्ति: धर्म
+ अधर्म + प्रपंच। क्रमवार: (धर्म) पुण्य, (अधर्म) पाप, (प्रपंच) जगत।

2148. • अद्वय-प्रतीति - एकत्व का अनुभव। व्युत्पत्ति: अद्वय (एक) + प्रतीति
(अनुभव)। क्रमवार: (अद्वय) अभेद, (प्रतीति) आभास।

2149. • विकल्प-क्षय - मानसिक संकल्पों का अंत। व्युत्पत्ति: विकल्प (संकल्प)
+ क्षय (अंत)। क्रमवार: (विकल्प) विचार, (क्षय) समापन।

2150. • असंघात-आत्मा - जो किसी के साथ जुड़ा हुआ नहीं है। व्युत्पत्ति: अ
(नहीं) + संघात (जुड़ाव/समूह) + आत्मा। क्रमवार: (असंघात) असंग, (आत्मा)
चैतन्य।

2151. • प्रणव-मात्रोपनिषद - ओंकार की मात्राओं का विज्ञान। व्युत्पत्ति:
प्रणव (ॐ) + मात्र (मात्रा) + उपनिषद। क्रमवार: (प्रणव) बीज-ध्वनि, (मात्र) विभाग।

2152. • सूक्ष्म-अविद्या-तत्व - अज्ञान का वह अंश जो ज्ञानी को भी सताता है।
व्युत्पत्ति: सूक्ष्म (बारीक) + अविद्या + तत्व। क्रमवार: (सूक्ष्म) सूक्ष्म-अंश, (अविद्या) भ्रम।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 113
2153. • अद्वैत-योग-दृष्टि - भेद-रहित देखने की शक्ति। व्युत्पत्ति: अद्वैत
+ योग + दृष्टि। क्रमवार: (अद्वैत) एकात्म, (योग) मिलन, (दृष्टि) बोध।

2154. • परमार्थ-साधना-सार - सर्वोच्च सत्य तक पहुँचने का निचोड़।
व्युत्पत्ति: परमार्थ (ब्रह्म) + साधना + सार। क्रमवार: (परमार्थ) सर्वोच्च, (साधना) अभ्यास, (सार) निचोड़।

2155. • अबाधित-सत्ता - जो किसी भी अवस्था में बाधित नहीं होती। व्युत्पत्ति:
अ (नहीं) + बाधित (रुकी हुई) + सत्ता (अस्तित्व)। क्रमवार: (अबाधित) अखंड, (सत्ता) मौजूदगी।

2156. • अविद्या-निवृत्ति-काल - अज्ञान के हटने का समय। व्युत्पत्ति:
अविद्या + निवृत्ति + काल। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (निवृत्ति) अंत, (काल) समय।

2157. • पूर्ण-बोध-स्थिरता - ज्ञान की पूर्णता में टिके रहना। व्युत्पत्ति:
पूर्ण + बोध + स्थिरता। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (बोध) ज्ञान, (स्थिरता) अचलभाव।

2158. • अस्तित्व-बोध-प्रकर्ष - सत्ता का सर्वोच्च अनुभव। व्युत्पत्ति:
अस्तित्व + बोध + प्रकर्ष (सर्वोच्च)। क्रमवार: (अस्तित्व) होना, (बोध) ज्ञान, (प्रकर्ष) चरम।

2159. • निर्द्वन्द्व-ज्ञान-साधन - द्वंद्व-मुक्त होने के उपाय।
व्युत्पत्ति: निर्द्वन्द्व + ज्ञान + साधन। क्रमवार: (निर्द्वन्द्व) द्वंद्व-रहित, (ज्ञान) बोध, (साधन) उपाय।

2160. • ब्रह्म-साक्षात्कार-विधि-सार - परमात्मा को जानने का मार्ग।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म-साक्षात्कार + विधि + सार। क्रमवार: (ब्रह्म-साक्षात्कार) अनुभव, (विधि) मार्ग, (सार) निचोड़।

2161. • अमृतत्व-प्राप्ति-मार्ग - अमरता पाने का रास्ता। व्युत्पत्ति:
अमृतत्व + प्राप्ति + मार्ग। क्रमवार: (अमृतत्व) अमरता, (प्राप्ति) उपलब्धि, (मार्ग) पंथ।

2162. • सत्य-अनुभूति-दीप्ति - यथार्थ के अनुभव का प्रकाश। व्युत्पत्ति:
सत्य + अनुभूति + दीप्ति। क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (अनुभूति) अनुभव, (दीप्ति) चमक।

2163. • अद्वैत-सत्य-प्रतिष्ठा-विधि - एकता में स्थित होने का नियम।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + सत्य + प्रतिष्ठा + विधि। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (सत्य) यथार्थ, (प्रतिष्ठा) स्थापना, (विधि) प्रक्रिया।

2164. • अविद्या-तिमिर-नाशक-प्रभा - अज्ञान का अंधेरा मिटाने वाली चमक।
व्युत्पत्ति: अविद्या + तिमिर + नाशक + प्रभा। क्रमवार: (अविद्या) भ्रम, (तिमिर) अंधकार, (नाशक) अंतक, (प्रभा) प्रकाश।

2165. • आत्म-स्वरूप-उपलब्धि-साधन - अपने को जानने के माध्यम। व्युत्पत्ति:
आत्म-स्वरूप + उपलब्धि + साधन। क्रमवार: (आत्म-स्वरूप) निज-तत्व, (उपलब्धि) प्राप्ति, (साधन) उपाय।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 114
2166. • विषय-वासना-विनाश-विधि - भोग-इच्छा मिटाने का मार्ग। व्युत्पत्ति:
विषय-वासना + विनाश + विधि। क्रमवार: (विषय-वासना) चाह, (विनाश) अंत, (विधि) प्रक्रिया।

2167. • सत्संग-सुफल-प्राप्ति-योग - श्रेष्ठ संगति से प्राप्त होने वाला फल।
व्युत्पत्ति: सत्संग + सुफल + प्राप्ति + योग। क्रमवार: (सत्संग) श्रेष्ठ-
साथ, (सुफल) अच्छा-परिणाम, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2168. • स्व-स्वरूप-ज्ञान-सार-विधि - आत्म-ज्ञान का निचोड़। व्युत्पत्ति: स्व-
स्वरूप + ज्ञान + सार + विधि। क्रमवार: (स्व-स्वरूप) निज-तत्व, (ज्ञान) बोध, (सार) मर्म, (विधि) प्रक्रिया।

2169. • अखण्ड-ध्यान-समाधि-प्रकर्ष - गहन एकाग्रता की चरम सीमा।
व्युत्पत्ति: अखण्ड + ध्यान + समाधि + प्रकर्ष। क्रमवार: (अखण्ड) निरंतर, (ध्यान) एकाग्रता, (समाधि) तन्मयता, (प्रकर्ष) चरम।

2170. • अविद्या-बंधन-मुक्ति-साधन - अज्ञान की बेड़ियों से आजादी का मार्ग।
व्युत्पत्ति: अविद्या-बंधन + मुक्ति + साधन। क्रमवार: (अविद्या-बंधन) भ्रम, (मुक्ति) आजादी, (साधन) उपाय।

2171. • ब्रह्म-एकरस-स्थिति-अनुभव - ब्रह्म के आनंद में सदा रहने का
साक्षात्कार। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + एकरस + स्थिति + अनुभव। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (एकरस) समरूप, (स्थिति) स्थिरता, (अनुभव) साक्षात्कार।

2172. • आत्म-अनुभव-दीप्ति-प्रकाश - आत्म-ज्ञान की चमक। व्युत्पत्ति: आत्म-
अनुभव + दीप्ति + प्रकाश। क्रमवार: (आत्म-अनुभव) साक्षात्कार, (दीप्ति) चमक, (प्रकाश) ज्ञान।

2173. • अद्वैत-प्रकाश-अविचल-निष्ठा - एकता के ज्ञान में अटल श्रद्धा।
व्युत्पत्ति: अद्वैत + प्रकाश + अविचल + निष्ठा। क्रमवार: (अद्वैत) एकत्व, (प्रकाश) बोध, (अविचल) स्थिर, (निष्ठा) श्रद्धा।

2174. • परमार्थ-साधना-विमर्श - सर्वोच्च लक्ष्य पर विचार। व्युत्पत्ति:
परमार्थ (लक्ष्य) + साधना + विमर्श। क्रमवार: (परमार्थ) सर्वोच्च, (साधना) अभ्यास, (विमर्श) मंथन।

2175. • अखण्ड-चित्-आनंद-अनुभूति - सच्चिदानंद का पूर्ण साक्षात्कार।
व्युत्पत्ति: अखण्ड + चित् (ज्ञान) + आनन्द + अनुभूति। क्रमवार: (अखण्ड) पूर्ण, (चित्) बोध, (आनन्द) सुख, (अनुभूति) अनुभव।

2176. • सप्तांग-लक्षण - वैश्वानर (विराट) के सात अंग जिनसे यह स्थूल जगत
व्याप्त है। व्युत्पत्ति: सप्त (सात) + अंग (अवयव) + लक्षण (परिभाषा)।
क्रमवार: (सप्त) सात, (अंग) शरीर-भाग, (लक्षण) स्वरूप।

2177. • एकोनविंशति-मुख - उन्नीस द्वारों वाला (इंद्रियाँ, अंतःकरण और
प्राण), जिनसे विश्व-चेतना भोग करती है। व्युत्पत्ति: एक + ऊन (कम) + विंशति (बीस = 19) + मुख (द्वार)। क्रमवार: (एकोनविंशति) उन्नीस, (मुख) प्रवेश-द्वार।

2178. • द्युलोक-मूर्धा - विराट का सिर (मूर्धा) 'द्युलोक' (स्वर्ग/आकाश) है।
व्युत्पत्ति: द्यु (प्रकाशमान आकाश) + लोक + मूर्धा (सिर)। क्रमवार:
(द्युलोक) शीर्ष, (मूर्धा) सिर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 115
2179. • सूर्य-चक्षु - विराट की आँखें 'सूर्य' और 'चंद्र' हैं। व्युत्पत्ति:
सूर्य (प्रकाशक) + चक्षु (नेत्र)। क्रमवार: (सूर्य) ज्योति, (चक्षु) दर्शन-इंद्रिय।

2180. • वायु-प्राण - विराट का श्वास 'वायु' (समस्त प्राण) है। व्युत्पत्ति:
वायु (गतिशील) + प्राण (जीवनी शक्ति)। क्रमवार: (वायु) गति, (प्राण) जीवन-
शक्ति।

2181. • आकाश-मध्य - विराट का शरीर का मध्य भाग 'आकाश' है। व्युत्पत्ति: आ +
काश (प्रकाशित/विस्तृत) + मध्य (बीच)। क्रमवार: (आकाश) शून्य, (मध्य) केंद्र।

2182. • जल-बस्ति - विराट का निचला भाग (बस्ति/मूत्राशय) 'जल' तत्व है।
व्युत्पत्ति: जल (तरल) + बस्ति (मूत्राशय/आधार)। क्रमवार: (जल) तरलता, (बस्ति) आधार।

2183. • पृथ्वी-पाद - विराट के पैर 'पृथ्वी' हैं। व्युत्पत्ति: पृथ्वी (धरा) +
पाद (चरण)। क्रमवार: (पृथ्वी) आधार, (पाद) गति।

2184. • अग्नि-मुख - विराट का मुख 'अग्नि' (वैश्वानर अग्नि) है। व्युत्पत्ति:
अग्नि (जठराग्नि) + मुख (द्वार)। क्रमवार: (अग्नि) शक्ति, (मुख) भोजन-द्वार।

2185. • पंच-ज्ञानेन्द्रिय-मुख - आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा; ये बाह्य ज्ञान के
पाँच द्वार हैं। व्युत्पत्ति: पञ्च + ज्ञान (बोध) + इंद्रिय + मुख। क्रमवार: (पञ्च) पाँच, (ज्ञानेन्द्रिय) बोध-साधन, (मुख) द्वार।

2186. • पंच-कर्मेन्द्रिय-मुख - वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ; ये क्रिया के
पाँच द्वार हैं। व्युत्पत्ति: पञ्च + कर्म (क्रिया) + इंद्रिय + मुख। क्रमवार: (पञ्च) पाँच, (कर्मेन्द्रिय) कार्य-साधन, (मुख) द्वार।

2187. • पंच-प्राण-मुख - प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान; ये जीवनी शक्ति के
पाँच द्वार हैं। व्युत्पत्ति: पञ्च + प्राण + मुख। क्रमवार: (पञ्च) पाँच, (प्राण) वायु, (मुख) शक्ति-द्वार।

2188. • चतुष्टय-अन्तःकरण-मुख - मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त; ये आंतरिक अनुभव
के चार द्वार हैं। व्युत्पत्ति: चतुष्टय (चार) + अन्तःकरण (भीतर का) + मुख। क्रमवार: (चतुष्टय) चार, (अन्तःकरण) मनस्तत्व, (मुख) अनुभव-द्वार।

2189. • वैश्वानर-चेतना - जाग्रत अवस्था का स्वामी, जो समस्त स्थूल जगत में
व्याप्त है। व्युत्पत्ति: विश्व (सब) + नर (अग्रणी/पुरुष)। क्रमवार: (वैश्वानर) सार्वभौम-पुरुष।

2190. • स्थूल-भुक्-भोग - भौतिक पदार्थों का उपभोग करने वाली वृत्ति।
व्युत्पत्ति: स्थूल (मोटा/भौतिक) + भुक् (भोक्ता) + भोग। क्रमवार: (स्थूल) भौतिक, (भोग) अनुभव।

2191. • समष्टि-अभिमानी - जो संपूर्ण ब्रह्मांड को 'अपना' मानकर बैठा है।
व्युत्पत्ति: समष्टि (कुल) + अभिमान (अस्मिता)। क्रमवार: (समष्टि) सामूहिक, (अभिमानी) अहंकारी (अहं-भाव)।

2192. • विराट-रूप-दर्शन - ब्रह्मांडीय रूप का अनुभव। व्युत्पत्ति: विराट
(विशाल) + रूप + दर्शन। क्रमवार: (विराट) ब्रह्मांड, (दर्शन) देखना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 116
2193. • अवस्था-त्रय-साक्षी - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति का ज्ञाता।
व्युत्पत्ति: अवस्था-त्रय (तीन स्थितियाँ) + साक्षी (द्रष्टा)। क्रमवार: (अवस्था-त्रय) जीवन-क्रम, (साक्षी) गवाह।

2194. • अविद्या-तिमिर-आवृत्त - अज्ञान के अंधेरे से ढका हुआ। व्युत्पत्ति:
अविद्या + तिमिर (अंधकार) + आवृत्त (ढका)। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान, (तिमिर) कालापन, (आवृत्त) आच्छादित।

2195. • ओंकार-मात्र-साधना - ओंकार की मात्राओं के द्वारा ब्रह्म-
साक्षात्कार। व्युत्पत्ति: ओंकार + मात्रा + साधना। क्रमवार: (ओंकार) अक्षर-ब्रह्म, (मात्रा) विभाग, (साधना) अभ्यास।

2196. • अमात्र-तत्व-प्राप्ति - चतुर्थ अवस्था की पूर्ण उपलब्धि।
व्युत्पत्ति: अमात्र (मात्रा-रहित) + तत्व + प्राप्ति। क्रमवार: (अमात्र) अनंत, (तत्व) ब्रह्म, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2197. • तुरीय-स्थित-चेतन - जो सदा तुरीय (चौथी स्थिति) में है। व्युत्पत्ति:
तुरीय + स्थित + चेतन। क्रमवार: (तुरीय) परमतत्व, (स्थित) स्थिर, (चेतन) बोध।

2198. • अस्पर्श-योग-साधक - जो निर्लेप साधना में लगा है। व्युत्पत्ति:
अस्पर्श (असंग) + योग + साधक। क्रमवार: (अस्पर्श) निर्लिप्त, (योग) मिलन, (साधक) अभ्यासी।

2199. • अजतिवाद-निश्चय - इस बात का पक्का विश्वास कि कुछ भी उत्पन्न नहीं
हुआ। व्युत्पत्ति: अजति (उत्पत्ति-रहित) + वाद + निश्चय। क्रमवार: (अजति) अजन्मा, (वाद) सिद्धांत, (निश्चय) दृढ़ता।

2200. • पूर्ण-बोध-विश्रान्ति - जहाँ पहुँचकर सब कुछ शांत हो जाए।
व्युत्पत्ति: पूर्ण + बोध (ज्ञान) + विश्रान्ति (विश्राम)। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्ण, (बोध) ज्ञान, (विश्रान्ति) परमानंद।

2201. • केन-इषितं-प्रश्न - "किसके द्वारा प्रेरित होकर मन और प्राण कार्य
करते हैं?" यह मूल प्रश्न। व्युत्पत्ति: केन (किसके द्वारा) + इषितं (प्रेरित/प्रेषित) + प्रश्न। क्रमवार: (केन) प्रेरक, (इषितं) इच्छा/निर्देश, (प्रश्न) जिज्ञासा।

2202. • श्रोत्रस्य-श्रोत्रम - कानों को सुनने की शक्ति देने वाला (कानों का
भी कान)। व्युत्पत्ति: श्रोत्र (कान) + अस्य (इसका) + श्रोत्रम् (श्रवण-शक्ति)। क्रमवार: (श्रोत्रस्य) कान का, (श्रोत्रम्) सुनने वाला।

2203. • मनसो-मनः - मन को विचार करने की शक्ति देने वाला (मन का भी मन)।
व्युत्पत्ति: मनसः (मन का) + मनः (बुद्धि/चेतना)। क्रमवार: (मनसः) मन का, (मनः) प्रेरक।

2204. • वाचो-वाचम - वाणी को बोलने की शक्ति देने वाला (वाणी की भी वाणी)।
व्युत्पत्ति: वाचः (वाणी का) + वाचम् (शब्द/उच्चारण)। क्रमवार: (वाचः) वाणी
का, (वाचम्) स्रोत।

2205. • चक्षुषश्चक्षुः - आँखों को देखने की शक्ति देने वाला (आँखों की भी
आँख)। व्युत्पत्ति: चक्षुषः (आँख का) + चक्षुः (द्रष्टा)। क्रमवार: (चक्षुषः) आँख का, (चक्षुः) प्रकाशक।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 117
2206. • अति-दूर-सन्निधि - जो अत्यंत दूर होकर भी (अगोचर) सबसे निकट है। व्युत्पत्ति: अति (बहुत) + दूर + सन्निधि (निकटता)। क्रमवार: (अति-दूर) अगम्य, (सन्निधि) हृदयस्थ।

2207. • विज्ञात-अविज्ञात - जिसे हम 'जानते हैं' और जिसे हम 'नहीं जानते', वह ब्रह्म दोनों से परे है। व्युत्पत्ति: विज्ञात (ज्ञात) + अविज्ञात (अज्ञात)।
क्रमवार: (विज्ञात) बोध, (अविज्ञात) रहस्य।

2208. • ब्रह्म-सत्-उपलब्धि - ब्रह्म के अस्तित्व को अनुभव करने की प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + सत् (अस्तित्व) + उपलब्धि (प्राप्ति)।
क्रमवार: (ब्रह्म) परमतत्व, (सत्) सत्ता, (उपलब्धि) बोध।

2209. • विदित-अविदित-भेद - ज्ञात और अज्ञात के अंतर का अतिक्रमण करना।
व्युत्पत्ति: विदित (जाना हुआ) + अविदित (अनजाना) + भेद (अंतर)। क्रमवार: (विदित) बोध, (अविदित) अबोध, (भेद) भिन्नता।

2210. • तप-दम-कर्म-साधन - ब्रह्म-विद्या के तीन मुख्य आधार (तपस्या, संयम, कर्म)। व्युत्पत्ति: तप (तपस्या) + दम (संयम) + कर्म (अनुष्ठान)। क्रमवार: (तप) अग्नि, (दम) नियति, (कर्म) क्रिया।

2211. • सत्य-आयतना - सत्य ही जिसका आधार (घर) है। व्युत्पत्ति: सत्य + आयतन (आश्रय/घर)। क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (आयतन) आधार।

2212. • प्राणस्य-प्राणनम् - जीवन को प्राण देने वाली जीवन-शक्ति। व्युत्पत्ति: प्राणस्य (प्राण का) + प्राणनम् (जीवनी-शक्ति)। क्रमवार: (प्राणस्य) जीव का, (प्राणनम्) गति।

2213. • अवगन्तृ-ब्रह्म - वह ब्रह्म जो जानने वाला (ज्ञानी) है, न कि केवल 'ज्ञेय'। व्युत्पत्ति: अवगन्तृ (जानने वाला/ज्ञाता) + ब्रह्म। क्रमवार: (अवगन्तृ) दृष्टा, (ब्रह्म) आत्मतत्व।

2214. • यत्र-वाचो-निवर्तन्ते - जहाँ वाणी पहुँचकर लौट आती है (अशब्द ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: यत्र (जहाँ) + वाचः (वाणी) + निवर्तन्ते (लौट आती है)। क्रमवार: (यत्र) ब्रह्म-पद, (वाचः) शब्द, (निवर्तन्ते) विराम।

2215. • ब्रह्म-विज्ञान-जिज्ञासा - ब्रह्म को विशेष रूप से जानने की तीव्र इच्छा। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + विज्ञान (विशेष ज्ञान) + जिज्ञासा। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (विज्ञान) बोध, (जिज्ञासा) चाह।

2216. • देव-अहंकार-गर्व - देवताओं का यह सोचना कि "हमने विजय प्राप्त की है"।
व्युत्पत्ति: देव (अग्नि, वायु आदि) + अहंकार (अभिमान) + गर्व (अतिशय गौरव)।
क्रमवार: (देव) शक्तिशाली, (अहंकार) कर्तापन।

2217. • यक्ष-स्वरूप-दर्शन - ब्रह्म का यक्ष (अद्भुत पुरुष) के रूप में प्रकट होना। व्युत्पत्ति: यक्ष (आश्चर्यजनक/अद्भुत) + स्वरूप + दर्शन। क्रमवार: (यक्ष) देव-अतुल, (स्वरूप) रूप, (दर्शन) साक्षात्कार।

2218. • उमा-हैमवती-विद्या - देवी उमा द्वारा (ब्रह्म-ज्ञान की जननी) ब्रह्म का ज्ञान देना। व्युत्पत्ति: उमा (शक्ति) + हैमवती (हिमालय की पुत्री/ज्ञानदायिनी) + विद्या। क्रमवार: (उमा) ज्ञान-शक्ति, (हैमवती) गुरु- स्वरूपा।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 118
2219. • इन्द्रिय-अधिष्ठातृ-देवता - इन्द्रियों को चलाने वाली सूक्ष्म
शक्तियाँ। व्युत्पत्ति: इन्द्रिय + अधिष्ठातृ (शासक) + देवता। क्रमवार: (इन्द्रिय) द्वार, (अधिष्ठातृ) स्वामी।

2220. • ब्रह्म-सन्निधि-अनुभव - ब्रह्म की निकटता का अहसास। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + सन्निधि (समीपता) + अनुभव। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (सन्निधि) सानिध्य।

2221. • तप-प्रतिष्ठा-साधना - तपस्या को ही अपनी नींव बनाना। व्युत्पत्ति: तप
+ प्रतिष्ठा (नींव/आधार) + साधना। क्रमवार: (तप) एकाग्रता, (प्रतिष्ठा) आधार।

2222. • सर्व-भूत-आत्म-भाव - सब प्राणियों में अपनी ही आत्मा को देखना।
व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + भूत (प्राणी) + आत्म + भाव। क्रमवार: (सर्व-भूत)
जगत्, (आत्म-भाव) एकात्मता।

2223. • ब्रह्माण्ड-व्याप्ति-बोध - ब्रह्म के समस्त ब्रह्मांड में फैले होने
का ज्ञान। व्युत्पत्ति: ब्रह्माण्ड + व्याप्ति (फैलाव) + बोध। क्रमवार: (ब्रह्माण्ड) चराचर, (व्याप्ति) प्रसार।

2224. • आत्म-आनन्द-अनुभवामृत - आत्म-ज्ञान से मिलने वाला आनंद रूपी अमृत।
व्युत्पत्ति: आत्म-आनन्द + अनुभव + अमृत। क्रमवार: (आत्म-आनन्द) स्व-सुख, (अमृत) अमरता।

2225. • ब्रह्म-वित्-परम-प्राप्ति - ब्रह्म को जानने वाला परम लक्ष्य को पा
लेता है। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-वित् (ब्रह्मज्ञानी) + परम (सर्वोच्च) + प्राप्ति। क्रमवार: (ब्रह्म-वित्) ज्ञानी, (परम) मोक्ष, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2226. • केन-इषितं-प्रश्न - "किसके द्वारा प्रेरित होकर मन और प्राण कार्य
करते हैं?" यह मूल प्रश्न। व्युत्पत्ति: केन (किसके द्वारा) + इषितं (प्रेरित/प्रेषित) + प्रश्न। क्रमवार: (केन) प्रेरक, (इषितं) इच्छा/निर्देश, (प्रश्न) जिज्ञासा।

2227. • श्रोत्रस्य-श्रोत्रम - कानों को सुनने की शक्ति देने वाला (कानों का
भी कान)। व्युत्पत्ति: श्रोत्र (कान) + अस्य (इसका) + श्रोत्रम् (श्रवण-शक्ति)। क्रमवार: (श्रोत्रस्य) कान का, (श्रोत्रम्) सुनने वाला।

2228. • मनसो-मनः - मन को विचार करने की शक्ति देने वाला (मन का भी मन)।
व्युत्पत्ति: मनसः (मन का) + मनः (बुद्धि/चेतना)। क्रमवार: (मनसः) मन का, (मनः) प्रेरक।

2229. • वाचो-वाचम - वाणी को बोलने की शक्ति देने वाला (वाणी की भी वाणी)।
व्युत्पत्ति: वाचः (वाणी का) + वाचम् (शब्द/उच्चारण)। क्रमवार: (वाचः) वाणी
का, (वाचम्) स्रोत।

2230. • चक्षुषश्चक्षुः - आँखों को देखने की शक्ति देने वाला (आँखों की भी
आँख)। व्युत्पत्ति: चक्षुषः (आँख का) + चक्षुः (द्रष्टा)। क्रमवार: (चक्षुषः) आँख का, (चक्षुः) प्रकाशक।

2231. • अति-दूर-सन्निधि - जो अत्यंत दूर होकर भी (अगोचर) सबसे निकट है।
व्युत्पत्ति: अति (बहुत) + दूर + सन्निधि (निकटता)। क्रमवार: (अति-दूर) अगम्य, (सन्निधि) हृदयस्थ।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 119
2232. • विज्ञात-अविज्ञात - जिसे हम 'जानते हैं' और जिसे हम 'नहीं जानते', वह
ब्रह्म दोनों से परे है। व्युत्पत्ति: विज्ञात (ज्ञात) + अविज्ञात (अज्ञात)।
क्रमवार: (विज्ञात) बोध, (अविज्ञात) रहस्य।

2233. • ब्रह्म-सत्-उपलब्धि - ब्रह्म के अस्तित्व को अनुभव करने की
प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + सत् (अस्तित्व) + उपलब्धि (प्राप्ति)।
क्रमवार: (ब्रह्म) परमतत्व, (सत्) सत्ता, (उपलब्धि) बोध।

2234. • विदित-अविदित-भेद - ज्ञात और अज्ञात के अंतर का अतिक्रमण करना।
व्युत्पत्ति: विदित (जाना हुआ) + अविदित (अनजाना) + भेद (अंतर)। क्रमवार: (विदित) बोध, (अविदित) अबोध, (भेद) भिन्नता।

2235. • तप-दम-कर्म-साधन - ब्रह्म-विद्या के तीन मुख्य आधार (तपस्या, संयम,
कर्म)। व्युत्पत्ति: तप (तपस्या) + दम (संयम) + कर्म (अनुष्ठान)। क्रमवार: (तप) अग्नि, (दम) नियति, (कर्म) क्रिया।

2236. • सत्य-आयतना - सत्य ही जिसका आधार (घर) है। व्युत्पत्ति: सत्य + आयतन
(आश्रय/घर)। क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (आयतन) आधार।

2237. • प्राणस्य-प्राणनम् - जीवन को प्राण देने वाली जीवन-शक्ति।
व्युत्पत्ति: प्राणस्य (प्राण का) + प्राणनम् (जीवनी-शक्ति)। क्रमवार: (प्राणस्य) जीव का, (प्राणनम्) गति।

2238. • अवगन्तृ-ब्रह्म - वह ब्रह्म जो जानने वाला (ज्ञानी) है, न कि केवल
'ज्ञेय'। व्युत्पत्ति: अवगन्तृ (जानने वाला/ज्ञाता) + ब्रह्म। क्रमवार: (अवगन्तृ) दृष्टा, (ब्रह्म) आत्मतत्व।

2239. • यत्र-वाचो-निवर्तन्ते - जहाँ वाणी पहुँचकर लौट आती है (अशब्द
ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: यत्र (जहाँ) + वाचः (वाणी) + निवर्तन्ते (लौट आती है)। क्रमवार: (यत्र) ब्रह्म-पद, (वाचः) शब्द, (निवर्तन्ते) विराम।

2240. • ब्रह्म-विज्ञान-जिज्ञासा - ब्रह्म को विशेष रूप से जानने की तीव्र
इच्छा। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + विज्ञान (विशेष ज्ञान) + जिज्ञासा। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (विज्ञान) बोध, (जिज्ञासा) चाह।

2241. • देव-अहंकार-गर्व - देवताओं का यह सोचना कि "हमने विजय प्राप्त की है"।
व्युत्पत्ति: देव (अग्नि, वायु आदि) + अहंकार (अभिमान) + गर्व (अतिशय गौरव)।
क्रमवार: (देव) शक्तिशाली, (अहंकार) कर्तापन।

2242. • यक्ष-स्वरूप-दर्शन - ब्रह्म का यक्ष (अद्भुत पुरुष) के रूप में प्रकट
होना। व्युत्पत्ति: यक्ष (आश्चर्यजनक/अद्भुत) + स्वरूप + दर्शन। क्रमवार: (यक्ष) देव-अतुल, (स्वरूप) रूप, (दर्शन) साक्षात्कार।

2243. • उमा-हैमवती-विद्या - देवी उमा द्वारा (ब्रह्म-ज्ञान की जननी) ब्रह्म
का ज्ञान देना। व्युत्पत्ति: उमा (शक्ति) + हैमवती (हिमालय की पुत्री/ज्ञानदायिनी) + विद्या। क्रमवार: (उमा) ज्ञान-शक्ति, (हैमवती) गुरु- स्वरूपा।

2244. • इन्द्रिय-अधिष्ठातृ-देवता - इन्द्रियों को चलाने वाली सूक्ष्म
शक्तियाँ। व्युत्पत्ति: इन्द्रिय + अधिष्ठातृ (शासक) + देवता। क्रमवार: (इन्द्रिय) द्वार, (अधिष्ठातृ) स्वामी।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 120
2245. • ब्रह्म-सन्निधि-अनुभव - ब्रह्म की निकटता का अहसास। व्युत्पत्ति:
ब्रह्म + सन्निधि (समीपता) + अनुभव। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (सन्निधि) सानिध्य।

2246. • तप-प्रतिष्ठा-साधना - तपस्या को ही अपनी नींव बनाना। व्युत्पत्ति: तप
+ प्रतिष्ठा (नींव/आधार) + साधना। क्रमवार: (तप) एकाग्रता, (प्रतिष्ठा) आधार।

2247. • सर्व-भूत-आत्म-भाव - सब प्राणियों में अपनी ही आत्मा को देखना।
व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + भूत (प्राणी) + आत्म + भाव। क्रमवार: (सर्व-भूत)
जगत्, (आत्म-भाव) एकात्मता।

2248. • ब्रह्माण्ड-व्याप्ति-बोध - ब्रह्म के समस्त ब्रह्मांड में फैले होने
का ज्ञान। व्युत्पत्ति: ब्रह्माण्ड + व्याप्ति (फैलाव) + बोध। क्रमवार: (ब्रह्माण्ड) चराचर, (व्याप्ति) प्रसार।

2249. • आत्म-आनन्द-अनुभवामृत - आत्म-ज्ञान से मिलने वाला आनंद रूपी अमृत।
व्युत्पत्ति: आत्म-आनन्द + अनुभव + अमृत। क्रमवार: (आत्म-आनन्द) स्व-सुख, (अमृत) अमरता।

2250. • ब्रह्म-वित्-परम-प्राप्ति - ब्रह्म को जानने वाला परम लक्ष्य को पा
लेता है। व्युत्पत्ति: ब्रह्म-वित् (ब्रह्मज्ञानी) + परम (सर्वोच्च) + प्राप्ति। क्रमवार: (ब्रह्म-वित्) ज्ञानी, (परम) मोक्ष, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2251. • वाश्रवस-यज्ञ - नचिकेता के पिता द्वारा किया गया यज्ञ, जहाँ से उपनिषद
का आरम्भ होता है। व्युत्पत्ति: वाज (अन्न) + श्रवस (कीर्ति) + यज्ञ।
क्रमवार: (वाज) दान, (श्रवस) यश, (यज्ञ) अनुष्ठान।

2252. • नचिकेता-जिज्ञासा - वह बालक जिसने मृत्यु के देवता से 'आत्म-रहस्य'
जानने का वरदान मांगा। व्युत्पत्ति: न (नहीं) + चिकेत (जानना - अजान/अनभिज्ञ जिज्ञासु)। क्रमवार: (न) निषेध, (चिकेत) ज्ञात-अज्ञात के बीच का जिज्ञासु।

2253. • यम-धर्मराज - मृत्यु के अधिपति, जो नचिकेता के गुरु बने।
व्युत्पत्ति: यम (नियम/संयम) + धर्म (कर्तव्य) + राज (स्वामी)। क्रमवार: (यम) संयमी, (धर्मराज) न्याय-नियंता।

2254. • श्रेय-मार्ग - वह मार्ग जो मोक्ष और परमानंद की ओर ले जाता है
(कल्याणकारी)। व्युत्पत्ति: श्री (कल्याण) + य (जो)। क्रमवार: (श्रेय) शुभ, (मार्ग) पंथ।

2255. • प्रेय-मार्ग - वह मार्ग जो इंद्रिय-सुख और क्षणिक आनंद देता है
(प्रिय)। व्युत्पत्ति: प्री (प्रसन्नता) + य (जो)। क्रमवार: (प्रेय) सुखद, (मार्ग) मोह-पंथ।

2256. • रथ-रूपक-साधना - शरीर को रथ मानकर जीवन का दार्शनिक विश्लेषण।
व्युत्पत्ति: रथ (वाहन) + रूपक (प्रतीक)। क्रमवार: (रथ) शरीर, (रूपक)
दृष्टान्त।

2257. • आत्मा-रथी - शरीर रूपी रथ पर सवार वह चेतना जो गंतव्य की ओर जा रही है।
व्युत्पत्ति: आत्मन् (स्व) + रथी (रथ-स्वामी)। क्रमवार: (आत्मा) चेतन, (रथी) सवार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 121
2258. • बुद्धि-सारथि - विवेक रूपी सारथी जो रथ को सही दिशा में ले जाता है।
व्युत्पत्ति: बुद्धि (विवेक) + सारथि (चालक)। क्रमवार: (बुद्धि) प्रज्ञा, (सारथि) नियंता।

2259. • मनः-प्रग्रह - मन रूपी लगाम, जिसे वश में करना आवश्यक है।
व्युत्पत्ति: मनः (मन) + प्रग्रह (लगाम/नियंत्रण)। क्रमवार: (मनः) मानस, (प्रग्रह) नियंत्रण-डोर।

2260. • इन्द्रिय-अश्व - पाँचों इन्द्रियाँ जो विषय-भोग की ओर दौड़ती हैं।
व्युत्पत्ति: इन्द्रिय (द्वार) + अश्व (घोड़े)। क्रमवार: (इन्द्रिय) द्वार, (अश्व) गतिमान-शक्ति।

2261. • विषय-गोचर - इन्द्रिय-रूपी घोड़ों के घूमने का क्षेत्र (सांसारिक
वस्तुएँ)। व्युत्पत्ति: विषय (भोग्य) + गोचर (विचरण-क्षेत्र)। क्रमवार:
(विषय) पदार्थ, (गोचर) कार्यक्षेत्र।

2262. • अणोरणीयान् - जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है (परमाणु से भी छोटा)।
व्युत्पत्ति: अणोः (परमाणु से) + अणीयान् (अधिक सूक्ष्म)। क्रमवार: (अणोः) सूक्ष्म, (अणीयान्) अत्यंत-सूक्ष्म।

2263. • महतो-महीयान् - जो महान से भी महान है। व्युत्पत्ति: महतः (महान से) +
महीयान् (अधिक बड़ा)। क्रमवार: (महतः) विशाल, (महीयान्) व्यापक।

2264. • हृदय-गुहा-स्थित - आत्मा जो हृदय रूपी गुफा में छिपी है।
व्युत्पत्ति: हृदय + गुहा (छिपी हुई जगह) + स्थित (विद्यमान)। क्रमवार: (हृदय) मन का स्थान, (गुहा) गुप्त-स्थल, (स्थित) अवस्थित।

2265. • विज्ञान-सारथि-बोध - जिसकी बुद्धि (सारथी) जाग्रत है, उसका बोध।
व्युत्पत्ति: विज्ञान (विशेष ज्ञान) + सारथि (नियंता) + बोध। क्रमवार: (विज्ञान) प्रज्ञा, (सारथि) विवेक, (बोध) ज्ञान।

2266. • परम-पद-प्राप्ति - आत्मा का वह स्थान जहाँ पहुँचकर पुनर्जन्म नहीं
होता। व्युत्पत्ति: परम (सर्वोच्च) + पद (स्थान) + प्राप्ति। क्रमवार: (परम) मोक्ष, (पद) ध्येय, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2267. • विषाद-योग-क्षय - शोक और मोह का अंत करने का उपाय। व्युत्पत्ति: विषाद
(शोक) + योग (मिलन/युक्ति) + क्षय (अंत)। क्रमवार: (विषाद) दुख, (योग)
प्रक्रिया, (क्षय) समापन।

2268. • क्षुरस्य-धारा - सत्य का मार्ग 'क्षुर' (उस्तरे) की धार जैसा कठिन है।
व्युत्पत्ति: क्षुर (उस्तरा) + धारा (धार)। क्रमवार: (क्षुर) तेज-धार, (धारा) कठिन-मार्ग।

2269. • शब्द-ब्रह्म-ॐकार - वह दिव्य ध्वनि जो ब्रह्म का प्रतीक है।
व्युत्पत्ति: शब्द (ध्वनि) + ब्रह्म + ॐकार। क्रमवार: (शब्द-ब्रह्म) नाद, (ॐकार) आदि-स्वर।

2270. • अक्षर-तत्व - वह जो कभी नष्ट नहीं होता (आत्मा)। व्युत्पत्ति: अ (नहीं)
+ क्षर (नष्ट होना)। क्रमवार: (अक्षर) अविनाशी, (तत्व) पदार्थ।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 122
2271. • आश्चर्यो-वक्ता - ब्रह्म-विद्या का उपदेशक वही है, जो स्वयं
आश्चर्यजनक (सिद्ध) है। व्युत्पत्ति: आश्चर्य (अद्भुत) + वक्ता (वक्ता)।
क्रमवार: (आश्चर्य) विलक्षण, (वक्ता) गुरु।

2272. • अनुशिष्ट-बोध - वह ज्ञान जो गुरु के अनुशासन से प्राप्त होता है।
व्युत्पत्ति: अनु (पश्चात्) + शिष्ट (अनुशासन/शिक्षा)। क्रमवार: (अनुशिष्ट) शिक्षित, (बोध) ज्ञान।

2273. • ऋत-पा-आत्मा - जो कर्मों के फल (ऋत) का भोक्ता होकर भी उनसे परे है।
व्युत्पत्ति: ऋत (सत्य/नियम) + पा (पीने वाला/भोक्ता)। क्रमवार: (ऋत) विधान, (पा) अनुभव-कर्ता।

2274. • गूढ़-अनुप्रविष्ट - आत्मा जो शरीर में गहरे छिपी हुई है। व्युत्पत्ति:
गूढ़ (रहस्यमयी) + अनुप्रविष्ट (भीतर प्रवेश किया हुआ)। क्रमवार: (गूढ़) रहस्य, (अनुप्रविष्ट) समाहित।

2275. • अमृतत्व-प्रदायिनी - जो अमरता प्रदान करने वाली विद्या है।
व्युत्पत्ति: अमृतत्व (अमरता) + प्रदायिनी (देने वाली)। क्रमवार: (अमृतत्व) मोक्ष, (प्रदायिनी) दाता।

2276. • ईशावास्यम् - जो कुछ भी जगत में है, वह ईश्वर से व्याप्त है।
व्युत्पत्ति: ईश (परमात्मा) + आवास्यम् (ढका हुआ/व्याप्त)। क्रमवार: (ईश) प्रभु, (आवास्यम्) व्याप्त।

2277. • त्यक्तेन-भुञ्जीथाः - त्याग के भाव से ही वस्तुओं का उपभोग करो।
व्युत्पत्ति: त्यक्त (त्याग) + भुञ्जीथाः (उपभोग करना)। क्रमवार: (त्यक्तेन) विरक्ति, (भुञ्जीथाः) उपयोग।

2278. • मा-गृधः - किसी के धन या वस्तु की लालसा मत करो। व्युत्पत्ति: मा
(नहीं) + गृधः (लालच/इच्छा)। क्रमवार: (मा) निषेध, (गृधः) लोभ।

2279. • कुर्वन्नेवेह - कर्म करते हुए ही जीवन में रहो। व्युत्पत्ति: कुर्वन्
(करते हुए) + एव (ही) + इह (यहाँ)। क्रमवार: (कुर्वन्) सक्रियता, (इह) संसार।

2280. • आत्म-हनः - आत्मा की हत्या करने वाले (जो स्वयं को नहीं पहचानते)।
व्युत्पत्ति: आत्म (स्व) + हनः (हत्यारा)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (हनः) विनाशक।

2281. • असूर्या-लोका - वे लोक जो अंधकार (अविद्या) से भरे हैं। व्युत्पत्ति:
अ (नहीं) + सूर्य (प्रकाश) + लोका (स्थान)। क्रमवार: (असूर्या) प्रकाश-हीन, (लोका) क्षेत्र।

2282. • अनेजत् - जो स्थिर है, जिसमें हलचल नहीं है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) +
एजत् (कांपना/गति)। क्रमवार: (अनेजत्) अचल, (गति) स्पंदन।

2283. • मनसो-जवीयः - जो मन से भी अधिक वेगवान है (ब्रह्म)। व्युत्पत्ति: मनसः
(मन से) + जवीयः (अधिक वेगवान)। क्रमवार: (मनसः) चिंतन, (जवीयः) तीव्र।

2284. • तदेजति तन्नैजति - वह चलता है और वह नहीं चलता (तार्किक विरोधाभास)।
व्युत्पत्ति: तत् (वह) + एजति (चलता है) + न (नहीं) + एजति (चलता)। क्रमवार: (तदेजति) सक्रिय, (तन्नैजति) स्थिर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 123
2285. • तद्दूरे तद्वन्तिके - वह दूर भी है और समीप भी। व्युत्पत्ति: तत् (वह)
+ दूरे (दूर) + अन्तिके (निकट)। क्रमवार: (दूरे) अप्राप्य, (अन्तिके) हृदयस्थ।

2286. • सर्वस्य-अन्तरा - जो सब कुछ के भीतर विद्यमान है। व्युत्पत्ति:
सर्वस्य (सबके) + अन्तरा (भीतर)। क्रमवार: (सर्वस्य) पूर्ण, (अन्तरा) अंतःस्थ।

2287. • सर्वस्य-बाह्यतः - जो सब कुछ के बाहर भी है। व्युत्पत्ति: सर्वस्य
(सबके) + बाह्यतः (बाहर)। क्रमवार: (बाह्यतः) व्यापक।

2288. • सर्व-भूतानि - समस्त प्राणी और सृष्टि। व्युत्पत्ति: सर्व (सभी) +
भूतानि (होने वाले/प्राणी)। क्रमवार: (सर्व) सकल, (भूतानि) जीव।

2289. • एकत्व-अनुपश्यतः - जो सबमें एक को ही देखता है। व्युत्पत्ति: एकत्व
(एकता) + अनुपश्यतः (देखने वाला)। क्रमवार: (एकत्व) अभेद, (अनुपश्यतः) दृष्टा।

2290. • मोहः-शोकः - भ्रम और दुख (जो आत्म-ज्ञान से नष्ट होते हैं)।
व्युत्पत्ति: मोह (भ्रम) + शोक (दुख)। क्रमवार: (मोह) अविद्या, (शोक) विषाद।

2291. • परिगात् - जो सर्वत्र व्याप्त (परम-गति) है। व्युत्पत्ति: परि (चारों
ओर) + गात् (गया हुआ/व्याप्त)। क्रमवार: (परिगात्) सर्वव्यापी।

2292. • शुक्रम् - जो शुद्ध और प्रकाशमान है। व्युत्पत्ति: शुचि (शुद्ध) +
क्रम (गति/रूप)। क्रमवार: (शुक्रम्) पवित्र-तेज।

2293. • अकायम् - जिसका कोई स्थूल शरीर नहीं है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) +
कायम् (शरीर)। क्रमवार: (अकायम्) अशरीरी।

2294. • अव्रणम् - जो घाव या दोष से रहित है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + व्रणम्
(घाव/दोष)। क्रमवार: (अव्रणम्) निष्कलंक।

2295. • अस्नाविरम् - जिसमें नाड़ियाँ या बंधन नहीं हैं। व्युत्पत्ति: अ
(नहीं) + स्नाविरम् (सिरा/बंधन)। क्रमवार: (अस्नाविरम्) बन्धन-रहित।

2296. • शुद्धम् - जो पूर्णतः पवित्र है। व्युत्पत्ति: शुध् (पवित्र करना)।
क्रमवार: (शुद्धम्) निर्मल।

2297. • अपापविद्धम् - जो पाप या दोष से स्पर्श नहीं किया गया है।
व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + पाप (बुराई) + विद्धम् (छिदा हुआ/छुआ हुआ)। क्रमवार: (अपापविद्धम्) निष्पाप।

2298. • कविः - जो सर्वज्ञ और दृष्टा है (क्रांतदर्शी)। व्युत्पत्ति: का
(देखना/प्रकाश) + वि (विशेष)। क्रमवार: (कविः) त्रिकालदर्शी।

2299. • मनीषी - जो मन का स्वामी (विवेकवान) है। व्युत्पत्ति: मनस् (मन) + ईश
(स्वामी)। क्रमवार: (मनीषी) विद्वान।

2300. • स्वयम्भूः - जो स्वयं से उत्पन्न हुआ है (अजन्मा)। व्युत्पत्ति:
स्वयम् (अपने आप) + भूः (उत्पन्न)। क्रमवार: (स्वयम्भूः) अनादि-तत्व।

2301. अविद्या - कर्मकांड और सांसारिक ज्ञान, जो मृत्यु के भय को मिटाने के लिए आवश्यक है।
व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + विद्या (ज्ञान)। क्रमवार: (अविद्या) अज्ञान-स्तर, (साधना) कर्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 124
2302. विद्या - वास्तविक आत्म-ज्ञान, जो अमृतत्व की ओर ले जाता है। व्युत्पत्ति: विद्
(जानना)। क्रमवार: (विद्या) आत्मबोध, (साधना) उपासना।

2303. मृत्यु-तितीर्षा - मृत्यु को पार करने की तीव्र इच्छा। व्युत्पत्ति: मृत्यु +
तितीर्षा (पार करने की इच्छा)। क्रमवार: (मृत्यु) विनाश, (तितीर्षा) तरने की चाह।

2304. सम्भूति - उत्पत्ति, सृष्टि या अभिव्यक्त जगत। व्युत्पत्ति: सम् (सम्यक/पूर्ण) +
भूति (होना/उत्पत्ति)। क्रमवार: (सम्भूति) सृजन, (तत्व) कार्य-ब्रह्म।

2305. असम्भूति - अनभिव्यक्त या प्रलय की अवस्था (अविनाशी तत्व)। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) +
सम्भूति। क्रमवार: (असम्भूति) प्रलय, (तत्व) कारण-ब्रह्म।

2306. विनाशेन-मृत्यं - भौतिक जगत (विनाश) के माध्यम से मृत्यु को जीतना। व्युत्पत्ति:
विनाश (नष्ट होना) + मृत्यु (नाश)। क्रमवार: (विनाशेन) नश्वरता, (मृत्यं) मरण।

2307. हिरण्यमयं-पात्रम् - वह 'स्वर्ण-पात्र' (जगत का आकर्षण) जो सत्य को ढके हुए है।
व्युत्पत्ति: हिरण्य (स्वर्ण/प्रकाश) + मयं (मय/युक्त) + पात्रम् (पात्र)। क्रमवार: (हिरण्यमयं) तेजोमय, (पात्रम्) आवरण।

2308. सत्यस्य-अपीहितम् - जो सत्य को ढके हुए (आच्छादित) है। व्युत्पत्ति: सत्यस्य (सत्य
का) + अपीहितम् (ढका हुआ)। क्रमवार: (सत्यस्य) यथार्थ, (अपीहितम्) आच्छादित।

2309. पूषन् - सूर्य (हे पोषक!), जो जगत का पोषण करता है। व्युत्पत्ति: पूष् (पोषण करना)।
क्रमवार: (पूषन्) पोषणकर्ता।

2310. एकर्षे - हे एकमात्र दृष्टा (अकेले चलने वाले/सूर्य)! व्युत्पत्ति: एक (अद्वितीय) +
ऋषे (ऋषि/द्रष्टा)। क्रमवार: (एकर्षे) एकाकी-द्रष्टा।

2311. यम-सूर्य - हे नियंत्रण करने वाले सूर्य! (यहाँ यम का अर्थ है नियन्त्रक)।
व्युत्पत्ति: यम् (नियंत्रण करना)। क्रमवार: (यम) नियामक, (सूर्य) प्रकाशक।

2312. प्राजापत्य - प्रजापति (ब्रह्मा/सृष्टिकर्ता) की संतान। व्युत्पत्ति: प्रजापति + अ
(अपत्य/संतान)। क्रमवार: (प्राजापत्य) सृष्ट-संतति।

2313. व्यूह-रश्मीन - अपनी किरणों को समेट लो (हे सूर्य!)। व्युत्पत्ति: व्यूह
(समेटना/हटाना) + रश्मीन (किरणें)। क्रमवार: (व्यूह) संकोच, (रश्मीन) प्रकाश-पुंज।

2314. तेजः-रूपम् - वह कल्याणकारी रूप, जो आपका तेज है। व्युत्पत्ति: तेजः (प्रकाश/बल) +
रूपम् (स्वरूप)। क्रमवार: (तेजः) कांति, (रूपम्) आकार।

2315. कल्याणतमम् - सबसे अधिक शुभ (मंगलकारी)। व्युत्पत्ति: कल्याण + तमम् (अतिशय)।
क्रमवार: (कल्याणतमम्) मंगलमयी।

2316. सोऽहमस्मि - वह जो 'मैं' हूँ (ब्रह्म-एकत्व)। व्युत्पत्ति: सः (वह) + अहम् (मैं) +
अस्मि (हूँ)। क्रमवार: (सोऽहमस्मि) तादात्म्य।

2317. वायुरनिलम् - वह वायु (प्राण) जो अमर है। व्युत्पत्ति: वायु + अनिलम् (गतिशील/अमर)।
क्रमवार: (वायुरनिलम्) नश्वर-शरीर का अमर-प्राण।

2318. अमृतम्-अथ - अब यह शरीर भस्म होने योग्य है। व्युत्पत्ति: अमृतम् (अमर तत्व) + अथ
(अब)। क्रमवार: (अमृतम्) आत्मा, (अथ) काल।

2319. भस्मान्तम्-शरीरम् - यह शरीर भस्म (राख) तक सीमित है। व्युत्पत्ति: भस्म (राख) +
अन्तम् (अंत) + शरीरम्। क्रमवार: (भस्मान्तम्) नश्वरता, (शरीरम्) देह।

2320. क्रतो-स्मर - हे संकल्प! (स्मरण कर)। व्युत्पत्ति: क्रतो (संकल्प/प्रयत्न) + स्मर
(याद कर)। क्रमवार: (क्रतो) कर्म-संकल्प, (स्मर) स्मृति।

2321. कृतं-स्मर - जो कर्म किए हैं, उनका स्मरण कर। व्युत्पत्ति: कृतम् (किया हुआ) + स्मर।
क्रमवार: (कृतम्) अनुष्ठान, (स्मर) याद।

2322. अग्ने-नय - हे अग्नि (प्रकाश)! हमें ले चलो। व्युत्पत्ति: अग्ने (अग्नि/देवता) + नय
(ले चलो)। क्रमवार: (अग्ने) पथ-प्रदर्शक, (नय) गमन।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 125
2323. सुपथा - अच्छे (कल्याणकारी) मार्ग से। व्युत्पत्ति: सु (अच्छा) + पथा (मार्ग)।
क्रमवार: (सुपथा) श्रेष्ठ-पथ।

2324. राये - धन (यहाँ आध्यात्मिक ऐश्वर्य/सत्य) की प्राप्ति के लिए। व्युत्पत्ति: राय
(ऐश्वर्य/धन)। क्रमवार: (राये) वैभव-प्राप्ति।

2325. अहस्कर - दिन को बनाने वाला (दिनकर)। व्युत्पत्ति: अहः (दिन) + कर (बनाने वाला)।
क्रमवार: (अहस्कर) सूर्य, (कार्य) प्रकाशन।

2326. • प्रश्नोपनिषद - छह ऋषियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर आधारित ज्ञान-
ग्रंथ। व्युत्पत्ति: प्रश्न (जिज्ञासा) + उप (समीप) + नि (निश्चय) + सद् (बैठना)। क्रमवार: (प्रश्न) जिज्ञासा, (उपनिषद) गुरु-सानिध्य-ज्ञान।

2327. • पिप्पलाद-ऋषि - ज्ञान के महासागर, जिन्होंने ब्रह्म-विद्या का उपदेश
दिया। व्युत्पत्ति: पिप्पल (पीपल/ज्ञान-वृक्ष) + अद (खाने वाला/ज्ञान का सार ग्रहण करने वाला)। क्रमवार: (पिप्पल) बोध-वृक्ष, (अद) ज्ञाता।

2328. • रयि-तत्व - जड़, भौतिक या पदार्थ तत्व जो सृष्टि का आधार है।
व्युत्पत्ति: रयि (धन/पदार्थ/जड़त्व)। क्रमवार: (रयि) भौतिक-आधार, (तत्व) पदार्थ।

2329. • प्राण-तत्व - वह चेतना या जीवनी शक्ति जो जड़ (रयि) को सक्रिय करती है।
व्युत्पत्ति: प्र + अन (श्वास लेना/जीवित रहना)। क्रमवार: (प्राण) जीवन-शक्ति, (तत्व) चैतन्य।

2330. • प्रजापति-सृष्टि - सृजनकर्ता ब्रह्मा द्वारा रची गई द्वैत (रयि-
प्राण) की सृष्टि। व्युत्पत्ति: प्रजा (सृष्टि) + पति (स्वामी)। क्रमवार: (प्रजापति) विधाता, (सृष्टि) जगत।

2331. • अयन-द्वय - वर्ष के दो भाग (उत्तरायण और दक्षिणायन) जो कर्म-मार्ग और
ज्ञान-मार्ग के प्रतीक हैं। व्युत्पत्ति: अयन (गमन का मार्ग)। क्रमवार: (अयन) मार्ग, (द्वय) दो।

2332. • आदित्य-काल - सूर्य, जो काल (समय) और आत्मा का स्वरूप है। व्युत्पत्ति:
अदिति (अखंडता) + य (संबंधी)। क्रमवार: (आदित्य) सूर्य-शक्ति, (काल) समय-चक्र।

2333. • सोम-अमृत - चंद्रमा, जो रयि (पदार्थ) और रस का प्रतीक है। व्युत्पत्ति:
सु (रस निकालना) + म। क्रमवार: (सोम) चंद्र, (अमृत) पोषण-रस।

2334. • संवत्सर-चक्र - बारह महीनों का चक्र (वर्ष), जो प्रजापति का स्वरूप
है। व्युत्पत्ति: सम् (साथ) + वत्सर (वर्ष)। क्रमवार: (संवत्सर) वर्ष, (चक्र) समय-गति।

2335. • पंच-भूत-प्रलय - शरीर के पाँच तत्वों का वापस अपने स्रोतों में विलीन
होना। व्युत्पत्ति: पञ्च (पाँच) + भूत (तत्व) + प्रलय (विलय)। क्रमवार: (पंच-भूत) भौतिक-तत्व, (प्रलय) अंत।

2336. • षोडश-कला - वे सोलह अंश (अवस्थाएँ/शक्तियाँ) जिनसे पुरुष (आत्मा)
युक्त है। व्युत्पत्ति: षोडश (सोलह) + कला (अंश)। क्रमवार: (षोडश) १६, (कला) ऊर्जा-केंद्र।

2337. • पुरुष-सृष्टि-द्रष्टा - वह आत्मा जो देह में रहकर भी निराकार है।
व्युत्पत्ति: पुर् (पुरी/शरीर) + उष (रहने वाला)। क्रमवार: (पुरुष) आत्म-चेतन, (द्रष्टा) साक्षी।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 126
2338. • नाम-रूप-व्याकरण - जगत में वस्तुओं के नाम और आकार का निर्धारण। व्युत्पत्ति: नाम (संज्ञा) + रूप (आकृति) + व्याकरण (विभाजन)। क्रमवार: (नाम-रूप) प्रतीति, (व्याकरण) परिभाषा।

2339. • सुषुप्ति-ज्ञान - वह अवस्था जहाँ मन भी प्राण में लीन हो जाता है।
व्युत्पत्ति: सु (अच्छी तरह) + स्वप् (सोना)। क्रमवार: (सुषुप्ति) गहन-
विश्राम, (ज्ञान) बोध।

2340. • ओम्-प्रणव - सर्वोच्च अक्षर, जो ब्रह्म का प्रत्यक्ष स्वरूप है।
व्युत्पत्ति: प्र (प्रकृष्ट) + नु (स्तुति करना)। क्रमवार: (ओम्) ॐ-ध्वनि, (प्रणव) ब्रह्म-प्रतीक।

2341. • ब्रह्म-लोक-गति - वह अवस्था जहाँ प्राण ब्रह्म में एकाकार हो जाते हैं। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + लोक (अवस्था) + गति (पहुँच)। क्रमवार: (ब्रह्म-लोक) परम-पद, (गति) प्राप्ति।

2342. • आत्मा-शुद्ध - निश्कल पुरुष, जो निर्विकार और शाश्वत है।
व्युत्पत्ति: नि (बिना) + कल (कला/अंश)। क्रमवार: (आत्मा) चेतन, (शुद्ध) निष्कलंक।

2343. • छाया-पुरुष - शरीर (देह) जो आत्मा की छाया की तरह है। व्युत्पत्ति: छाया (प्रतिबिंब) + पुरुष। क्रमवार: (छाया) नश्वर-रूप, (पुरुष) सत्य-तत्व।

2344. • हृदय-नाड़ी - वह सूक्ष्म मार्ग जिससे आत्मा शरीर छोड़ती है।
व्युत्पत्ति: हृदय (केंद्र) + नाड़ी (मार्ग)। क्रमवार: (हृदय) प्रवेश-द्वार, (नाड़ी) ऊर्जा-पथ।

2345. • अमृतत्व-मार्ग - वह राह जो मृत्यु के भय को मिटा देती है।
व्युत्पत्ति: अमृतत्व (अमरता) + मार्ग। क्रमवार: (अमृतत्व) मोक्ष, (मार्ग)
पंथ।

2346. • देह-विमुक्त - वह स्थिति जहाँ आत्मा देह से पूरी तरह स्वतंत्र हो जाती है। व्युत्पत्ति: देह (शरीर) + वि (विशेष) + मुक्त (स्वतंत्र)। क्रमवार: (देह) आवरण, (विमुक्त) पूर्ण-स्वतंत्रता।

2347. • प्राण-आधार - समस्त जगत का अधिष्ठान जो प्राण है। व्युत्पत्ति: प्राण (ऊर्जा) + आधार (नींव)। क्रमवार: (प्राण) शक्ति, (आधार) केंद्र।

2348. • आत्म-वेत्ता - वह ज्ञानी जो आत्मा को जान चुका है। व्युत्पत्ति: आत्म + वेत्ता (जानने वाला)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (वेत्ता) ज्ञाता।

2349. • सर्व-वेद-सार - वेदों और उपनिषदों के ज्ञान का निचोड़ (परब्रह्म)।
व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + वेद (ज्ञान) + सार (मर्म)। क्रमवार: (सर्व-वेद) ज्ञान-संपदा, (सार) निचोड़।

2350. • अविनाशी-तत्व - जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है (आत्मा)।
व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + विनाशी (नष्ट होने वाला)। क्रमवार: (अविनाशी) शाश्वत, (तत्व) परमतत्व।

2351. • तैत्तिरीय-उपनिषद - कृष्ण यजुर्वेद का उपनिषद, जो शिक्षा और आनंद पर आधारित है। व्युत्पत्ति: तित्तिरि (ऋषि) + ईय (संबंधी/शिष्य-परम्परा)।
क्रमवार: (तित्तिरि) मुनि-नाम, (उपनिषद) ज्ञान-ग्रंथ।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 127
2352. • शिक्षा-वल्ली - इस उपनिषद का प्रथम भाग, जिसमें आचार-विचार और शिक्षा
का वर्णन है। व्युत्पत्ति: शिक्षा (सीखना) + वल्ली (लता/अध्याय)। क्रमवार: (शिक्षा) शिक्षण, (वल्ली) अध्याय।

2353. • आनंद-वल्ली - दूसरा भाग, जो आत्मा के आनंदमय स्वरूप का प्रतिपादन करता
है। व्युत्पत्ति: आनंद (परमसुख) + वल्ली। क्रमवार: (आनंद) परमसंतोष, (वल्ली) अध्याय।

2354. • भृगु-वल्ली - तीसरा भाग, जिसमें भृगु ऋषि ने तपस्या द्वारा ब्रह्म का
साक्षात्कार किया। व्युत्पत्ति: भृगु (ऋषि-नाम) + वल्ली। क्रमवार: (भृगु)
मुनि, (वल्ली) अध्याय।

2355. • अन्नमय-कोश - स्थूल शरीर, जो अन्न से बना है (प्रथम कोश)। व्युत्पत्ति:
अन्न (भोजन) + मय (बना हुआ) + कोश (आवरण)। क्रमवार: (अन्नमय) भौतिक-देह, (कोश) आवरण।

2356. • प्राणमय-कोश - श्वास और जीवनी शक्ति का सूक्ष्म आवरण (द्वितीय कोश)।
व्युत्पत्ति: प्राण (वायु) + मय + कोश। क्रमवार: (प्राणमय) प्राण-ऊर्जा, (कोश) आवरण।

2357. • मनोमय-कोश - मन और विचारों का सूक्ष्म आवरण (तृतीय कोश)। व्युत्पत्ति:
मनस् (विचार) + मय + कोश। क्रमवार: (मनोमय) मानस, (कोश) आवरण।

2358. • विज्ञानमय-कोश - बुद्धि और निर्णय शक्ति का आवरण (चतुर्थ कोश)।
व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + ज्ञा (जानना) + मय + कोश। क्रमवार: (विज्ञानमय) बौद्धिक, (कोश) आवरण।

2359. • आनंदमय-कोश - सुख और पूर्णता का कारण-शरीर (पंचम कोश)। व्युत्पत्ति:
आनंद (परमसुख) + मय + कोश। क्रमवार: (आनंदमय) परमानंद, (कोश) आवरण।

2360. • सत्यं-ज्ञानं-अनन्तं-ब्रह्म - ब्रह्म की परिभाषा (सत्य, ज्ञान और
अनंत)। व्युत्पत्ति: सत्यम् (अबाधित) + ज्ञानम् (बोध) + अनन्तम् (सीमा-रहित)।
क्रमवार: (सत्य) यथार्थ, (ज्ञान) बोध, (अनंत) असीम।

2361. • सृष्टि-क्रम - ब्रह्म से पंच-तत्वों की उत्पत्ति का वैज्ञानिक क्रम।
व्युत्पत्ति: सृष्टि (निर्माण) + क्रम (अनुक्रम)। क्रमवार: (सृष्टि) जगत, (क्रम) प्रक्रिया।

2362. • आकाश-तत्व - ब्रह्म से सर्वप्रथम उत्पन्न सूक्ष्म आकाश।
व्युत्पत्ति: आ + काश (प्रकाशित होना/विस्तार)। क्रमवार: (आकाश) शून्य, (तत्व) सूक्ष्म।

2363. • वायु-तत्व - आकाश से उत्पन्न स्पंदन या गति। व्युत्पत्ति: वा (गति
करना) + यू (प्रत्यय)। क्रमवार: (वायु) चल-तत्व, (तत्व) शक्ति।

2364. • अग्नि-तत्व - वायु से उत्पन्न तेज या ऊष्मा। व्युत्पत्ति: अग् (गति) +
नि (नेतृत्व)। क्रमवार: (अग्नि) ताप, (तत्व) ऊर्जा।

2365. • आपः-तत्व - अग्नि से उत्पन्न जल (तरलता)। व्युत्पत्ति: आप (व्याप्त
होना)। क्रमवार: (आपः) द्रव, (तत्व) आधार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 128
2366. • पृथिवी-तत्व - जल से उत्पन्न ठोस तत्व। व्युत्पत्ति: पृथु (विस्तृत)।
क्रमवार: (पृथिवी) धरा, (तत्व) आधार।

2367. • अन्न-ब्रह्म - अन्न को ही ब्रह्म मानने का भाव (पालनकर्ता)।
व्युत्पत्ति: अन्न (भोजन) + ब्रह्म। क्रमवार: (अन्न) पोषण, (ब्रह्म) ईश्वर।

2368. • तप-साधना - ब्रह्म को जानने का एकमात्र साधन। व्युत्पत्ति: तप
(तपना/एकाग्र होना)। क्रमवार: (तप) एकाग्रता।

2369. • अहं-अन्नम् - "मैं ही अन्न हूँ, मैं ही अन्न का भोक्ता हूँ" (ज्ञानी का
अनुभव)। व्युत्पत्ति: अहं (मैं) + अन्नम् (भोजन)। क्रमवार: (अहं) आत्म-बोध, (अन्नम्) भोग्य।

2370. • आनंद-मीमांसा - आनंद के विभिन्न स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन।
व्युत्पत्ति: आनंद + मीमांसा (विचार-विमर्श)। क्रमवार: (आनंद) परमानंद, (मीमांसा) चिंतन।

2371. • मनुष्य-आनंद - एक समर्थ मनुष्य का लौकिक आनंद (मानक इकाई)।
व्युत्पत्ति: मनुष्य + आनंद। क्रमवार: (मनुष्य) मानवी, (आनंद) सुख।

2372. • गंधर्व-आनंद - मनुष्य से शत-गुण अधिक आनंद वाली दिव्य अवस्था।
व्युत्पत्ति: गंधर्व (स्वर्ग के गायक) + आनंद। क्रमवार: (गंधर्व) दिव्य-गायक, (आनंद) स्वर्गीय-सुख।

2373. • पितृ-आनंद - गंधर्व से भी उच्च आनंद की अवस्था। व्युत्पत्ति: पितृ
(पूर्वज/लोक) + आनंद। क्रमवार: (पितृ) लोक-विशेष, (आनंद) उच्च-सुख।

2374. • ब्रह्मानंद - समस्त आनंद का स्रोत, जो असीम है। व्युत्पत्ति: ब्रह्म
+ आनंद। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (आनंद) पूर्णता।

2375. • सर्वात्म-भाव - "मैं ही सब कुछ हूँ" - यह सर्वोच्च बोध। व्युत्पत्ति:
सर्व (सब) + आत्म (स्व) + भाव (अवस्था)। क्रमवार: (सर्वात्म) विश्वरूप, (भाव) बोध।

2376. • ऐतरेय-उपनिषद - ऋग्वेद के ऐतरेय आरण्यक का भाग, जो आत्म-स्वरूप को
स्पष्ट करता है। व्युत्पत्ति: इतरा (माता का नाम) + एय (पुत्र/संबंधी)।
क्रमवार: (ऐतरेय) ऋषि-नाम, (उपनिषद) ज्ञान-ग्रंथ।

2377. • आत्म-इदम्-एकम् - प्रारंभ में केवल आत्मा ही था, दूसरा कुछ नहीं था।
व्युत्पत्ति: आत्म (स्व) + इदम् (यह) + एकम् (एक)। क्रमवार: (आत्म) चैतन्य, (एकम्) अद्वैत।

2378. • ईक्षत - उसने (आत्मा ने) संकल्प किया या 'देखा' (सृष्टि के लिए)।
व्युत्पत्ति: ईक्ष् (देखना/संकल्प करना)। क्रमवार: (ईक्षत) सृजन-संकल्प।

2379. • लोकाः-सृष्टि - आत्मा ने भिन्न-भिन्न लोकों की रचना की। व्युत्पत्ति:
लोक (स्थान/जगत)। क्रमवार: (लोकाः) संसार, (सृष्टि) निर्माण।

2380. • अम्भः-सलील - सृष्टि से पूर्व व्याप्त जल (सृष्टि का बीज)।
व्युत्पत्ति: अम्भः (जल) + सलील (तरल/अगाध)। क्रमवार: (अम्भः) कारण-जल, (सलील) अगाध।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 129
2381. • मरीचि-तेज - प्रकाश की किरणें, जिनसे लोक बने। व्युत्पत्ति: मरीचि
(किरण/प्रकाश)। क्रमवार: (मरीचि) रश्मि, (तेज) दीप्ति।

2382. • मरः-मृत्यु - वह जो प्रकाश के पीछे का अंधकार या विनाश है।
व्युत्पत्ति: मृ (मरना/मिटना)। क्रमवार: (मरः) विनाशक, (मृत्यु) अंत।

2383. • आपः-आधार - जल (सृष्टि का निम्न स्तर)। व्युत्पत्ति: आप (व्याप्त
होना)। क्रमवार: (आपः) आधार-जल।

2384. • पुरुष-सृजन - आत्मा ने 'पुरुष' (विराट रूप) का सृजन किया। व्युत्पत्ति:
पुर् (पुरी/देह) + उष (रहने वाला)। क्रमवार: (पुरुष) आदि-पुरुष, (सृजन) रचना।

2385. • मुख-वाक् - विराट पुरुष के मुख से 'वाणी' (वाक्) निकली। व्युत्पत्ति:
मुख (द्वार) + वाक् (शब्द-शक्ति)। क्रमवार: (मुख) प्रवेश-द्वार, (वाक्)
इंद्रिय।

2386. • नासिका-प्राण - नाक से प्राण (श्वास) का उद्भव हुआ। व्युत्पत्ति:
नासिका (नाक) + प्राण (जीवन)। क्रमवार: (नासिका) द्वार, (प्राण) शक्ति।

2387. • अक्षि-चक्षु - आँखों से दृष्टि (चक्षु) उत्पन्न हुई। व्युत्पत्ति:
अक्षि (नेत्र) + चक्षु (प्रकाश)। क्रमवार: (अक्षि) गोलक, (चक्षु) इंद्रिय।

2388. • कर्ण-श्रोत्र - कानों से श्रवण (श्रोत्र) की शक्ति बनी। व्युत्पत्ति:
कर्ण (कान) + श्रोत्र (सुनना)। क्रमवार: (कर्ण) अंग, (श्रोत्र) बोध-शक्ति।

2389. • त्वक्-लोम - त्वचा से स्पर्श और रोम उत्पन्न हुए। व्युत्पत्ति: त्वक्
(चमड़ा/स्पर्श) + लोम (बाल)। क्रमवार: (त्वक्) आवरण, (लोम) लक्षण।

2390. • हृदय-मन - हृदय से मन (संकल्प करने वाली शक्ति) निकला। व्युत्पत्ति:
हृदय (केंद्र) + मन (चिंतन)। क्रमवार: (हृदय) मानस-स्थान, (मन) विचार।

2391. • नाभि-अपान - नाभि से अपान (नीचे जाने वाली ऊर्जा) उत्पन्न हुई।
व्युत्पत्ति: नाभि (केंद्र) + अपान (विसर्जन)। क्रमवार: (नाभि) शक्ति-केंद्र, (अपान) उत्सर्जन।

2392. • शिश्न-रेतः - जननेंद्रिय से प्रजनन-शक्ति (रेतः) बनी। व्युत्पत्ति:
शिश्न (अंग) + रेतः (बीज)। क्रमवार: (शिश्न) अंग, (रेतः) बीज।

2393. • प्रज्ञानं-ब्रह्म - वह चैतन्य जो समस्त ज्ञान का स्रोत है
(महावाक्य)। व्युत्पत्ति: प्रज्ञानम् (शुद्ध चेतना) + ब्रह्म। क्रमवार: (प्रज्ञानम्) बोध, (ब्रह्म) परमात्मा।

2394. • अन्न-अदन - आत्मा का भोजन (अन्न) के द्वारा शरीर का पोषण करना।
व्युत्पत्ति: अन्न (भोग्य) + अदन (खाना)। क्रमवार: (अन्न) भोग्य-पदार्थ, (अदन) उपभोग।

2395. • देह-प्रवेश - आत्मा का सीमन्त (मस्तिष्क का द्वार) खोलकर देह में
प्रवेश। व्युत्पत्ति: देह (शरीर) + प्रवेश (प्रविष्ट होना)। क्रमवार: (देह) आवास, (प्रवेश) अंतर्यामी।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 130
2396. • सीमन्त-विदारण - ब्रह्मरंध्र (मस्तक का मार्ग) का खुलना। व्युत्पत्ति: सीमन्त (सिर की रेखा) + विदारण (चीरना/खुलना)। क्रमवार: (सीमन्त) प्रवेश-पथ, (विदारण) उद्घाटन।

2397. • जन्म-त्रय - तीन जन्म: पिता के रूप में, पुत्र के रूप में और ज्ञान के रूप में। व्युत्पत्ति: जन्म (उत्पत्ति) + त्रय (तीन)। क्रमवार: (जन्म) आगमन, (त्रय) तीन-अवस्था।

2398. • वामदेव-साक्षात्कार - ऋषि वामदेव का आत्म-ज्ञान का अनुभव।
व्युत्पत्ति: वामदेव (ऋषि) + साक्षात्कार (अनुभव)। क्रमवार: (वामदेव) ज्ञाता, (साक्षात्कार) सिद्धि।

2399. • अमृतत्व-प्राप्ति - देह छोड़कर देव-लोक और ब्रह्म-लोक की प्राप्ति।
व्युत्पत्ति: अमृतत्व (अमरता) + प्राप्ति। क्रमवार: (अमृतत्व) मोक्ष, (प्राप्ति) उपलब्धि।

2400. • सर्वात्म-विस्तार - जो 'सब कुछ' होकर ही स्थित है। व्युत्पत्ति: सर्व (सब) + आत्म (आत्मा) + विस्तार (फैलाव)। क्रमवार: (सर्वात्म) विश्वरूप, (विस्तार) व्यापकता।

2401. छान्दोग्य-उपनिषद - सामवेद का उपनिषद, जो 'छन्द' (गान) और भक्ति-योग का संगम है।
व्युत्पत्ति: छन्दस् (गान/वेद) + ईय (संबंधी)। क्रमवार: (छन्दस्) साम-गान, (उपनिषद) ज्ञान-ग्रंथ।

2402. उद्गीथ - 'ओम्' का गान, जो ब्रह्मांड की आदि-ध्वनि है। व्युत्पत्ति: उत् (ऊपर) + गीथ (गान)। क्रमवार: (उद्गीथ) प्रणव-नाद, (गान) ब्रह्म-स्तुति।

2403. सामन - संगीत और सामंजस्य का प्रतीक, जो ऋचाओं को मधुर बनाता है। व्युत्पत्ति: सा (ऋचा) + अम (सामंजस्य)। क्रमवार: (सामन) लय, (लय) मधुरता।

2404. अक्षर-ओम् - वह अविनाशी ध्वनि जो समस्त ज्ञान का आधार है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + क्षर (नष्ट होना)। क्रमवार: (अक्षर) अविनाशी, (ओम्) मूल-ध्वनि।

2405. प्रस्ताव - उद्गीथ का प्रथम चरण या प्रारंभिक गान। व्युत्पत्ति: प्र (प्रकृष्ट) + स्तु (स्तुति करना)। क्रमवार: (प्रस्ताव) आरंभ, (स्तुति) गान।

2406. प्रतिहार - उद्गीथ का वह भाग जो प्राणों को धारण करने वाला है। व्युत्पत्ति: प्रति (सामने/प्रत्येक) + हृ (धारण करना)। क्रमवार: (प्रतिहार) आधार, (धारण) स्थिति।

2407. निधन - गान का अंतिम चरण (समापन/विश्राम)। व्युत्पत्ति: नि (नीचे/पूर्ण) + धा (धारण)।
क्रमवार: (निधन) अंत, (विश्राम) पूर्णता।

2408. आदित्य-महिमा - सूर्य में स्थित 'हिरण्यमयी' पुरुष का ध्यान। व्युत्पत्ति: आदित्य (सूर्य) + महिमा (तेज)। क्रमवार: (आदित्य) सौर-ऊर्जा, (महिमा) देवत्व।

2409. अमृत-स्वर्ग - वह स्थान जहाँ ओम्कार का निरंतर नाद होता है। व्युत्पत्ति: अमृत (अमर) + स्वर्ग (प्रकाश-लोक)। क्रमवार: (अमृत) शाश्वत, (स्वर्ग) लोक।

2410. सत्य-काम - वह जिसका संकल्प कभी विफल नहीं होता (ब्रह्म का लक्षण)। व्युत्पत्ति: सत्य (यथार्थ) + काम (संकल्प/इच्छा)। क्रमवार: (सत्य-काम) संकल्प-सिद्ध, (लक्षण) ब्रह्म-गुण।

2411. आकाश-नाम - ब्रह्म का नाम 'आकाश' है क्योंकि वही सबका आधार है। व्युत्पत्ति: आ + काश (प्रकाशित/विस्तृत)। क्रमवार: (आकाश) विस्तार, (नाम) ब्रह्म-संज्ञा।

2412. पंच-अग्नि-विद्या - जन्म-मरण के चक्र का वैज्ञानिक वर्णन (स्वर्ग, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष, स्त्री)। व्युत्पत्ति: पञ्च + अग्नि (रूपांतरण) + विद्या। क्रमवार: (पंच-अग्नि) चक्र-सोपान, (विद्या) ज्ञान।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 131
2413. अन्नमय-प्राण - अन्न ही प्राणों को पुष्ट करने वाला है। व्युत्पत्ति: अन्न (ऊर्जा) +
मय + प्राण (जीवन)। क्रमवार: (अन्न) पोषण, (प्राण) शक्ति।

2414. जल-अग्नि-अन्न - सृष्टि के तीन मूल तत्व जिनसे जीवन निर्मित है। व्युत्पत्ति: जल
(तरल) + अग्नि (ताप) + अन्न (स्थूल)। क्रमवार: (जल) आधार, (अग्नि) पचन, (अन्न) पुष्टि।

2415. वाक्-प्राण-मन - वाक, प्राण और मन का आपस में श्रेष्ठता के लिए संवाद। व्युत्पत्ति:
वाक् (वाणी) + प्राण (श्वास) + मन (विचार)। क्रमवार: (वाक्) अभिव्यक्ति, (प्राण) जीवन, (मन) संकल्प।

2416. भूमा-विद्या - 'भूमा' (असीम/अनंत) ही सुख है, अल्प (छोटा) में सुख नहीं है।
व्युत्पत्ति: भू (होना/बढ़ना) + म (अतिशयता)। क्रमवार: (भूमा) विराट, (सुख) परमानंद।

2417. नाम-वाक्-मन-संकल्प - ज्ञान की श्रेणी: नाम से बड़ा वाक्, उससे बड़ा मन, उससे बड़ा
संकल्प। व्युत्पत्ति: नाम (संज्ञा) + वाक् + मन + संकल्प (दृढ़ निश्चय)। क्रमवार: (श्रेणी) विकास-क्रम।

2418. विज्ञान-बल-अन्न - ज्ञान से बड़ा बल, बल से बड़ा अन्न (ऊर्जा)। व्युत्पत्ति: विज्ञान
+ बल (शक्ति) + अन्न। क्रमवार: (सोपान) उत्तरोत्तर-ज्ञान।

2419. अमृत-आनंद - जो 'भूमा' है, वही अमृत है, वही आनंद है। व्युत्पत्ति: अमृत (शाश्वत) +
आनंद (सुख)। क्रमवार: (अमृत) नित्य, (आनंद) परस।

2420. तत्त्वमसि - "वह तुम ही हो" - अद्वैत का महावाक्य। व्युत्पत्ति: तत् (वह) + त्वम्
(तुम) + असि (हो)। क्रमवार: (तत्त्वमसि) आत्म-बोध, (अद्वैत) एकात्मता।

2421. श्वेतकेतु-संवाद - ऋषि उद्दालक और उनके पुत्र श्वेतकेतु का ब्रह्म-ज्ञान संवाद।
व्युत्पत्ति: श्वेतकेतु (शिष्य) + संवाद (चर्चा)। क्रमवार: (श्वेतकेतु) जिज्ञासु,
(उद्दालक) गुरु।

2422. न्यग्रोध-बीज - बरगद के बीज के दृष्टांत से सूक्ष्म ब्रह्म का बोध। व्युत्पत्ति:
न्यग्रोध (बरगद) + बीज (मूल)। क्रमवार: (न्यग्रोध) विशाल-वृक्ष, (बीज) अदृश्य-सार।

2423. लवण-जल-दृष्टांत - पानी में घुले नमक की तरह ब्रह्म सर्वत्र है, पर दिखाई नहीं देता।
व्युत्पत्ति: लवण (नमक) + जल + दृष्टांत (उदाहरण)। क्रमवार: (लवण) ब्रह्म-अस्तित्व, (जल) विश्व।

2424. हृदय-कमल - वह स्थान जहाँ 'दहर' (सूक्ष्म) आकाश और ब्रह्म स्थित हैं। व्युत्पत्ति:
हृदय + कमल (कोमल/स्थान)। क्रमवार: (हृदय) आत्म-केंद्र, (कमल) पवित्रता।

2425. ब्रह्म-लोक-प्राप्ति - समस्त बंधनों से मुक्त होकर ब्रह्म में लीन होना।
व्युत्पत्ति: ब्रह्म + लोक (अवस्था) + प्राप्ति। क्रमवार: (ब्रह्म-लोक) परम-स्थिति, (प्राप्ति) मुक्ति।

2426. बृहदारण्यक-उपनिषद - वह उपनिषद जिसे 'महान अरण्य' (ज्ञान का विशाल जंगल) कहा जाता है।
व्युत्पत्ति: बृहत् (विशाल) + अरण्यक (वन/ज्ञान-ग्रंथ)। क्रमवार: (बृहत्) असीम, (अरण्यक) आध्यात्मिक-वन।

2427. याज्ञवल्क्य-ऋषि - ब्रह्म-विद्या के महाज्ञानी, जिनके संवाद इस उपनिषद का मुख्य आधार
हैं। व्युत्पत्ति: यजुस् + वल्क (नाम-सूचक)। क्रमवार: (याज्ञवल्क्य) ऋषि, (मुख्य) ज्ञाता।

2428. मैत्रेयी-संवाद - ऋषि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी के बीच अमरता पर हुआ अमर
संवाद। व्युत्पत्ति: मैत्रेयी (विदुषी पत्नी) + संवाद। क्रमवार: (मैत्रेयी) ज्ञान-
जिज्ञासु, (संवाद) चर्चा।

2429. नेति-नेति - "यह नहीं, यह नहीं" - ब्रह्म को जानने की निषेधात्मक (असीमित) प्रक्रिया।
व्युत्पत्ति: न (नहीं) + इति (यह)। क्रमवार: (नेति) अस्वीकृति, (प्रक्रिया) सत्य-खोज।

2430. आत्मा-प्रिय - सब कुछ आत्मा के कारण ही प्रिय है (आत्मा ही प्रेम का केंद्र है)।
व्युत्पत्ति: आत्मा + प्रिय (आकर्षण)। क्रमवार: (आत्मा) स्व, (प्रिय) आनंद-स्रोत।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 132
2431. मृत्योर्मा-मृतं-गमय - "मृत्यु से मुझे अमरत्व की ओर ले चलो।" व्युत्पत्ति: मृत्योः
(मृत्यु से) + मा (मुझे) + अमृतम् (अमरत्व) + गमय (ले जाओ)। क्रमवार: (मृत्यु) नश्वरता,
(अमृतम्) शाश्वतता।

2432. असतो-मा-सद्गमय - "असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो।" व्युत्पत्ति: असतः
(अज्ञान/असत्य) + मा (मुझे) + सद् (सत्य) + गमय। क्रमवार: (असतः) अंधकार, (सद्) प्रकाश।

2433. तमसो-मा-ज्योतिर्गमय - "अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चलो।" व्युत्पत्ति: तमसः
(अज्ञान) + मा (मुझे) + ज्योतिः (ज्ञान/प्रकाश) + गमय। क्रमवार: (तमसः) अविद्या, (ज्योतिः) बोध।

2434. अश्वमेध-रूपक - सृष्टि को 'अश्व' मानकर उसका ईश्वर में समर्पण का प्रतीकात्मक यज्ञ।
व्युत्पत्ति: अश्व (घोड़ा/सृष्टि) + मेध (यज्ञ)। क्रमवार: (अश्वमेध) विराट-यज्ञ, (रूपक) प्रतीकात्मकता।

2435. हिरण्यगर्भ - सृष्टि का आदि-बीज (स्वर्णमय गर्भ)। व्युत्पत्ति: हिरण्य (स्वर्ण) +
गर्भ (उत्पत्ति-स्रोत)। क्रमवार: (हिरण्यगर्भ) सृजन-केंद्र।

2436. अहं-ब्रह्मास्मि - "मैं ही ब्रह्म हूँ" - आत्म-ज्ञान का सर्वोच्च महावाक्य।
व्युत्पत्ति: अहम् (मैं) + ब्रह्म + अस्मि (हूँ)। क्रमवार: (अहं) आत्म-बोध, (ब्रह्म-अस्मि) तादात्म्य।

2437. साक्षी-चेतन - वह जो शरीर और मन के सभी अनुभवों को देख रहा है। व्युत्पत्ति: साक्षी
(द्रष्टा) + चेतन (ज्ञान-स्वरुप)। क्रमवार: (साक्षी) दृष्टा, (चेतन) चैतन्य।

2438. अद्वैत-अनुभूति - जहाँ ज्ञाता और ज्ञेय का भेद मिट जाता है। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) +
द्वैत (दो)। क्रमवार: (अद्वैत) एकात्मता, (अनुभूति) साक्षात्कार।

2439. त्रि-दकार - प्रजापति द्वारा दिए गए तीन उपदेश: 'द' (दमन), 'द' (दान), 'द' (दया)।
व्युत्पत्ति: द + द + द (दमन-दान-दया)। क्रमवार: (दमन) संयम, (दान) त्याग, (दया) करुणा।

2440. अन्न-प्राण-प्रतीक - अन्न ही प्राणों का संवर्धन करता है। व्युत्पत्ति: अन्न + प्राण
+ प्रतीक। क्रमवार: (अन्न) भौतिक-शक्ति, (प्राण) जीवन।

2441. स्वयंप्रकाश-आत्मा - जिसे प्रकाश की आवश्यकता नहीं, जो स्वयं प्रकाश है।
व्युत्पत्ति: स्वयम् (अपने आप) + प्रकाश। क्रमवार: (स्वयंप्रकाश) ज्योति-स्वरूप।

2442. विदेह-मुक्ति - देह त्याग के बाद होने वाली परम मुक्ति। व्युत्पत्ति: विदेह (बिना
शरीर) + मुक्ति। क्रमवार: (विदेह) अशरीरी, (मुक्ति) मोक्ष।

2443. आनन्द-ब्रह्म - ब्रह्म का स्वरूप ही आनंद है। व्युत्पत्ति: आनन्द + ब्रह्म। क्रमवार:
(आनन्द) परमानंद, (ब्रह्म) सत्-चित्।

2444. नाम-रूप-कर्म - इस जगत की त्रिगुणात्मक रचना। व्युत्पत्ति: नाम + रूप + कर्म
(क्रिया)। क्रमवार: (नाम-रूप-कर्म) त्रिविध-सृष्टि।

2445. अक्षर-ब्रह्म - वह जो कभी क्षीण नहीं होता। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + क्षर (नष्ट
होना)। क्रमवार: (अक्षर) अविनाशी।

2446. सुषुप्ति-आनन्द - गहरी नींद में अनुभव होने वाला आत्म-सुख। व्युत्पत्ति: सुषुप्ति
(गाढ़ निद्रा) + आनन्द। क्रमवार: (सुषुप्ति) मन-विराम, (आनन्द) मौन-सुख।

2447. विज्ञान-घन - आत्मा, जो केवल शुद्ध चेतना का पुंज है। व्युत्पत्ति: विज्ञान (विशेष
ज्ञान) + घन (पिंड/पुंज)। क्रमवार: (विज्ञान) चैतन्य, (घन) संहति।

2448. सर्व-खल्विदं-ब्रह्म - जो कुछ भी है, वह ब्रह्म ही है। व्युत्पत्ति: सर्वम् + खलु
(निश्चय ही) + इदम् (यह) + ब्रह्म। क्रमवार: (सर्व) सकल, (ब्रह्म) ईश्वर।

2449. पूर्ण-मदः-पूर्ण-मिदम् - ब्रह्म पूर्ण है, उससे उत्पन्न सृष्टि भी पूर्ण है।
व्युत्पत्ति: पूर्ण (पूर्ण) + अदः (वह) + इदम् (यह)। क्रमवार: (पूर्ण) परिपूर्णता, (अदः/इदम्) समस्त-सृष्टि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 133
2450. ब्रह्म-निर्वाण - ब्रह्म में लीन होकर परम शांति को पाना। व्युत्पत्ति: ब्रह्म + निर्वाण (बुझ जाना/विलीन होना)। क्रमवार: (ब्रह्म) परमात्मा, (निर्वाण) लय।

• भगवद्गीता - भगवान द्वारा गाया गया दिव्य ज्ञान, जो जीवन के धर्म-संकट को दूर करता है। व्युत्पत्ति: भगवद् (ईश्वर) + गीता (गायन/उपदेश)। क्रमवार: (भगवद्) ईश्वरीय, (गीता) उपदेश।

• धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र - वह स्थान जो धर्म का केंद्र है (शरीर/संसार)। व्युत्पत्ति: धर्म (कर्तव्य) + क्षेत्र (भूमि) + कुरु (कर्म)। क्रमवार: (धर्मक्षेत्र) न्याय-भूमि, (कुरुक्षेत्र) कर्म-भूमि।

• अर्जुन-विषाद-योग - मोह और कर्तव्य के बीच उलझे हुए साधक की मानसिक अवस्था। व्युत्पत्ति: अर्जुन (साधक) + विषाद (शोक/भ्रम) + योग। क्रमवार: (अर्जुन) जीवात्मा, (विषाद) मोह, (योग) मार्ग।

• स्थितप्रज्ञ-लक्षण - जिसकी बुद्धि सुख-दुःख में स्थिर है, वह योगी। व्युत्पत्ति: स्थित (अचल) + प्रज्ञा (बुद्धि)। क्रमवार: (स्थित) स्थिर, (प्रज्ञ) प्रज्ञावान।

• कर्म-योग - बिना फल की इच्छा के निष्काम कर्म करने का मार्ग। व्युत्पत्ति: कर्म (क्रिया) + योग (जुड़ाव/विधि)। क्रमवार: (कर्म) कर्तव्य, (योग) साधन।

• ज्ञान-योग - विवेक और आत्म-ज्ञान के माध्यम से परमात्मा को पाने का मार्ग। व्युत्पत्ति: ज्ञान (बोध) + योग। क्रमवार: (ज्ञान) विवेक, (योग) मार्ग।

• भक्ति-योग - प्रेम और समर्पण द्वारा ईश्वर से जुड़ने का मार्ग। व्युत्पत्ति: भक्ति (अनुराग) + योग। क्रमवार: (भक्ति) समर्पण, (योग) जुड़ाव।

• निष्काम-कर्म - फल की आसक्ति छोड़े बिना कर्म करना। व्युत्पत्ति: नि (रहित) + काम (इच्छा) + कर्म। क्रमवार: (निष्काम) अनासक्त, (कर्म) अनुष्ठान।

• समतत्व-योग - सुख-दुःख, लाभ-हानि में समान भाव रहना। व्युत्पत्ति: सम (समान) + तत्व (भाव) + योग।
क्रमवार: (समतत्व) समता, (योग) सिद्धि।

• क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-विभाग - शरीर (क्षेत्र) और आत्मा (क्षेत्रज्ञ/जानने वाला) का भेद।
व्युत्पत्ति: क्षेत्र (देह) + क्षेत्रज्ञ (आत्मा) + विभाग (अंतर)। क्रमवार: (क्षेत्र) शरीर, (क्षेत्रज्ञ) ज्ञाता।

• गुणातीत-अवस्था - जो सत्, रज और तम गुणों से परे चला गया है। व्युत्पत्ति: गुण + अतीत (परे)।
क्रमवार: (गुण) प्रकृति, (अतीत) मुक्त।

• पुरुषोत्तम-योग - जो क्षर (नश्वर) और अक्षर (अविनाशी) से भी परे (सर्वोत्तम) पुरुष है।
व्युत्पत्ति: पुरुष + उत्तम (सर्वश्रेष्ठ)। क्रमवार: (पुरुष) आत्मा, (उत्तम) परमात्मा।

• दैवी-आसुरी-संपदा - दैवीय (ज्ञान) और आसुरी (लोभ/क्रोध) गुणों का विवेचन। व्युत्पत्ति: दैवी (दिव्य) + आसुरी (अधर्म) + संपदा (गुण/धन)। क्रमवार: (दैवी) श्रेष्ठ, (आसुरी) अधम, (संपदा) स्वभाव।

• विभूति-योग - ईश्वर के दिव्य ऐश्वर्य और विस्तार का चिंतन। व्युत्पत्ति: वि (विशेष) + भूति (सत्ता/ऐश्वर्य) + योग। क्रमवार: (विभूति) वैभव, (योग) ध्यान।

• विश्व-रूप-दर्शन - विराट परमात्मा का वह स्वरूप जो संपूर्ण ब्रह्मांड है। व्युत्पत्ति: विश्व (ब्रह्मांड) + रूप + दर्शन। क्रमवार: (विश्व-रूप) विराट, (दर्शन) अनुभव।

• अवतार-रहस्य - ईश्वर का समय-समय पर धर्म स्थापना हेतु देह धारण करना। व्युत्पत्ति: अव (नीचे) + तृ (उतरना) + रहस्य (गूढ़)। क्रमवार: (अवतार) प्राकट्य, (रहस्य) विधान।

• आत्म-संयम-योग - मन और इंद्रियों को वश में करने का अभ्यास। व्युत्पत्ति: आत्म (स्व) + संयम (नियंत्रण) + योग। क्रमवार: (आत्म-संयम) निग्रह, (योग) साधन।

• अक्षर-ब्रह्म - वह सत्ता जो कभी नष्ट नहीं होती। व्युत्पत्ति: अ (नहीं) + क्षर (नष्ट होना) + ब्रह्म। क्रमवार: (अक्षर) शाश्वत, (ब्रह्म) परमतत्व।

• त्याग-संन्यास - आसक्तियों का त्याग ही वास्तविक संन्यास है। व्युत्पत्ति: त्याग (छोड़ना) + संन्यास (पूर्ण समर्पण)। क्रमवार: (त्याग) विरक्ति, (संन्यास) पूर्ण-त्याग।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 134
• यज्ञ-कर्म - श्रेष्ठ कार्यों का अर्पण करना ही यज्ञ है। व्युत्पत्ति: यज् (पूजा/अर्पण करना)। क्रमवार: (यज्ञ) सेवा-भाव।

• अध्यात्म-विद्या - आत्मा के विषय में सर्वोच्च ज्ञान। व्युत्पत्ति: अधि (विषय) + आत्म + विद्या। क्रमवार: (अध्यात्म) आत्म-विषयक, (विद्या) ज्ञान।

• मोक्ष-योग - सब बंधनों से पूर्ण स्वतंत्रता। व्युत्पत्ति: मुच् (छूटना)। क्रमवार: (मोक्ष) मुक्ति।

• शरण-गति - ईश्वर के प्रति संपूर्ण आत्म-समर्पण। व्युत्पत्ति: शरण (आश्रय) + गति (प्राप्ति)।
क्रमवार: (शरण) आश्रय, (गति) प्राप्ति।

• सत्त्व-रज-तम - प्रकृति के तीन गुण जो जगत को चलाते हैं। व्युत्पत्ति: सत् (प्रकाश) + रज (गति) + तम (अंधकार)। क्रमवार: (सत्त्व) ज्ञान, (रज) क्रिया, (तम) जड़ता।

• परम-पद-प्राप्ति - वह सर्वोच्च अवस्था जहाँ पहुँचकर पुनर्जन्म नहीं होता। व्युत्पत्ति: परम (सर्वोच्च) + पद (स्थान) + प्राप्ति। क्रमवार: (परम-पद) लक्ष्य, (प्राप्ति) उपलब्धि।

• सांख्य-योग - ज्ञान और विवेक के द्वारा प्रकृति और पुरुष के भेद को जानना। व्युत्पत्ति: संख्या (सम्यक ज्ञान/विवेक) + योग (मिलन)। क्रमवार: (सांख्य) विवेक, (योग) मार्ग।

• ध्यान-योग - मन को एकाग्र कर परमात्मा में लीन करने की प्रक्रिया। व्युत्पत्ति: ध्यै (चिंतन करना) + योग। क्रमवार: (ध्यान) एकाग्रता, (योग) साधना।

• कर्म-संन्यास - फल की इच्छा का पूर्ण त्याग करना। व्युत्पत्ति: कर्म (क्रिया) + सम् (पूर्ण) + न्यास (त्याग/स्थापन)। क्रमवार: (कर्म) क्रिया, (संन्यास) विरक्ति।

• स्वधर्म-पालन - अपनी प्रकृति और योग्यता के अनुसार नियत कर्तव्य करना। व्युत्पत्ति: स्व (निज) + धर्म (कर्तव्य) + पालन (अनुष्ठान)। क्रमवार: (स्वधर्म) नियत-कर्म, (पालन) अनुपालन।

• अध्यात्म-चेतना - आत्म-स्वरूप के प्रति निरंतर जागृत रहने का भाव। व्युत्पत्ति: अधि (विषय) + आत्म (स्व) + चेतना (बोध)। क्रमवार: (अध्यात्म) आत्म-परक, (चेतना) बोध।

• कर्मफल-त्याग - कर्म के परिणाम पर अपना अधिकार न जताना। व्युत्पत्ति: कर्म + फल (परिणाम) + त्याग। क्रमवार: (कर्मफल) परिणाम, (त्याग) अनासक्ति।

• श्रद्धा-त्रय - सात्त्विक, राजसिक और तामसिक—तीन प्रकार की श्रद्धा। व्युत्पत्ति: श्रद्धा (आस्था) + त्रय (तीन)। क्रमवार: (श्रद्धा) विश्वास, (त्रय) भेद।

• आहार-त्रय - सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भोजन का प्रभाव। व्युत्पत्ति: आहार (भोजन) + त्रय।
क्रमवार: (आहार) पोषण, (त्रय) वर्गीकरण।

• यज्ञ-त्रय - सत्त्व, रज और तम से प्रेरित तीन प्रकार के यज्ञ। व्युत्पत्ति: यज् (पूजा/अर्पण) + त्रय। क्रमवार: (यज्ञ) अनुष्ठान, (त्रय) प्रकार।

• तप-त्रय - शरीर, वाणी और मन का तीन प्रकार का तप। व्युत्पत्ति: तप (तपना/शुद्धि) + त्रय।
क्रमवार: (तप) शुद्धि, (त्रय) स्तर।

• दैवी-संपदा - निर्भयता, अहिंसा, करुणा जैसे दिव्य गुण। व्युत्पत्ति: दैवी (दिव्य) + संपदा (गुण-धन)। क्रमवार: (दैवी) श्रेष्ठ, (संपदा) सद्गुण।

• आसुरी-संपदा - दंभ, क्रोध और अभिमान जैसे पतनकारी गुण। व्युत्पत्ति: असुर (अधर्म) + संपदा।
क्रमवार: (आसुरी) अवगुण, (संपदा) दुष्ट-प्रवृत्ति।

• कर्ता-त्रय - अहंकार से युक्त, निर्विकार और मिश्रित भाव वाला कर्ता। व्युत्पत्ति: कृ (करना) + तृ (करने वाला) + त्रय। क्रमवार: (कर्ता) करने वाला, (त्रय) भेद।

• करण-त्रय - ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और कर्मेन्द्रियाँ (कार्य के साधन)। व्युत्पत्ति: कृ (करना) + अन (साधन) + त्रय। क्रमवार: (करण) साधन, (त्रय) तीन।

• बुद्धि-त्रय - सात्त्विकी (सही निर्णय), राजसी (संशय) और तामसी (विपरीत) बुद्धि। व्युत्पत्ति: बुध (जागना/जानना) + त्रय। क्रमवार: (बुद्धि) विवेक, (त्रय) प्रकार।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 135
• धृति-त्रय - धैर्य के तीन प्रकार—दृढ़ता, फल की इच्छा और हठ। व्युत्पत्ति: धृ (धारण करना) + त्रय। क्रमवार: (धृति) धैर्य, (त्रय) भेद।
• सुख-त्रय - विष जैसा आरंभ लेकिन अमृत जैसा अंत (सात्त्विक सुख)। व्युत्पत्ति: सुख (आनंद) + त्रय। क्रमवार: (सुख) अनुभूति, (त्रय) स्तर।
• समतत्व-योग - हार-जीत, मान-अपमान में समान रहना। व्युत्पत्ति: सम (समान) + तत्व (भाव) + योग।
क्रमवार: (समतत्व) समभाव, (योग) संतुलन।
• अनासक्ति-योग - संसार में रहकर भी लिप्त न होना (कमल पत्रवत)। व्युत्पत्ति: अन (नहीं) + आसक्ति (जुड़ाव) + योग। क्रमवार: (अनासक्ति) विरक्ति, (योग) मार्ग।
• भाव-शुद्धि - हृदय के संकल्पों और विचारों की निर्मलता। व्युत्पत्ति: भाव (मनोदशा) + शुद्धि (पवित्रता)। क्रमवार: (भाव) मन, (शुद्धि) निर्मलता।
• स्वभाव-नियत - प्राणी की अपनी प्रकृति, जिससे वह कर्म करने को बाध्य है। व्युत्पत्ति: स्व (निज) + भाव (प्रकृति)। क्रमवार: (स्वभाव) प्रवृत्तियाँ।
• जीवात्मा-परमात्मा - देह में रहने वाला अंश (जीव) और पूर्ण चैतन्य (ईश्वर)। व्युत्पत्ति: जीव + आत्मन् / परम + आत्मन्। क्रमवार: (जीवात्मा) अंश, (परमात्मा) पूर्ण।
• लोकसंग्रह - संसार की मर्यादा बनाए रखने के लिए कर्म करना। व्युत्पत्ति: लोक (जगत) + संग्रह (धारण करना/मर्यादा)। क्रमवार: (लोकसंग्रह) समाज-कल्याण।
• धर्म-संस्थापन - धर्म की रक्षा के लिए ईश्वर का कार्य। व्युत्पत्ति: धर्म (न्याय) + संस्थापन (स्थापना)। क्रमवार: (धर्म) व्यवस्था, (संस्थापन) रक्षण।
• ब्राह्मी-स्थिति - ब्रह्म में लीन होकर स्थिर हो जाना (परम शांति)। व्युत्पत्ति: ब्राह्मी (ब्रह्म संबंधी) + स्थिति (अवस्था)। क्रमवार: (ब्राह्मी) परमात्मा-निष्ठ, (स्थिति) विश्राम।
पञ्चदशी अध्याय 1-5: विवेक-पञ्चक (तत्व-विवेक से महावाक्य-विवेक तक)
2501. तत्व-विवेक - ब्रह्म और जगत के भेद को समझने की प्रथम प्रक्रिया।
2502. महाभूत-विवेक - पंचभूतों की उत्पत्ति और ब्रह्म से उनकी भिन्नता का बोध।
2503. पञ्चकोश-विवेक - अन्नमयादि पाँच कोशों से आत्मा को पृथक करना।
2504. द्वैत-विवेक - माया और ब्रह्म के द्वैत को मिथ्या सिद्ध करना।
2505. महावाक्य-विवेक - 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यों के लक्ष्यार्थ का निश्चय।
2506. सत्-चित्-आनन्द - ब्रह्म का त्रिविध लक्षण (अस्तित्व, चैतन्य, परमानन्द)।
2507. अविद्या-प्रकार - अविद्या के दो भाग: आवरण (ढंकना) और विक्षेप (फैलाव)।
2508. ईश्वर-सृष्टि - ब्रह्म पर माया के योग से ईश्वर की उत्पत्ति।
2509. जीव-सृष्टि - अविद्या के योग से ब्रह्म पर जीव का आरोपण।
2510. दृश्य-विलय - नाम-रूप को हटाकर ब्रह्म-तत्व को देखना।
2511. साक्षी-चैतन्य - वह जो देह-मन की वृत्तियों का दृष्टा मात्र है।
2512. कूटस्थ-आत्मा - वह जो विकाररहित (स्थिर) ब्रह्म है।
2513. आरोपण-अपवाद - ब्रह्म पर जगत को मानना और तर्क से उसे हटाना।
2514. लक्ष्यार्थ - वाच्य अर्थ को छोड़कर ब्रह्म-रूप अर्थ का ग्रहण।
2515. सामानाधिकरण्य - 'तत्' (ईश्वर) और 'त्वम्' (जीव) का एकत्व भाव।

अध्याय 6-10: दीप-पञ्चक (प्रकाश की प्रक्रिया)

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 136
2516. चित्रदीप - जिस प्रकार चित्रपट पर चित्र हैं, वैसे ही ब्रह्म पर जगत है।
2517. तृप्तिदीप - ब्रह्मज्ञान के बाद होने वाली परम संतुष्टि का विश्लेषण।
2518. कूटस्थदीप - कूटस्थ (अपरिवर्तनीय) चैतन्य की महिमा।
2519. ध्यानदीप - ध्यान द्वारा आत्मा के स्वरूप में निमग्न होना।
2520. नाटकदीप - शरीर को रंगमंच और आत्मा को साक्षी-दर्शक मानना।
2521. अधिष्ठान - वह मूल सत्ता जिस पर सब टिका है।
2522. पट-कल्पना - चित्रपट (कैनवास) पर होने वाली विभिन्न आकृतियाँ।
2523. बीज-भूत - वासनाएँ जो जगत के प्रकटीकरण का बीज हैं।
2524. स्वप्रकाशत्व - जिसे जानने के लिए किसी अन्य प्रकाश की आवश्यकता न हो।
2525. बुद्धि-प्रतिबिम्ब - कूटस्थ का बुद्धि में पड़ा प्रतिबिंब (चिदाभास)।
2526. चिदाभास - आभासमात्र चैतन्य (जीव)।
2527. वृत्त्युपरति - वृत्तियों का लय हो जाना (समाधि)।
2528. निर्वाण-दीपक - वासनाओं का बुझ जाना।
2529. आत्मानन्द - स्व-स्वरूप का सुख।
2530. द्वैत-अनुभव - भ्रमवश दिखाई देने वाला नानात्व।
अध्याय 11-15: आनन्द-पञ्चक (आनन्द के सोपान)
2531. योगानन्द - योग (ब्रह्म-समाधि) से प्राप्त आनन्द।
2532. आत्मानन्द - आत्मा के अपने स्वरूप का आनंद।
2533. अद्वैतानन्द - जहाँ दो का भेद न हो, वहाँ का सुख।
2534. विद्यानन्द - ब्रह्म-विद्या (ज्ञान) से प्राप्त तृप्ति।
2535. विषयानन्द - विषय-भोग से क्षणिक मिलने वाला आनन्द।
2536. ब्रह्मानन्द - अखण्ड परमानन्द।
2537. विषय-वासना - सुख की इच्छा।
2538. अल्प-सुख - सीमित विषयजन्य सुख।
2539. भूमा-सुख - असीम परमानन्द।
2540. काम-क्षय - इच्छाओं का मिटना।
2541. सुषुप्ति-आनन्द - गाढ़ निद्रा का आनन्द।
2542. आनन्द-मीमांसा - सुख के स्तरों का तार्किक विवेचन।
2543. शतगुणित-आनन्द - आनन्द के विस्तार का गुणक।
2544. श्रोत्रिय-आनन्द - वेदों को जानने वाले का परमानन्द।
2545. अकामहत - जिसकी कोई इच्छा न बची हो।
वेदान्त के अन्य सूक्ष्म पारिभाषिक शब्द
2546. अध्यास - एक पर दूसरे का भ्रम (सर्प पर रज्जु)।
2547. अविद्या-निवृत्ति - मोक्ष का मुख्य द्वार।
2548. उपहित-चैतन्य - उपाधियों (शरीर/मन) से घिरा ब्रह्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 137
2549. अनुपहित-चैतन्य - शुद्ध, उपाधि-रहित ब्रह्म।
2550. अवस्था-त्रय - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति।
2551. अविद्या-लेश - जीवन्मुक्ति में शेष बचा हुआ सूक्ष्म अज्ञान।
2552. आभास-वाद - जीव का भ्रम होना।
2553. अनादि-माया - जिसका आदि ज्ञात न हो।
2554. अवच्छेद-वाद - आकाश का घट में सीमित होना।
2555. अभ्यासाभाव - बार-बार भ्रम का होना।
2556. अहं-प्रत्यय - 'मैं' का ज्ञान।
2557. अहं-कार - कर्तापन का बोध।
2558. अन्तःकरण-शुद्धि - सात्विक चित्त।
2559. इच्छा-शक्ति - संकल्प।
2560. ईक्षत - सृजन की इच्छा।
2561. उपादान-कारण - जिससे बना (मिट्टी)।
2562. निमित्त-कारण - जो बनाता है (कुम्हार)।
2563. कार्यावस्था - परिणाम।
2564. कारणावस्था - बीज रूप।
2565. कूटस्थ-नित्यता - सदा एक समान।
2566. केवलाद्वैत - केवल एक का सिद्धांत।
2567. गुण-साम्य - प्रलय की स्थिति।
2568. गोचर - इंद्रियों का विषय।
2569. घट-आकाश - सीमित जीव।
2570. महाकाश - असीम ब्रह्म।
2571. चैतन्य-मात्र - शुद्ध चेतना।
2572. चित्त-वृत्ति - मन की लहर।
2573. जगत-प्रतीति - जगत का आभास।
2574. जीव-भाव - मैं कर्ता हूँ।
2575. तत्व-मसि - वही तुम हो।
2576. तटस्थ-लक्षण - गौण परिचय (सृष्टि-कर्ता)।
2577. स्वरूप-लक्षण - मुख्य परिचय (सत्-चित-आनंद)।
2578. त्रिगुणात्मक - तीन गुणों वाली।
2579. दृग-दृश्य-विवेक - दृष्टा और दृश्य का भेद।
2580. दृष्टि-सृष्टि-वाद - देखने पर ही रचना।
2581. धर्म-अधर्म - शुभ-अशुभ कर्म।
2582. निर्गुण-ब्रह्म - गुणरहित।
2583. सगुण-ब्रह्म - ईश्वर।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 138
2584. निरतिशय - जिससे अधिक कुछ न हो।
2585. निर्विकल्प - संशयहीन।
2586. नेति-नेति - निषेध विधि।
2587. पद-लक्ष्यार्थ - शब्दों का सूक्ष्म अर्थ।
2588. प्रारब्ध - भुगता जाने वाला कर्म।
2589. संचित - जमा कर्म।
2590. आगामी - होने वाला कर्म।
2591. प्रकृति - मूल स्वभाव।
2592. पुरुष - आत्मा।
2593. प्रत्यगात्मा - भीतर की आत्मा।
2594. ब्रह्म-ज्ञान - चरम लक्ष्य।
2595. भ्रम-नाश - ज्ञान से अज्ञान का अंत।
2596. मिथ्यात्व - सत्य न होना।
2597. मुमुक्षुत्व - मुक्ति की तीव्र इच्छा।
2598. माया-विद्य - माया का ज्ञान।
2599. विवेक-वैराग्य - साधन-चतुष्टय के मुख्य अंग।
2600. श्रवण-मनन-निदिध्यासन - वेदान्त के तीन सोपान।
योगवासिष्ठ - चित्त-विज्ञान और आत्म-साक्षात्कार (शब्दावली:)
अध्याय 1-2: वैराग्य और मुमुक्षु प्रकरण (साधना की पूर्व-तैयारी)
2601. योगवासिष्ठ-रामायण - महर्षि वसिष्ठ द्वारा भगवान श्रीराम को दिया गया आत्म-ज्ञान।
2602. वसिष्ठ-राम-संवाद - गुरु और शिष्य के बीच का सर्वोच्च दार्शनिक संवाद।
2603. आर्ष-ग्रंथ - ऋषियों द्वारा दृष्ट (अनुभूत) ग्रंथ।
2604. चित्त-विज्ञान - मन की चंचलता और उसके शमन का शास्त्र।
2605. असार-संसार - यह संसार स्वप्न के समान क्षणभंगुर है।
2606. वैराग्य-परायण - संसार से विरक्ति की भावना।
2607. भोग-त्याग - वासनाओं के पीछे भागने का निषेध।
2608. अनित्यता-बोध - शरीर और पदार्थों की क्षणभंगुरता का ज्ञान।
2609. देह-आसक्ति - शरीर को ही 'मैं' मानने का भ्रम।
2610. मोह-क्षय - अज्ञानजन्य आसक्तियों का नाश।
2611. मुमुक्षु-लक्षण - मोक्ष की तीव्र इच्छा रखने वाला साधक।
2612. आत्म-जिज्ञासा - "मैं कौन हूँ?" यह जानने की ललक।
2613. शास्त्र-श्रवण - आत्म-ज्ञान के ग्रंथों का मनन।
2614. गुरु-सेवा - ज्ञान प्राप्ति हेतु समर्पित भाव।
2615. सत्संग-लाभ - ज्ञानियों के सानिध्य से आत्म-सुधार।
2616. विचार-प्रवणता - वस्तु की सत्यता को परखने की बुद्धि।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 139
2617. शम-दम-गुण - मन और इंद्रियों पर संयम।
2618. संतोष-वृत्ति - जो प्राप्त है उसमें पूर्ण तृप्ति।
2619. मोक्ष-काक्षा - आवागमन (जन्म-मरण) से मुक्ति की चाह।
2620. चित्त-शुद्धि - सात्विक गुणों का उदय।
अध्याय 3: उत्पत्ति प्रकरण (सृष्टि का मनःकल्पित स्वरूप)
2621. सृष्टि-उत्पत्ति - ब्रह्म में मन की कल्पना द्वारा जगत का उदय।
2622. मन-कल्पना - यह जगत केवल मन का प्रपंच है।
2623. चित्त-स्पन्दन - मन की हलचल ही सृजन है।
2624. आभास-जगत - जो दिख रहा है, वह सत्य नहीं, केवल आभास है।
2625. माया-शक्ति - ब्रह्म की वह शक्ति जो 'अनेक' का भ्रम देती है।
2626. स्वप्न-सृष्टि - जैसे स्वप्न में सृष्टि सत्य लगती है, वैसे ही यह जाग्रत-जगत।
2627. संकल्प-सृष्टि - केवल सोचने मात्र से सृष्टि का विस्तार।
2628. अनादि-भ्रम - वह भ्रम जिसका आदि (शुरुआत) नहीं है।
2629. अज्ञान-मूल - समस्त दुखों का कारण 'मैं' का अज्ञान।
2630. चैतन्य-स्पर्श - जहाँ चैतन्य का स्पर्श होता है, वहाँ जगत प्रतीति होती है।
2631. प्रतिबिम्ब-संसार - ब्रह्म पर पड़ने वाली जीव की छाया।
2632. सृष्टि-चक्र - आने और जाने का निरंतर क्रम।
2633. कार्य-कारण - यह नियम भी मानसिक भ्रम है।
2634. शून्य-मूल - उत्पत्ति का अंतिम सत्य 'शून्य' (निर्विकल्प ब्रह्म) है।
2635. दृश्य-जगत - जो इंद्रियों से दिखाई दे, वह मिथ्या है।
अध्याय 4: स्थिति प्रकरण (ब्रह्म में जगत की सत्ता)
2636. जगत-स्थिति - जगत का टिकना केवल ब्रह्म के आधार पर है।
2637. ब्रह्म-आश्रय - सत्ता केवल ब्रह्म की है।
2638. सत्य-आधार - जिस पर जगत टिका है, वह 'सत' है।
2639. नियति-क्रम - प्राकृतिक नियम (जो ब्रह्म की इच्छा है)।
2640. आत्म-विस्तार - जो कुछ है, वह आत्मा का ही विस्तार है।
2641. कल्पित-सत्ता - जिसकी सत्ता केवल बोलने मात्र में है।
2642. व्यवहार-सत्य - सांसारिक कार्यों के लिए सत्य।
2643. परमात्म-रूप - जो मूल में है।
2644. सच्चिदानन्द-प्रकाश - ब्रह्म का मूल लक्षण।
2645. एकत्व-बोध - "सब कुछ एक है" का अनुभव।
2646. विश्व-रूप - विराट परमात्मा।
2647. अवस्थित-ब्रह्म - जो सबमें रहते हुए भी निर्लिप्त है।
2648. स्थिर-बुद्धि - विचलित न होने वाला प्रज्ञावान।
2649. प्रपंच-विलय - संसार का ब्रह्म में खो जाना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 140
2650. सत्य-अनुसन्धान - सत्य को खोजने की निरंतर प्रक्रिया।
अध्याय 5-6: उपशम और निर्वाण प्रकरण (अंतिम शांति)
2651. उपशम-योग - वृत्तियों के शांत होने की विधि।
2652. मनः-शांति - मन का संकल्प-विकल्प रहित होना।
2653. वासना-त्याग - इच्छाओं का पूर्ण विसर्जन।
2654. अहं-नाश - 'मैं' और 'मेरा' का अंत।
2655. तुरीय-अवस्था - जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति से परे चौथी अवस्था।
2656. आत्म-रमण - स्वयं में ही संतुष्ट रहना।
2657. निर्विकल्प-समाधि - जहाँ 'मैं' और 'ईश्वर' का भेद न रहे।
2658. निर्वाण-पद - दीप के बुझने की तरह वासनाओं का मिटना।
2659. चित्त-लय - मन का ब्रह्म में समा जाना।
2660. अशरीरी-भाव - देह से स्वतंत्र चैतन्य का बोध।
2661. मुक्त-पुरुष - जो जीते जी मुक्त है (जीवन्मुक्त)।
2662. ब्रह्म-लीन - जिसने अपना अलग अस्तित्व खो दिया।
2663. पूर्ण-तृप्ति - अब कुछ पाना शेष नहीं।
2664. शांति-अमृत - मोक्ष का अक्षय सुख।
2665. महा-मौन - शब्दों से परे की स्थिति।
पारिभाषिक और दार्शनिक शब्द (विविध)
2666. द्रष्टा-आत्मन - जो देखने वाला है, वह शरीर नहीं आत्मा है।
2667. अद्वैत-योग - ब्रह्म और आत्मा का अभेद।
2668. बोध-सार - ज्ञान का निचोड़।
2669. आत्मा-अद्वितीय - आत्मा के अतिरिक्त कुछ नहीं।
2670. प्रज्ञान-सत्ता - चेतना ही ईश्वर है।
2671. संकल्प-वर्जित - जहाँ विचार न उठें।
2672. साक्षि-भाव - तमाशा देखने वाला भाव।
2673. परमानन्द-बोध - आनंद का चरम अनुभव।
2674. ब्रह्म-एकता - सब में एक ब्रह्म।
2675. स्वरूप-स्थिति - अपने असली रूप में स्थित होना।
2676. वासना-क्षय - संस्कारों का जलना।
2677. जगत-मिथ्यात्व - संसार की शून्यता।
2678. अहंकार-त्याग - अहंकार का विलय।
2679. आत्म-साक्षात्कार - स्वयं का पूर्ण बोध।
2680. ज्ञान-काण्ड - उपनिषद और योगवासिष्ठ का ज्ञान।
2681. मन-विज्ञान - मन कैसे कार्य करता है?
2682. दृष्टि-सृष्टि - देखो तो जगत है, न देखो तो ब्रह्म।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति Page 141
2683. अद्वैत-सिद्धि - अद्वैत की स्थापना।
2684. आभास-मात्र - केवल भ्रम।
2685. अविद्या-नाश - ज्ञान का उदय।
2686. तत्त्व-ज्ञान - यथार्थ सत्य।
2687. मोक्ष-मार्ग - मुक्ति का पथ।
2688. अनात्म-त्याग - जो आत्मा नहीं, उसे छोड़ना।
2689. सत्य-आत्मा - केवल आत्मा ही सत्य है।
2690. अमृत-पद - अमरत्व की स्थिति।
2691. ब्रह्म-पद - परमात्मा का निवास।
2692. चित्त-शमन - अशांत मन का शांत होना।
2693. विचार-शील - चिंतन करने वाला।
2694. मुक्ति-दाता - ज्ञान।
2695. आत्म-स्थित - आत्मा में लीन।
2696. विश्वरूप-दर्शन - सबमें ब्रह्म का दर्शन।
2697. अद्वय - दो से रहित।
2698. पूर्ण-ब्रह्म - समग्र।
2699. मौन-ज्ञान - शब्दों से परे का ज्ञान।
2700. कैवल्य - पूर्ण एकांत या पूर्ण मोक्ष।
विचारसागर, वृत्ति-मीमांसा और ज्ञानमीमांसा
अध्याय 1-2: अधिकारी और ज्ञान के साधन
2701. विचारसागर - निश्चलदास द्वारा रचित वेदान्त का सात तरंगों वाला प्रामाणिक ग्रंथ।
2702. अधिकारी-चतुष्टय - वेदान्त के पात्र बनने की चार आवश्यक योग्यताएँ।
2703. विवेक - नित्य (ब्रह्म) और अनित्य (जगत) के भेद का ज्ञान।
2704. वैराग्य - इहलोक और परलोक के फल भोगों से अरुचि।
2705. षट्-सम्पत्ति - शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।
2706. मुमुक्षुत्व - मोक्ष प्राप्ति की तीव्र और अनन्य व्याकुलता।
2707. विषय-प्रयोजन - ब्रह्म-साक्षात्कार और अविद्या-निवृत्ति।
2708. वेदान्त-वाक्य - उपनिषदों के महावाक्य जो ब्रह्म का बोध कराते हैं।
2709. गुरु-परम्परा - ज्ञान के हस्तांतरण की अविच्छिन्न धारा।
2710. सत्संगति - आत्म-तत्व की चर्चा में मन को लगाना।
2711. श्रवण - वेदान्त वाक्यों का गुरु मुख से सुनना।
2712. मनन - सुने हुए वाक्यों पर तार्किक चिंतन।
2713. निदिध्यासन - ब्रह्म में मन को एकाग्र करना (ध्यान)।
2714. संशय-निवृत्ति - ब्रह्म के स्वरूप में उठने वाले संदेहों का नाश।
2715. विपरीत-भावना - 'मैं देह हूँ' के भ्रम का निराकरण।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 142
अध्याय 3-4: प्रमाण, वृत्ति और प्रभाकर-मत
2716. प्रमाण - यथार्थ ज्ञान का साधन (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि)।
2717. वृत्ति - अंतःकरण का वह रूप जो विषय को ग्रहण करता है।
2718. अन्तःकरण-परिणाम - वृत्ति का उदय।
2719. अखण्डाकार-वृत्ति - ब्रह्म को विषय बनाने वाली अंतिम वृत्ति।
2720. प्रभाकर-मत - मीमांसा का दर्शन जो ज्ञान को 'स्वयं प्रकाश' मानता है।
2721. त्रिपुटी-प्रत्यक्ष - प्रभाकर मत के अनुसार ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय का एक साथ भान।
2722. अख्याति-वाद - प्रभाकर मत का भ्रम-सिद्धांत (दो अनुभवों का भेद न जानना)।
2723. अनुव्यवसाय - 'मुझे ज्ञान हो रहा है' - ऐसा आंतरिक अनुभव।
2724. घटाकार-वृत्ति - घड़े को जानने वाली वृत्ति।
2725. अविद्या-वृत्ति - अज्ञान को विषय बनाने वाली वृत्ति।
2726. साक्षी-चैतन्य - वृत्ति को जानने वाला दृष्टा।
2727. जड़-चेतन - शरीर (जड़) और आत्मा (चेतन) का भेद।
2728. विषय-चैतन्य - विषय में व्याप्त ब्रह्म।
2729. प्रमाण-चैतन्य - वृत्ति में स्थित ब्रह्म।
2730. प्रमातृ-चैतन्य - ज्ञाता (जीव) में स्थित ब्रह्म।
अध्याय 5: माया, ईश्वर और जगत
2731. माया-शक्ति - ब्रह्म की वह शक्ति जो सत्य को ढंकती है।
2732. आवरण-शक्ति - जो ब्रह्म के स्वरूप को ढंक ले।
2733. विक्षेप-शक्ति - जो ब्रह्म पर जगत का आरोप करे।
2734. ईश्वर - माया-उपहित चैतन्य।
2735. समष्टि-अज्ञान - माया का व्यापक रूप।
2736. व्यष्टि-अज्ञान - अविद्या का व्यक्तिगत रूप।
2737. कारण-शरीर - अविद्या (अज्ञान का वासस्थान)।
2738. सूक्ष्म-शरीर - सत्रह तत्वों का समूह (मन, बुद्धि, इंद्रियाँ)।
2739. स्थूल-शरीर - पंचभूतों से बना देह।
2740. विवर्त-वाद - सत्य का बिना बदले ही दूसरा रूप दिखना।
2741. परिणाम-वाद - दूध का दही बनना (सांख्य)।
2742. आरम्भ-वाद - परमाणु का मेल (न्याय)।
2743. जगत-मिथ्या - जो ब्रह्म न हो, वह सत्य नहीं।
2744. माया-स्वरूप - सत्-असत् से विलक्षण (अनिर्वचनीय)।
2745. जगत्-ब्रह्म-अभेद - अधिष्ठान की दृष्टि से जगत ब्रह्म ही है।
अध्याय 6-7: जीव और मोक्ष
2746. जीव - अंतःकरण से युक्त चैतन्य।
2747. प्रतिबिम्ब-वाद - दर्पण में मुख की तरह ब्रह्म का जीव में दिखना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 143
2748. अवच्छेद-वाद - घड़े में आकाश की तरह ब्रह्म की सीमा।
2749. आभास-वाद - जल के प्रतिबिम्ब की तरह जीव का मिथ्या होना।
2750. अहं-मम - 'मैं' और 'मेरा' का अभिमान।
2751. अवस्था-त्रय - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति।
2752. तुरीय - चौथी अवस्था (ब्रह्म)।
2753. जीवन्मुक्ति - जीते जी बंधन से मुक्ति।
2754. विदेह-मुक्ति - शरीर छूटने पर पूर्ण लय।
2755. प्रारब्ध-कर्म - जो वर्तमान जीवन में फल दे रहा है।
2756. संचित-कर्म - पूर्व जन्मों का संचय।
2757. आगामी-कर्म - भविष्य के कर्म।
2758. मोक्ष-साधन - ज्ञान ही मोक्ष का एकमात्र साधन है।
2759. अहं-ब्रह्मास्मि - ज्ञान का चरम उत्कर्ष।
2760. वासना-क्षय - मन के बंधनों की समाप्ति।

विचारचन्द्रोदय एवं अन्य वेदान्त परिभाषाएँ
2761. विचारचन्द्रोदय - वेदान्त के तत्वों को चाँद की शीतलता की तरह स्पष्ट करने वाला ग्रंथ।
2762. तत्-पद - ईश्वर वाचक ब्रह्म।
2763. त्वम्-पद - जीव वाचक ब्रह्म।
2764. लक्षणा - शब्दों का परोक्ष अर्थ (जहाजहत्, अजहत्, भाग-त्याग)।
2765. भाग-त्याग-लक्षणा - विरुद्ध अंशों को छोड़कर अभेद को समझना।
2766. अध्यारोप - रस्सी पर साँप का आरोप।
2767. अपवाद - साँप को रस्सी कहना (ज्ञान)।
2768. अविद्या-लेश - जीवन्मुक्त में शेष अज्ञान का अंश।
2769. साधक - जो लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है।
2770. सिद्ध - जो लक्ष्य में स्थित है।
2771. समाधि-द्वय - सविकल्प और निर्विकल्प।
2772. सविकल्प-समाधि - जहाँ द्वैत की चेतना बची रहे।
2773. निर्विकल्प-समाधि - जहाँ द्वैत का भान मिट जाए।
2774. स्व-प्रकाश - आत्मा का स्वयं को प्रकाशित करना।
2775. अनात्म-त्याग - जो आत्मा नहीं, उसकी उपेक्षा।
2776. ब्रह्म-निष्ठ - ब्रह्म में स्थित योगी।
2777. वेदान्त-सार - उपनिषदों का संक्षिप्त सार।
2778. अखण्ड-सच्चिदानंद - ब्रह्म का स्वरूप।
2779. दृष्टि-सृष्टि-प्रक्रिया - देखो तो जगत, न देखो तो ब्रह्म।
2780. अद्वैत-अनुभव - अनुभव ही प्रमाण है।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति Page 144
2781. अविद्या-नाश - ज्ञान का फल।
2782. आत्मा-साक्षी - सर्वद्रष्टा।
2783. अहंकार-ग्रंथि - हृदय की गांठ (अविद्या)।
2784. भेद-बुद्धि - अज्ञान का मूल।
2785. अखण्ड-भाव - मैं ब्रह्म ही हूँ।
2786. अनादि-परम्परा - ज्ञान का प्रवाह।
2787. मोक्ष-अवस्था - पूर्ण शांति।
2788. माया-जाल - भ्रम की रचना।
2789. आत्मा-अनन्य - ब्रह्म से आत्मा अलग नहीं।
2790. अविद्या-प्रपंच - अज्ञान का विस्तार।
2791. ब्रह्म-विद्य - ब्रह्म को जानने वाला।
2792. निराकार-ब्रह्म - ब्रह्म का स्वरूप।
2793. अनागत-दुःख - भविष्य के दुःख का अंत।
2794. अद्वय-तत्व - ब्रह्म।
2795. आत्म-विस्तार - जगत।
2796. चित्त-निरोध - योग।
2797. वेदान्त-सिद्धांत - सत्य।
2798. परम-पद - मुक्ति।
2799. आत्म-सुख - आनंद।
2800. पूर्णता - अंतिम लक्ष्य (ब्रह्म)।
• आचमन - व्युत्पत्ति: आ समन्तात् चाम्यते इति आचमनम्। अर्थ: शुद्धि हेतु जल ग्रहण। शब्दार्थ: (आ) चारों ओर से/पूर्ण, (चाम्यते) पान/ग्रहण करना।
• स्वस्तिवाचन - व्युत्पत्ति: स्वस्ति वदन्ति इति स्वस्तिवाचनम्। अर्थ: कल्याणकारी मंत्र-पाठ।
शब्दार्थ: (स्वस्ति) कल्याण, (वदन्ति) बोलना/पाठ करना।
• कलश - व्युत्पत्ति: कलं (पापम्) श्यति (नाशयति) इति कलशः। अर्थ: जलपात्र। शब्दार्थ: (कलं) पाप/मल, (श्यति) नाश करना।
• दीप - व्युत्पत्ति: दीप्यते इति दीपः। अर्थ: प्रकाश का प्रतीक। शब्दार्थ: (दीप्यते) प्रज्वलित होना/चमकना।
• पुष्प - व्युत्पत्ति: पुष्यति (विकसति) इति पुष्पम्। अर्थ: खिला हुआ फूल। शब्दार्थ: (पुष्यति) विकसित होना/पुष्ट होना।
• धूप - व्युत्पत्ति: धूपयति (सुगन्धं करोति) इति धूपः। अर्थ: सुगन्धित सामग्री। शब्दार्थ: (धूपयति) सुगंध फैलाना।
• नैवेद्य - व्युत्पत्ति: निवेद्यते देवाय इति नैवेद्यम्। अर्थ: भगवान को अर्पित भोग। शब्दार्थ: (निवेद्यते) समर्पित करना।
• आसन - व्युत्पत्ति: आसीनः भवति अनेन इति आसनम्। अर्थ: बैठने का आधार। शब्दार्थ: (आसीनः) बैठना, (अनेन) जिसके द्वारा।
• मुद्रा - व्युत्पत्ति: मोदं ददाति इति मुद्रा। अर्थ: विशिष्ट हस्त-अवस्था। शब्दार्थ: (मोदं) आनंद, (ददाति) देना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 145
• प्राणायाम - व्युत्पत्ति: प्राणस्य आयामः इति प्राणायामः। अर्थ: श्वास का नियंत्रण। शब्दार्थ: (प्राणस्य) श्वास, (आयामः) नियंत्रण/विस्तार।
• न्यास - व्युत्पत्ति: नीयते (स्थाप्यते) न्यासः। अर्थ: देव-शक्ति का शरीर में स्थापन। शब्दार्थ: (नीयते) स्थापित करना।
• ध्यान - व्युत्पत्ति: ध्येयते (चिन्त्यते) इति ध्यानम्। अर्थ: एकाग्रता। शब्दार्थ: (ध्येयते) चिंतन/स्मरण करना।
• अर्घ्य - व्युत्पत्ति: अर्घ्यते (पूज्यते) अनेन इति अर्घ्यम्। अर्थ: सम्मान हेतु जल दान।
शब्दार्थ: (अर्घ्यते) पूजना।
• पाद्य - व्युत्पत्ति: पादौ प्रक्षाल्यते अनेन इति पाद्यम्। अर्थ: चरण-प्रक्षालन जल। शब्दार्थ: (पादौ) पैर, (प्रक्षाल्यते) धोना।
• स्नान - व्युत्पत्ति: स्नाति (शुध्यति) अनेन इति स्नानम्। अर्थ: पवित्र जल से शुद्धि। शब्दार्थ: (स्नाति) शुद्ध होना।
• वस्त्र - व्युत्पत्ति: वस्ते (आच्छादयति) इति वस्त्रम्। अर्थ: आवरण/कपड़ा। शब्दार्थ: (वस्ते) ढकना/पहनना।
• गंध - व्युत्पत्ति: गन्धयति (मोदयति) इति गन्धः। अर्थ: सुगन्धित द्रव्य। शब्दार्थ: (गन्धयति) सुगंध फैलाना।
• यव - व्युत्पत्ति: यु (मिश्रणे) इति यवः। अर्थ: जौ (यज्ञीय धान्य)। शब्दार्थ: (यु) मिश्रण करना।
• तिल - व्युत्पत्ति: तिलति (स्नेहं करोति) इति तिलः। अर्थ: पवित्र तैल-बीज। शब्दार्थ: (तिलति) स्नेह/तेल देना।
• अंकुर - व्युत्पत्ति: अंकं (चिह्नं) रोहति इति अंकुरः। अर्थ: नव-धान्य। शब्दार्थ: (अंकं) चिह्न, (रोहति) उगना।
• पंचगव्य - व्युत्पत्ति: पञ्चानां गव्यानां (गव्यजातानां) समाहारः। अर्थ: गो-जन्य मिश्रण।
शब्दार्थ: (पञ्चानां) पाँच, (गव्यानां) गाय से प्राप्त।
• अमृत - व्युत्पत्ति: न म्रियते इति अमृतम्। अर्थ: अमरत्व देने वाला। शब्दार्थ: (अ) न, (म्रियते) मरना।
• शांति - व्युत्पत्ति: शम्यति (उपशम्यति) इति शांतिः। अर्थ: दोष-निवृत्ति। शब्दार्थ: (शम्यति) शांत होना।
• पुष्टि - व्युत्पत्ति: पुष्यति इति पुष्टिः। अर्थ: वृद्धि/समृद्धि। शब्दार्थ: (पुष्यति) बढ़ना/फैलना।
• ऋषि - व्युत्पत्ति: ऋषति (पश्यति) मंत्रान् इति ऋषिः। अर्थ: मंत्र-द्रष्टा विद्वान। शब्दार्थ: (ऋषति) देखना/जानना।
• मुनि - व्युत्पत्ति: मननात् मुनिः। अर्थ: मननशील साधक। शब्दार्थ: (मननात्) चिंतन से।
• च्छन्द - व्युत्पत्ति: छदति (आच्छादयति) इति छन्दः। अर्थ: काव्यात्मक मंत्र-लय। शब्दार्थ: (छदति) ढंकना/नियमबद्ध करना।
• स्वर - व्युत्पत्ति: स्वरात् (ध्वनि) इति स्वरः। अर्थ: ध्वनि का आरोह-अवरोह। शब्दार्थ: (स्वरात्) अपनी ध्वनि से।
• वैदिक - व्युत्पत्ति: वेदे भवं इति वैदिकम्। अर्थ: वेद सम्बन्धी। शब्दार्थ: (वेदे) वेद में, (भवं) उत्पन्न/स्थित।
• साम - व्युत्पत्ति: साम्नः (गान) इति साम। अर्थ: गान प्रधान वेद। शब्दार्थ: (साम्नः) मधुर गान।
• यजु - व्युत्पत्ति: यजति इति यजुः। अर्थ: यज्ञीय क्रिया प्रधान। शब्दार्थ: (यजति) यज्ञ करना।
• अथर्व - व्युत्पत्ति: अथर्वणि (अचलचित्ते) भवं इति अथर्वम्। अर्थ: ज्ञान-कांड प्रधान।
शब्दार्थ: (अथर्वणि) स्थिर मन में।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 146
• सूक्त - व्युत्पत्ति: सु (शोभन) उक्तं इति सूक्तम्। अर्थ: सुंदर वचन/मंत्र। शब्दार्थ: (सु) अच्छा, (उक्तं) कहा गया।
• ऋचा - व्युत्पत्ति: ऋच् (स्तुति) इति ऋचा। अर्थ: स्तुतिपरक मंत्र। शब्दार्थ: (ऋच्) स्तुति करना।
• स्तोत्र - व्युत्पत्ति: स्तूयते अनेन इति स्तोत्रम्। अर्थ: स्तुति-ग्रंथ। शब्दार्थ: (स्तूयते) प्रशंसा करना।
• स्तुति - व्युत्पत्ति: स्तु (प्रशंसा) इति स्तुतिः। अर्थ: प्रशंसा करना। शब्दार्थ: (स्तु) प्रशंसा करना।
• वंदना - व्युत्पत्ति: वन्दते इति वन्दना। अर्थ: आदरपूर्वक नमन। शब्दार्थ: (वन्दते) नमस्कार/आदर।
• नमस्कार - व्युत्पत्ति: नमः करोति इति नमस्कारः। अर्थ: नमन करना। शब्दार्थ: (नमः) नमन, (करोति) करना।
• प्रदक्षिणा - व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण दक्षिणा (दक्षिणी) गमनं इति प्रदक्षिणा। अर्थ: परिक्रमा।
शब्दार्थ: (प्र) प्रकर्ष/भली-भाँति, (दक्षिणा) दाहिनी ओर से।
• आरती - व्युत्पत्ति: आरात्रिकं (रात्रि का नाश) इति आरती। अर्थ: प्रकाश-पूजन। शब्दार्थ: (आरात्रिकं) अंधकार दूर करना।
• विसर्जन - व्युत्पत्ति: वि (विशेष) सृजति (त्यागता/स्थापयति) इति विसर्जनम्। अर्थ: देवता विदाई। शब्दार्थ: (वि) विशेष, (सृजति) छोड़ना/पधारना।
• समापन - व्युत्पत्ति: सम्यक् आप्यते (समाप्तं भवति) इति समापनम्। अर्थ: पूर्णता। शब्दार्थ: (सम्यक्) पूर्ण, (आप्यते) समाप्त होना।
• सिद्धि - व्युत्पत्ति: सिध्यति इति सिद्धिः। अर्थ: सफलता। शब्दार्थ: (सिध्यति) पूर्ण होना/सफल होना।
• फल - व्युत्पत्ति: फलति (परिणमति) इति फलम्। अर्थ: कर्म का परिणाम। शब्दार्थ: (फलति) पकना/परिणाम देना।
• नियम - व्युत्पत्ति: नियमयति इति नियमः। अर्थ: अनुशासन। शब्दार्थ: (नियमयति) नियंत्रित करना।
• यम - व्युत्पत्ति: यच्छति (नियच्छति) इति यमः। अर्थ: संयम/अहिंसा। शब्दार्थ: (यच्छति) रोकना/संयम रखना।
• भक्ति - व्युत्पत्ति: भजते इति भक्तिः। अर्थ: सेवा/प्रेम। शब्दार्थ: (भजते) सेवा/भजन करना।
• श्रद्धा - व्युत्पत्ति: श्रत् (सत्यं) दधाति इति श्रद्धा। अर्थ: विश्वास। शब्दार्थ: (श्रत्) सत्य, (दधाति) धारण करना।
• चेतना - व्युत्पत्ति: चित् (ज्ञान) इति चेतना। अर्थ: जाग्रत शक्ति। शब्दार्थ: (चित्) ज्ञान/जागृति।
• यज्ञेश्वर - व्युत्पत्ति: यज्ञस्य ईश्वरः इति यज्ञेश्वरः। अर्थ: यज्ञ के अधिपति। शब्दार्थ: (यज्ञस्य) यज्ञ के, (ईश्वरः) स्वामी।
• यज्ञ - व्युत्पत्ति: यजति इति यज्ञः। अर्थ: देवपूजा, दान और संगतिकरण। शब्दार्थ: (यजति) पूजन/अर्पण करना।
• समिधा - व्युत्पत्ति: समिध्यते इति समिधा। अर्थ: अग्नि प्रज्वलित करने वाली लकड़ी। शब्दार्थ: (सम्) अच्छी तरह, (इध्यते) जलाना/प्रज्वलित करना।
• आहुति - व्युत्पत्ति: आ हूयते सा आहुतिः। अर्थ: अग्नि में अर्पित किया गया पदार्थ। शब्दार्थ: (आ) चारों ओर/समर्पण, (हूयते) अर्पित करना/डालना।
• यजमान - व्युत्पत्ति: यज्ञं करोति इति यजमानः। अर्थ: यज्ञ कराने वाला कर्ता। शब्दार्थ: (यज्ञं) अनुष्ठान, (करोति) करने वाला।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 147
• ऋत्विक - व्युत्पत्ति: ऋतौ यजति इति ऋत्विक्। अर्थ: निश्चित काल में यज्ञ करने वाला पुरोहित। शब्दार्थ: (ऋतौ) उचित समय पर, (यजति) यज्ञ करना।

• होम - व्युत्पत्ति: हुयते अनेन इति होमः। अर्थ: अग्नि में द्रव्य अर्पण करना। शब्दार्थ: (हुयते) अर्पित करना, (अनेन) जिसके द्वारा।

• स्वाहा - व्युत्पत्ति: सु आहा (वदति) इति स्वाहा। अर्थ: आहुति की स्वीकृति। शब्दार्थ: (सु) शोभन, (आहा/वदति) कहना/अर्पण करना।

• संकल्प - व्युत्पत्ति: सम्यक् कल्प्यते इति संकल्पः। अर्थ: यज्ञ का दृढ़ निश्चय। शब्दार्थ: (सम्) सम्यक्/पूर्ण, (कल्प्यते) निर्माण/विचार करना।

• दीक्षा - व्युत्पत्ति: दीयते ज्ञानं क्षीयते च पापं यस्यां सा दीक्षा। अर्थ: यज्ञ हेतु पवित्र संस्कार। शब्दार्थ: (दी/दा) दान/देना, (क्ष) क्षय/नाश करना।

• हवि - व्युत्पत्ति: हूयते इति हविः। अर्थ: यज्ञ में दी जाने वाली सामग्री। शब्दार्थ: (हूयते) अर्पण योग्य।

• कुण्ड - व्युत्पत्ति: कुण्डयति (धारयति) अग्निं इति कुण्डम्। अर्थ: यज्ञ की अग्नि का आधार।
शब्दार्थ: (धारयति) धारण करना।

• वेदी - व्युत्पत्ति: विन्दति (लभते) शुद्धिं यस्यां सा वेदी। अर्थ: यज्ञ-स्थान। शब्दार्थ: (विन्दति) पाना/प्राप्त करना।

• मंत्र - व्युत्पत्ति: मन्यते (चित्तं) त्रायते इति मन्त्रः। अर्थ: मन का रक्षक शब्द। शब्दार्थ: (मन्यते) चिंतन/मन, (त्रायते) रक्षा करना।

• पुरोडाश - व्युत्पत्ति: पुरः (अग्नेः) दीयते इति पुरोडाशः। अर्थ: यज्ञीय पिष्टक (अन्न)।
शब्दार्थ: (पुरः) आगे/सामने, (दीयते) देना।

• चरु - व्युत्पत्ति: चर्यते (पच्यते) इति चरुः। अर्थ: यज्ञ में पकाया गया हविष्य। शब्दार्थ: (पच्यते) पकाना।

• घृत - व्युत्पत्ति: घृणोति (दीपयति) इति घृतम्। अर्थ: यज्ञीय शुद्ध घी। शब्दार्थ: (घृणोति/दीपयति) चमकाना/प्रज्वलित करना।

• पूर्णाहुति - व्युत्पत्ति: पूर्णा सा आहुतिः। अर्थ: यज्ञ की पूर्णता। शब्दार्थ: (पूर्णा) परिपूर्ण, (आहुतिः) अर्पण।

• दक्षिणा - व्युत्पत्ति: दक्षि (कुशल) फलं यस्यां सा दक्षिणा। अर्थ: यज्ञ का दान। शब्दार्थ: (दक्ष) कुशलता, (दान) देना।

• यज्ञशाला - व्युत्पत्ति: यज्ञाय शाला इति यज्ञशाला। अर्थ: यज्ञ का स्थान। शब्दार्थ: (यज्ञाय) यज्ञ के लिए, (शाला) भवन।

• होता - व्युत्पत्ति: हूयते (देवान् आह्वयति) इति होता। अर्थ: आह्वानकर्ता पुरोहित। शब्दार्थ: (आह्वयति) बुलाना।

• अध्वर्यु - व्युत्पत्ति: अध्वरं (यज्ञं) याति (करोति) इति अध्वर्युः। अर्थ: यज्ञ का भौतिक कार्यकर्ता। शब्दार्थ: (अध्वरं) यज्ञ, (याति) क्रियाशील रहना।

• उद्गाता - व्युत्पत्ति: उत्गायति इति उद्गाता। अर्थ: सामगान करने वाला। शब्दार्थ: (उत्) ऊँचा, (गायति) गान करना।

• ब्रह्मा - व्युत्पत्ति: बृहति (वर्धयति) सर्वं इति ब्रह्मा। अर्थ: यज्ञ का पर्यवेक्षक।
शब्दार्थ: (बृहति) विस्तार करना/देखना।

• अग्नि - व्युत्पत्ति: अग्रं नयति इति अग्निः। अर्थ: प्रथम देव/मार्गदर्शक। शब्दार्थ: (अग्रं) आगे/प्रथम, (नयति) ले जाना।

• सोम - व्युत्पत्ति: सूयते (निष्पद्यते) इति सोमः। अर्थ: यज्ञीय औषधि-रस। शब्दार्थ: (सूयते) रस निकलना/उत्पन्न होना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 148
• प्रोक्षण - व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण उक्ष्यते इति प्रोक्षणम्। अर्थ: जल छिड़कना। शब्दार्थ: (प्र) भली-भाँति, (उक्ष्यते) सींचना।

• स्रुक् - व्युत्पत्ति: स्रौति (स्रवति) इति स्रुक्। अर्थ: हवि डालने वाला बड़ा पात्र। शब्दार्थ: (स्रवति) बहना।

• स्रुवा - व्युत्पत्ति: स्रुवेण (पात्रेण) दीयते इति स्रुवा। अर्थ: घी डालने वाली कलछी।
शब्दार्थ: (दीयते) देना।

• दर्वी - व्युत्पत्ति: द्रु (काष्ठ) निर्मिती इति दर्वी। अर्थ: हवि पात्र। शब्दार्थ: (द्रु) लकड़ी।

• पवित्रक - व्युत्पत्ति: पूयते (शुध्यते) अनेन इति पवित्रकम्। अर्थ: शुद्धि हेतु कुश-अंगूठी।
शब्दार्थ: (पूयते) पवित्र करना।

• कुश - व्युत्पत्ति: कुश् (हिंसा/पाप) नाशयति इति कुशः। अर्थ: पवित्र घास। शब्दार्थ: (कुश्) पाप/बाधा, (नाशयति) नष्ट करना।

• आज्य - व्युत्पत्ति: अज्यते (प्रक्षिप्यते) इति आज्यम्। अर्थ: शुद्ध घृत। शब्दार्थ: (अज्यते) प्रक्षिप्त करना।

• इध्म - व्युत्पत्ति: इन्ध्यते इति इध्मः। अर्थ: यज्ञीय ईंधन/लकड़ी। शब्दार्थ: (इन्ध्यते) जलना।

• स्थली - व्युत्पत्ति: तिष्ठति (पच्यते) यस्यां सा स्थली। अर्थ: हवि पकाने का बर्तन। शब्दार्थ: (तिष्ठति) रहना/रखना।

• प्रणीता - व्युत्पत्ति: प्रणीयते (नीयते) जलं यस्यां सा प्रणीता। अर्थ: पवित्र जल पात्र।
शब्दार्थ: (प्रणीयते) ले जाना।

• पात्र - व्युत्पत्ति: पाति (धारयति) इति पात्रम्। अर्थ: यज्ञ के उपकरण। शब्दार्थ: (पाति) धारण करना।

• पायस - व्युत्पत्ति: पयसः (क्षीरस्य) विकारः पायसम्। अर्थ: दूध का यज्ञीय हवि। शब्दार्थ: (पयसः) दूध।

• अक्षत - व्युत्पत्ति: न क्षतं (खण्डितं) इति अक्षतम्। अर्थ: साबुत चावल। शब्दार्थ: (अ) न, (क्षतं) खंडित।

• अग्न्याधान - व्युत्पत्ति: अग्निः आधानं (स्थापना) इति अग्न्याधानम्। अर्थ: अग्नि स्थापना।
शब्दार्थ: (आधानं) स्थापना/धारण।

• परिधि - व्युत्पत्ति: परितः धाति (स्थापयति) इति परिधिः। अर्थ: कुण्ड का घेरा। शब्दार्थ: (परितः) चारों ओर, (धाति) स्थापित करना।

• मेखला - व्युत्पत्ति: मेख (वेष्टन) लाति इति मेखला। अर्थ: वेदी का आधार-घेरा। शब्दार्थ: (लाति) ग्रहण करना/घेरना।

• यज्ञोपवीत - व्युत्पत्ति: यज्ञस्य उपवीतं (सूत्रं) इति यज्ञोपवीतम्। अर्थ: पवित्र सूत्र।
शब्दार्थ: (यज्ञस्य) यज्ञ का, (उपवीतं) उपवस्त्र/सूत्र।

• तर्पण - व्युत्पत्ति: तृप्यन्ति अनेन इति तर्पणम्। अर्थ: देवताओं की तृप्ति हेतु दान।
शब्दार्थ: (तृप्यन्ति) संतुष्ट होना।

• मार्जना - व्युत्पत्ति: मृज्यते (शुध्यते) अनेन इति मार्जना। अर्थ: शुद्धीकरण। शब्दार्थ: (मृज्यते) साफ करना।

• उपासना - व्युत्पत्ति: उप (निकट) आस्ते इति उपासना। अर्थ: ध्यान/समीपता। शब्दार्थ: (उप) समीप, (आस्ते) स्थित होना।

• अभिषेक - व्युत्पत्ति: अभितः सिच्यते इति अभिषेकः। अर्थ: जल से स्नान। शब्दार्थ: (अभितः) सब तरफ, (सिच्यते) सींचना।

• प्रायश्चित्त - व्युत्पत्ति: प्रकर्षेण चित्तं शोधयति इति प्रायश्चित्तम्। अर्थ: प्रायश्चित्त यज्ञ। शब्दार्थ: (चित्तं) मन, (शोधयति) शुद्ध करना।

'प्रस्थानत्रयी' शब्दव्युत्पत्ति
Page 149
• अन्वाधान - व्युत्पत्ति: अनु (पश्चात्/नित्यं) आधानं इति अन्वाधानम्। अर्थ: यज्ञ पूर्व तैयारी।
शब्दार्थ: (अनु) निरंतर/बाद, (आधानं) स्थापना।

• ऋत - व्युत्पत्ति: ऋच्छति (गच्छति/व्याप्नोति) इति ऋतम्। अर्थ: ब्रह्मांडीय नियम। शब्दार्थ: (ऋच्छति) व्याप्त होना।

• धर्म - व्युत्पत्ति: ध्रियते (धार्यते) लोको अनेन इति धर्मः। अर्थ: धारण करने वाला कर्तव्य।
शब्दार्थ: (ध्रियते) धारण करना।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥